भृगुसंहिता

महर्षि भृगु द्वारा रचित
भूत, भविष्य और वर्तमान का लेखा-जोखा

ಭ್ರೀಗು ಸಂಹಿತ

ORIGINAL
BHRIGU SAMHITA
Ancient Predictive Astrology

लेखकः- पं. दीनदयाल जी दिवाकर
चिंतामणि जोशी (राज ज्योतिषी मराठवाड़ा)
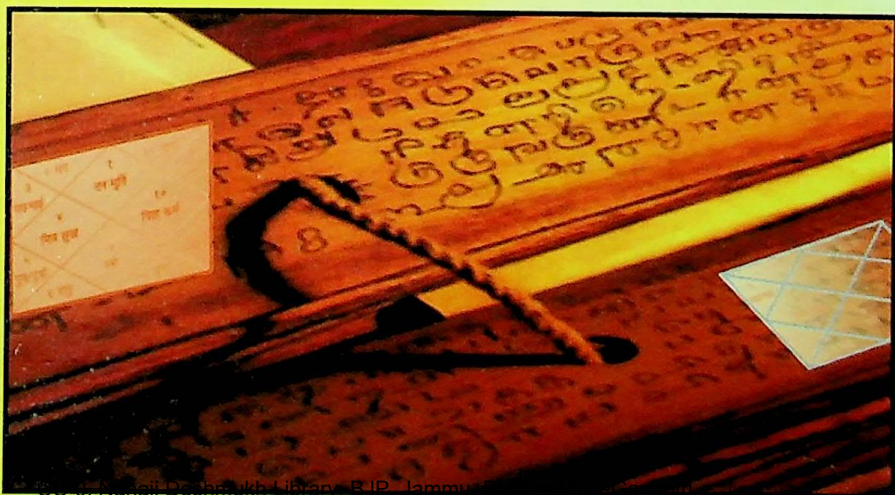
हस्तलिखित ताड़पत्र वाली प्रमाणिक

भृगु संहिता

भूत, भविष्य और

वर्तमान का लेखा-जोखा

भारतीय प्राचीन ऋषि भृगु की ख्याति एक ऐसे कालातीत भविष्यवक्ता के रूप में है, जो भूत, वर्तमान और भविष्य पर समान अधिकार से दृष्टि रखते थे। महर्षि भृगु के पौराणिक जीवन से अपरिचितजन भी इनके द्वारा रचित ज्योतिष के महान् ग्रन्थ भृगु संहिता के विषय में अवश्य जानते हैं। भृगु ऋषि की तीक्ष्ण दृष्टि समय की सुदृढ़ प्राचीर के आर-पार भी देख सकती थी, यह ग्रन्थ उसी अतुलनीय मेधा का प्रमाण है। इस ग्रन्थ के अचूक सिद्धान्तों के अध्ययन से मानव जीवन का भविष्य दर्शन सम्भव है।

हस्तलिखित ताड़पत्र वाली असली भृगु संहिता की खोज करने वाले ज्योतिष प्रेमी इस पुस्तक की सहायता से और अपने विवेक के अनुसार जन्मकुण्डली का सटीक फलादेश कर सकते हैं।

हस्तलिखित ताड़पत्र वाली
भृगु संहिता
का महत्त्व

इस ग्रन्थ की रचना के कालखण्ड में कागज और लेखनी की सुविधा नहीं थी। तब ग्रन्थ को ऋचाओं के माध्यम से शिष्यों को कंठस्थ कराया जाता था। कालान्तर में लेखन की विधा विकसित होने पर भोजपत्र व ताड़पत्र पर इस अद्‌भुत ग्रन्थ को लिखा गया। उन्हीं प्राचीन जीर्ण-शीर्ण ताड़पत्र पर हस्तलिखित पांडुलिपियों की सहायता से यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है।

ज्योतिष शास्त्र के प्रकाण्ड पंडित महर्षि भृगु द्वारा रचित इस भृगु संहिता से किसी भी जातक के तीन जन्मों का फलादेश किया जा सकता है। इस ब्रह्माण्ड के संचालन को नियन्त्रित करने वाले सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि ग्रहों और नक्षत्रों पर आधारित वैदिक गणित के इस वैज्ञानिक ग्रन्थ के माध्यम से जीवन के किसी भी विभाग की सटीक भविष्यवाणी की जा सकती है। फलादेश की दृष्टि से यह ग्रन्थ सर्वश्रेष्ठ माना गया है। किसी भी व्यक्ति के भूत, भविष्य और वर्तमान का स्पष्ट लेखा-जोखा इस भृगु संहिता से देखा जा सकता है।

हस्तलिखित ताड़पत्र वाली प्रमाणिक

भृगु संहिता

प्रकाण्ड भविष्यवेत्ता महर्षि भृगु द्वारा हस्तलिखित

भूत, भविष्य और वर्तमान का लेखा-जोखा

ORIGNAL
BHRIGU SAMHITA

Ancient Predictive Astrology

ಭೃಗು ಸಂಹಿತ

लेखक–

पं. दीनदयाल जी 'दिवाकर'

पं. चिन्तामणि जोशी (राज ज्योतिषी मराठवाड़ा)

MRP — ₹ 600

प्रकाशक - वितरक - प्रसारक –

ज्योतिष एवं हस्तरेखा विज्ञान शोध केन्द्र

शान्ति निकेतन, बेंगलुरु (कर्नाटक)

Astrology & Palmistry Research Bureau

Shanti Niketan, Bengaluru (Karnataka)

भृगु संहिता का इतिहास

पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु ने भविष्य ज्ञान हेतु महर्षि भृगु को दिव्य दृष्टि प्रदान की थी। इस वरदान के फलस्वरूप ही महर्षि भृगु ने 'भृगु संहिता' की रचना की थी। जातक के भूत, भविष्य और वर्तमान की सम्पूर्ण जानकारी देने वाला यह ग्रन्थ भृगु और उनके पुत्र शुक्र के बीच हुये प्रश्नोत्तर के रूप में है।

अत्यन्त प्राचीन काल में ताड़ वृक्ष के पत्तों पर इस ग्रन्थ की हस्तलिखित रचना हुई। उन्हीं हस्तलिखित अंशो की सहायता से इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। इस ताड़ वृक्ष के असंबद्ध पत्रों वाली भृगु संहिता का केवल नाम ही अनेक लोगों ने सुना था। संस्कृत श्लोक के साथ हिन्दी अनुवाद व सैकड़ों कुण्डलियों का फलादेश इसमें प्राचीन किन्तु वैज्ञानिक रीति से किया गया है।

हस्तलिखित ताड़पत्र वाली असली भृगुसंहिता के नाम से विख्यात इस ग्रन्थ को पाकर आप भरपूर लाभान्वित होंगे, इसी आशय से—

ज्योतिष एवं हस्त रेखा विज्ञान शोध केन्द्र
बेंगलुरु में कार्यरत लेखकगण एवं सभी प्रबुद्ध शोधकर्ता

अनुक्रम

१.

मेष लग्न

मेष लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

सूर्य वाले जातक की पत्नी (या पति) अधिक सुन्दर नहीं होती और वह उसकी मर्जी के मुताबिक भी कुछ कम ही चल पाती है।

मेष लग्नः
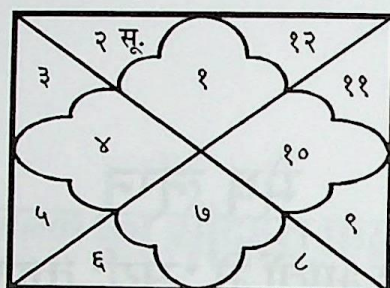
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म मेष लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य धन स्थान में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा हुआ है। अतः इसके प्रभाव से जातक को आर्थिक मामलों में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। द्वितीय भाव कुटुम्ब, रत्न, बन्धन आदि का भी है, अतः इस भाव में शत्रु-क्षेत्रीय सूर्य की स्थिति के कारण जातक के सन्तान पक्ष में बाधाएँ आएँगी तथा विद्याध्ययन में भी कमी बनी रहेगी।

द्वितीय भाव में स्थित वृष राशि का सूर्य अपनी पूर्ण दृष्टि से आयु, मृत्यु तथा पुरातत्त्व के अष्टम भाव को अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिए जातक दीर्घायु होगा तथा उसे अपने बुद्धि-बल से पुरातत्त्व (गढ़ा हुआ धन अथवा आकस्मिक अर्थप्राप्ति) का लाभ भी होगा।

ऐसे जातक के ऊपर अपने कुटुम्ब का प्रभाव भी कुछ-न-कुछ बना रहेगा। धनोपार्जन के लिए बुद्धि-बल का विशेष प्रयोग करने पर भी उसका अधिक संचय नहीं हो पाएगा।

मेष लग्नः
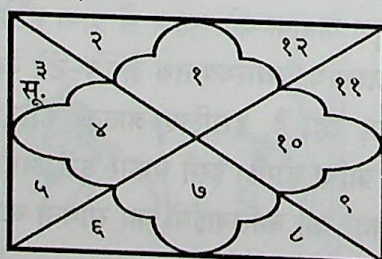
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य तीसरे पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर बैठा हुआ है। अतः इसके प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि का बल विशेष रूप से प्राप्त होगा तथा पराक्रम की वृद्धि होगी।

सूर्य सातवीं दृष्टि से भाग्य तथा धर्म स्थान को भी देख रहा है, जो उसके मित्र गुरु का है। अतः जातक भाग्यशाली, धर्मात्मा, दानी तथा तीर्थ यात्रा करने वाला भी होगा। वह अपनी बुद्धि तथा पराक्रम के योग से भाग्य की वृद्धि करेगा, साथ ही ईश्वराराधन, धर्म-पालन आदि शुभ कार्यों को भी करता रहेगा।

तीसरे स्थान पर गर्म स्वभाव वाला ग्रह बैठा हो, तो वह अत्यधिक शक्तिशाली हो जाता है। इसलिए यह सूर्य जातक को अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति बनाएगा तथा उसकी वाणी में भी तेजस्विता लाएगा। तीसरा स्थान भाई का भी होता है। अतः जातक को अपने भाईयों एवं सन्तान से सुख भी प्राप्त होगा।

मेष लग्नः
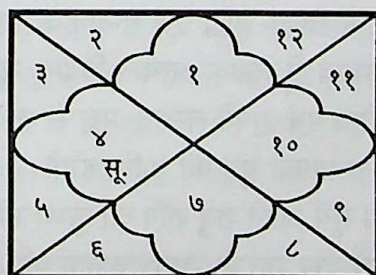
चतुर्थ भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली में 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य चौथे घर में माता, सुख, सम्पत्ति, भूमि, गृह आदि के भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की राशि में बैठा हुआ है, अतः इसके प्रभाव से जातक भूमि, मकान तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करेगा। उसे विद्या का भी विशेष लाभ

होगा। सूर्य के प्रभाव से जातक के मस्तिष्क में कुछ तेजी रहेगी, परन्तु चन्द्रमा की राशि होने के कारण उस पर शान्ति का अधिकार बना रहेगा।

सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशम भाव से देख रहा है, इसलिए जातक को अपने पिता से कुछ वैमनस्य एवं राज्य के सम्बन्धों में कुछ उदासीनता एवं विफलता का अनुभव होता रहेगा, परन्तु सूर्य की ऐसी स्थिति वाला जातक कुल मिलाकर सर्वत्र थोड़ा बहुत सम्मान अवश्य प्राप्त करेगा तथा प्रभावशाली भी बना रहेगा।

मेष लग्नः
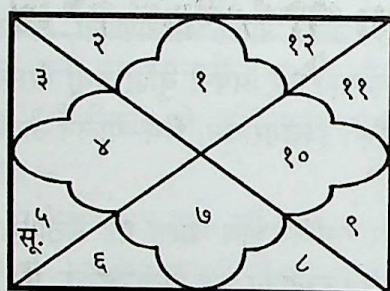
पंचम् भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम् भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य पाँचवें घर में विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भाव में स्वक्षेत्री होकर बैठा है, अतः इसके प्रभाव से जातक अत्यन्त विद्वान्, बुद्धिमान, प्रभावशाली तथा वाणी का धनी होगा एवं अपने सन्तान-पक्ष से शक्ति प्राप्त करेगा। इस जातक को एक अत्यन्त प्रतापी पुत्र की प्राप्ति होगी।

पंचम् स्थान का सूर्य अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि वाले ग्यारहवें घर को सातवीं शत्रुदृष्टि से देख रहा है। अतः जातक की आमदनी के मार्गों में रुकावटें पड़ा करेंगी और उसे धनोपार्जन के लिए विशेष प्रयत्न करते रहना होगा।

ऐसी ग्रह स्थिति वाला व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग भी करता है और उसके कारण सफलता प्राप्त करता है। वह बुद्धि में अन्य लोगों को अपने सामने तुच्छ समझता है। अतः कुछ लोग उसके परोक्ष-आलोचक भी बन जाते हैं।

मेष लग्नः
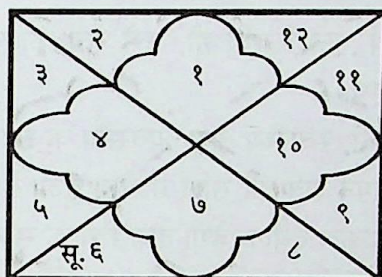
षष्ठम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे घर में शत्रु रोग तथा झगड़े के स्थान में अपने सामान्य मित्र बुध की राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक के लिए विद्याध्ययन के समय कठिनाईयाँ उत्पन्न करता है। अतः जातक को विद्याध्ययन में कुछ अड़चनें तो पड़ेंगी, परन्तु छठे स्थान पर बैठा हुआ उष्ण स्वभावी ग्रह अत्यन्त शक्तिशाली माना गया है, अतः जातक विद्वान् भी होगा और बुद्धिमान भी होगा, साथ ही साथ शत्रु पक्ष पर निरन्तर विजय भी प्राप्त करता रहेगा।

सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि वाले व्यय-स्थान को भी देख रहा है। अतः जातक बहुत अधिक खर्च करने वाला होगा तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सफलता भी खूब प्राप्त करेगा। उसे स्वदेश की अपेक्षा बाहरी स्थानों में अधिक सम्मान प्राप्त होगा। इस सूर्य के प्रभाव से सन्तान पक्ष के प्रति मन में कुछ चिंताएँ एवं परेशानियाँ अवश्य बनी रहेंगी।

मेष लग्नः
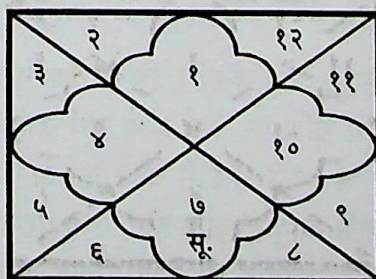
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें घर में स्त्री, स्वास्थ्य तथा व्यवसाय के स्थान में सूर्य तुला राशि पर नीच का होकर अपने शत्रु की राशि में बैठा हुआ है। अतः इसके प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य कुछ दुर्बल रहेगा तथा स्त्री के सम्बन्ध में भी कुछ-न-कुछ परेशानी बनी रहेगी।

इस घर से सूर्य अपनी सातवीं उच्चदृष्टि द्वारा मित्र मंगल की मेष राशि को देख रहा है। अतः जातक का शरीर कुछ लम्बे कद का होगा। उसके हृदय में स्वाभिमान की मात्रा अधिक रहेगी तथा युक्तिबल एवं बुद्धिबल द्वारा वह सम्मान तथा प्रभाव भी प्राप्त करता रहेगा।

सूर्य की इस स्थिति के कारण सन्तान पक्ष कमजोर बना रहेगा तथा स्त्री का सुख भी अच्छा प्राप्त नहीं होगा। जीवन-यापन के मार्ग में निरन्तर कठिनाईयाँ आती रहेंगी तथा विद्या-क्षेत्र भी कुछ कमजोर बना रहेगा।

मेष लग्नः
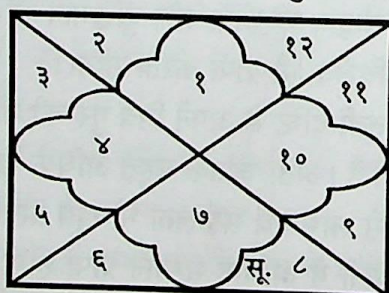
अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में सूर्य की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान मृत्यु, आयु, व्याधि, चिन्ता तथा पुरातत्त्व के घर में अपने मित्र मंगल की वृश्चिम राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक को विद्याध्ययन में कठिनाई तथा सन्तान-पक्ष की ओर से कष्ट का अनुभव करने वाला माना जाता है। इसके प्रभाव से आयु में वृद्धि होगी तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी लाभ प्राप्त होगा, परन्तु मस्तिष्क में तथा दैनिक जीवन में कुछ-न-कुछ परेशानियाँ उठ खड़ी होती रहेंगी।

आठवें घर का सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से धन तथा कुटुम्ब के द्वितीय स्थान को अपने शत्रु शुक्र को वृष राशि में देख रहा है, अतः इसके प्रभाव से धन-संग्रह तथा कुटुम्ब के निर्वाह के लिए अत्यधिक प्रयत्न करना पड़ेगा, फिर भी कुछ-न-कुछ असन्तोष बना ही रहेगा।

मेष लग्नः **नवम भावः सूर्य**
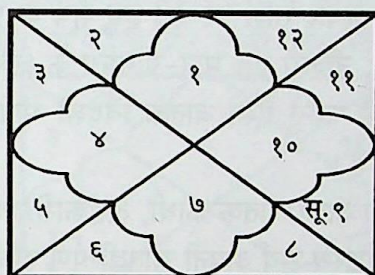
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें स्थान भाग्य धर्म तथा विद्या के घर पर त्रिकोण स्थान में सूर्य अपने मित्र गुरु की धनुराशि पर बैठा हुआ है। इसके प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ बुद्धि, विद्या तथा ज्ञान की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक धर्मात्मा, धर्मशास्त्रों का ज्ञाता, ईश्वरभक्त, भाग्यशाली, यशस्वी, न्यायी, दयालु, तीर्थयात्री तथा दानी भी होगा। भाग्य तथा उन्नति के क्षेत्र में उसे निरन्तर सफलताएँ मिलती रहेंगी।

नौवीं धनु राशि में बैठा हुआ सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से तृतीय पराक्रम स्थान को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए जातक पराक्रमी, भाई-बहिनों वाला पुरुषार्थी तथा श्रेष्ठ योग्यताओं वाला भी होगा। कुल मिलाकर सूर्य की इस स्थिति को बहुत अच्छा समझना चाहिए।

मेष लग्नः
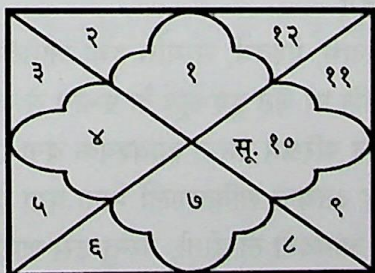
दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें राज्य, पिता, व्यवसाय तथा मान-प्रतिष्ठा वाले केन्द्र स्थान में अपने शत्रु 'शनि' की मकर राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने पिता, व्यवसाय, नौकरी एवं मान-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ त्रुटियों का सामना करना पड़ता है परन्तु ऐसा जातक विदेशी भाषा तथा राजभाषा का अच्छा जानकार होता है।

ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक क्रोधी, अहंकारी तथा असहिष्णु स्वभाव का होता है। मकर राशिस्थ सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से माता सुख तथा भूमि के चौथे स्थान को अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देखता है, अतः जातक को भूमि, मकान तथा माता का सुख अच्छा प्राप्त होगा और उसे अपने बुद्धिबल द्वारा राजकीय क्षेत्र तथा व्यवसायिक क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मेष लग्नः
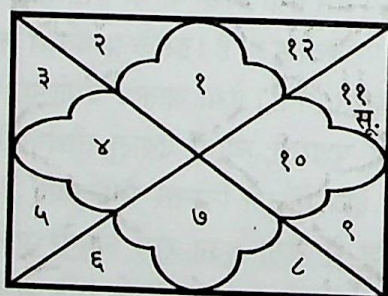
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें भाव लाभ, ऐश्वर्य, सम्पत्ति तथा आमदनी के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को अर्थोपार्जन के लिए अत्यन्त कठिन परिश्रम करना आवश्यक बना रहेगा। ग्यारहवें स्थान पर बैठा हुआ गर्म ग्रह अत्यन्त शक्तिशाली माना गया है, इस कारण जातक को लाभ तथा अच्छी आमदनी तो होगी, परन्तु उसे शारीरिक श्रम तथा बुद्धि

का उपयोग भी बहुत करना पड़ेगा।

इस भाव में स्थित सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से विद्या तथा सन्तान के पंचम् भाव को अपनी ही राशि में देख रहा है, अतः जातक विद्या-बुद्धि तथा सन्तान की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा। वह अपने स्वार्थ-साधन के लिए कटु-वचनों का प्रयोग भी करेगा और उससे लाभ भी उठाएगा।

मेष लग्नः
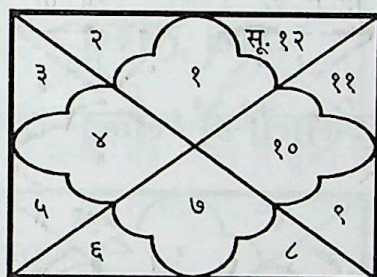
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे सूर्य का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय, हानि, दण्ड तथा रोग के भाव में अपने मित्र बृहस्पति की मीन राशि पर बैठा हुआ सूर्य जातक का बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध कराएगा, परन्तु खर्च की अधिकता बनी रहेगी। ऐसी स्थिति में जातक को अपना खर्च चलाने के लिए बुद्धिबल का अधिक प्रयोग करना पड़ेगा। सन्तान-पक्ष के लिए चिन्ता तथा हानि योग भी उपस्थित होंगे।

इस भाव में स्थित सूर्य अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से छठे घर में अपने मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है। अतः जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय एवं निर्भयता प्राप्त होगी, परन्तु उसे मानसिक चिन्ताओं का शिकार बने रहना पड़ेगा तथा विद्यालाभ के पक्ष में भी कमजोरी रहेगी।

मेष लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

मेष लग्नः
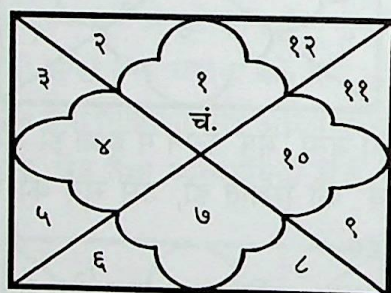
प्रथम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम' भाव में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले शरीर, जाति, विवेक, आकृति, मस्तिष्क के घर तथा मुख्य केन्द्र और लग्न स्थान में चन्द्रमा अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को घरेलू सुख तथा मानसिक शान्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बुद्धिमान, विवेकी, सुन्दर शरीर वाला एवं भूमि-मकान तथा घरेलू सुख-सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला होता है। इस भाव में स्थित चन्द्रमा सातवें स्त्री, व्यवसाय, विवाह के स्थान को अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर भी दृष्टि डालता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में भी सफलता एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है।

चन्द्रमा मन का स्वामी है। वह जब केन्द्र स्थान में बैठता है, तो जातक के मन को प्रसन्नता प्रदान करता रहता है। कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति

वाला जातक सुख, शान्ति, दाम्पत्य प्रेम, व्यवसायिक उन्नति एवं शारीरिक स्वास्थ्य को प्राप्त करता है।

मेष लग्नः

चं.२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८
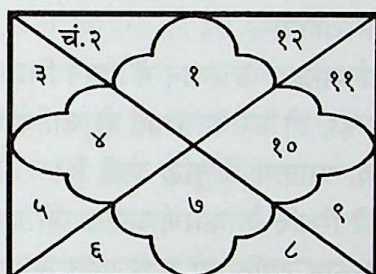
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे घर अर्थात् धन तथा कुटुम्ब स्थान में वृष का चन्द्रमा उच्च का होकर अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक बहुत धनी एवं जमीन-जायदाद वाला होता है। धन तथा कुटुम्ब के स्थान में मित्र क्षेत्री शुभ ग्रह चन्द्रमा की उपस्थिति के कारण जातक के कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु दूसरा स्थान धन का भी माना गया है, इसलिए जातक को अपनी माता के सम्बन्ध में किसी-न-किसी कमी का अनुभव भी होता रहेगा।

इस स्थान में बैठा हुआ चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि वाले आयु, चिन्ता, व्याधि, संकट तथा पुरातत्त्व के आठवें स्थान को भी देखता है। चन्द्रमा की इस दृष्टि के प्रभाव से जातक को आयु, स्वास्थ्य तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ न्यूनता एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा दैनिक जीवनक्रम में भी कुछ-न-कुछ अशान्ति बनी रहेगी।

मेष लग्नः
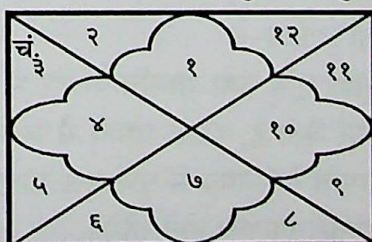
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई तथा पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर चन्द्रमा बैठा हुआ हो, तो उसके प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

चन्द्रमा की ऐसी स्थिति के कारण जातक की मानसिक-शक्ति प्रबल होती है, वह भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त करता है तथा आनन्दमय जीवन बिताता है।

इस स्थान से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु को धनुराशि वाले भाग्य, धर्म तथा विद्या के नौवें स्थान को भी देख रहा है, इसके प्रभाव से जातक का भाग्यवान, धर्मात्मा, विद्वान्, दानी तथा उदार स्वभाव वाला होना भी सुनिश्चित है। कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सौभाग्यशाली, विद्वान्, धनी, धर्मात्मा, मनोबल-सम्पन्न तथा यशस्वी होगा और उसे जीवन में सफलताएँ प्राप्त होती रहेंगी।

मेष लग्नः
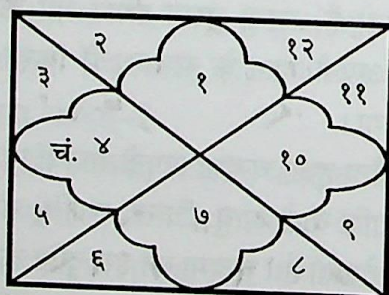
चतुर्थ भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे माता, सुख, भूमि तथा सम्पत्ति के घर में चन्द्रमा अपनी राशि कर्क पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है, इसके प्रभाव से जातक को अपनी माता, भूमि, मकान तथा सम्पत्ति के विषय में पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मनोरंजन के विविध साधन भी निरन्तर उपलब्ध होते रहेंगे।

चतुर्थ भाव में बैठा हुआ चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से, शनि की मकर राशि वाले दसवें घर को देख रहा है। दसवाँ घर पिता, राज्य, व्यवसाय तथा मान-प्रतिष्ठा का है, अतः चन्द्रमा की इस दृष्टि के प्रभाव से जातक का अपने पिता से कुछ वैमनस्य बना रहेगा तथा राजकीय कार्य एवं सम्मान के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहेगी। कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक पिता से कुछ वैमनस्य रखने वाला, माता से सुख प्राप्त करने वाला तथा धन, सम्पत्ति, कुटुम्ब-सुख एवं आनन्दोपभोग को प्राप्त करने वाला होता है।

मेष लग्नः

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ चं. ७ ९ ६ ८

पंचम् भावः चन्द्र
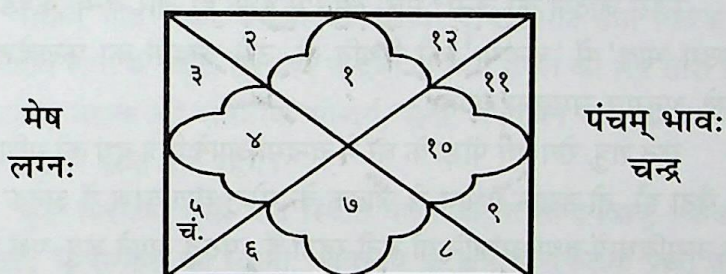
जिस जातक को जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम् भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के घर में चन्द्रमा अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक बहुत बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान एवं सन्ततिवान् होता है। उसे भूमि, माता, सम्पत्ति, मकान तथा मनोरंजन आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

उक्त स्थान में स्थित चन्द्रमा की सातवीं, दृष्टि, ग्यारहवें लाभ तथा आय के मनन में शनि की दृष्टि कुम्भ राशि पर पड़ रही है, अतः इस कारण जातक को अपनी आय के साधनों में कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु अपने शीतल स्वभाव एवं शान्त बुद्धि के कारण वह उन कठिनाईयों से हँसते हुए संघर्ष करके अन्त में सफलता प्राप्त करता रहेगा। कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक विद्वान्, बुद्धिमान, धन-सम्पत्तिवान्, गम्भीर, शान्त, सन्तोषी, अत्यन्त चतुर, भू-सम्पत्ति का स्वामी, माता के सुख से युक्त परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों का अनुभव

करने वाला होता है।

मेष लग्नः
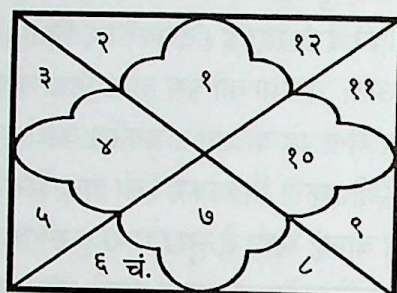
षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु, रोग एवं पीड़ा के घर में चन्द्रमा अपने मित्र बुध की राशि कन्या पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक के घरेलू वातावरण में अनेक प्रकार की असुविधायें तथा अशान्तियाँ बनी रहती हैं। परन्तु अपने शत्रु-पक्ष में वह शान्ति का अनुभव करता है तथा बड़े-बड़े संघर्षों, कठिनाईयों, विपत्तियों एवं संकटों पर अपने धैर्य एवं विनम्रता के बल पर विजय प्राप्त कर लेता है।

षष्ठम भाव स्थित चन्द्रमा की सातवीं दृष्टि बारहवें व्यय तथा हानि के भाव पर पड़ती है। बारहवें स्थान में मित्र गुरु की मीन राशि होने के कारण जातक अच्छे कार्यों में अत्यधिक व्यय करता है तथा अपने जन्म-स्थान से दूर के बाहरी स्थानों द्वारा सुख एवं लाभ भी प्राप्त करता है।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक धैर्यवान्, विनम्र, माता एवं घरेलू पक्ष में कमी का अनुभव करने वाला तथा अनेक प्रकार के झंझटों तथा खर्चों में फँसा रहने वाला होता है।

मेष लग्नः
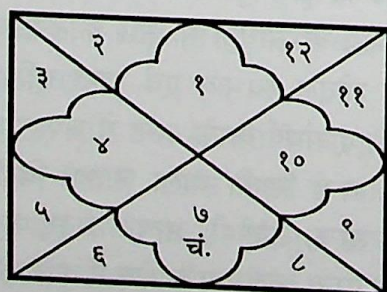
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें स्त्री, व्यवसाय, विवाह आदि के घर में चन्द्रमा अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को सौन्दर्य, भोग-विलास तथा स्त्री-सुख की प्राप्ति होती है। साथ ही भूमि, सम्पत्ति एवं व्यवसाय के मार्ग में भी सफलता प्राप्त होती है।

सप्तम भाव स्थित चन्द्रमा की सातवीं दृष्टि शरीर तथा विवेक के प्रथम भाव लग्न में पड़ती है। वहाँ चन्द्रमा के मित्र मंगल की मेष राशि होने के कारण, जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख, मनोरंजन एवं यश-सम्मान आदि निरन्तर प्राप्त होते रहेंगे।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सौन्दर्यवान्, स्त्रीवान्, विलासी, भू-सम्पत्ति का स्वामी, व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला तथा यश-सम्मान का अधिकारी होता है।
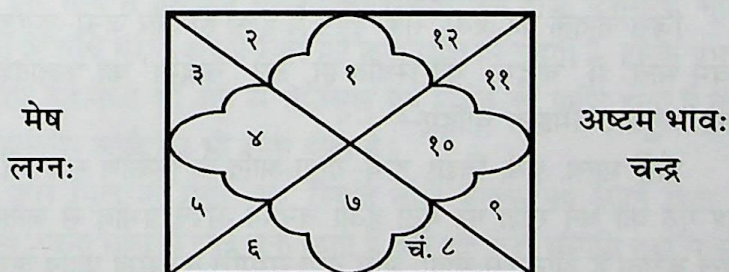
मेष लग्नः

अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे चन्द्रमा का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु, व्याधि, संकट, चिन्ता तथा पुरातत्त्व के घर में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में बैठे हुए नीच 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के माता सम्बन्धी सुख में कमी आती है तथा भूमि, पुरातत्त्व एवं अचल-सम्पत्ति की भी हानि पहुँचाती है।

ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को आयु के सम्बन्ध में भी संकटों का

सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार उसके दैनिक जीवन में भी विभिन्न प्रकार की कठिनाईयाँ उपस्थित होती रहती हैं। घरेलू सुख-शान्ति में भी कमी बनी रहती है। पुरातत्त्व के सम्बन्ध में हानि उठानी पड़ती है तथा अपनी जन्म-भूमि से बाहर जाकर भी रहना पड़ता है। परन्तु इस भाव में बैठे हुए चन्द्रमा की सातवीं उच्चदृष्टि धन, कुटुम्ब तथा राज्य के द्वितीय भाव में पड़ती है, इस कारण जातक को सुख तथा धन सम्बन्धी योग निरन्तर प्राप्त होते रहेंगे और वह सुख तथा धन उपार्जित करने के लिए विशेष मनोयोग के साथ निरन्तर प्रयत्नशील भी बना रहेगा।

मेष लग्नः
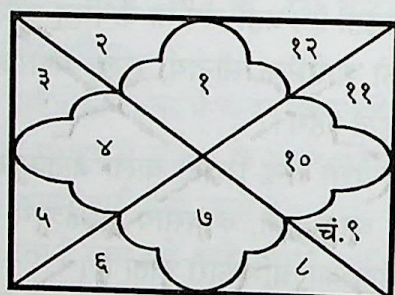
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें भाग्य, धर्म, विद्या, तीर्थ-यात्रा आदि के त्रिकोण स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर बैठा हुआ चन्द्रमा अपने प्रभाव से जातक को प्रबल बनाता है और उसे माता, भूमि तथा सम्पत्ति का सुख प्रदान करता है।

चन्द्रमा चूँकि मन का स्वामी है, और नौवें धर्म स्थान में बैठा है, इसलिए इसके प्रभाव से जातक का मन धर्म-कर्म की ओर विशेष आकर्षित बना रहेगा और वह दान-पुण्य, तीर्थ-यात्रा आदि सत्कार्य भी करता रहेगा।

नवम स्थान में बैठा हुआ चन्द्रमा अपनी सातवीं पूर्ण दृष्टि से अपने मित्र बुध की मिथुन राशि वाले पराक्रम एवं भाई के स्थान को भी देखता है। इस कारण जातक को भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होगा और उसके पराक्रम में भी वृद्धि रहेगी।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सौभाग्यवान्, सुखी,

धन-सम्पत्ति, भाई-बहिनों से युक्त धार्मिक विचारों का होता है।

मेष लग्नः

२ १२
३ १ ११
४ चं. १०
५ ७ ९
६ ८
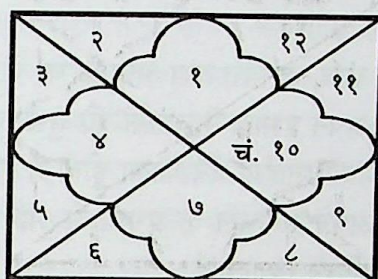
दशम भावः चन्द्र

जिसका जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें राज्य, पिता तथा मान-प्रतिष्ठा के केन्द्र स्थान में शनि की मकर राशि पर बैठे हुए चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता से वैमनस्य बना रहता है। उसे राज्य में सम्मान की प्राप्ति होती है तथा अपने परिश्रम एवं मनोयोग के द्वारा व्यवसाय में सफलता भी मिलती है।

इस भाव में बैठे हुए चन्द्रमा की सातवीं पूर्ण दृष्टि मातृसुख, भूमि, सम्पत्ति के चौथे घर में अपनी स्वयं की कर्क राशि पर पड़ती है, इसके प्रभाव से जातक को माता की ओर से श्रेष्ठसुख एवं शान्ति की प्राप्ति होती है तथा भूमि, सम्पत्ति आदि का भी लाभ होता है।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाले जातक का अपने पिता से वैमनस्य, परन्तु माता से स्नेह बना रहता है और वह धन-सम्पत्ति तथा मकान के सुख को अपने परिश्रम एवं मनोबल के योग से प्राप्त करता है।

मेष लग्नः
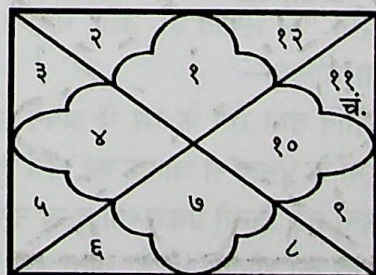
एकादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ, आय, सम्पत्ति तथा आयु के घर में शनि की कुम्भ राशि पर बैठा हुआ चन्द्रमा अपने प्रभाव से जातक को सुखपूर्वक आय के साधनों में कुछ असन्तोष एवं कठिनाईयाँ देने वाला होता है। फिर भी, ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक अपने मनोबल के प्रभाव से आय के साधनों में वृद्धि करता है तथा सुखी-जीवन बिताता है।

इस स्थान पर बैठे हुए चन्द्रमा का सातवीं पूर्ण दृष्टि अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में पड़ती है। यह पाँचवाँ स्थान विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का है, अतः इसके प्रभाव से जातक का सन्तान-पक्ष प्रबल होता है और उसे विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होती है।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक बुद्धिमान्, विद्वान्, सन्ततिवान् तथा कुछ कठिनाईयों के साथ अपनी आय एवं सुख के साधनों में वृद्धि करने वाला होता है।
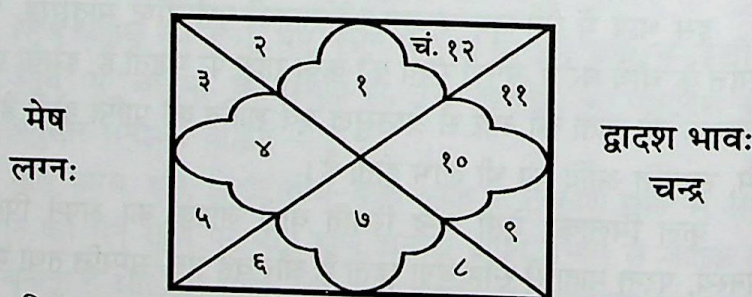
मेष लग्नः

द्वादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय, हानि तथा रोग के घर में अपने सामान्य मित्र गुरु की राशि पर बैठे हुए चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च शुभ कामों तथा ठाठ-बाट में होता रहेगा, परन्तु उसे किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा। बारहवाँ घर बाहरी स्थानों से सम्बन्ध का द्योतक भी है, अतः इस भवन में चन्द्रमा की स्थिति से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध बना रहेगा।

इस भवन में स्थित चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि वाले शत्रु, चिन्ता तथा पीड़ा के घर को देखता है, इस कारण जातक शत्रु-पक्ष के प्रति शान्तिपूर्वक रवैया अपनाएगा और हर प्रकार के झगड़े-झंझटों में बुद्धिमत्ता एवं सन्तोष से काम लेगा।

कुल मिलाकर ऐसी चन्द्र स्थिति वाला जातक सुखी तथा सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करता है। वह शत्रु-पक्ष पर अपनी शालनीता एवं सन्तोषी वृत्ति के द्वारा विजय प्राप्त करता है, परन्तु उसके माता के सुख में थोड़ी कमी बनी रहती है।
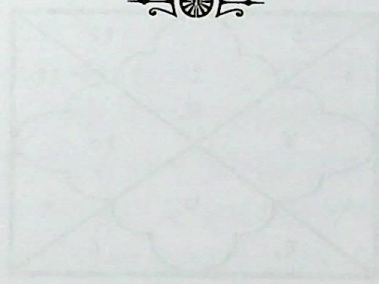
मेष लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

मेष लग्नः
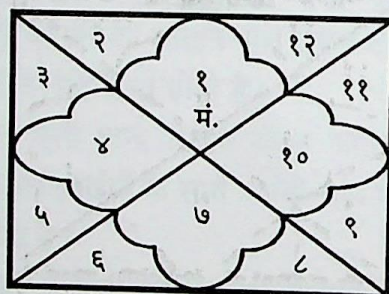
प्रथम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले शरीर स्थान में अपनी ही राशि पर बैठे हुए मंगल के प्रभाव से जातक का शरीर पुष्ट होता है तथा उसमें आत्मबल प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण उसे कभी-कभी रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है।

मंगल की ऐसी स्थिति होने पर जातक को माता के सुख, घर, मकान आदि के सम्बन्ध तथा व्यवसाय एवं पत्नी के मामले में कुछ परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। अष्टम आयु के घर को पूर्ण दृष्टि से देखने के कारण जातक की आयु लम्बी होती है तथा उसे पुरातत्व का लाभ भी होता है।

मेष लग्नः
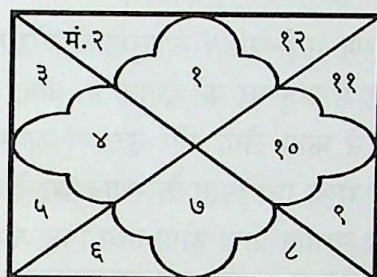
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव में धन एवं कुटुम्ब के घर में मंगल शुक्र की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को धन-संचय में कमी तथा शरीर-स्थान में कष्टों का सामाना करना पड़ता है। मंगल चतुर्थ मित्रदृष्टि से विद्या-बुद्धि के पंचम् स्थान को देखता है। अतः जातक को विद्या प्राप्ति के मार्ग में कठिनाईयों तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कष्टों का सामना करना पड़ेगा। सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्त्व भाव को देखने के कारण जातक को दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ होगा। मंगल आठवीं मित्रदृष्टि से भाग्य के घर को भी देखता है, अतः भाग्य में भी रुकावटें आएँगी।

मेष लग्नः
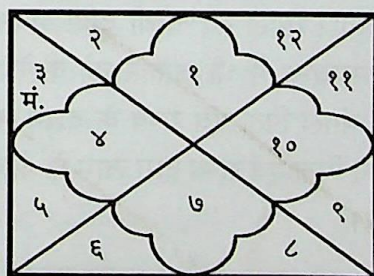
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर मंगल की स्थिति होने पर जातक को पराक्रम तथा हिम्मत की विशेष प्राप्ति होती है, परन्तु

अष्टमेश होने के कारण भाई–बहिन के सुख में परेशानियाँ बनी रहती हैं। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से शत्रु घर को देखता है, अतः जातक अपने शत्रुओं को मारने में हिम्मत से काम लेगा और उन पर अपना प्रभाव भी रखेगा। आठवीं उच्चदृष्टि से राज्य एवं पिता के स्थान को देख रहा है, इस कारण जातक को राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त होगा तथा पिता का सुख भी मिलेगा।

मेष लग्नः
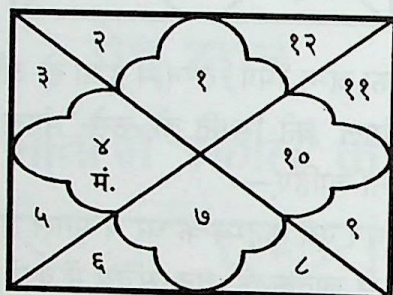
चतुर्थ भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे भाव में माता, सुख तथा भूमि के घर में मंगल नीच का होकर अपने मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी प्राप्त होती है। इसी प्रकार भूमि, मकान एवं घरेलू सुखों में भी कमजोरी बनी रहेगी। मंगल की चौथी दृष्टि भवन पर पड़ती है, अतः स्त्री एवं व्यसाय के सम्बन्ध में भी जातक को कलेश उठाने पड़ेंगे। परन्तु सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल पिता एवं राज्य के दशम भाव को भी देखता है, अतः जातक को अपने पिता एवं राज्य द्वारा लाभ के क्षेत्र में जातक को विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

मेष लग्नः
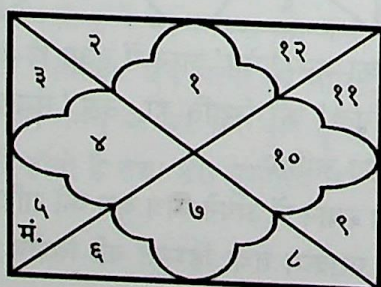
पंचम् भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम् भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या के स्थान में अपने मित्र, सूर्य की सिंह राशि पर मंगल की स्थिति होने से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। मंगल चौथी दृष्टि से पुरातत्त्व एवं आयु भाव को अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, अतः जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा और उसे पुरातत्त्व का लाभ नहीं होगा। सातवीं मित्रदृष्टि से लाभ स्थान के योग भी प्राप्त होंगे। साथ ही आठवीं मित्रदृष्टि से बारहवें व्यय भावों को देख रहा है, अतः खर्च अधिक होगा, परन्तु बाहरी स्थानों से आजीविका प्राप्त होने के सम्बन्ध बने रहेंगे।

मेष लग्नः
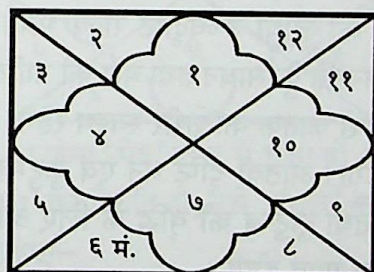
षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में मंगल अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाए रहेगा तथा बहुत निडर और साहसी बना रहेगा। मंगल की चौथी मित्रदृष्टि भाग्यभवन पर पड़ती है, अतः भाग्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ उत्पन्न होंगी। सातवीं मित्रदृष्टि व्यय भाव पर पड़ने से खर्च अधिक होगा तथा बाहरी स्थानों से लाभ भी प्राप्त होगा। आठवीं दृष्टि अपनी ही मेष राशि पर पड़ने से शरीर स्वस्थ रहेगा तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव प्रबल बना रहेगा।

मेष लग्नः
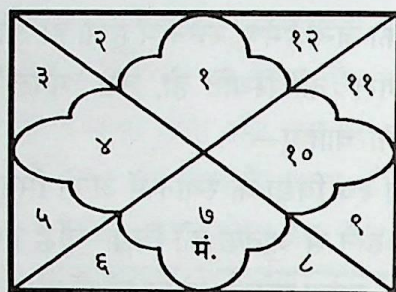
सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सप्तम केन्द्र तथा स्त्री-भवन में मंगल की स्थिति होने से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट रहेगा तथा व्यवसाय में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। मंगल की चौथी उच्चदृष्टि राज्य भवन पर पड़ती है, अतः पिता एवं राज्य द्वारा उन्नति के साधन तथा यश की प्राप्ति होगी। सातवीं दृष्टि शरीर भवन पर पड़ने से जातक का शरीर स्वस्थ रहेगा और वह प्रभावशाली तथा यशस्वी बना रहेगा। आठवीं दृष्टि धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय भवन पर पड़ती है, अतः धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए अधिक प्रयत्न करने पर भी थोड़ी ही सफलता प्राप्त होगी।

मेष लग्नः
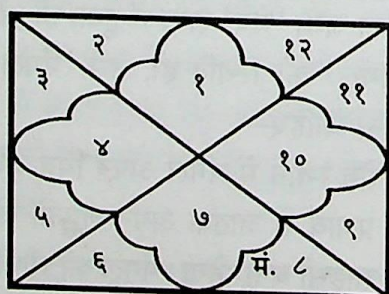
अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु-भवन में मंगल स्वक्षेत्री होकर बैठा हो, तो जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है, परन्तु शरीर स्थान

का स्वामी होकर अष्टम भवन में बैठा है, इसलिए शरीर की सुन्दरता में कमी रहेगी। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से लाभ-स्थान को देख रहा है, अतः आमदनी के क्षेत्र में परेशानियों के साथ सफलता मिलेगी। सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु की राशि में देखने से धन तथा कुटुम्ब के विषय में भी असन्तोष बना रहेगा और आठवीं मित्रदृष्टि से पराक्रम स्थान को देख रहा है, अतः पराक्रम अधिक होगा, परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी रहेगी।
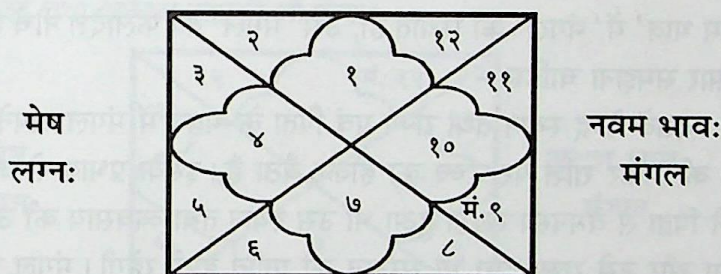
मेष लग्नः

नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें, त्रिकोण एवं भाग्य स्थान में मंगल की स्थिति के प्रभाव से जातक का भाग्य अच्छा बना रहेगा, परन्तु अष्टमेश होने के कारण कुछ असन्तोष एवं कठिनाईयों का सामाना भी करना पड़ेगा। चौथी मित्रदृष्टि से व्यय भाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहेगी तथा बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध बना रहेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से पराक्रम के द्वितीय भाव को देख रहा है, अतः पराक्रम अधिक रहेगा परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी रहेगी। आठवीं नीचदृष्टि से माता तथा भूमि के चतुर्थ भाव को देख रहा है, अतः माता के सुख एवं भूमि, मकान आदि के सम्बन्ध से भी कमी बनी रहेगी।

मेष लग्नः **दशम भावः मंगल**
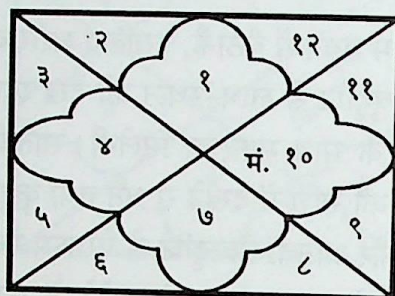
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र स्थान तथा राज्य एवं पिता के भवन में मंगल अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर उच्च का होकर बैठा है। इसके प्रभाव से जातक अपने पिता से वैमनस्य रखता हुआ भी उस स्थान तथा व्यवसाय की उन्नति करेगा और उसे राज्य द्वारा भी सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। मंगल चौथी दृष्टि से शरीर स्थान को स्वक्षेत्री बनकर देख रहा है अतः शारीरिक प्रभाव में उन्नति रहेगी। सातवीं नीचदृष्टि से माता तथा भूमि के चौथे स्थान को देख रहा है, अतः माता तथा भूमि के सुख में कमी का योग बनेगा। परन्तु आठवीं मित्रदृष्टि से विद्या एवं सन्तान-स्थान को भी देख रहा है, अतः विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी।

मेष लग्नः
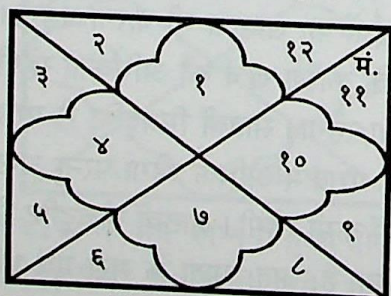
एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सममित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित

मंगल के प्रभाव से जातक को आय के साधनों में सफलता प्राप्त होती रहेगी, परन्तु अष्टमेश का दोष होने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ भी आती रहेंगी। मंगल चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय भाव को अपने शत्रु शुक्र की राशि में देख रहा है, अतः धन तथा कुटुम्ब से असन्तोष बना रहेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से विद्या एवं सन्तान भवन को देख रहा है, अतः सन्तान तथा विद्या के पक्ष में भी कुछ कमी बनी रहेगी और आठवीं मित्रदृष्टि से छठे शत्रु भवन को देख रहा है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला तथा अत्यन्त साहसी भी होगा।

मेष लग्नः
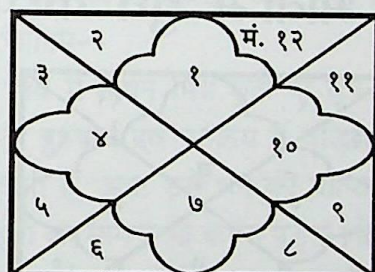
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक बहुत अधिक खर्च करने वाला, बाहरी स्थानों में भ्रमण करने वाला तथा शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी पाने वाला रहेगा। मंगल की चौथी मित्रदृष्टि पराक्रम भवन पर पड़ती है, अतः जातक पराक्रमी तो होगा, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण उसे भाई-बहिनों के सुख में कुछ कठिनाईयाँ भी रहेंगी। सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में प्रबल बना रहेगा और आठवीं दृष्टि स्त्री भवन पर पड़ने के कारण जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा विशेष परिश्रम के बाद ही सफलता मिलेगी।

मेष लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

मेष लग्नः
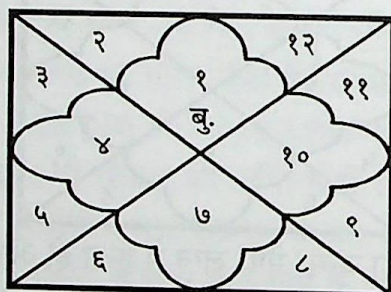
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक पुरुषार्थी होता है, परन्तु षष्ठेश का दोष होने के कारण शरीर रोग-पीड़ित भी बना रहता है। भाई-बहिनों के सुख-सम्बन्ध में भी इसी कारण कुछ कमी आ जाती है। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय के भवन को देखता है, अतः जातक को पुरुषार्थी एवं परिश्रम द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, परन्तु स्त्री-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलेगी।

मेष लग्नः
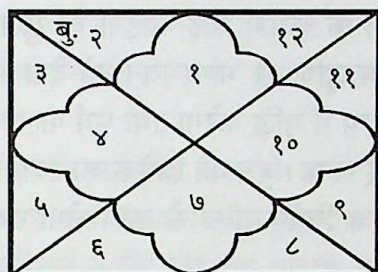
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन भाव में अपने मित्र शुक्र के वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ एवं पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु बुध स्वयं शत्रु स्थान का स्वामी है, अतः उसे धन की प्राप्ति के मार्ग में कभी-कभी हानि एवं कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ेगा। द्वितीय भाव बन्धन का भी माना गया है, अतः भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहेगी। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से आयु स्थान को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होगी तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होगा।

मेष लग्नः
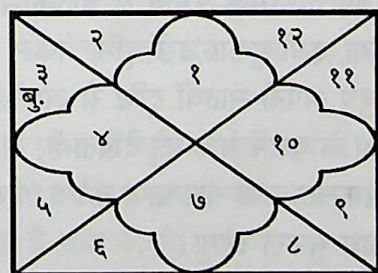
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम स्थान में अपनी ही राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अत्यन्त पराक्रमी तथा हिम्मती बना रहेगा। बुध शत्रु स्थान का स्वामी भी है, अतः जातक अपने शत्रुओं पर बड़ा भारी प्रभाव रखेगा, परन्तु बुध के

शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से भाग्यभवन को देख रहा है, अतः जातक अपने पराक्रम द्वारा भाग्य में वृद्धि करेगा तथा धर्म पालन में भी कुछ कमी के साथ अपना मन लगाए रहेगा। बुध को विवेक का स्वामी माना गया है, अतः उसके प्रभाव से जातक विवेकयुक्ति से काम लेगा तथा परिश्रमी भी बना रहेगा।

मेष लग्नः
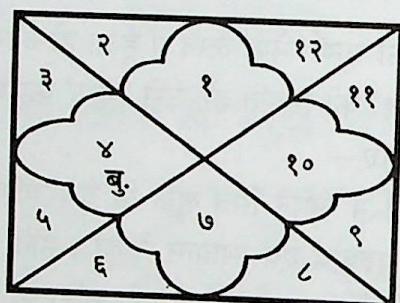
चतुर्थ भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे भाव में माता, सुख, भूमि के स्थान में बुध अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक माता के सुख में कुछ कमी का अनुभव करेगा, इसी प्रकार उसे भूमि, मकान आदि के पक्ष में भी कमियाँ बनी रहेंगी। बुध अपनी सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शनि की मकर राशि में राज्य एवं पिता के दशम भाव को देखता है, अतः जातक पिता एवं राज्य के पक्ष में भी सफलता तथा यश प्राप्त करेगा। ऐसे जातक का जीवन कुछ परेशानियों के साथ सफल रहेगा।

मेष लग्नः
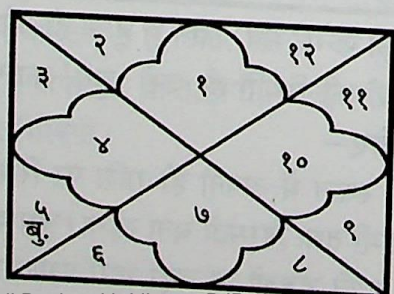
पंचम् भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम् भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के सुख को प्राप्त करने में विशेष परिश्रम करके सफलता पाएगा, क्योंकि बुध में शत्रु स्थानाधिपति होने का दोष विद्यमान है। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से लाभ के ग्यारहवें स्थान को अपने सामान्य मित्र शनि की राशि में देख रहा है, अतः जातक अपनी बुद्धि एवं विवेक के द्वारा भाग्य तथा आमदनी की वृद्धि करेगा साथ ही शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता रहेगा।
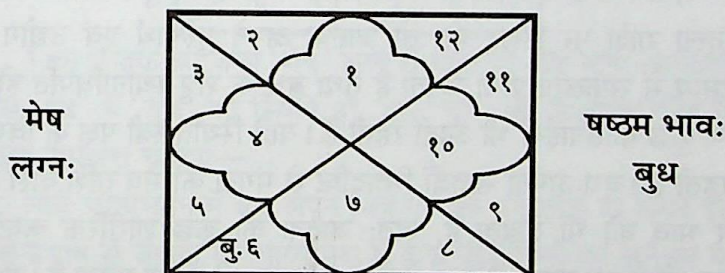
मेष लग्नः

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ बु.६ ८

षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में बुध स्वक्षेत्री एवं उच्च क्षेत्री का होकर कन्या राशि पर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना विशेष प्रभाव रखने वाला होता है तथा अपने पुरुषार्थ शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण भाई-बहिन से कुछ विरोध भी रखता है तथा पराक्रम में कुछ आन्तरिक कमी का अनुभव भी होता है। बुध सातवीं नीचदृष्टि से व्यय स्थान को देखता है, अतः जातक को खर्च एवं बाह्य स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं, परन्तु वह हिम्मत नहीं हारता।

मेष लग्नः
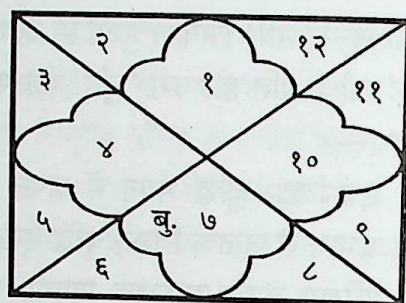
सप्तम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सप्तम केन्द्र एवं स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में बुध अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित हो, तो जातक अपने पुरुषार्थ एवं उद्योग द्वारा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है तथा बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण कुछ कठिनाईयाँ भी आती रहती हैं। यही स्थिति स्त्री पक्ष के विषय में भी रहती हैं। बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि वाले प्रथम शरीर भाव को भी देखता है, अतः जातक को कुछ शारीरिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है तथा रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है। बुध की ऐसी स्थिति के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के द्वारा सहयोग भी मिलता है तथा विवेक-बुद्धि प्रबल बनी रहती है।

मेष लग्नः
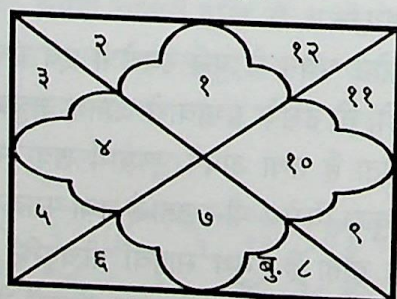
अष्टम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के भाव में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक

राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पुरुषार्थ, आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कठिनाईयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उत्साह में कमी आ जाती है तथा शत्रु-पक्ष से हानि पहुँचने की सम्भावना भी रहती है। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से धन कुटुम्ब के द्वितीय भाव को अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में देखता है, अतः जातक को अर्थोपार्जन के लिए विशेष परिश्रम एवं दौड़-धूप करनी पड़ती है।
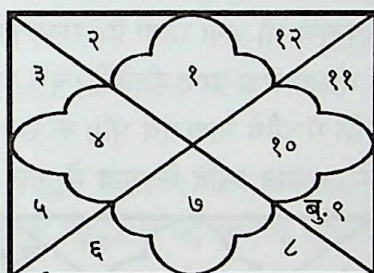
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें भाग्यभवन में बुध अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को भाग्य पक्ष में कुछ परेशानियों का अनुभव करना पड़ता है, परन्तु शत्रु-पक्ष के सम्बन्ध से उसे भाग्य सम्बन्धी सफलताएँ प्राप्त होती रहती हैं। बुध सातवीं दृष्टि से द्वितीय पराक्रम स्थान को अपनी ही राशि में देखता है, इस कारण जातक का पराक्रम बल बना रहता है और उसे अपने विवेक, पराक्रम एवं भाई-बहिनों द्वारा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ झंझटों के साथ उन्नति करता है।
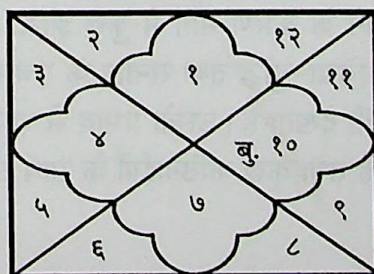
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र एवं राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर बैठे हुए बुध के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम द्वारा अत्यधिक उन्नति करता है, परन्तु बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण पिता के साथ कुछ वैमनस्य भी बना रहता है। राज्य द्वारा मान-प्रतिष्ठा तथा विवेक द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। बुध अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में चौथे माता एवं भूमि के स्थान को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहती है।

मेष लग्नः
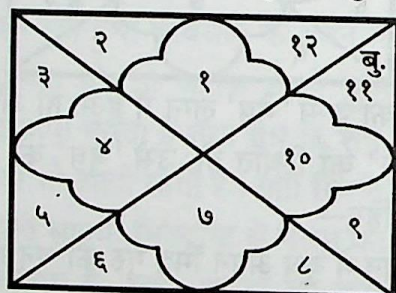
२ १२ बु. ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम तथा विवेक द्वारा आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है तथा भाई-बहिन का लाभ भी पाता है, परन्तु बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण मार्ग में कुछ झंझट भी बने रहते हैं। बुध सातवीं मित्रदृष्टि से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के पंचम भाव को अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि भी देखता है। उसके प्रभाव से जातक को विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा कुछ कठिनाईयों के साथ सन्तान पक्ष में भी सुख प्राप्त होता है।

मेष लग्नः
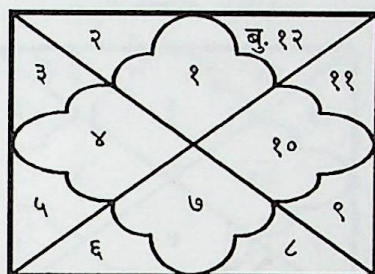
द्वादश भावः बुध

ज़िस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्ययस्थान में अपने सामान्य मित्र गुरु की राशि में बैठे हुए नीच के बुध के प्रभाव से जातक को खर्च के मामलों में तथा बाहरी सम्बन्धों में परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी बनी रहती है। बुध के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण सभी क्षेत्रों में कठिनाईयाँ भी आती रहती हैं। बुध सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रुस्थान को अपनी कन्या राशि में देखता है, इसलिए जातक अपने विवेक के द्वारा शत्रुपक्ष पर प्रभाव स्थापित करवाने में सफल होता है और वह गुप्त युक्तियों से कार्य निकालता है एवं धैर्यवान् भी होता है।

मेष लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मेष लग्नः
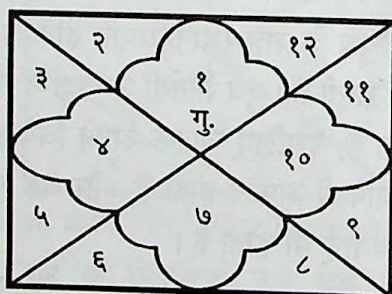
प्रथम भावः गुरु

प्रथम केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से जातक अत्यधिक यश, उन्नति एवं बाहरी स्थानों से प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से सन्तान एवं विद्या स्थान को देखता है, इसलिए जातक बुद्धिमान, विद्वान् तथा सन्ततिवान् भी होता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु की तुला राशि में स्त्री एवं व्यवसाय के स्थान को देखता है। अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ उपस्थित होती हैं। नौवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को स्वक्षेत्र में देखता है। अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक यशस्वी, धनी, सुखी, धर्मात्मा, विद्वान् तथा बुद्धिमान होता है।

मेष लग्नः
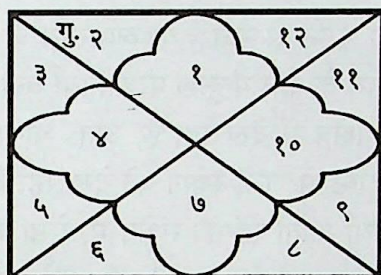
द्वितीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

द्वितीय धन कुटुम्ब के भाव में शत्रु शुक्र की वृष राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्पर्क से धन एवं भाग्य की वृद्धि करता है, परन्तु कभी-कभी हानि भी उठाता है। गुरु की पाँचवीं दृष्टि शत्रु स्थान पर पड़ती है, अतः शत्रु-पक्ष में अपनी कार्य-कुशलता से सफलता पाता है। सातवीं मित्रदृष्टि आयु एवं पुरातत्त्व भाव में पड़ने से आयु एवं पुरातत्त्व भाव में पड़ने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। नौवीं नीचदृष्टि पिता एवं राज्य स्थान में पड़ने से पिता तथा राज्य के पक्ष में परेशानी एवं समस्या बनी रहती है तथा उन्नति के मार्ग में कठिनाईयाँ आती हैं।

मेष लग्नः
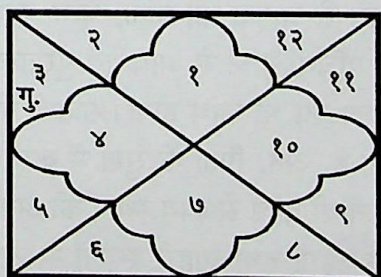
तृतीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक भाई-बहिनों का सुख तथा पराक्रम की शक्ति प्राप्त

करता है। गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्त्री तथा व्यवसाय के भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियाँ बनी रहेंगी। सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, अतः भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होगी और नौवीं शत्रुदृष्टि से जन्म स्थान को देख रहा है, अतः आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाईयाँ आती रहेंगी। संक्षेप में, ऐसा जातक कठिनाईयों के साथ अपने भाग्य, धर्म तथा व्यवसाय की वृद्धि करेगा तथा कुछ परेशानियों के साथ स्त्री तथा भाई-बहिनों का सुख प्राप्त करेगा।

मेष लग्नः

२ १२ ३ १ ११ ४ गु. १० ५ ७ ९ ६ ८
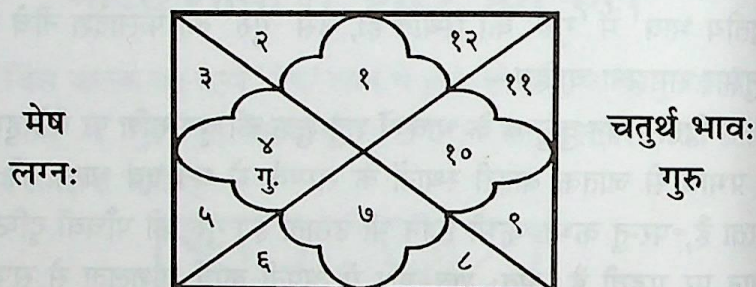
चतुर्थ भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र तथा माता एवं भूमि के भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का भरपूर सुख प्राप्त होगा। गुरु पाँचवीं दृष्टि से आय एवं पुरातत्त्व भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होगा। सातवीं नीचदृष्टि से पिता एवं राज्य भवन को देखता है, अतः पिता के सुख में कमी एवं राज्य के क्षेत्र में असन्तोष बना रहेगा। नौवीं दृष्टि से व्यय स्थान को अपनी राशि में देखता है, इसलिए खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध बनेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यशाली, धर्मात्मा तथा सम्पत्तिवान होता है।

मेष लग्नः
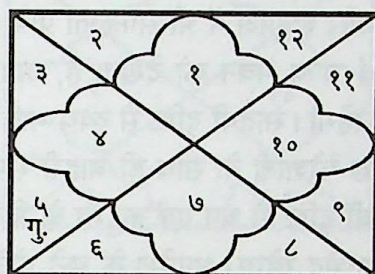
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं सन्तान तथा विद्या के भाव में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक विद्वान् तथा सन्ततिवान् होता है। गुरु पाँचवीं दृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः दृष्टि से भाग्यभवन को स्वराशि में देखता है, अतः बुद्धि के योग से जातक के भाग्य की वृद्धि होती रहेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से लाभ स्थान को देखता है, अतः आय के साधनों में कभी-कभी अड़चने पड़ेंगी और नौवीं मित्रदृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, बुद्धिमान, धर्मात्मा तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।

मेष लग्नः
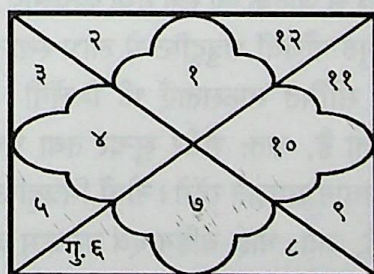
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति के मार्ग में रुकावटें तो आती हैं, परन्तु भाग्य

की वृद्धि भी होती है और शत्रुपक्ष में भी सफलता प्राप्त होती है। गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से पिता एवं राज्य भवन को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के सम्बन्ध में कमी बनी रहेगी। सातवीं दृष्टि से व्यय भाव को स्वक्षेत्र में देखता है, अतः खर्च की कुछ परेशानी के साथ ही बाहरी सम्बन्ध में सफलता भी प्राप्त होती रहेगी। नौवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय स्थान को देखता है, अतः कुटुम्ब से मतभेद रहेगा। भाग्येश के छठे होने के कारण दूसरों के सहयोग से भाग्य की उन्नति होगी।

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयाँ प्राप्त होगी। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से लाभ स्थान को देखता है, अतः आमदनी के मार्ग में सीमित सफलताएँ भी मिलेंगी। सातवीं मित्रदृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः शरीर सुन्दर तथा प्रभावशाली रहेगा और लोग जातक को भाग्यवान समझते रहेंगे। नौवीं मित्रदृष्टि से पराक्रम एवं भाई के स्थान को देखता है, अतः भाई-बहिन एवं पराक्रम का पक्ष अच्छा रहेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक कुछ कठिनाईयों के साथ भाग्योन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है तथा रूपवान् होता है।

मेष लग्नः

अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से उसके व्यय स्थान में होने के कारण जातक की भाग्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा अपयश प्राप्त होता है, परन्तु उसे आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। इस स्थान से गुरु की पाँचवीं दृष्टि व्ययभाव में पड़ती है, अतः खर्च अधिक होगा एवं बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध बना रहेगा। सातवीं दृष्टि धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय स्थान में पड़ने से धन एवं कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होगी तथा नौवीं उच्चदृष्टि चौथे माता और भूमि के स्थान में पड़ने से जातक को माता, भूमि तथा मकान का सुख भी प्राप्त होगा।

मेष लग्नः
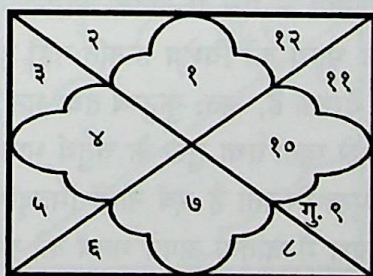
नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण तथा भाग्य एवं धर्म के स्थान में गुरु के स्वक्षेत्री होने के

प्रभाव से जातक अत्यन्त भाग्यशाली तथा धर्मात्मा होता है। यहाँ से गुरु की पाँचवीं दृष्टि शरीर स्थान पर मंगल की मेष राशि पर पड़ती है। अतः जातक का शरीर स्वस्थ एवं सुन्दर होगा। सातवीं मित्रदृष्टि भाई एवं पराक्रम के तृतीय भाव में पड़ने से जातक भाई-बहिनों का सुख पायेगा तथा पराक्रमी होगा और नौवीं मित्रदृष्टि विद्या एवं सन्तान के पंचम भाव में पड़ने से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त करेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान, धर्मात्मा, सम्पत्तिवान तथा सुन्दर होता है।

मेष लग्नः
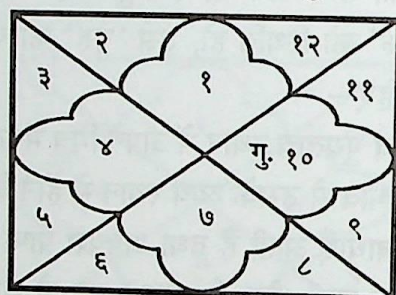
३	२ १ १२	११
४		गु. १०
५	६ ७ ८	९

दशम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु शनि की राशि पर बैठे हुए व्ययेश तथा नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष में हानि एवं व्यवसाय के पक्ष में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, अतः उसके भाग्य की विशेष उन्नति नहीं हो पाती। गुरु पाँचवीं दृष्टि से धन भाव को देखता है, अतः कुटुम्ब तथा धन का अल्प लाभ होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से माता तथा सुख के चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता और भूमि का सुख मिलता है एवं नौवीं मित्रदृष्टि से शत्रु स्थान को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में जातक अपने भाग्य की प्रबलता द्वारा सफलता प्राप्त करता है।
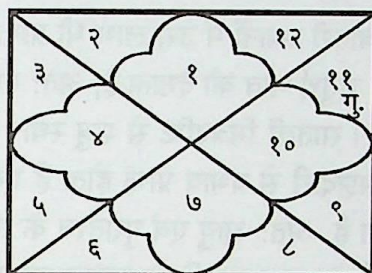
मेष लग्नः

एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभभवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर बैठे हुए व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को भाग्य की प्रबलता से धन का लाभ तो होता है, परन्तु उसमें कुछ कमी बनी रहती है। इस स्थान से गुरु पाँचवीं दृष्टि से पराक्रमभवन को देखता है, अतः भाई-बहिन एवं पराक्रम के पक्ष में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से विद्या एवं पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या-बुद्धि एवं सन्तान पक्ष का सहयोग प्राप्त होगा तथा नौवीं दृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय के सप्तम भाव को अपने शत्रु की तुला राशि में देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाईयों के साथ सफलता मिलेगी।

मेष लग्नः
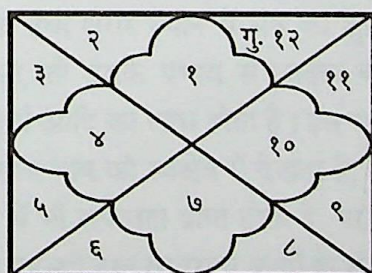
द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में स्वराशिगत गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च

अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों में उसे लाभ भी प्राप्त होता है। इस स्थान से गुरु पाँचवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, मकान एवं भूमि का सुख बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से शत्रु स्थान को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में अपनी समझदारी से प्रभाव प्राप्त होता है एवं नौवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी जातक को सफलता मिलती है, परन्तु बृहस्पति के व्यय स्थान में होने के कारण इन सभी क्षेत्रों में सफलता पाने के लिए जातक को अनेकों कठिनाईयों का भी सामना करना पड़ता है।
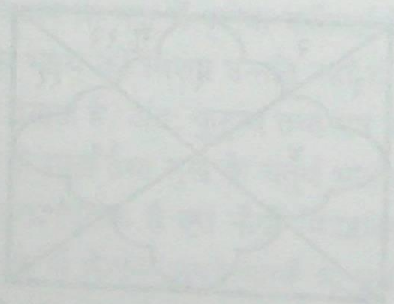
मेष लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

मेष लग्नः
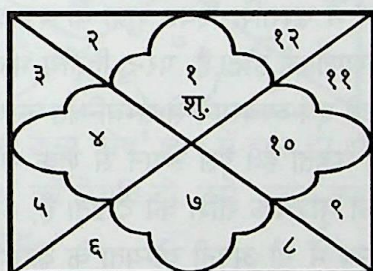
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में मेष का शुक्र, अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित हो, तो उसके प्रभाव से जातक को सुन्दर शरीर, सम्मान, सफलता एवं चातुर्य आदि का लाभ होता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय भाव को स्वक्षेत्र में देखता है, अत: जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है, परन्तु शुक्र के धनेश होने के कारण जातक को गृहस्थी तथा व्यवसाय कार्यों के संचालन में कुछ कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, सुन्दर, यशस्वी एवं भाग्यशाली होता है।

मेष लग्नः
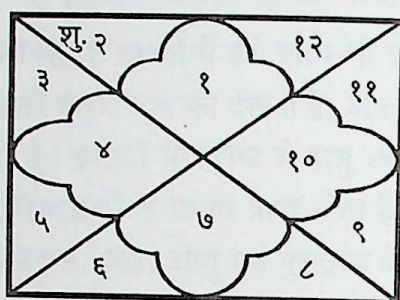
द्वितीय भाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन भवन में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक धनवान, कुटुम्बवान तथा सौभाग्यशाली होता है, परन्तु द्वितीय भाव बन्धन का भी होता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय से सम्बन्धित कार्यों में कुछ कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी अपनी योग्यता के कारण सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक पूरे सुखोपभोग का जीवन व्यतीत करता है।

मेष लग्नः
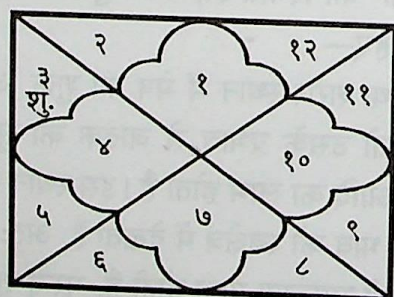
तृतीय भाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तृतीय पराक्रम स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं चातुर्य में वृद्धि होती है, जिसके

कारण उसे कुटुम्ब तथा धन का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख होते हुए भी कुछ कठिनाईयाँ आती रहती हैं। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से भाग्य तथा धर्म के नौवें भाव को देखता है, अतः जातक भाग्यवान होने के साथ ही धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है और उसे कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती रहती है।

मेष लग्नः
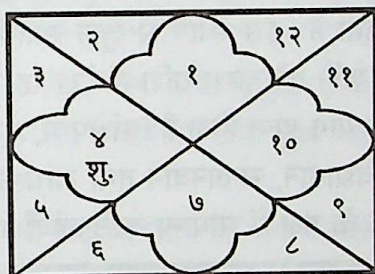
२ १२ ३ १ ११ ४ शु. १० ५ ७ ९ ६ ८

चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र माता तथा सुख के चतुर्थ भाव में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी बनी रहती है। इसी प्रकार स्त्री के सम्बन्ध में कुछ कमी के साथ सुख मिलता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को राज्य एवं पिता के क्षेत्र में प्रतिष्ठा एवं उन्नति की प्राप्ति होती है। साथ ही पैतृक-सम्पत्ति एवं व्यावसायिक सफलता भी मिलती है।

मेष लग्नः
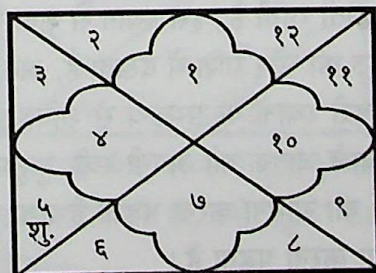
पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भाव में अपने शत्रु सूर्य की राशि में स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु यह स्थान बन्धन का भी है, अतः कुछ कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से लाभ स्थान को अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, अतः जातक को आमदनी का भी श्रेष्ठ योग प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यशाली, विद्यावान, सन्तानवान तथा लाभ उठाने वाला होता है, परन्तु सन्तान एवं स्त्री के पक्ष में सामान्य कठिनाईयाँ आती रहती हैं।
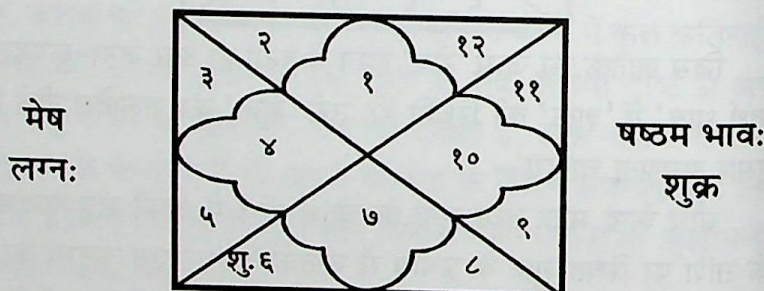
मेष लग्नः

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ शु.६ ८

षष्ठम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में चतुराई में काम लेना पड़ता है एवं कठिनाईयाँ उपस्थित होती रहती है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से व्यय भाव को अपने शत्रु गुरु की मीन राशि में देखता है, अतः खर्च की अधिकता बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपनी स्त्री, कुटुम्ब तथा व्यवसाय के सम्बन्ध में परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धि बल का अधिक प्रयोग करना पड़ता है।

मेष लग्नः
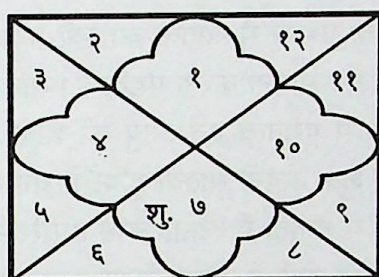
सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भाव में स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। इस स्थान से शुक्र की सातवीं दृष्टि अपने सामान्य शत्रु मंगल की दृष्टि मेष राशि वाले शरीर स्थान में पड़ती है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, मान-प्रतिष्ठा तथा कार्य-कुशलता की प्रगति भी होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक प्रतिभावान, धनवान, सुन्दर, प्रतिष्ठित, सुखी तथा कौटुम्बिक शक्ति से सम्पन्न होता है, परन्तु धन स्थान का स्वामी बन्धन का कार्य भी करता है, अतः उसे व्यवसाय एवं स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाईयाँ भी उठानी पड़ेंगी।

मेष लग्नः
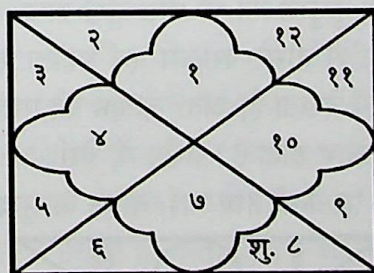
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु तथा आयुभवन में अपने सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक

राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही धन की भी कमी बनी रहती है, परन्तु उसे पुरातत्व एवं आयु की शक्ति विशेष रूप से प्राप्त होती है। इस स्थान से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय भाव को अपनी राशि में देखता है, अतः कठिन परिश्रम के साथ जातक के धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने परिश्रम एवं चतुराई से प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।
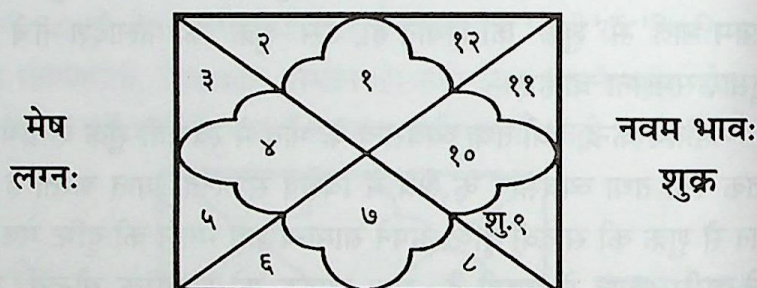
मेष लग्नः

नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण तथा भाग्यभवन में अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यशाली तथा चतुर होता है और उसे गृहस्थी, स्त्री तथा कुटुम्ब का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से तीसरे पराक्रम एवं सहोदर स्थान को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः जातक को पराक्रम एवं भाई-बहिन के श्रेष्ठ सुख का भी लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, धनी, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा भाई-बहिन के सुख से सम्पन्न होता है।
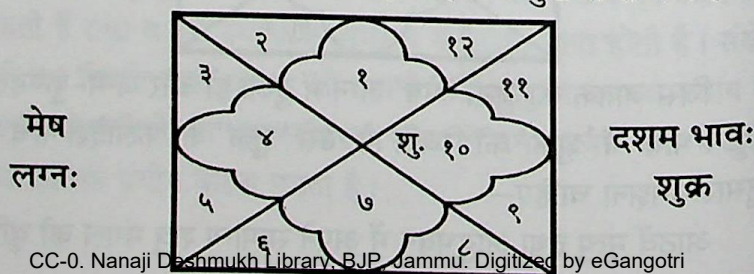
जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केतु तथा पिता एवं राज्य स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को अपने पिता से एवं राज्य के सम्बन्ध से विशेष लाभ प्राप्त होता है। इस स्थान से शुक्र की सातवीं दृष्टि अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि में चौथे माता एवं सुख के भवन में पड़ती है, अतः जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि का भी सुख प्राप्त होगा। संक्षेप में, ऐसी स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, भू-सम्पत्तिवान्, यशस्वी, माता-पिता एवं स्त्री का सुख प्राप्त करने वाला अत्यन्त चतुर होता है।

मेष लग्नः
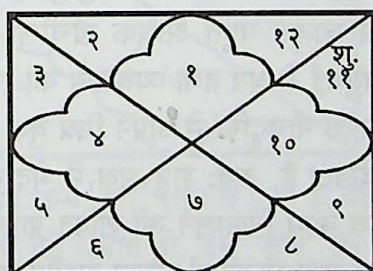
२ १२ शु. ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बड़ी चतुराई के साथ धन का खूब लाभ प्राप्त करता है और धनी होता है। उसे अपनी स्त्री एवं व्यवसाय से भी सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है। इस स्थान से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु सूर्य की सिंह राशि में पंचम भवन में देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में बड़ी बुद्धिमानी एवं चतुराई के साथ सफलता मिलती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, बुद्धिमान, चतुर तथा स्वार्थी होता है।

मेष लग्नः
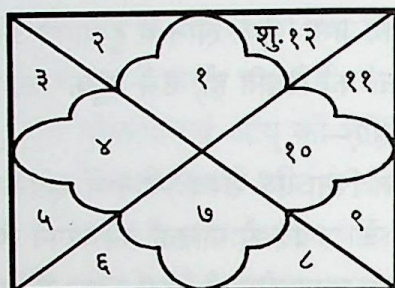
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि पर उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत अधिक खर्चीला होता है तथा बाहरी सम्बन्धों द्वारा बड़ी चतुराई से धन तथा व्यवसाय की शक्ति प्राप्त करता है। इस स्थान से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि वाले छठे शत्रु-भवन को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष में भेद तथा गुप्त युक्ति द्वारा कुछ कमजोरी के साथ काम निकालने की शक्ति प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक असामान्य तथा संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

मेष लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फल

मेष लग्न:
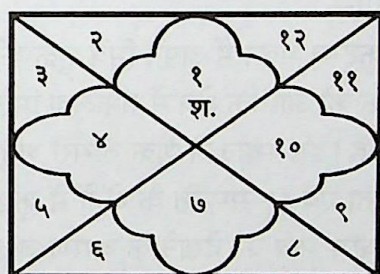
प्रथम भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, मान-प्रतिष्ठा तथा आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है, साथ ही राज्य के क्षेत्र में भी परेशानियाँ उत्पन्न होती रहती हैं। इस स्थान से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से पराक्रम भवन को देखता है, अतः जातक को पराक्रम एवं भाई-बहिनों के क्षेत्र में सफलता एवं सामर्थ्य प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से स्त्री तथा व्यवसाय भवन को देखने के कारण जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। दसवीं दृष्टि से अपनी राशि में पिता तथा राज्य भवन को देखने के कारण जातक को पिता तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कम सफलता मिलती है।

मेष लग्नः
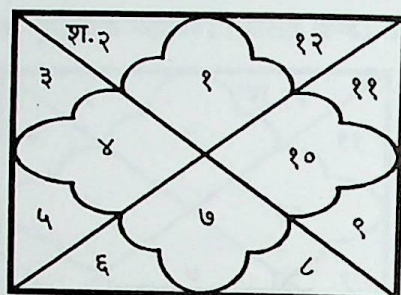
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा धन और कुटुम्ब की वृद्धि होती है। इस स्थान से शुक्र तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता एवं भू-सम्पत्ति के क्षेत्रों में कुछ परेशानी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक को पुरातत्त्व का लाभ तो होता है, परन्तु दिनचर्या में अशान्ति बनी रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में लाभभवन को देखने के कारण जातक को अच्छी आमदनी होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

मेष लग्नः
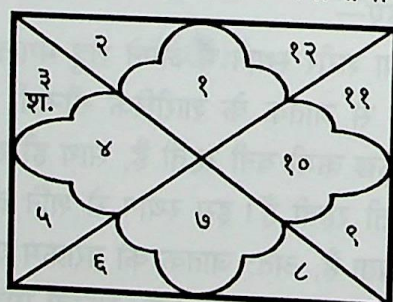
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव में स्थित शनि से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है। साथ ही पिता एवं राज्य के क्षेत्र से भी

सहयोग मिलता है। इस स्थान से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से व्यय स्थान को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असन्तोष रहता है।

मेष लग्नः
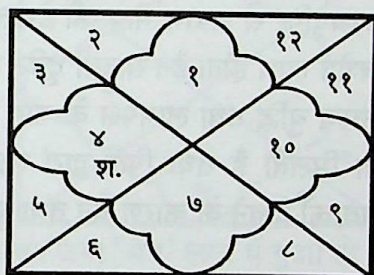
चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, सुख तथा भूमि-भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि के सम्बन्ध में कुछ असन्तोषयुक्त सफलता प्राप्त होती है, परन्तु सुख के साधनों में वृद्धि होती रहती है। इस स्थान से शनि तीसरी दृष्टि से शत्रुभवन को देखता है, अतः शत्रु-पक्ष से लाभ और उसमें प्रभाव रखने का योग बनता है। सातवीं दृष्टि दशमभाव में पड़ने से राज्य एवं पिता द्वारा व्यवसाय की वृद्धि एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती रहेगी। दसवीं नीचदृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहेगी तथा कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहा करेंगी।

मेष लग्नः
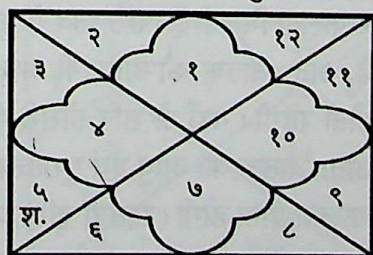
पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान पक्ष से मतभेद बना रहता है। यहाँ से शनि तीसरी उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से एकादश भाव को स्वक्षेत्र में देखने के कारण बुद्धि तथा लाभपक्ष के योग से आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है तथा पिता द्वारा लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का भी विशेष लाभ होता है।

मेष लग्नः
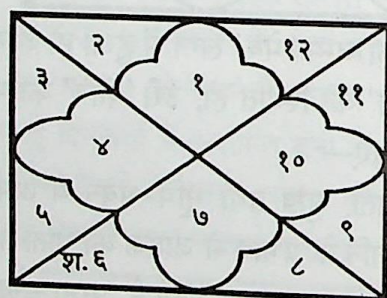
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु भाव में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राजकीय क्षेत्र में कठिन प्रयत्नों के बाद सफलता मिलती है। छठे भाव में क्रूर ग्रह की उपस्थिति प्रभावकारी मानी गई है, अतः जातक को आमदनी अच्छी रहेगी तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती रहेगी। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टम-भाव को देख रहा है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। सातवीं दृष्टि व्यय भाव में पड़ने से

खर्च में अधिकता के कारण परेशानी का अनुभव होता रहेगा तथा बाहरी सम्बन्धों के कारण असन्तोष प्राप्त होगा। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देख रहा है, अतः पराक्रम विशेष रहेगा और भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बहुत पराक्रमी तथा प्रभावशाली भी होता है।

मेष लग्नः
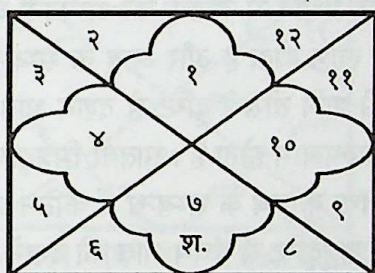
२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ श. ८

सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र एवं स्त्री तथा व्यवसाय के घर में शनि अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर उच्च का होकर बैठा हो, तो उसके प्रभाव से जातक व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है। पिता एवं राज्य द्वारा भी उसे बहुत लाभ होता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्यवृद्धि में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं और यश में कमी रहती है। सातवीं नीचदृष्टि से शरीर स्थान को अपने शत्रु मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कमी तथा हृदय में अशान्ति बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता एवं भूमि-स्थान के सम्बन्ध में भी कुछ असन्तोष बना रहता है तथा घरेलू सुखों में कमी आ जाती है।

मेष लग्नः
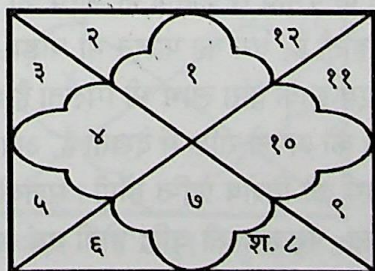
अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के घर में, अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कमी रहती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ होता है और आयु के सम्बन्ध में भी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य द्वारा अल्पलाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में कठिन परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है और दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के सम्बन्ध में समस्या बनी रहती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक क्रोधी, वाणी में तेजी रखने वाला तथा अल्प लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

मेष लग्नः
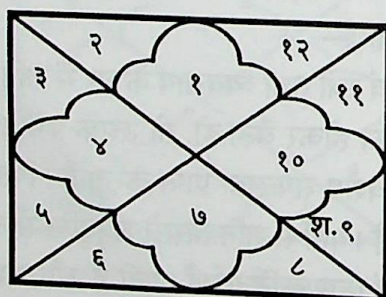
नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें, त्रिकोण एवं भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर बैठे हुए शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य की प्रारम्भ में कम परन्तु बाद में विशेष उन्नति होती है, धर्म का पालन भी थोड़ा-बहुत होता है। पिता तथा राज्य की शक्ति एवं इनके द्वारा लाभ भी मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से एकादश भवन को अपनी राशि में देखता है, अतः लाभ अधिक होगा एवं सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य की विशेष प्राप्ति होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः पराक्रम की वृद्धि होगी एवं भाई-बहिनों का सुख

मिलेगा। दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में अपना प्रभाव स्थिर रखेगा। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धन-सम्पत्तिवान, यशस्वी तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है।

मेष लग्नः
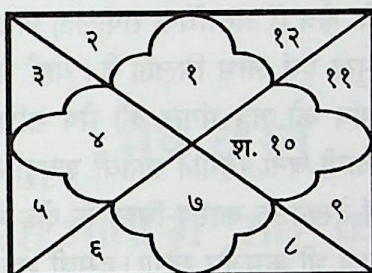
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य भवन में मकर राशि स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक पिता तथा राज्य की विशेष शक्ति प्राप्त करता है तथा इनसे लाभ उठाता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से व्ययभाव को गुरु की मीन राशि में देखता है, अतः खर्च अधिक रहेगा एवं बाहरी सम्बन्धों से असन्तोष प्राप्त होगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भवन को देखता है, अतः माता एवं भूमि-सम्पत्ति, मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहेगी और दसवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भवन को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक ऐश्वर्यवान, भोगी, विलासी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

मेष लग्नः
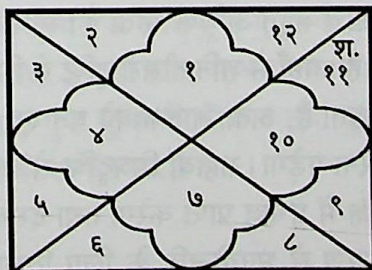
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। पिता तथा राज्य से भी अच्छा सुख एवं लाभ मिलता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी नीचदृष्टि से प्रथम भाव को शत्रु मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कमी बनी रहेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को सूर्य की सिंह राशि में देखने के कारण विद्या के क्षेत्र में पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी तथा सन्तान पक्ष भी कमजोर रहेगा। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होगा तथा दैनिक जीवन में परेशानियों व कठिनाईयों का अनुभव होता रहेगा।

मेष लग्नः
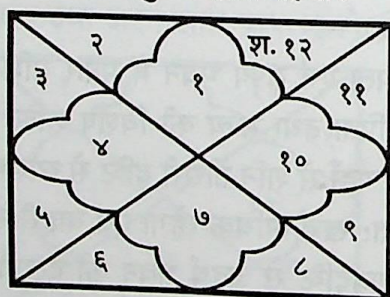
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च बहुत अधिक रहता है। साथ ही पिता एवं राजपक्ष से हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से मित्र शुक्र को वृष राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण से भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता पड़ेगी तथा बहुत कठिनाईयों के बाद अपनी प्रतिष्ठा बना पाएगा।

मेष लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

मेष लग्नः
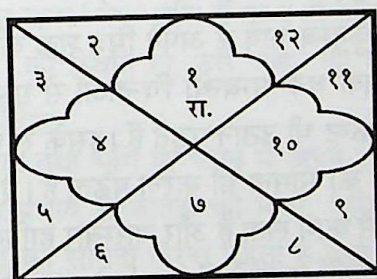
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी तथा स्वास्थ्य में परेशानी उत्पन्न होती है। साथ ही मन में चिन्ताओं का निवास भी रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। मंगल चूँकि क्रूर ग्रह है, अतः उसकी राशि पर बैठने के कारण जातक स्वार्थ-सिद्धि के लिए झूठ, दुराव, गुप्त युक्तियों, हिम्मत तथा बुद्धि चातुर्य का भी आश्रय लेता है और उसी से उन्नति करता है।

मेष लग्नः
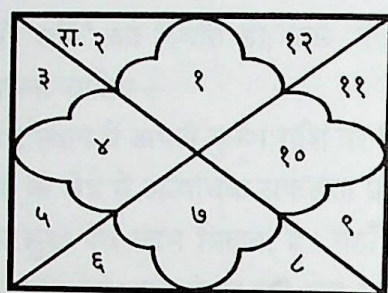
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

दूसरे धन एवं कुटुम्ब भाव में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन-सम्बन्धी चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है और उसे अनेक प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। इसके साथ ही उसे कौटुम्बिक क्लेश तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक गुप्त युक्तियों से काम लेता है और बारम्बार हानियाँ उठाकर भी अपने युक्तिबल से पुनः क्षतिपूर्ति करवाने में समर्थ हो जाता है तथा समाज में धनी व्यक्ति के रूप में सम्मानित बना रहता है।

मेष लग्नः
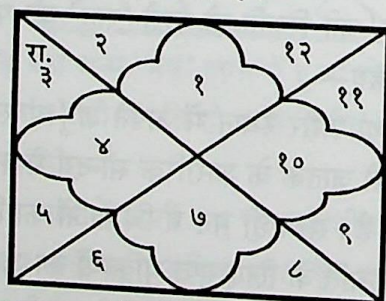
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

तीसरे पराक्रम स्थान में मिथुन राशि का उच्च होकर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों की शक्ति में विशेष वृद्धि होती है। ऐसी गृह स्थिति वाला जातक युक्तिबल में प्रवीण होता है तथा

भीतरी रूप से कमजोरी का अनुभव करने के बावजूद भी प्रकट रूप में बड़ी दिलेरी, हिम्मत तथा साहस व परिचय देता है। फलस्वरूप उसे इच्छित सफलता प्राप्त होती है।
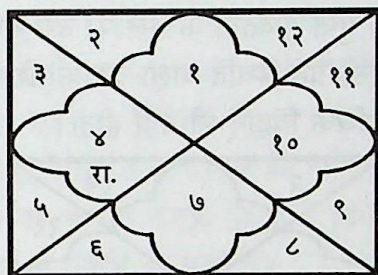
मेष लग्नः **चतुर्थ भावः राहु**

जिस जातक का जन्म 'मेष' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान तथा मातृ, भूमि के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है तथा घरेलू शान्ति में भी कमी आ जाती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक अशान्ति का शिकार बना रहता है तथा कभी सुख और कभी दुःख को प्राप्त करता रहता है। गुप्त युक्तियों द्वारा विशेष प्रयत्न करने पर भी उसे अधिक सफलता प्राप्त नहीं होती।

मेष लग्नः
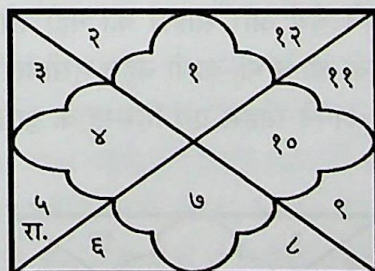
पंचम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह

राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में बहुत कठिनाईयों के बाद थोड़ी सफलता मिलती है तथा गुप्त युक्तियों में प्रवीणता प्राप्त होती है। इसके साथ ही उसे सन्तान पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। अन्ततः अत्यधिक गुप्त युक्तियों के बल पर उसे सामान्य सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक परेशानियों एवं झंझटों में फँसा रहता है तथा अधिक विद्वान् भी नहीं होता।

मेष लग्नः
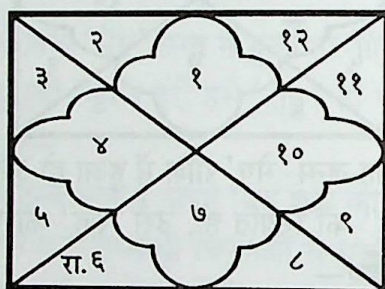
षष्ठम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली में 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोगभवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रुओं, झगड़ों तथा परेशानियों के बीच अत्यधिक हिम्मत से काम लेकर अपना प्रभाव स्थापित करता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी अपने धैर्य और साहस को नहीं छोड़ता। राहु की ऐसी स्थिति के कारण जातक को कभी-कभी बहुत मुसीबतों में फँस जाना पड़ता है, परन्तु हर बार वह अपने साहस एवं हिम्मत के द्वारा उन सब पर विजय प्राप्त कर लेता है।

मेष लग्नः
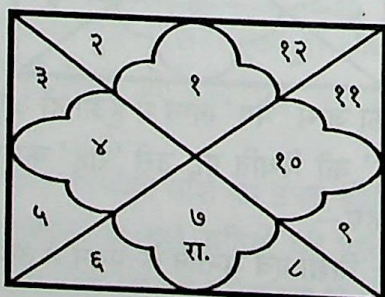
सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में चिन्ता, परेशानी एवं कष्टों का अनुभव करता है, परन्तु मित्र राशिस्थ होने के कारण अपनी चतुराई एवं गुप्त युक्तियों से उन कठिनाईयों पर विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को पारिवारिक जीवन में अनेक प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है तथा बड़े प्रयत्नों के बाद उसका बड़ी कठिनाई से निर्वाह हो पाता है।

मेष लग्नः **अष्टम भावः राहु**

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ रा. ८
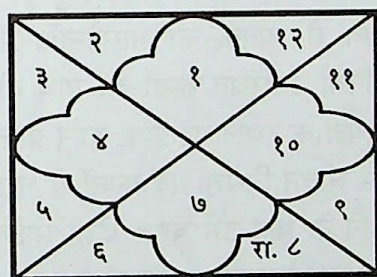
जिस जातक का जन्म 'मेष' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा एक के बाद दूसरी कठिनाईयों, संघर्षों एवं मुसीबतों में फँस जाना पड़ता है। इसके साथ ही उसे पुरातत्व के सम्बन्ध में भी हानि उठानी पड़ती है। उसे जीवन-निर्वाह के लिए गुप्त युक्तियों का सहारा लेना पड़ता है तथा सभी क्षेत्रों में चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ बनी रहती हैं। ऐसे जातक का जीवन सुखमय व्यतीत नहीं हो पाता।
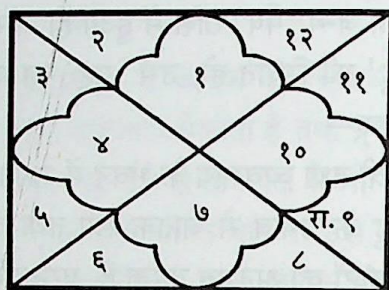
नवम भावः
राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण तथा भाग्यभवन में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ एवं परेशानियाँ उपस्थित रहती हैं। साथ ही धर्म-पालन में भी श्रद्धा बनी रहती है। सुयश के स्थान पर प्रायः हानि प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले व्यक्ति का जीवन निराशा एवं कष्टों से भरा रहता है और अन्त में बहुत तकलीफें उठाने के बाद उसे बहुत थोड़ी सफलता प्राप्त होती है।

मेष
लग्नः
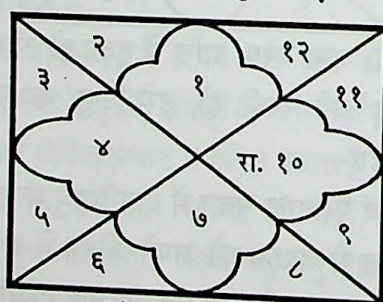
२
१२
३
१
११
४
रा. १०
५
७
९
६
८

दशम भावः
राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे राहु का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के घर में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर बैठे हुए राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता तथा राज्य के पक्ष में कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार मान, प्रतिष्ठा, अधिकार, नौकरी अथवा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कष्ट उठाने पड़ते

हैं। भाग्योन्नति के लिए अत्यधिक प्रयत्नशील रहने पर भी बहुत कम सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक दुःखी, चिन्तित तथा परेशानियों का शिकार बना रहता है।

मेष लग्नः
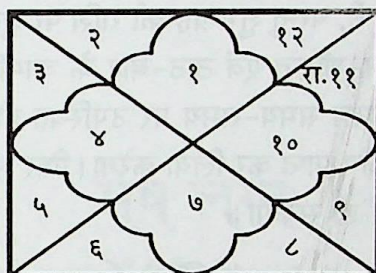
एकादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभभवन में अपने मित्र शनि की राशि पर बैठे राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा उपार्जित लाभ होने के योग उपस्थित होते रहते हैं, परन्तु राहु के क्रूर ग्रह होने के कारण जातक को लाभ प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना आवश्यक होता है तथा कभी-कभी आमदनी में कमी एवं हानि के योगों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक परिश्रमी, स्वार्थी, मितव्ययी ऐश्वर्यवान तथा सम्पत्तिशाली होता है।

मेष लग्नः
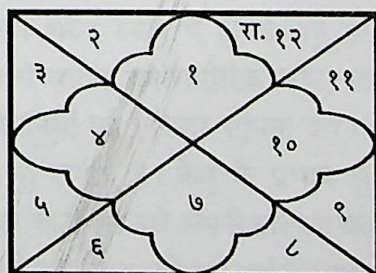
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक को जीवन में खर्च की अधिकता के कारण विशेष कठिनाईयों एवं मुसीबतों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता रहता है, परन्तु शुभ ग्रह की राशि पर शुक्र ग्रह की उपस्थिति के कारण जातक शान-शौकत एवं ठाठ-बाट के कामों में ही अधिक खर्च करेगा और उसके कारण समय-समय पर उपस्थित होने वाली कठिनाईयों पर बीच-बीच में विजय प्राप्त कर लिया करेगा। फिर भी वह खर्च एवं कर्ज के बोझ से मुक्त नहीं हो सकेगा।

मेष लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

मेष लग्नः
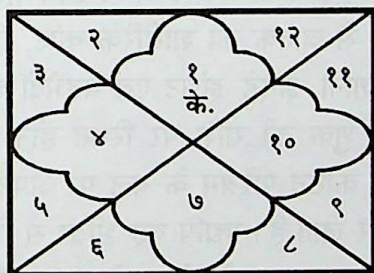
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल को मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट, मानसिक चिन्ताओं तथा अन्य प्रकार की परेशानियों का निरन्तर सामना करना पड़ता है और उसके शरीर में कोई चोट भी लगती है। केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी भी आ जाती है। उसे अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों एवं हिम्मत का आश्रय लेना पड़ता है। फिर भी, उसके जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ उपस्थित बनी रहती हैं।

मेष लग्नः
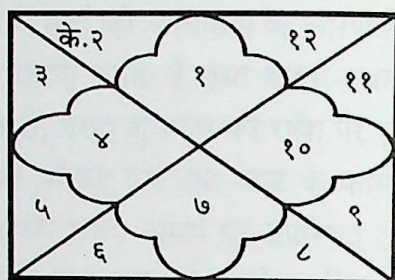
के.२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के घर में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट, चिन्ता, धन-स्थान में कमी, कौटुम्बिक परेशानी, झगड़े-झंझट एवं मतभेदों का शिकार हर समय बना रहता है, परन्तु शुक्र की राशि पर स्थित होने के कारण वह गुप्त युक्तियों, चतुराई एवं कठिन परिश्रम के बल पर अपनी आर्थिक स्थिति में थोड़ा बहुत सुधार कर लेता है। यद्यपि वह भीतर से चिन्तित, परेशान तथा निर्धन होता है, परन्तु प्रकट रूप से लोग उसे धनवान ही समझते रहते हैं।

मेष लग्नः
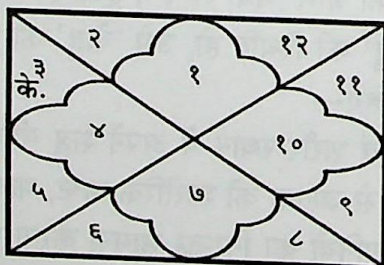
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के घर में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिन के पक्ष में कमजोरी आ जाती है। उसके भीतर हिम्मत की कमी पाई जाती है, परन्तु वह भीरु स्वभाव का होने पर भी गुप्त युक्तियों से काम लेकर अपना स्वार्थ-

साधन करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यधिक परिश्रम करने के उपरान्त भी अल्प-सफलता प्राप्त करता है तथा उसके पास केवल गुप्त युक्तियों का ही सहारा रहता है।
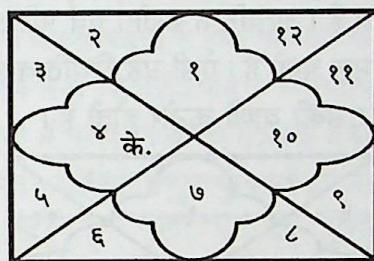
मेष लग्नः **चतुर्थ भावः केतु**

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केतु, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि में स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि, सम्पत्ति, मकान आदि के पक्ष में कष्ट प्राप्त होता रहता है तथा कौटुम्बिक मामलों में भी अशान्ति बनी रहती है। चन्द्रमा की राशि पर केतु की स्थिति के कारण जातक को मानसिकशक्ति का बल प्राप्त होता है तथा उसी के द्वारा थोड़े बहुत सुख की भी प्राप्ति होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपना देश छोड़कर विदेशों में निवास करना पड़ता है।

मेष लग्नः
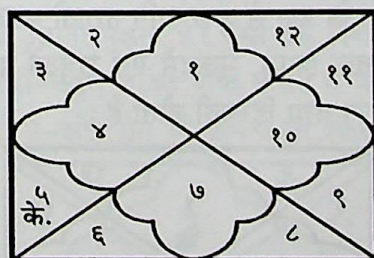
पंचम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह

राशि में स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। उसकी मस्तिष्क शक्ति निर्बल होती है, अतः विद्या की शक्ति भली-भाँति प्राप्त नहीं हो पाती। इसी प्रकार उसे सन्तान पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। अत्यधिक उद्योग एवं परिश्रम करते रहने पर भी सफलता बहुत कम मिल पाती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक का स्वभाव भी उग्र होता है और उसकी वाणी कठोर होती है।

मेष लग्नः
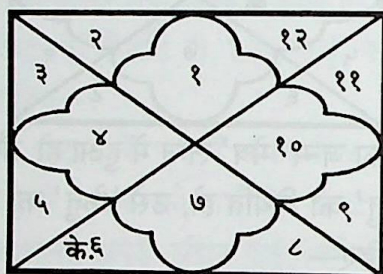
षष्ठम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुपक्ष पर सदैव विजय प्राप्त करता रहता है। उसकी विवेकशक्ति, हिम्मत एवं बहादुरी प्रबल होती है, परन्तु ऊपर से बहुत शक्तिशाली प्रतीत होने पर भी मन के भीतर थोड़ी-बहुत कमजोरी छिपी रहती है तथा ननिहाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक झगड़े, मुकदमे एवं शत्रुओं पर विजय पाने वाला, विवेकशक्ति से सम्पन्न तथा हिम्मती होता है।

मेष लग्नः
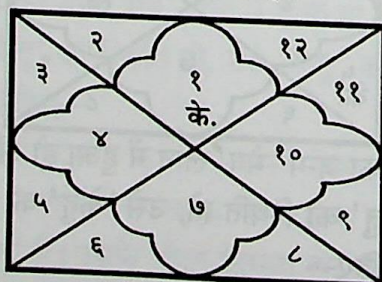
सप्तम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर बैठे हुए केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा पारिवारिक गुत्थियों को सुलझाने में बड़ी चतुराई से काम लेना पड़ता है। केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप जातक अपने व्यवसाय में परिवर्तन करता रहता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कमि का अनुभव करते हुए भी गुप्त युक्तियों द्वारा सफलता प्राप्त करता है।
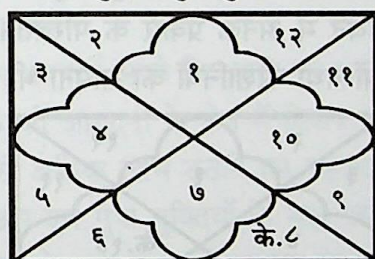
मेष लग्नः

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ७ ५ ९ ६ के.८

अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु, मृत्यु तथा पुरातत्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर बैठे हुए केतु के प्रभाव से जातक को अपने जीनव में अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी हानि उठानी पड़ती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक गुप्त युक्तियों के द्वारा थोड़ी-बहुत शक्ति प्राप्त करता है परन्तु सुखी नहीं होता। उसके शरीर में कोई-न-कोई रोग भी अपना घर किए रहता है।

मेष लग्नः
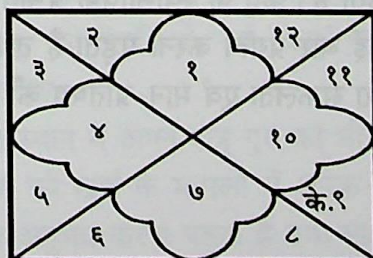
नवम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे आगे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण तथा धर्म के भवन में बृहस्पति की मीन राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।

ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यन्त साहसी, मजबूत हृदय वाला, भाग्यवान, धनी तथा धर्मात्मा होता है परन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप उसके जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं और कभी-कभी कठिनाईयों तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है।

मेष लग्नः
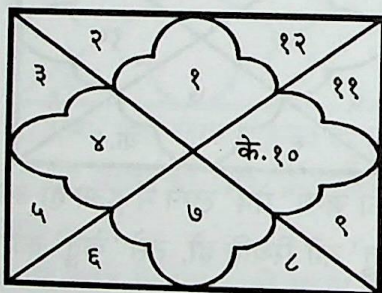
दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य के द्वारा संकट एवं परेशानी के योग उपस्थित होते रहते हैं तथा व्यवसाय-संचालन के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। केतु के स्वाभाविक प्रभाव के फलस्वरूप उसे अपने व्यवसाय में कई बार प्रयत्न करना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता एवं मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

मेष लग्नः
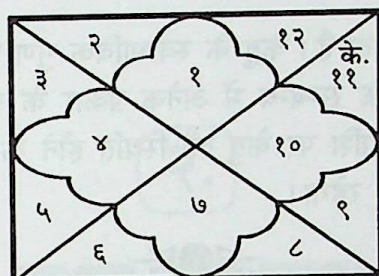
एकादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है और वह सामान्य से अधिक लाभ उठाने का महत्वाकांक्षी होता है। ऐसा जातक कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ के विशेष योग प्राप्त करता है, परन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप उसे अपनी आय के साधनों में अनेक बार परिवर्तन करने पड़ते हैं तथा विशेष उद्योग भी करना पड़ता है।

मेष लग्नः
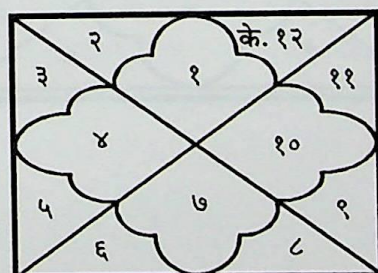
द्वादश भावः केतु

ज़िस जातक का जन्म 'मेष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के मामलों में अनेक प्रकार की कठिनाईयों तथा परेशानियों का अनुभव करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध

से भी कष्ट प्राप्त होता है। केतु के स्वाभाविक गुण के फलस्वरूप खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहेंगे, परन्तु शुभ ग्रह की राशि पर केतु की स्थिति होने के कारण थोड़ा बहुत लाभ भी प्राप्त होता रहेगा।
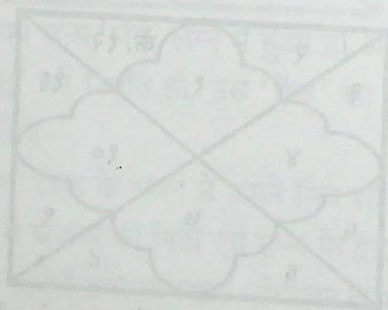
२.

वृष लग्न
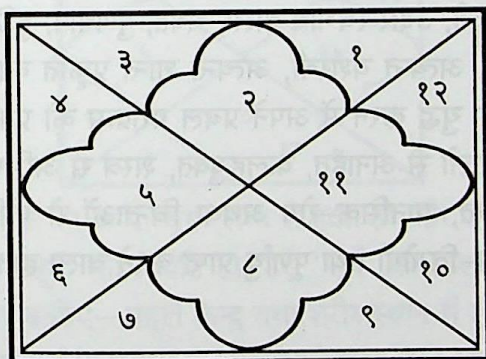
वृष लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

वृष लग्न का संक्षिप्त फलादेश

वृष लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गोरा अथवा गेहुँआ होता है। वह स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला, शौकीन तबीयत का, मधुर भाषी, रजोगुणी, लम्बे दाँत तथा कुँचित केशों वाला, श्रेष्ठ संगति में बैठने वाला, ऐश्वर्यशाली, उदार स्वभाव वाला, भक्त, गुणवान, बुद्धिमान, धैर्यवान, शूरवीर, साहसी, अत्यन्त यशस्वी, अत्यन्त शान्त प्रकृति का, परन्तु अवसर पर लड़ने अथवा युद्ध करने में अपने प्रबल पराक्रम को प्रकट करने वाला, अपने परिवार वालों से अनाहत, कलहयुक्त, शस्त्र से अभिघात पाने वाला, धन-क्षय से युक्त, मानसिक-रोग अथवा चिन्ताओं से पीड़ित एवं दुःखी रहने वाला, मित्र-वियोगी तथा पूर्णायु प्राप्त करने वाला होता है।
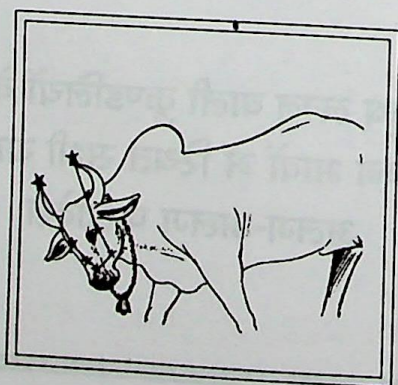
वृष लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल

वृष लग्नः
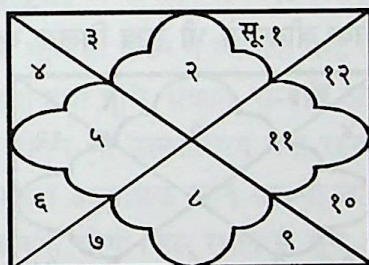
प्रथम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न से हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में शत्रु शुक्र की वृष राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख, सफलता तथा प्रभुत्व की प्राप्ति होती है।

वृष लग्नः
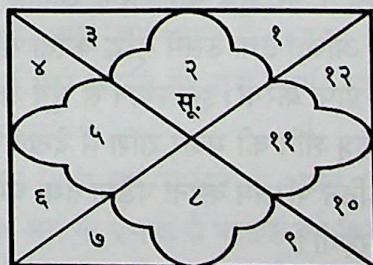
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

द्वितीय धन-कुटुम्ब के घर में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को धन-सम्पत्ति तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कुछ कमी बनी रहती है और भूमि-मकान आदि का सुख प्राप्त होते हुए भी उसका श्रेष्ठ उपयोग नहीं हो पाता। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से आयु तथा पुरातत्त्व के अष्टम भाव को अपने मित्र गुरु की धनु राशि में देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है तथा दैनिक जीवन में भी सुख मिलता रहता है।

वृष लग्नः
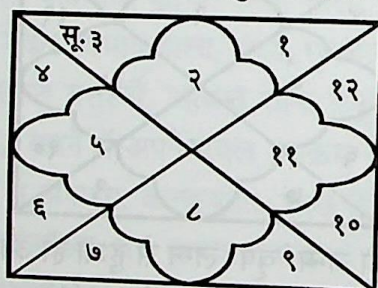
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर स्थान पर अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर बैठे हुए सूर्य के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि घरेलू सुख की प्राप्ति होती है। तृतीय भाव में उष्णस्वभावी ग्रह विशेष शक्तिशाली होता है, अत: इस स्थान पर सूर्य के कारण जातक अपने पराक्रम द्वारा सफलता एवं सुख को अर्जित तथा उसमें वृद्धि करता रहेगा तथा भाई-बहिन के यथेष्ट सुख को भी प्राप्त करेगा। इस स्थान से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से नवम भाव को अपने शत्रु शनि की मकर राशि में देखता है, अत: जातक को भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा तथा धर्म का पालन करने में कुछ लापरवाही बनी रहेगी।

वृष लग्नः
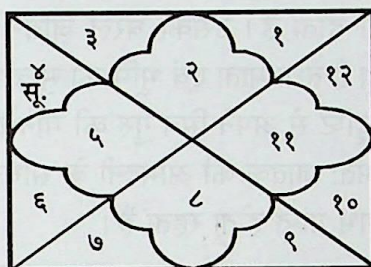
चतुर्थ भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे माता एवं भूमि के भवन में स्वराशि सिंह स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपनी माता तथा भूमि, मकान, सम्पत्ति आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू जीवन भी उल्लासमय बना रहता है। तेजस्वी सूर्य के प्रभाव से ऊपरी दिखावा अत्यधिक रहने पर भी जातक के मन के भीतर थोड़ी बहुत अशान्ति बनी रहेगी। इस स्थान से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, व्यवसाय एवं राज्य के पक्ष में जातक को थोड़ा बहुत असन्तोष बना रहेगा एवं कठिनाई के साथ सफलता एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

वृष लग्नः
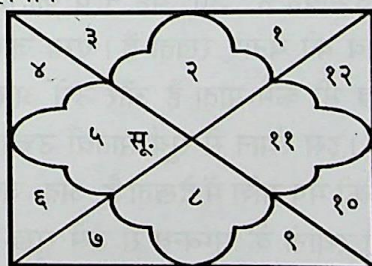
पंचम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या तथा सन्तान के पक्ष में वृद्धि एवं सुख की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक गम्भीर स्वभाव वाला,

बुद्धिमान तथा दूरदर्शी होता है। उसका घरेलू जीवन भी सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्ण बना रहता है तथा माता एवं भूमि का सुख भी प्राप्त होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में ग्यारहवें लाभ भवन को देखता है, अतः जातक की आमदनी के साधन भी अच्छे बने रहते हैं और उसे यथेष्ट लाभ प्राप्त होता रहता है।

वृष लग्नः
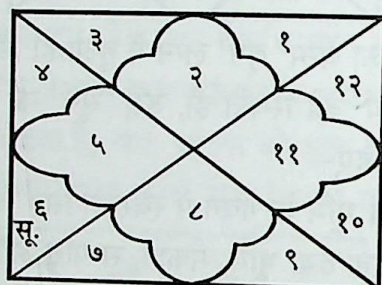
षष्ठम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने शत्रु पक्ष से कठिनाईयाँ प्राप्त होती रहती हैं, परन्तु सूर्य चूंकि उष्णग्रह है, अतः वह नीच का होने पर भी शत्रुओं के ऊपर जातक के प्रभाव को बनाए रखता है। ऐसा जातक माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी कम पाता है और उसे अपनी जन्म भूमि से दूर जाकर रहना पड़ता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से बारहवें भाव को अपने मित्र मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे सुख प्राप्त होता रहता है।

वृष लग्नः
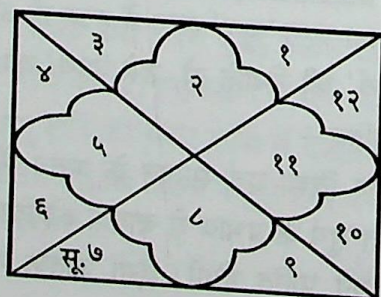
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता प्राप्त करता है, साथ ही उसे माता, भूमि, भवन आदि का भी यथेष्ट लाभ होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से प्रथम भाव को अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि में देखता है, उसके कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा पारिवारिक सुख-साधनों में कुछ कमी बनी रहती है, जिनकी निवृत्ति के लिए शरीर को विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा मन में भी थोड़ी बहुत अशान्ति बनी रहती है।

वृष लग्नः
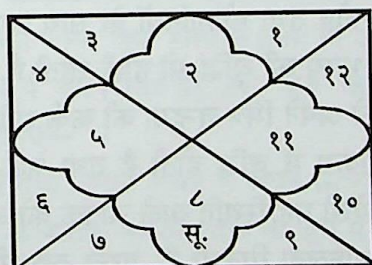
३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ सू. ९

अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के घर में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता है तथा माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी आती है, साथ ही पारिवारिक सुख-शान्ति में भी विघ्न उपस्थित होते रहते हैं। परन्तु सूर्य के सुखेश होकर अष्टम भाव में बैठने के कारण जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से द्वितीय भाव को अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः जातक कुटुम्ब द्वारा सुख पाता है तथा धन की वृद्धि करने में सफल होता है।

वृष लग्नः
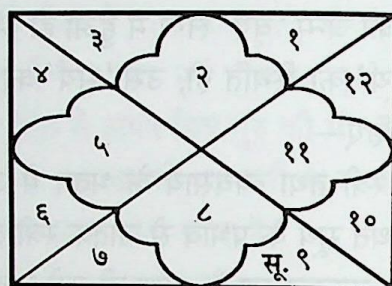
नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन आदि के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष तथा परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त होती है, परन्तु घरेलू सुख एवं भाग्य की वृद्धि भी होती रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से तृतीय भाव को अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देखता है, उसके कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी मिलता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपने बुद्धि-बल तथा पराक्रम के द्वारा ही सफलता मिलती है, परन्तु वह भी पूर्ण सफलता नहीं कही जा सकती।

वृष लग्नः
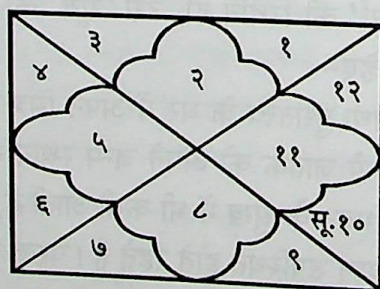
दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ

राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है, परन्तु शत्रु के राशिस्थ होने के कारण पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को स्वराशि में देखता है, उसके प्रभाव से जातक को माता के सुख एवं भूमि-भवन आदि के सुख का लाभ होता है तथा पारिवारिक सुख में वृद्धि होती है।

वृष लग्नः
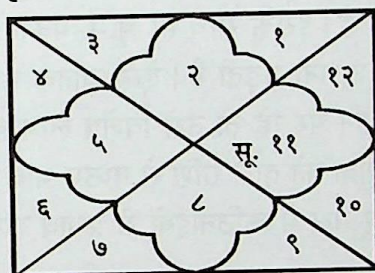
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ तथा ऐश्वर्य भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। इसके साथ ही माता, भूमि, भवन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से पंचम भाव को अपने सामान्य मित्र बुध की कन्या राशि में देखता है, अतः जातक की विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी वृद्धि होती है तथा उसका जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत होता है।

वृष लग्नः
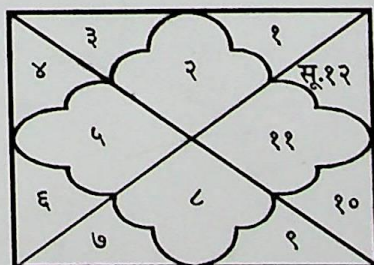
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध सुखदायक बना रहता है, परन्तु पारिवारिक सुख एवं माता के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। इसके साथ ही भूमि-मकान आदि के सम्बन्ध में भी थोड़ी बहुत हानि उठानी पड़ती है। ऐसा जातक यदि अपने जन्म स्थान को छोड़कर अन्य स्थान पर रहे तो उसे विशेष लाभ होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र को तुला राशि से षष्ठम भाव में देखता है। जिसके कारण जातक को शत्रु पक्ष में कठिनाईयों से प्रभाव कम रखना पड़ता है।

वृष लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

वृष लग्नः
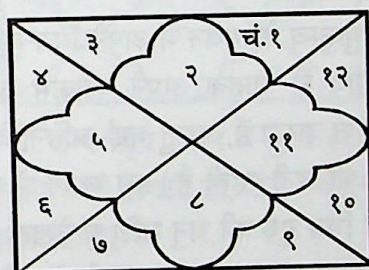
प्रथम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर उच्च चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से जातक का मनोबल बहुत बढ़ा हुआ रहता है। साथ ही उसे भाई-बहिनों का सुख एवं पराक्रम द्वारा सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। परन्तु यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से सप्तम भाव को भी देखता है, अतः उसे स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष बना रहता है तथा परिवार का संचालन करने में भी उसे कतिपय कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

वृष लग्नः
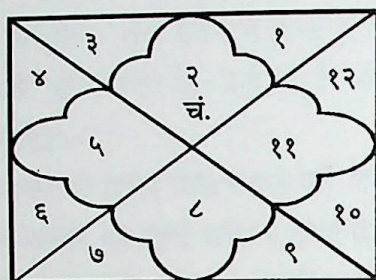
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख को प्राप्त करता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख एवं शारीरिक पुरुषार्थ में कुछ कमी भी बनी रहती है। इस स्थान से सूर्य सातवीं दृष्टि से अष्टम भाव को अपने मित्र गुरु की धनु राशि में देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

वृष लग्नः
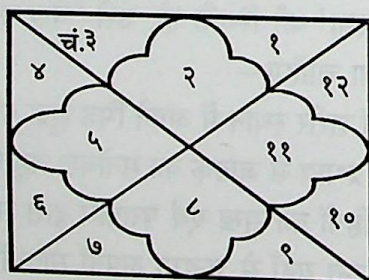
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई एवं पराक्रम के घर में अपनी राशि पर बैठे हुए चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है जिसके कारण जातक बड़ा हिम्मती, परिश्रमी,

पुरुषार्थी, साहसी तथा प्रसन्नचित बना रहता है और इन सबके कारण उसे यश तथा मान भी प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु शनि की मकर राशि में नवम भाव को देखता है, जिसके कारण जातक को अपने भाग्य की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा उसकी धर्म पालन में भी कोई अधिक रुचि नहीं होती।

वृष लग्नः — **चतुर्थ भावः चन्द्र**
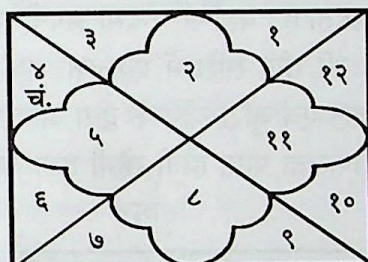
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, सुख तथा भूमि के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर बैठे हुए चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में वृद्धि तथा भूमि, मकान, सुख इत्यादि का लाभ होता है। इसके साथ ही उसके भाई-बहिन तथा पराक्रम के पक्ष में भी उन्नति होती है। घरेलू सुख के साधनों में भी सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से दशम भाव को अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अतः जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ परिश्रम के बाद सफलता प्राप्त होगी—ऐसा समझना चाहिए।

वृष लग्नः

पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। साथ ही छोटे भाई-बहिनों से सुन्दर सम्बन्ध बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र बृहस्पति की मीन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को अपने मनोबल एवं बुद्धि योग के द्वारा आय, सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त होती रहेगी तथा जातक सुखी एवं धनी बना रहता है।

वृष लग्नः

षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त होगा तथा कुछ परेशानियों के साथ झगड़े-झंझटों के मामलों में सफलता प्राप्त करेगा। पराक्रमेश चन्द्रमा की छठे भाव में स्थिति के कारण जातक के मन के भीतर बड़ी हिम्मत तथा शक्ति रहने पर भी कुछ परेशानियाँ बनी रहेंगी तथा भाई-बहिन के सम्बन्धों में भी कुछ मन-मुटाव रहेगा। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में व्यय भाव को देखता है, अतः जातक खर्च खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ उठाएगा।

वृष लग्नः

सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्थित अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में चिन्ता, हानि तथा कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही साथ ही भाई-बहिन के सम्बन्धों में भी कमी बनी रहेगी। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि में शरीर स्थान को देखता है, अतः जातक का शरीर सुन्दर होगा और उसे आन्तरिक शक्ति एवं बाहर यश तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती रहेगी।

वृष लग्नः
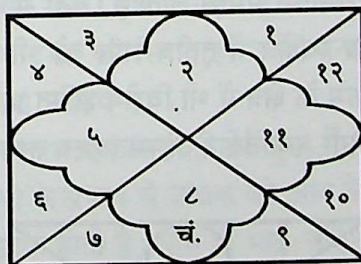
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में लाभ प्राप्त होगा, परन्तु पराक्रम स्थान कमजोर हो जाने के कारण पुरुषार्थ एवं

भाई-बहिन के सुख में कमी बनी रहेगी। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अत: जातक को धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ सफलता प्राप्त होगी, परन्तु उसके लिए उसे विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

वृष लग्नः
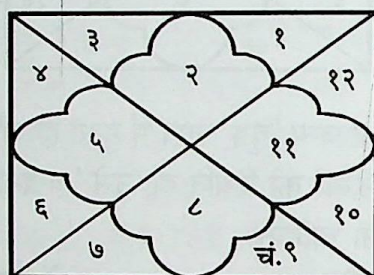
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण तथा भाग्यभवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई-बहिनों का सहयोग भी मिलता है। फलतः जातक भाग्यवान एवं धर्मात्मा समझा जाता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से कर्क राशि के स्वक्षेत्र में तृतीय भाव को भी देखता है, अत: उसे भाई-बहिन तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी विशेष शक्ति प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक उद्योगी, स्फूर्तिवान, हिम्मतवाला तथा प्रसन्न स्वभाव वाला होता है।

वृष लग्नः
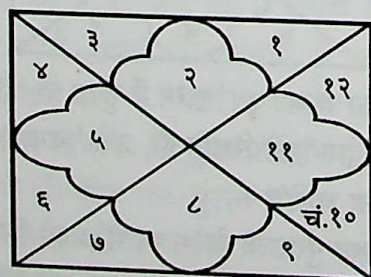
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता के साथ थोड़ मतभेद बना रहता है तथा राजकीय क्षेत्र में कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम की सहज वृद्धि होती रहती है। इस स्थान से चन्द्रमा की सातवीं दृष्टि अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि वाले चतुर्थ भवन में पड़ती है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है और पुरुषार्थ द्वारा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है।

वृष लग्नः
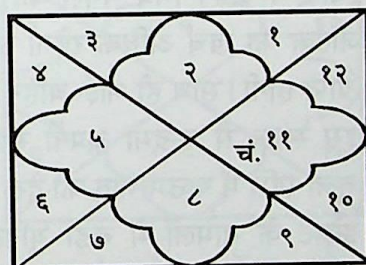
एकादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ एवं आमदनी के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आय के क्षेत्र में अपने पुरुषार्थ द्वारा बड़ी सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई-बहिन एवं पराक्रम का लाभ भी मिलता है। उन्नति करने के लिए उसके विचारों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है तथा उसे इच्छित सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त होते रहते हैं। इसी स्थान से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती रहेगी। ऐसा जातक विद्वान्, बुद्धिमान तथा मधुरभाषी होता है।

वृष लग्नः
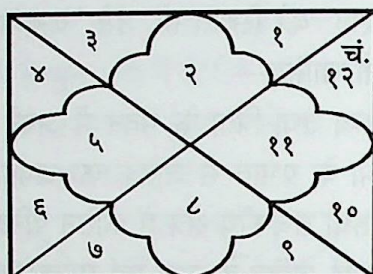
द्वादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे शक्ति प्राप्त होगी। साथ ही भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम की भी हानि होगी। इस स्थान से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में षष्ठम भाव को देख रहा है, अतः जातक शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट के मामलों में बड़ी युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करेगा।

वृष लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

वृष लग्नः
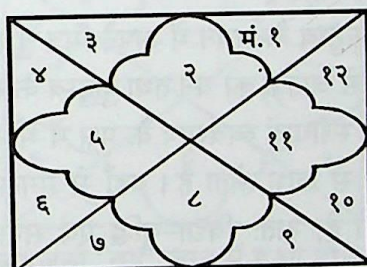
प्रथम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक-शक्ति का लाभ होता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित होते हैं। परन्तु मंगल के व्ययेश होने के कारण धातुक्षीणता, रक्त विकार, निर्बलता आदि की शिकायत भी रहती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से माता एवं भूमि के भवन को देखता है, अतः माता एवं भूमि के सुख में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से सप्तम केन्द्र भाव को स्वक्षेत्र में देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है और आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व सम्बन्धी कठिनाईयाँ तथा हानियाँ उपस्थित होती रहती हैं।

वृष लग्नः
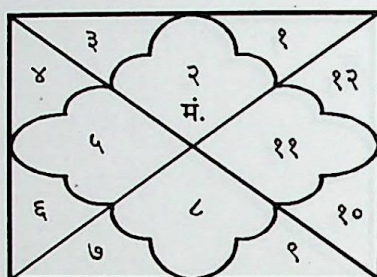
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में परेशानियाँ बनी रहती हैं, साथ ही स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाईयाँ आती हैं, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी हानि एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। आठवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती रहती है और जातक भाग्यवान समझा जाता है।

वृष लग्नः
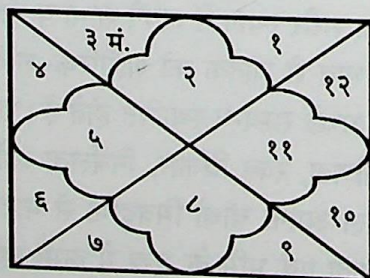
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान पराक्रम एवं भाई के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क

राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पराक्रम तथा भाई-बहिन के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है, साथ ही स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से मंगल की चौथी शत्रुदृष्टि षष्ठम भाव में पड़ती है अतः जातक के शत्रु नष्ट हो जाते हैं। सातवीं उच्चदृष्टि नवम भाव में पड़ती है, अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है और आठवीं शत्रुदृष्टि दशम भाव में पड़ने से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष से हानि एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही उनकी मान-प्रतिष्ठा एवं उन्नति के क्षेत्र में भी रुकावटें आती रहती हैं।
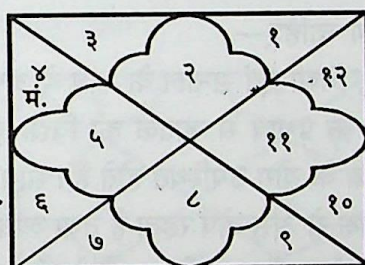
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा सुख स्थान में अपने सूर्य की सिंह राशि में स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख एवं भूमि-मकान आदि के सम्बन्ध में हानि प्राप्त होती है तथा घरेलू-सुख में भी अशान्ति को वातावरण बनता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वक्षेत्र में सप्तम भाव का देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि के दशम भाव में पड़ने से पिता एवं राज्य के पक्ष में हानि होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से लाभ स्थान को देखने से आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से देर में लाभ प्राप्त होने का योग बनता है।

वृष लग्नः
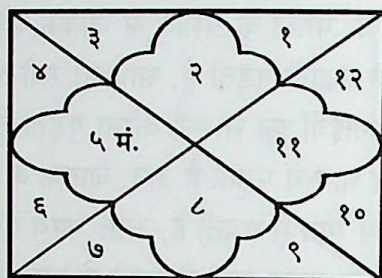
३ १ ४ २ १२ ५ मं. ११ ६ ८ १० ७ ९

पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भाव में अपने मित्र बुध की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में हानि एवं चिन्ता के योग उपस्थित होते हैं। साथ ही मंगल के व्ययेश होने के कारण स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाई के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में हानि के अवसर उपस्थित होते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा आठवीं दृष्टि से द्वादश भाव को स्वराशि में देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है तथा परिश्रम एवं खर्च के द्वारा व्यवसाय में वृद्धि होती है।

वृष लग्नः
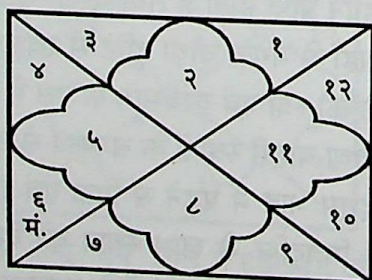
षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर प्रबल बना रहता है परन्तु व्ययेश होने के कारण वह स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में चिन्ता तथा हानियों का शिकार बनता है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से द्वादश भाव को स्वराशि में देखने के कारण खर्च अधिक होगा, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होगी। साथ ही आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देख रहा है, अत: शरीर में कमजोरी बनी रहेगी। वीर्य-विकार तथा रक्त-विकार के दोष भी उत्पन्न होंगे।

वृष लग्नः
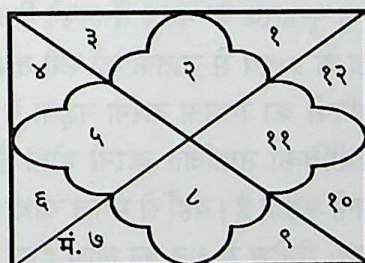
सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्वक्षेत्री मंगल की स्थिति के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होने पर भी मंगल के व्ययेश होने के कारण कुछ कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ेगा, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलेगी, साथ ही खर्च भी अधिक रहेगा। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अत: पिता एवं राज्य के सम्बन्ध में कठिनाईयाँ उत्पन्न होंगी तथा व्यवसाय में रुकावटें आएँगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर में कुछ दुर्बलता रहेगी तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन एवं कुटुम्ब के सम्बन्ध में भी चिन्ता, कठिनाई एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

वृष लग्नः
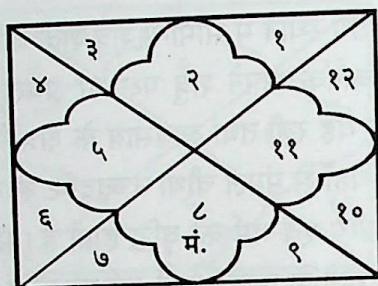
अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की धनु राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बहुत मुसीबत एवं हानियों का सामना करना पड़ता है और अपने स्थान से हटकर परदेश में आजीविका उपार्जित करनी होती है। साथ ही पुरातत्त्व सम्बन्धी हानि भी उठानी पड़ती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः विदेश से धन का लाभ होगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में परेशानी रहेगी एवं आठवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी रहेगी। संक्षेप में, जातक की आर्थिक उन्नति परदेश में जाकर रहने पर ही होती है।

वृष लग्नः
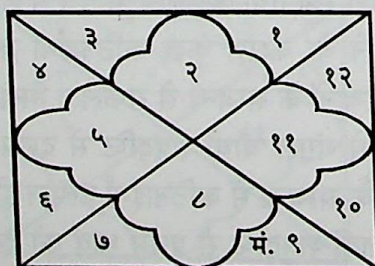
नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थिंत उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से लाभ होता है तथा भाग्य की शक्ति से व्यवसाय में भी उन्नति होती है और धर्म में भी आस्था रहती है। यहाँ से मंगल की चौथी दृष्टि स्वराशि वाले द्वादश भाव में पड़ती है, अतः खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होगा। सातवीं नीचदृष्टि तृतीय भाव में पड़ने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहेगी। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान तथा घरेलू-सुख में भी कुछ कमी इसलिए बनी रहेगी कि मंगल व्ययेश होने का भी दोषी है।

वृष लग्नः
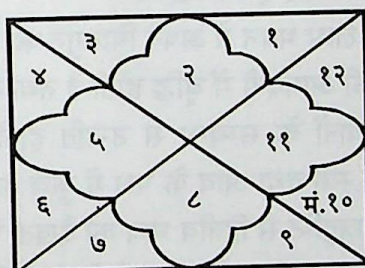
दशम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के सम्बन्ध में हानि तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही स्त्री-पक्ष में प्रभाव की अधिकता होने पर भी कुछ कटुता बनी रहेगी एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में कमजोरी तथा रक्त-विकार आदि रोग रहेंगे। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा घरेलू सुख में कमी रहेगी। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष में कुछ अनबन रहा करेगी, परन्तु सम्मन की वृद्धि होगी।
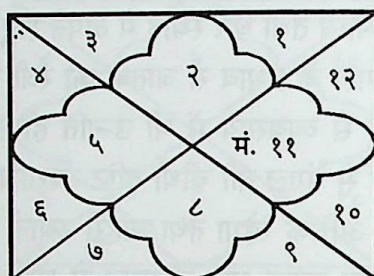
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा स्त्री-पक्ष से भी लाभ मिलता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उन्नति होती है परन्तु मंगल के व्ययेश होने के कारण स्त्री तथा आय के पक्ष में कुछ असन्तोष भी रहता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-कुटुम्ब के पक्ष में कुछ हानि तथा परेशानी प्राप्त होगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कमजोरी रहेगी एवं आठवीं समदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बना रहेगा। ऐसा जातक बहुत स्वार्थी तथा चालाक होता है।
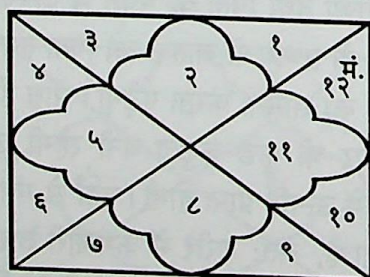
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में स्वराशि मेष पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक

का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती रहती है, परन्तु मंगल के स्त्रीभवन के अधिपति होने एवं व्ययेश होकर स्वक्षेत्र में बैठने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में न्यूनता रहेगी। सातवीं दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बना रहेगा एवं आठवीं दृष्टि से सप्तम भाव को स्वराशि में देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानिकारक होते हुए भी थोड़ी-बहुत शक्ति देता रहेगा।

वृष लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

वृष लग्न:
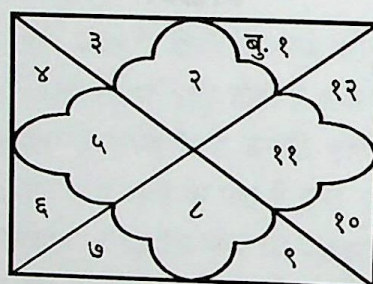
प्रथम भाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर सुन्दर होता है और वह उद्योग द्वारा मान-प्रतिष्ठा, यश, धन, सन्तान तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति को प्राप्त करता है। बुध के मित्रभाव में स्थित होने के कारण जातक को श्रेष्ठबुद्धि एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से सप्तम भाव को अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अतः उसे स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सहयोग, सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है। इस प्रकार यह कहा जायेगा कि ऐसे समय में जन्मा जातक एक दैनिक शक्तियों से युक्त एक सफल जीवनयापन करने वाला होता है।

वृष लग्नः
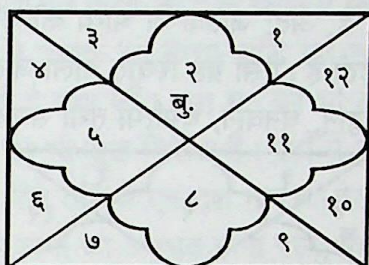
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन व कुटुम्ब के भाव में अपनी मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु उसे सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी बनी रहती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु की उन्नति एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यवान होता है और ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है।

वृष लग्नः
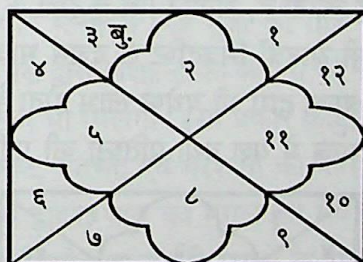
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर के स्थान में चन्द्रमा की राशि पर बैठे हुए बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। साथ ही वह अपने पुरुषार्थ द्वारा धन उपार्जित करता है तथा कौटुम्बिक सुख को प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से

नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और धर्म की ओर रुचि बनी रहती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक उद्यमी, परिश्रमी, पराक्रमी, साहसी, विद्वान्, धनवान, धर्मात्मा तथा सज्जन होता है।

वृष लग्नः
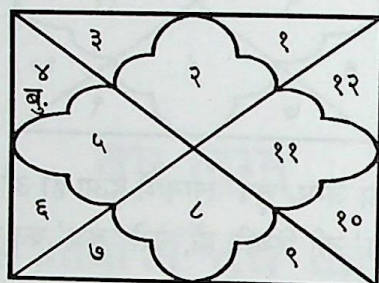
चतुर्थ भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं सुख के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। वह विवेकी, गम्भीर, विद्वान् तथा बुद्धिमान होता है और विद्या के द्वारा धन का संग्रह करता है, सन्तान एवं कुटुम्ब के सुख को प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता तथा राज्य द्वारा भी यथेष्ट लाभ होता है, व्यवसाय में उन्नति होती है और राज-समाज में यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

वृष लग्नः
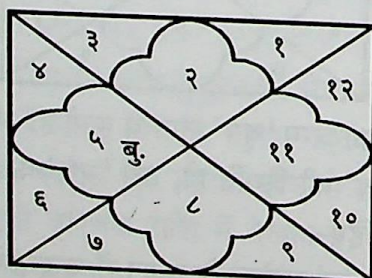
पंचम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के स्थान में स्वराशि कन्या स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा बुद्धि द्वारा धन की भी अधिकता रहती है। इसी प्रकार उसे कुटुम्ब का भी सुख मिलता है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी के क्षेत्र में कमी का अनुभव होगा परन्तु विद्या एवं सन्तान पक्ष की सहायता से धन की वृद्धि होगी तथा बुद्धि-बल से प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती रहेगी।

वृष लग्नः
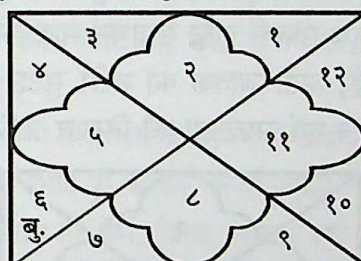
षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा अशान्ति का सामना करना पड़ेगा, परन्तु बुद्धियोग से उसे कुछ सफलता भी मिलेगी। इसी प्रकार कौटुम्बिक एवं सन्तान पक्ष के सुख में भी कुछ कष्ट, मतभेद एवं परेशानी का योग बना रहेगा। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः खर्च की अधिकता रहेगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती रहेगी।

वृष लग्नः
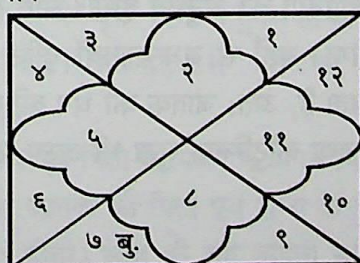
सप्तम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बुद्धिमती-स्त्री की प्राप्ति होगी तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होगी। साथ ही जातक को धन, विद्या एवं सन्तान-पक्ष से सुख प्राप्त होता रहेगा एवं कौटुम्बिक सुख भी यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होगा। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से प्रथम भाव को अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में देखता है, अतः जातक का शरीर सुन्दर होगा और उसे यश, मान, बुद्धि, विवेक, धन एवं सफलता की निरन्तर प्राप्ति होती रहेगी।

वृष लग्नः
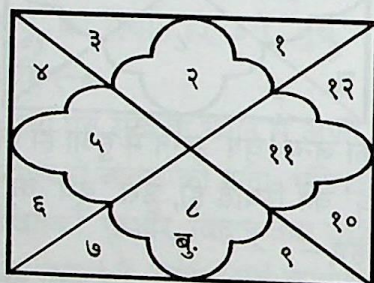
३ २ १
४ १२
५ ११
६ १०
७ ८ बु. ९

अष्टम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होगा तथा धन की संग्रह शक्ति में वृद्धि होगी। परन्तु कौटुम्बिक सुख, विद्या एवं सन्तान के पक्ष में परेशानियों का अनुभव होगा। साथ ही जातक का रहन-सहन ऐश्वर्यशाली होगा। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से द्वितीय भाव को स्वराशि मिथुन में देखता है, अतः जातक को धन की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा तथा कौटुम्बिक सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।
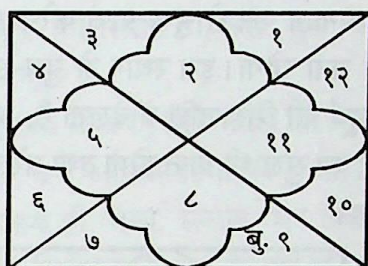
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी बुद्धि के योग से भाग्य तथा धन की वृद्धि करेगा। साथ ही धर्म, विद्या, सन्तान एवं कौटुम्बिक सुखों को भी प्राप्त करेगा। इस स्थान से बुध सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन एवं पराक्रम की शक्ति विशेष रूप से प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है।
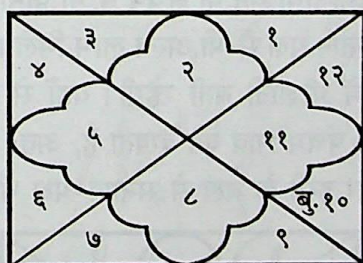
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य के पक्ष से विशेष शक्ति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही वह अपनी बुद्धि के उपयोग द्वारा

व्यवसाय से धन एवं सन्तान पक्ष से सुख प्राप्त करेगा। उसका पारिवारिक-जीवन भी आनन्दमय बना रहेगा। इस स्थान से बुध सातवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होगा तथा घरेलू वातावरण भी सुन्दर तथा सुखद बना रहेगा।

वृष लग्नः
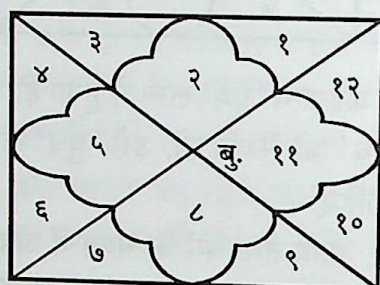
एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ एवं आय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बृहस्पति के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा तथा धन के संचय में भी कमी बनी रहेगी। साथ ही कुटुम्ब, विद्या एवं सन्तान पक्ष से भी अल्प लाभ मिलेगा एवं दूसरी चिन्ताओं के कारण मस्तिष्क में परेशानी बनी रहेगी। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी कन्या राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या की शक्ति प्राप्त होगी और इसी के बल से सन्तान-पक्ष भी प्रबल बना रहेगा।

वृष लग्नः
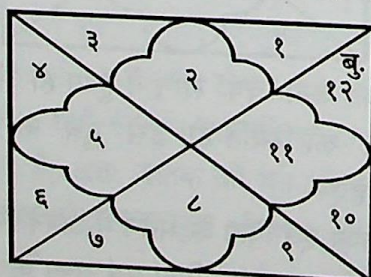
द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार सझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहेगा परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहेगा। साथ ही विद्या, सन्तान, धन तथा कुटुम्ब के पक्ष से भी असन्तोष बना रहेगा। विशेषकर सन्तान के पक्ष में हानि उठानी पड़ेगी। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शुक्र की तुला राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष में अपने बुद्धि-बल से सफलता प्राप्त करता रहेगा।

वृष लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल

वृष लग्नः
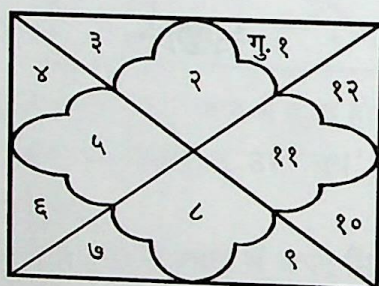
प्रथम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होगा तथा आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी उन्नति होगी। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष में कुछ लाभ तथा कुछ परेशानी रहेगी एवं विद्या-बुद्धि का लाभ मिलेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कम सफलता मिलेगी तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ त्रुटि बनी रहेगी। ऐसा जातक शारीरिक रूप से कुछ परेशान रहता है तथा परिश्रम द्वारा लाभ एवं उन्नति को प्राप्त करता है।

वृष लग्नः
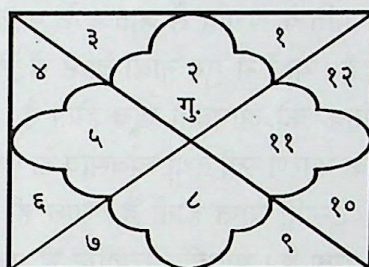
द्वितीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब की शक्ति कुछ कठिनाईयों के साथ प्राप्त होती है। यहाँ से गुरु सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्र अष्टम-भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ मिलता है। पाँचवीं दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा नौवीं दृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य एवं राज्य सम्बन्ध में सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा जातक अपने व्यवसाय की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा प्रतिष्ठित होता है।

वृष लग्नः
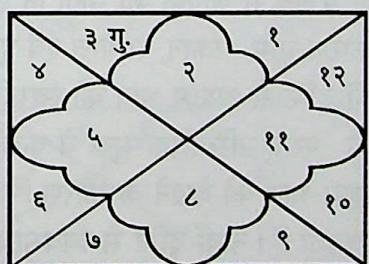
तृतीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि

पर स्थित उच्च के बृहस्पति के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु नौवीं दृष्टि से लाभ भवन के स्वक्षेत्र में देखता है, अतः जातक को आमदनी खूब होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है। साथ ही आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं नीचदृष्टि से नवम भाव में देखने के कारण भाग्य में कुछ कमजोरी आती है तथा धार्मिक भावना की भी कंमी बनी रहती है।
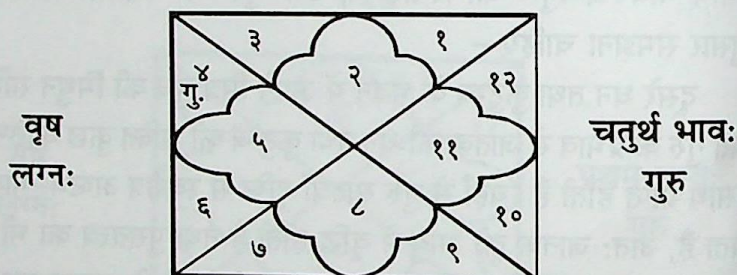
वृष लग्नः

चतुर्थ भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा सुख भवन में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा लाभेश होने के कारण भूमि, मकान, सम्पत्ति एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अष्टम भाव को स्वराशि में देखता है, अतः आयु की वृद्धि होती है, परन्तु परिवारिक सुख में कुछ विघ्न उपस्थित होते हैं। सातवं दृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। नौवीं दृष्टि से व्यवसाय को देखने के कारण खर्च आमदनी से हमेशा अधिक बना रहता है।

वृष लग्नः
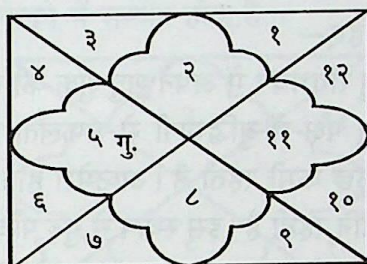
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि सन्तान के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। गुरु के अष्टमेश होने के कारण सन्तान पक्ष से बाधाएँ मिलती हैं, परन्तु लाभेश होने के कारण लाभ भी रहता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यहाँ से गुरु अपनी पंचम नीचदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से एकादश भाव को स्वराशि में देखने के कारण बुद्धियोग से लाभ खूब होता है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव के देखने के कारण आजीविका तथा लाभ के लिए शारीरिक परिश्रम अधिक करना पड़ता है। ऐसा जातक देखने में भला, स्वार्थ-साधन में चतुर, दीर्घायु तथा धनी होता है।

वृष लग्नः
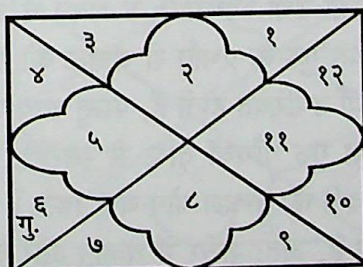
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु रोगभवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त करता है, परन्तु लाभ के मामले में कुछ कमी रहती है। अष्टमेश होने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में हानि रहती है। इस स्थान से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से व्यय भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है एवं नौवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करने पर सफलता प्राप्त होती है तथा कौटुम्बिक पक्ष में भी कठिनाईयाँ आती रहती हैं।

वृष लग्नः
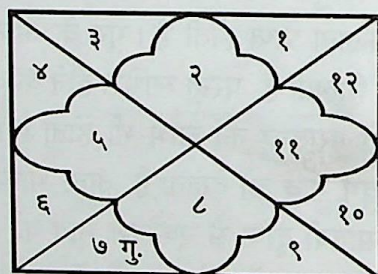
सप्तम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ उपस्थित होती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। इस स्थान से गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी का अच्छा योग बना रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में थकान और दुर्बलता बनी रहती है तथा नौवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख, धैर्य तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, धन संचय करने

वाला तथा ऊपर से देखने में सज्जन होता है।

वृष लग्नः
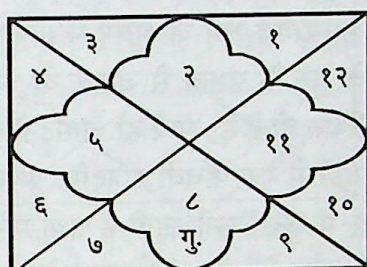
३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ गु. ९

अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान मृत्यु, आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है, परन्तु अष्टमेश होने के कारण आय के साधनों में कुछ कठिनाईयाँ उपस्थित होती रहती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता के सुख में अष्टमेश होने के कारण कुछ कमी आती है और सुख एवं आमदनी के सम्बन्ध में भी कुछ असन्तोष बना रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्ध से धनागम होता रहता है।

वृष लग्नः
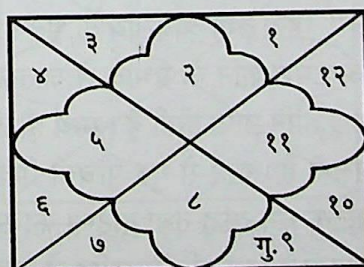
नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य में कमजोरी तथा धर्मपालन में त्रुटि उपस्थित होती है, साथ ही आमदनी की कमी से दुःख का अनुभव भी होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा परिश्रम द्वारा प्रभाव की वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान तथा विद्या के पक्ष में भी कुछ कमी बनी रहती है। भाग्यभवन में नीच राशिगत ग्रह के प्रभाव से जातक की उन्नति, प्रतिष्ठा एवं ऐश्वर्य में कमी अवश्य आती है।
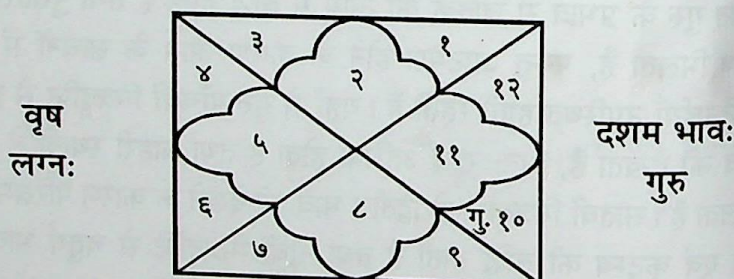
वृष लग्नः

दशम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि में स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि प्राप्त होती है। साथ ही लाभ प्राप्ति के मार्ग में कम सफलता कम मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन वृद्धि तथा कुटुम्ब का सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख कुछ असन्तोष के साथ मिलता है तथा सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष

से परेशानी प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

वृष लग्नः **एकादश भावः गुरु**
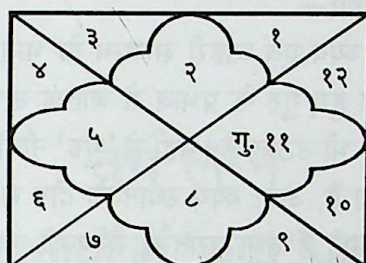
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में स्वक्षेत्री मीन राशिस्थ गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी खूब होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण परिश्रम भी विशेष करना पड़ता है अथवा कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख का विशेष लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का भी लाभ होता है और नौवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण व्यवसाय से खूब लाभ होता है, परन्तु स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ सुख प्राप्त होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक का जीवन ऐश्वर्यशाली तथा प्रसन्नता से भरा रहता है।

वृष लग्नः
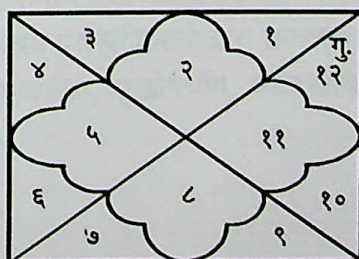
द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय एवं बाहरी सम्बन्ध के भाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठे हुए गुरु के प्रभाव से जातक खर्च खूब करता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ भी उठाता है। यहाँ से 'गुरु' नौवीं दृष्टि से अष्टम भाव को स्वराशि में देखता है, अतः व्यय स्थान के दोष से जातक की आयु पर कभी-कभी संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी लाभ भी कम होता है। पाँचवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण कुछ कठिनाईयों के साथ सुख के साधन प्राप्त होते हैं तथा माता के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष में बड़ी बुद्धिमानी से प्रभाव बनाए रखता है। नौवीं दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु के पक्ष में कुछ कमी रहती है और आमदनी से खर्च अधिक रहता है।

वृष लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

वृष लग्नः
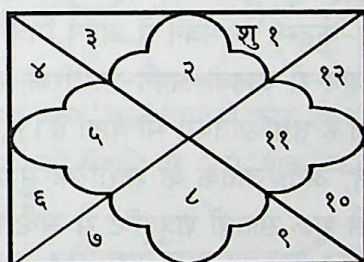
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में स्वक्षेत्री वृष राशि शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं आत्मिक-बल की प्राप्ति होती है, परन्तु कभी-कभी रोग का शिकार भी होना पड़ता है। शत्रु-भवन का स्वामी स्वक्षेत्री होकर बैठा है, अतः शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शारीरिक परिश्रम एवं बुद्धिमानी द्वारा सफलता प्राप्त होती है। साथ ही आत्मबल, मानसिक-शक्ति, सुखोपभोग, व्यावसायिक सफलता आदि भी मिलती है।

वृष लग्नः
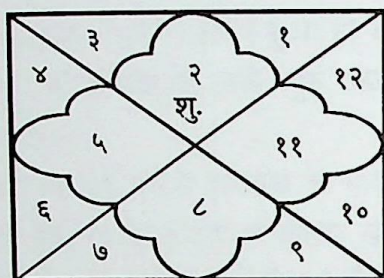
द्वितीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है तथा प्रतिष्ठा भी पाता है। द्वितीय भाव बन्धन का स्थान भी माना गया है, अतः जातक के शारीरिक सुख में कुछ परेशानियाँ आती रहती हैं। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ न्यूनता बनी रहती है, परन्तु शत्रु पक्ष से चातुर्य द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है।

वृष लग्नः
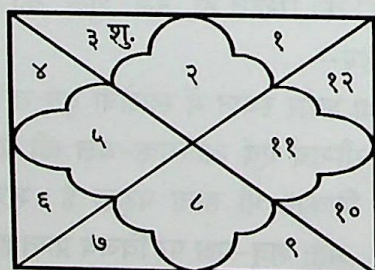
तृतीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान पराक्रम एवं भाई-बहिन के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी कुछ वैमनस्य के साथ प्राप्त होता है। यहाँ से

शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक भाग्यशाली होता है तथा धर्म पालन में भी रुचि रखता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपने पराक्रम एवं चातुर्य के बल पर यश-मान-प्रतिष्ठा, धन आदि प्राप्त करता है और अत्यधिक शारीरिक श्रम करने के कारण कभी-कभी थक भी जाता है, परन्तु हिम्मत नहीं हारता।
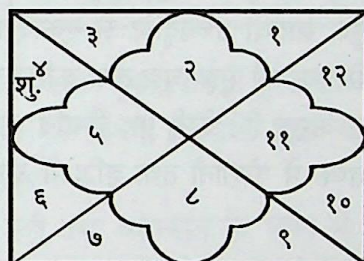
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र माता, भूमि तथा सुख भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी तथा भूमि, सम्पत्ति, मकान आदि के सम्बन्ध में भी असन्तोष प्राप्त होता है। परन्तु समस्त कमियों एवं परेशानियों के बावजूद भी सुख के साधन अवश्य प्राप्त होते रहते हैं तथा शत्रु पक्ष में चतुराई एवं शान्ति के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से दशम भाव को देखता है। अतः पिता राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, उन्नति, यश एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।
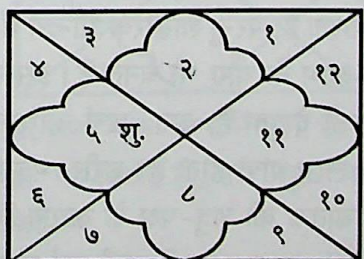
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पंचम त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि सन्तान के भवन में नीच राशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या में अपूर्णता तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु बुद्धि-योग एवं गुप्त-चातुर्य के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक अपने मस्तिष्क की सूझ-बूझ तथा कठिन परिश्रम द्वारा लाभ के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक शारीरिक सौन्दर्य में कमी, मस्तिष्क में परेशानी तथा वृद्धि में असन्तोष एवं चिन्ता के योग प्राप्त करता है।

वृष लग्नः
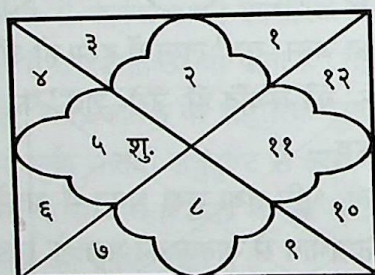
षष्ठम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु तथा रोग भवन में तुला राशिस्थ स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति एवं चातुर्य की प्राप्ति होती है, जिससे वह शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी, परतन्त्रता एवं मामा के पक्ष से लाभ के योग भी बनते हैं। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। शरीर-भवन के स्वामी के षष्ठम भाव में बैठ जाने से जातक को शत्रु-पक्ष के कारण किसी-न-किसी झंझट में फँसे रहना पड़ता है परन्तु वह स्वाभिमानी एवं प्रतापी होता है।

वृष लग्न:
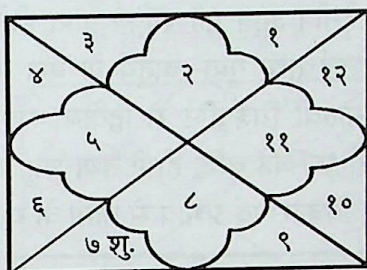
सप्तम भाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से वैमनस्य एवं परेशानी बनी रहती है, परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में शारीरिक परिश्रम एवं कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। चातुर्य, गुप्त युक्ति एवं परेशानियों के साथ इन्द्रियभोगादि में भी सफलता प्राप्त होती है। इस स्थान से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ रोग बना रहेगा, परन्तु लौकिक कार्यों को करने में वह बड़ा दक्ष होगा।

वृष लग्न:
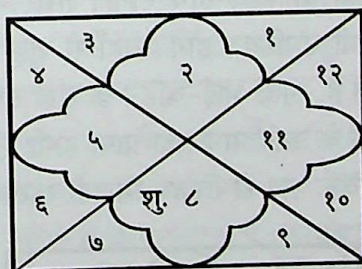
अष्टम भाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान मृत्यु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शरीर में रोगादि का कष्ट होगा तथा

सौन्दर्य में भी कमी रहेगी। आयु की शक्ति प्राप्त होने पर भी पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कठिनाई तथा गुप्त-चातुर्य के बल पर ही सफलता प्राप्त होगी। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः कठिन परिश्रम के द्वारा धन की वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष से कष्ट, मामा के पक्ष में कमजोरी, उदर विकार एवं प्रभाव से कमी के योग भी उपस्थित होंगे।

वृष लग्नः
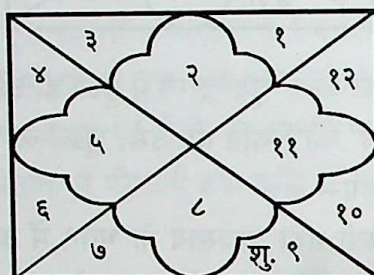
३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ शु. ९

नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम के बल पर भाग्योन्नति करेगा तथा शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त करेगा। धर्म के पालन में भी कुछ कठिनाईयों के साथ रुचि लेगा। शरीर में सुन्दरता, रोग तथा कठिनाईयों के योग भी उपस्थित होंगे। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की शक्ति में भी कुछ परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त होगी ऐसे व्यक्ति को झगड़ों के मामलों में स्वाभाविक रूप से विजय मिलती रहती है।

वृष लग्नः
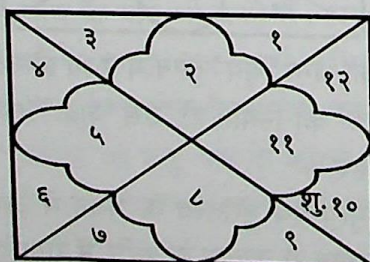
दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता के साथ सामान्य वैमनस्य एवं राजकीय तथा व्यवसायिक क्षेत्र में सामान्य कठिनाईयों एवं परिश्रम के द्वारा सफलता और यश की प्राप्ति होगी। साथ ही शत्रु पक्ष पर भी प्रभाव बना रहेगा। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक अपनी उन्नति की धुन में सुख की चिन्ता नहीं करेगा। माता तथा भूमि-भवन के पक्ष में भी उसे कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक अहंकारी, चतुर, सुखी तथा उन्नति करने वाला होता है।

वृष लग्नः
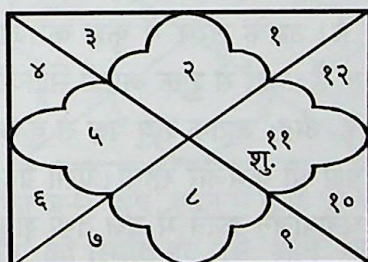
एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में उच्च राशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा पर्याप्त द्रव्योपार्जन करता है तथा आय के क्षेत्र में विशेष चतुराई एवं अनेक प्रकार के प्रयत्नों से काम चलता है। उसके शरीर में सुन्दरता तथा रोग का निवास रहता है एवं शत्रु पक्ष से लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष में कमी, विद्याध्ययन के पक्ष में लापरवाही तथा सफलता प्राप्ति के लिए असत्यभाषण आदि के योग भी बनते हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के प्रयत्नों द्वारा श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है।

वृष लग्नः
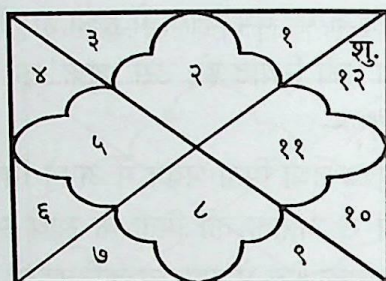
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्ययभाव में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थिति शुक्र के प्रभाव से जातक खूब खर्चीला होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त करता है। उसके शरीर में कुछ कमजोरी रहती है, फिर भी वह बहुत परिश्रमी होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि को षष्ठम भाव में देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष से कुछ कमजोर बना रहेगा। इसी प्रकार माता का पक्ष भी कमजोर रहेगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अत्यन्त चतुर, रोगी, धनोपार्जन करने में दक्ष तथा शत्रुओं द्वारा हानि उठाने वाला होता है।

वृष लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फल

वृष लग्नः
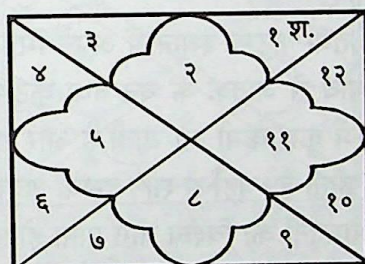
प्रथम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र, तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शारीरिक दृष्टि से सुन्दर होता है तथा भाग्यवान समझा जाता है। यहाँ से शनि दसवीं दृष्टि से राज्य एवं पिताभवन को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा शक्ति एवं राज्य द्वारा लाभ और सम्मान की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही व्यवसाय में भी पर्याप्त उन्नति होती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम अधिक होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण तथा स्त्री व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों के साथ वृद्धि होती है। ऐसे जातक को शारीरिक शक्ति के कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त होती है।

वृष लग्नः
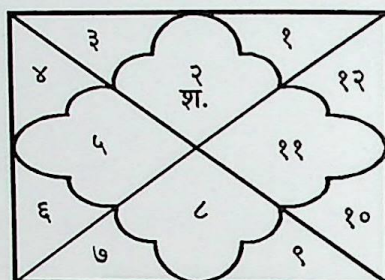
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव धन तथा कुटुम्ब स्थान में अपने मित्र बुध को मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु जातक के सुख में कुछ कमी आ जाती है और राज्य के क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है। यहाँ से शनि दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी का विशेष योग प्राप्त होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता के सुख में कमी होगी तथा सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, इसलिए आयु के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी। ऐसा जातक धर्म की अपेक्षा धन की वृद्धि में तत्पर बना रहता है।

वृष लग्नः
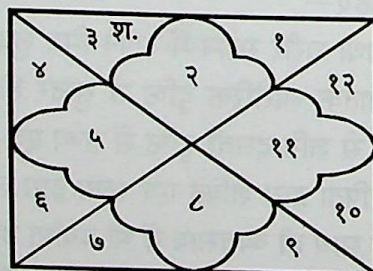
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों के साथ

सामान्य-वैमनस्य रहेगा, परन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होगी। यहाँ से शनि सातवीं दृष्टि से नवम भाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाग्य की वृद्धि होगी। तीसरी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा दसवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च कम होगा एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी लापरवाही बनी रहेगी। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक भाग्यवान, पुरुषार्थी, उद्योगी तथा प्रभावशाली होता है।
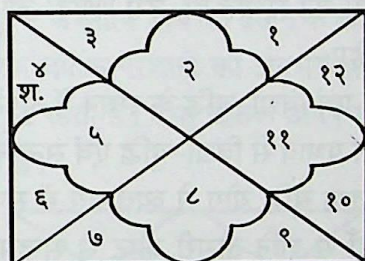
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, सुख तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का माता के साथ वैमनस्य रहेगा तथा भूमि भवन के सुख में भी कमी बनी रहेगी। यहाँ से शनि सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होगी, परन्तु धर्म-पालन में कुछ उदासीनता रहेगी। तीसरी उच्चदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में अत्यधिक प्रभाव रहेगा तथा मामा के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी एवं दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होगी तथा जातक प्रतिष्ठित एवं भाग्यवान समझा जाएगा।

वृष लग्नः
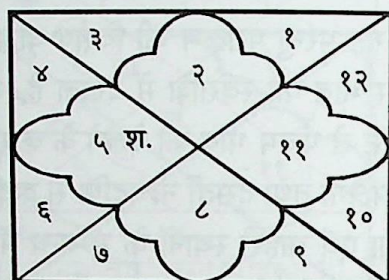
३ १ ४ २ १२ ५ श. ११ ६ ८ १० ७ ९

पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में अत्यधिक सफलता प्राप्त होगी तथा बुद्धि योग से व्यवसाय में सफलता एवं पिता द्वारा स्नेह प्राप्त होगा। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोषपूर्ण सफलता मिलेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आय के साधनों से सामान्य असन्तोष रहेगा एवं दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन एवं कुटुम्ब को शक्ति मिलेगी। संक्षेप में, ऐसा जातक अपनी बुद्धि एवं वाणी के बल पर यश, प्रतिष्ठा एवं सफलता प्राप्त करता है तथा भाग्यवान होता है।

वृष लग्नः
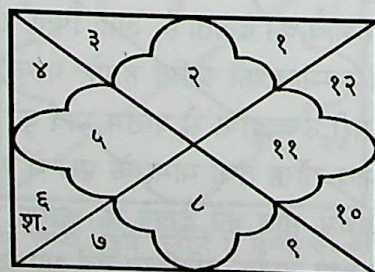
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में उच्च राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में बहुत प्रभावशाली होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है पिता से कुछ वैमनस्य रखते हुए शक्ति पाता है तथा दिखावे के लिए धर्माचरण करता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ कुछ चिन्ताओं के साथ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च के सम्बन्ध में परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध असन्तोषजनक रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम अत्यधिक होता है, जिसके कारण जातक परेशानी का अनुभव भी करता है। वह भाई-बहिनों से भी असन्तुष्ट रहता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है।

वृष लग्नः
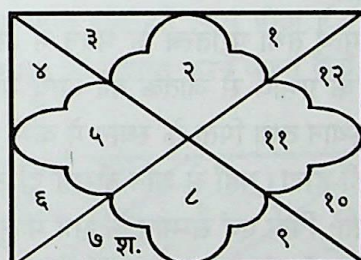
३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ श. ९

सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है, परन्तु शनि के शत्रु राशि पर होने के कारण व्यवसाय तथा कुटुम्ब के संचालन में कुछ कठिनाईयाँ भी पाता है। साथ ही पिता द्वारा शक्ति एवं राज्य के क्षेत्र में उन्नति एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से नवम भाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाग्य की शक्ति बलवान होती है। वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर में सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती

है और दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है, परन्त कुल मिलाकर जातक सुखी और भाग्यशाली बना रहता है।

वृष लग्नः
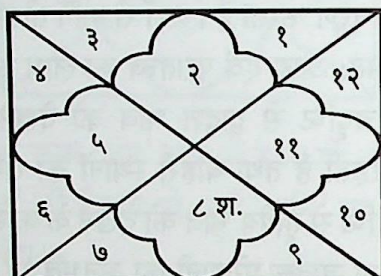
३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ श. १० ७ ९

अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु, मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में कठिनाईयों के साथ वृद्धि होती है भाग्य-स्थान तथा पिता के स्थान में कमी रहती है एवं धर्म का पालन भी यथावत् नहीं होता। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखता है, अतः पिता एवं सम्मान के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है एवं भाग्योन्नति के लिए अत्यन्त कष्ट उठाना तथा परिश्रम करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है एवं दसवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। राज्येश के अष्टम भाव में स्थिति के कारण यश और उन्नति के मार्ग में कठिनाईयाँ आती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

वृष लग्नः
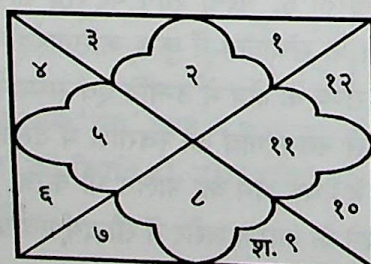
नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के घर में मकर राशिस्थ स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की बहुत वृद्धि होती है तथा पिता के द्वारा भी पूर्ण शक्ति प्राप्त होती है। इसके साथ ही राज्य द्वारा यश, लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आय के साधनों द्वारा कुछ अरुचिकर तरीके से लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पुरुषार्थ तो प्रबल होता है परन्तु भाई-बहिनों के द्वारा असन्तोषपूर्ण तरीकों से सहायता मिलती है। दसवीं उच्चदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर महान् प्रभाव होता है तथा मामा द्वारा भी लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक परिश्रम द्वारा उन्नति एवं लाभ प्राप्त करने वाला धनी, यशस्वी, धार्मिक तथा सुखी होता है।

वृष लग्नः
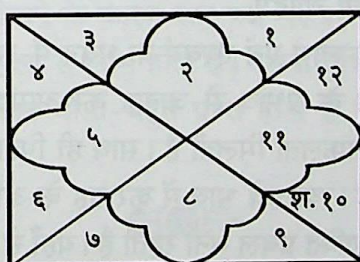
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में कुम्भ राशिस्थ स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य द्वारा यथेष्ट लाभ, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह धर्म-कर्म का पालन भी करता है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च के मामले में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में

त्रुटि रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि, सम्पत्ति तथा घरेलू सुख से असन्तोष बना रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से स्त्रीभाव को देखने के कारण स्त्रीपक्ष में भाग्यशाली होता है तथा दैनिक जीवन में कुछ चिन्तित-सा रहता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम द्वारा महान् सफलता प्राप्त करता है। वह बड़ा भाग्यवान तथा बड़ा सफल व्यवसायी होता है।

वृष लग्नः
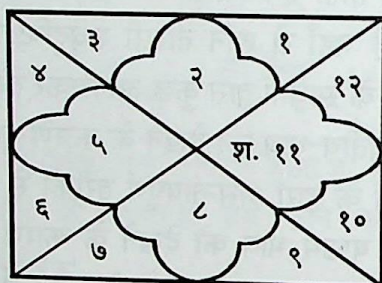
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ एवं ऐश्वर्य के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग पर कुछ कठिनाईयों के बाद सफलता मिलती है। साथ ही पिता पक्ष के द्वारा लाभ से भी असन्तोष रहता है। ग्यारहवें भाव में क्रूर ग्रह के अधिक शक्तिशाली होने के कारण भाग्य की शक्ति प्रबल बनी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शरीर एवं आयु के पक्ष में प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव में देखने के कारण विद्या बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण दैनिक जीवन एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कठिनाईयों का अनुभव होता रहता है।

वृष लग्नः
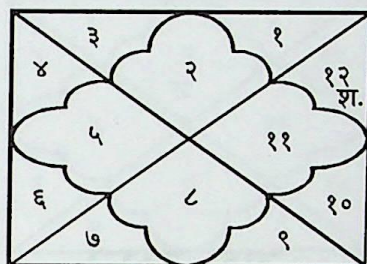
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय तथा बाहरी सम्बन्ध के घर में मेष राशिस्थ नीच के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में परेशानियों का सामना करना पड़ता है, साथ ही राज्य, व्यवसाय, भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। वहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-जन को सामान्य सफलता प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों से लाभ होता है। दसवीं दृष्टि स्वक्षेत्र में पड़ने के कारण भाग्य की शक्ति थोड़ी-बहुत प्राप्त होती है परन्तु यश-सम्मान में कमी बनी रहती है।

वृष लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

वृष लग्नः
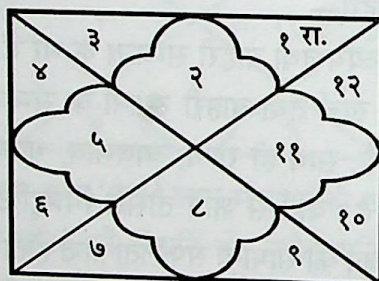
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी तथा कष्ट का योग बनता है, परन्तु गुप्त चतुराई एवं मनोबल द्वारा स्वार्थसाधन में सफलता मिलती है। ऐसी स्थिति वाला जातक बहुत-सी परेशानियों को सहन करने के बाद शक्ति तथा हिम्मत प्राप्त करता है। वह अनेक युक्तियों द्वारा अपने व्यक्तित्व तथा प्रभाव की उन्नति करता है और उसमें सफलता पाता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी चोट अथवा मूर्च्छा का शिकार भी बनना पड़ता है।

वृष लग्नः
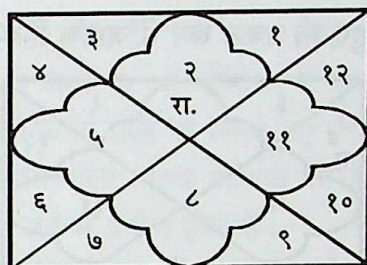
३ १ ४ २ १२ रा. ५ ११ ६ ८ १० ७ ९

द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन व कुटुम्ब भवन में मिथुन राशि स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अनेक युक्तियों एवं चतुराईयों द्वारा अपने धन की वृद्धि करता है, परन्तु कभी-कभी वह कुछ कठिनाईयाँ भी अनुभव करता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक के कुटुम्ब तथा धन की वृद्धि होती रहती है, परन्तु इन दोनों ही पक्षों में उसे समय-समय पर संघर्षों का सामना भी करना पड़ता है।

वृष लग्नः
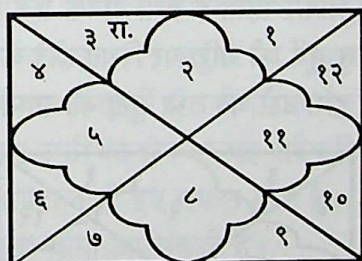
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव पराक्रम तथा भाई के घर में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिनों के पक्ष में भी कष्ट का अनुभव करता है। इसके बावजूद भी तृतीय भाव में स्थित क्रूर ग्रह अधिक शक्तिशाली होता है। इस सिद्धान्त के आधार पर जातक का हौसला बढ़ा रहेगा। मन के भीतर गुप्त-चिन्ताओं तथा

कमजोरियों के रहते हुए भी प्रकट रूप में जातक हिम्मत वाला बना रहेगा।

वृष लग्नः

३ १ ४ रा. २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ ९
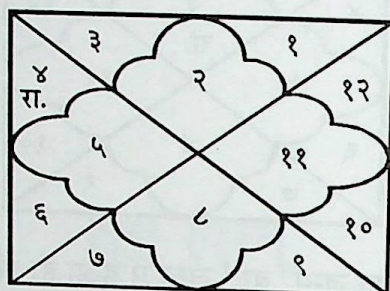
चतुर्थ भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की माता के पक्ष में हानि तथा कष्ट का योग प्राप्त होता है तथा भूमि, सम्पत्ति एवं सुख के साधनों में भी कमी तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके प्रभाव से जातक अपनी जन्म-भूमि से अलग जाकर रहता है तथा अनेक प्रकार के दुःख एवं झंझटों से घिरा रहता है। परन्तु सूर्य की राशि पर स्थित होने के कारण बाद में कठिन श्रम एवं गुप्त-उपायों द्वारा उसे धन तथा सुख की सामान्य प्राप्ति भी होती है।

वृष लग्नः
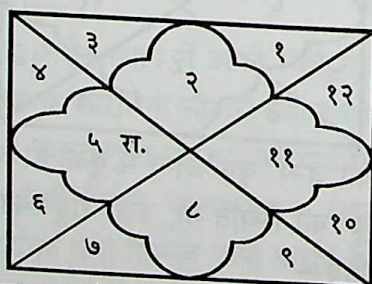
पंचम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान के द्वारा कष्ट

सहित सहयोग की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति प्राप्त करने पर भी मस्तिष्क में कुछ कमी तथा परेशानी अनुभव होती रहती है। कन्या राशि पर स्थित राहु स्वक्षेत्री जैसा माना जाता है, अतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अधिक बोलने वाला, नशेबाज तथा गुप्त युक्तियों से काम लेने में प्रवीण होता है।
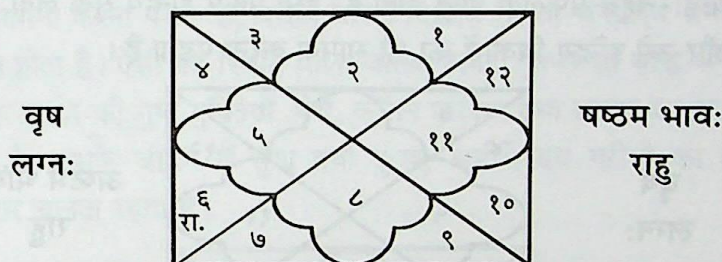
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहता है और वह गुप्त युक्तियों तथा विद्याओं में प्रवीण होता है। शत्रु पक्ष द्वारा कभी-कभी अशान्ति के कारण उपस्थित होने पर वह सदैव हिम्मत से काम लेता है और कठिनाईयों का सामना करते हुए सफल होता है। परन्तु 'राहु' के प्रभाव से मामा के सुख में कुछ कमी आ सकती है।
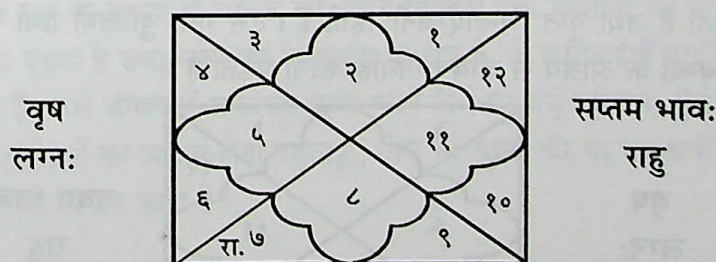
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। अत्यधिक काम करने एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने पर जातक को अपने व्यवसाय में थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार इन्द्रिय सुख लेना पड़ता है और उसे इन्द्रिय विकारों का भी सामना करना पड़ता है।

वृष लग्नः

३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ रा. ९
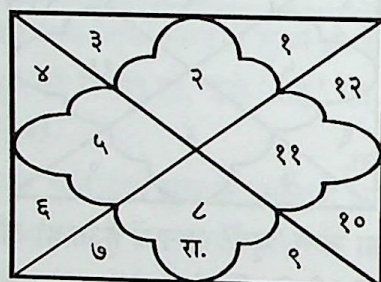
अष्टम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु, आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु तथा जीवन के क्षेत्र में बड़ी कठिनाईयों एवं संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु बृहस्पति की राशि पर स्थित होने के कारण उसमें सज्जनता एवं योग्यता बनी रहती है। राहु की ऐसी स्थिति के कारण जातक को पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी हानि उठानी पड़ती है तथा गुप्त चिन्ताएँ बनी रहती हैं। उसे गुप्त युक्तियों तथा बाहरी सम्बन्धों के आश्रय से जीवन निर्वाह करना पड़ता है।

वृष लग्नः
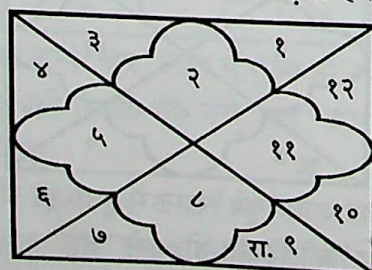
नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी का सामना करना पड़ता है, यद्यपि ऊपरी दिखावे में वह धनी एवं धर्मात्मा प्रतीत होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपनी भाग्य की वृद्धि के हेतु अनेक प्रकार की गुप्त युक्तियों, धैर्य, कठिन परिश्रम तथा साहस का आश्रय लेता है। उसके जीवन में सुख तथा दुःख, अमीरी एवं गरीबी का क्रम निरन्तर चलता रहता है।
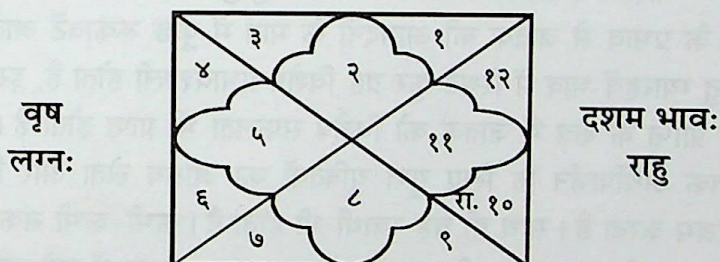
वृष लग्नः

३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ रा. १० ७ ९

दशम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पितृपक्ष द्वारा परेशानी का सामना करना पड़ता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ उपस्थित होती हैं। उसे जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बड़े परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है, फिर भी ऊपरी तौर पर वह धनी एवं प्रतिष्ठित समझा जाता है।

वृष लग्नः
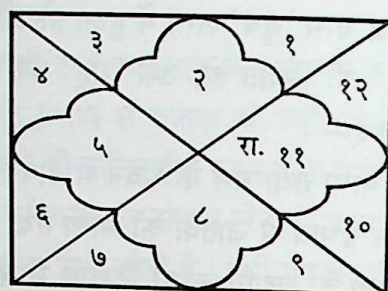
३ १ ४ २ १२ ५ रा. ११ ६ ८ १० ७ ९

एकादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में कुछ रूकावटें आती हैं, परन्तु ग्यारहवें भाव में स्थित क्रूर ग्रह विशेष प्रभावशाली होता है, इसलिए धन प्राप्ति के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता भी प्राप्त होती है। ऐसा जातक अर्थोपार्जन के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता और विशेष परिश्रम करता है। साथ ही वह स्वार्थी भी होता है। कभी-कभी संकटों के आने पर भी वह अपना धीरज नहीं छोड़ता, फलतः अन्त में उसे सफलता प्राप्त होती है।

वृष लग्नः
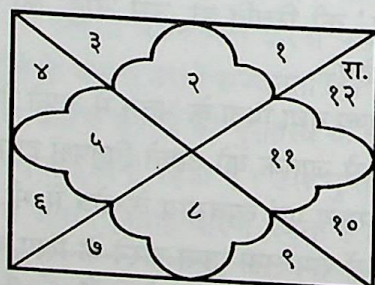
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध वाले व्यय भाव में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च के

मामलों में कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा अपने खर्च को चलाने के लिए कुछ गुप्त युक्तियों एवं चतुराई का आश्रय लेना पड़ता है। उष्ण ग्रह की राशि पर उष्ण ग्रह की स्थिति के कारण जातक का प्रभाव ऊपरी दिखावे में अच्छा बना रहता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता भी प्राप्त होती है।

वृष लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

वृष लग्नः
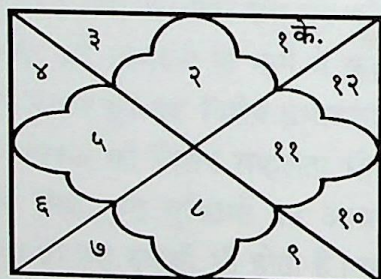
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा मन में गुप्त चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं, परन्तु इसके साथ ही उसका मनोबल बहुत बढ़ा हुआ रहता है, फलस्वरूप वह जिद्दी, हठी, चतुर तथा चालाक भी होता है। ऐसा जातक अपने शारीरिक परिश्रम एवं योग्यता के प्रभाव से अन्य लोगों को प्रभावित करने की सामर्थ्य भी रखता है। साथ ही उसके शरीर में किसी घाव अथवा चोट का निशान भी होता है।

वृष लग्नः
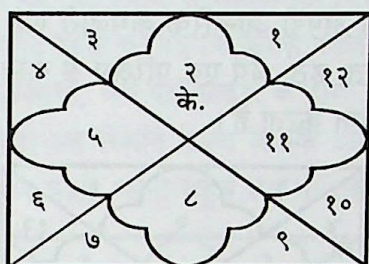
द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन व कुटुम्ब के भवन में धनु राशि स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब के क्षेत्र में बड़ी कठिनाईयाँ, परेशानियों एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। फलतः कभी-कभी उसे प्रतिष्ठा बचाना भी कठिन हो जाता है। ऐसा जातक अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम का सहारा लेता है। परन्तु उसके बावजूद भी उसे धन तथा कुटुम्ब का यथोचित सुख प्राप्त नहीं होता।

वृष लग्नः
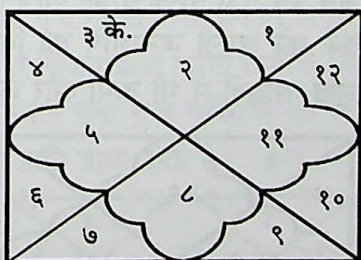
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है। इसी प्रकार भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी उसे कष्ट और हानि का सामना करना पड़ता है, परन्तु तीसरे स्थान में बैठा हुआ क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली होता

है। इस कारण जातक अपनी आन्तरिक कमजोरी एवं अभावों की चिन्ता न करते हुए बहुत हिम्मत, हठ, धैर्य एवं परिश्रम से काम लेता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त करता है।

वृष लग्नः
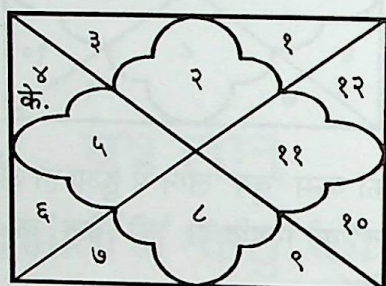
चतुर्थ भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख के क्षेत्र में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा इन सबकी प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को अपनी जन्मभूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है तथा घरेलू सुख-साधनों में भी कमी और कष्ट बने रहते हैं।

वृष लग्नः
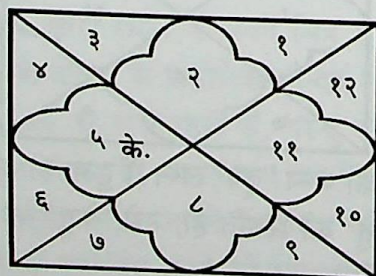
पंचम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या-सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की

कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कमी एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु मित्र-क्षेत्री होने के कारण गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं साहस के द्वारा उसे सामान्य सफलता प्राप्त हो जाती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक अपने मन्तव्य को स्पष्ट शब्दों में प्रकट नहीं कर पाता, परन्तु बहुत साहसी तथा धैर्यवान होता है।
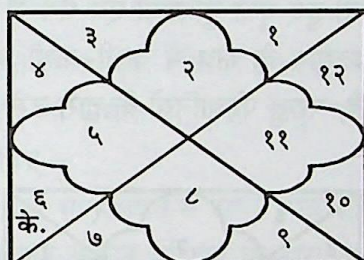
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना विशेष प्रभाव बनाए रखता है तथा अपनी हिम्मत, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अनेक प्रकार की कठिनाईयों तथा विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त करता रहता है। ऐसा जातक चतुर, बड़ा परिश्रमी-साहसी, धैर्यवान तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है, परन्तु मामा के पक्ष से कुछ हानि प्राप्त होती है।
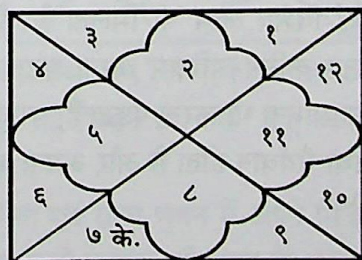
जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी स्त्री के पक्ष में कष्ट तथा हानि उठानी पड़ती है। उसे मूत्राशय में किसी रोग तथा प्रमेह आदि का शिकार भी बनना पड़ता है। व्यवसाय के पक्ष में जातक को कठिन संघर्ष एवं संकटों का सामना करते हुए गुप्त युक्तियों एवं धैर्य से काम लेना पड़ता है। घरेलू जीवन तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी बड़ी विफलताओं का सामना करना पड़ता है, परन्तु परेशानियों के द्वारा उसे कुछ शक्ति भी प्राप्त होती है।

वृष लग्नः
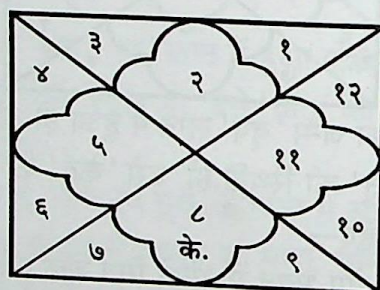
अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी कोई विशेष लाभ भी मिलता है। ऐसे जातक को अपने जीवन-निर्वाह के लिए कठिन-परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी सामान्य परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह अत्यन्त साहसी, गुप्त युक्ति सम्पन्न तथा धैर्यवान होता है और अपना जीवन शान-शौकत के साथ व्यतीत करता है।

वृष लग्नः
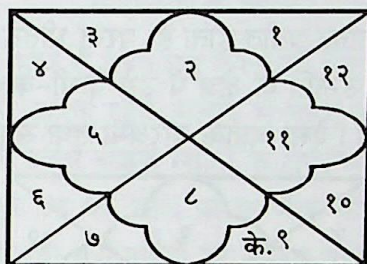
नवम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण तथा भाग्यभवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम के द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है। इसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी कुछ कमी के साथ सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी भाग्य वृद्धि के लिए बड़ी हिम्मत तथा गुप्त-शक्तियों से काम लेता है तथा धर्म में आस्था होते हुए भी, वह उसमें कोई विशेष दिखावा नहीं करता।

वृष लग्नः
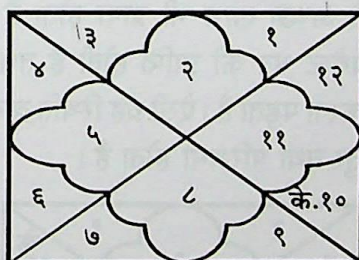
दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता के सम्बन्ध में कुछ कमी आ जाती है। इसी प्रकार राज्य तथा मान-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी उसे कुछ कठिनाईयों के साथ सामान्य सफलता प्राप्त होती है। ऊपरी तौर पर जातक

धनी, सुखी तथा सम्मानित प्रतीत होता है, परन्तु भीतरी रूप में वह कमजोर बना रहता है। अपनी उन्नति के क्षेत्र में उसे कभी-कभी विशेष संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा जातक परिश्रमी तथा साहसी होता है।

वृष लग्नः
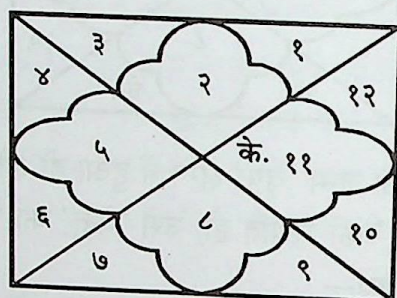
३ १ ४ २ १२ ५ के. ११ ६ ८ १० ७ ९

एकादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु एकादश भाव में बैठा हुआ क्रूर ग्रह विशेष प्रभावशाली होता है, इसलिए उसे अच्छा लाभ भी प्राप्त होता है। कठिन परिश्रम के उपरान्त जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती है तथा कभी-कभी विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक आशावादी, हिम्मती, धैर्यवान, चतुर तथा परिश्रमी होता है।

वृष लग्नः
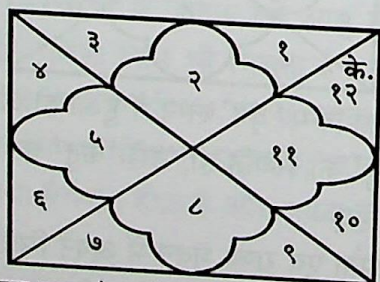
द्वादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृष' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-भाव में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी उसे परेशानियाँ उठानी पड़ती है। क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की उपस्थिति के कारण जातक घोर परिश्रमी तथा कठिनाईयों पर विजय पाने वाला होता है, अतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा साहसी, उद्योगी, धैर्यवान तथा चतुर भी होता है।
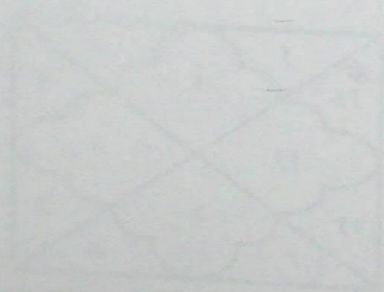
३.
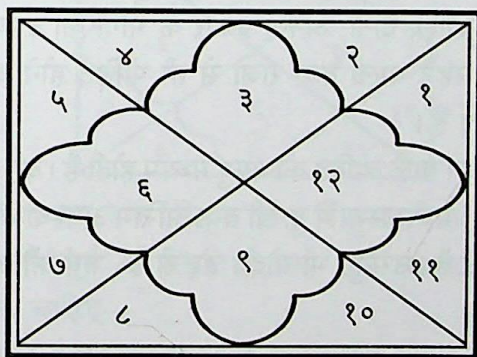
मिथुन लग्न

मिथुन लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

मिथुन लग्न का संक्षिप्त फलादेश

मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गेहुँआ तथा चेहरा गोल होता है। वह स्त्रियों में आसक्त, नृत्य-संगीत-वाद्य आदि का प्रेमी, हास्य-प्रवीण, दूत-कर्म करने वाला, मधुरभाषी, विनम्र, शिल्पज्ञ, विषयी, चतुर, कवि, परोपकारी, सुखी, तीर्थयात्री, गणितज्ञ, ऐश्वर्यवान, बहुसन्तति एवं मित्रवान, सुशील, दानी, अनेक प्रकार के भोगों का उपयोग करने वाला, राजा के समीप रहने वाला तथा राजा से ही पीड़ित होने वाला तथा सुन्दर केशों वाला होता है।

मिथुन लग्न वाले व्यक्ति की आयु मध्यम होती है। वह अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुखी, मध्यावस्था में दुःखी तथा अन्तिम अवस्था में पुनः सुखोपभोग करने वाला होता है। उसका भाग्योदय ३२ से ३५ वर्ष की आयु के बीच का होता है।
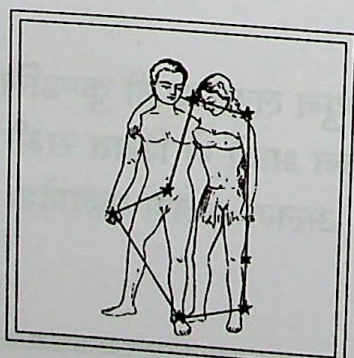
मिथुन लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल

मिथुन लग्नः
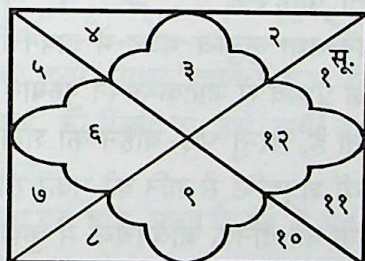
प्रथम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक बड़ा तेजस्वी, हिम्मती, साहसी, पुरुषार्थी तथा उद्योगी होता है। वह अपने परिश्रम द्वारा बड़े-बड़े काम करता है तथा भाई-बहिनों की शक्ति भी प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बृहस्पति की धन राशि वाले सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता मिलती है। ऐसे जातक का गृहस्थ-जीवन सुखपूर्ण होता है और वह स्वयं बड़ा हिम्मती, फुर्तीला, उद्योगी, प्रभावशाली तथा क्रोधी होता है।

मिथुन लग्नः
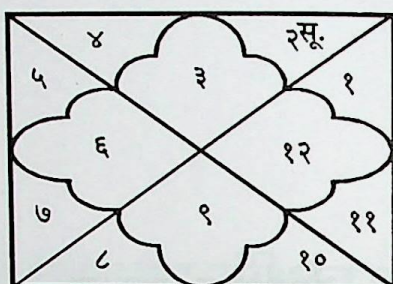
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन तथा कुटुम्ब भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि करता है, परन्तु भाई-बहिन की शक्ति में कुछ कमी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को दैनिक जीवनचर्या में कुछ अशान्ति का अनुभव होता है तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी कमी आ जाती है। प्रायः ऐसा जातक धनी, प्रभावशाली तथा हिम्मतवर होता है।

मिथुन लग्नः
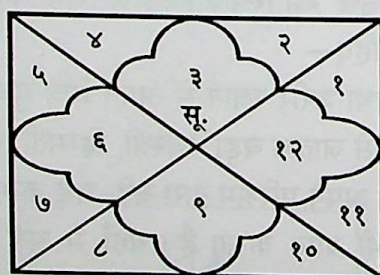
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान पराक्रम एवं भाई-बहिन के घर में अपनी सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अत्यन्त पराक्रमी होता है और उसे भाई-बहिनों की भी शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की

कुम्भ राशि में नवम भाव को देखता है, उसके कारण जातक को अपने भाग्य के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष बना रहता है तथा धार्मिक मामलों में भी कुछ विशेष श्रद्धा नहीं होती। प्रायः ऐसा जातक बड़ा प्रभावशाली, हिम्मतवर, पराक्रमी तथा सुखी होता है।
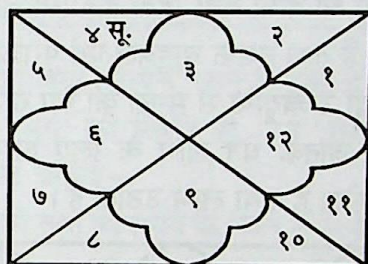
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि-भवन के घर में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है, उसे भाई-बहिनों का सुख तथा सम्मान प्राप्त होता है, माता द्वारा शक्ति मिलती है तथा भूमि-भवन, सम्पत्ति एवं सुख का भी लाभ होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में दशम भाव को देखता है। अस्तु, जातक को पिता द्वारा सहयोग, राजकीय क्षेत्र में सफलता, व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति एवं यश की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, यशस्वी, सुखी तथा परिश्रमी होता है।
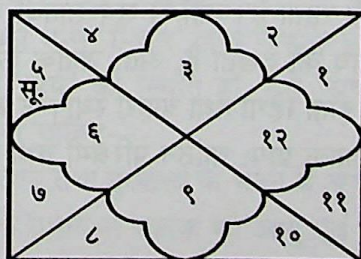
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के स्थान में मिथुन राशि स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट का अनुभव होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला होता है तथा उसके बाहुबल एवं पराक्रम में कमी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि वाले एकादश भाव को देखता है, अतः जातक धन लाभ के लिए असत्य भाषण एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा लाभ उठाता है।

मिथुन लग्नः
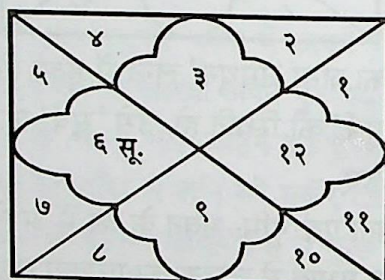
षष्ठम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहता है तथा उसकी पराक्रम-शक्ति बहुत बढ़ी रहती है। ऐसे जातक का भाई-बहिनों के साथ कुछ वैमनस्य भी रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में असन्तोष का अनुभव होता रहेगा तथा बाहरी स्थान के सम्बन्धों से भी विशेष सुख मिलेगा। ऐसा जातक प्रायः कठिन परिश्रमी तथा साहसी भी होता है।

मिथुन लग्नः
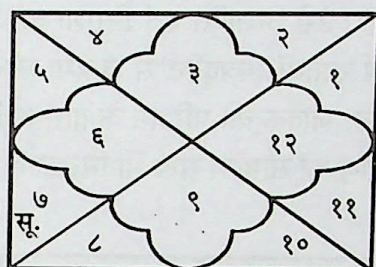
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री पक्ष से सुख, शक्ति एवं प्रभाव प्राप्त करता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परिश्रम द्वारा पर्याप्त सफल होता है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक शक्ति, सौन्दर्य एवं प्रभाव की भी प्राप्ति होती है। साथ ही, उसे अपने गृहस्थ-जीवन के सुख तथा भोगादि में भी सफलता मिलती है।

मिथुन लग्नः
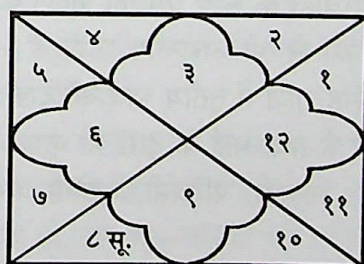
अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ कमी आ जाती है। साथ ही भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी

कमजोरी बनी रहती है। उसे अशान्ति एवं निराशा का अक्सर सामना करना पड़ता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को परिश्रम के द्वारा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख भी मिलता है, परन्तु वह उत्साहहीन बना रहता है।

मिथुन लग्नः
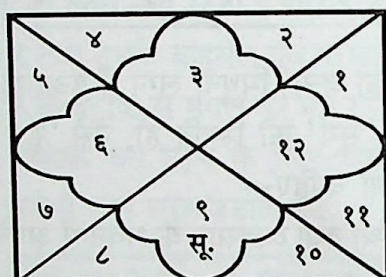
नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति तथा कुछ लापरवाही के साथ धर्म का पालन करता है। साथ ही उसे भाई-बहिन के सम्बन्धों से भी असन्तोष रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से अपनी सिंह राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई के द्वारा भी कुछ सहयोग प्राप्त होता है ऐसा जातक हिम्मती, उत्साही, परिश्रमी, उद्योगी, पराक्रमी, तेजस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

मिथुन लग्नः
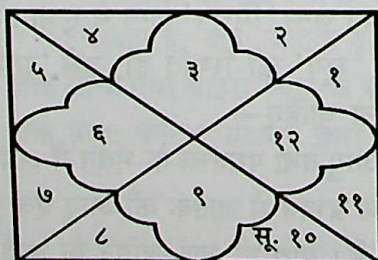
दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पिता की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी लाभ एवं सम्मान अर्जित करता है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि वाले चतुर्थ भाव को देखता है; अतः वह अपने पराक्रम द्वारा सुख की वृद्धि करता है तथा माता, भूमि, भवन एवं सम्पत्ति के पक्ष में भी सन्तुष्ट एवं सुखी बना रहता है।

मिथुन लग्नः
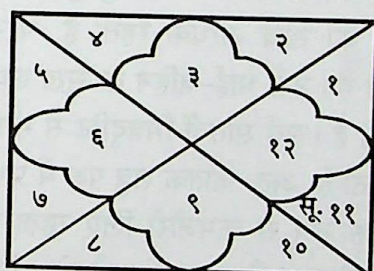
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है और वह उसके द्वारा पर्याप्त धन अर्जित करता है। साथ ही उसे भाई-बहिनों की शक्ति भी मिलती है और उत्साह एवं उमंग की प्राप्ति होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष के सुख में कुछ कमी आती है तथा विद्याध्ययन में भी रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा जातक बड़ा परिश्रमी, हिम्मती एवं स्वभाव का कुछ रूखा होता है।

मिथुन लग्नः
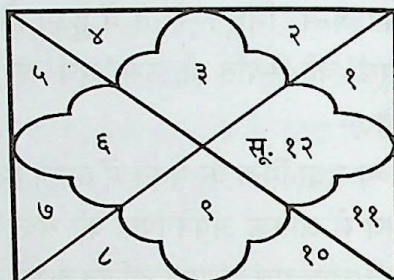
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भवन में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। उसे भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी हानि उठानी पड़ती है। सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में षष्ठम भाव में देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव कायम रखता है। ऐसा जातक आन्तरिक रूप से कमजोरी लिए रहता है वह उसे छिपाकर प्रकट रूप में हिम्मत दिखाता है तथा परिश्रमी होता है।

मिथुन लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

मिथुन लग्नः
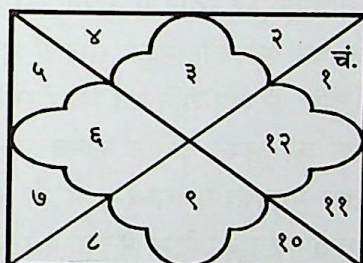
प्रथम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रताप से जातक शारीरिक-शक्ति एवं मनोबल के योग से धनोपार्जन करने में कुशल होता है। साथ ही उसे कौटुम्बिक-सुख भी यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक सुन्दर, धनी, सुखी, प्रतिष्ठित तथा सुन्दर पत्नी वाला होता है।

मिथुन लग्नः
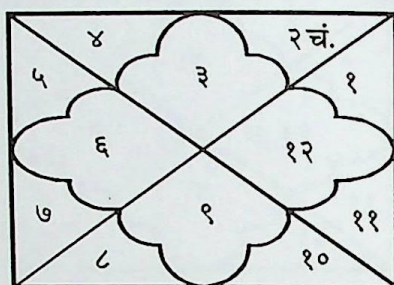
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव धन तथा कुटुम्ब स्थान में अपनी कन्या राशि स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के धन एवं कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की मकर राशि में अष्टम भाव को देखता है, अत: जातक को अपने दैनिक जीनव में कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी कुछ हानि होगी। ऐसा जातक अपने मन को धनोपार्जन की दिशा में लगाए रखता है तथा लाभ प्राप्त करता है। वह यशस्वी एवं सुखी होते हुए भी मानसिक रूप से कुछ चिन्तित बना रहता है।

मिथुन लग्नः
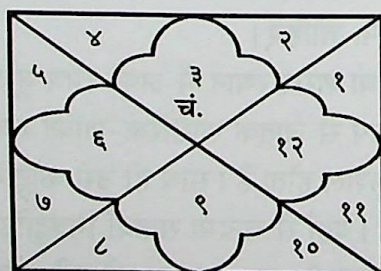
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बन्धु के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में वृद्धि होती है तथा भाई-

बहिनों को सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक को भाग्योन्नति में कुछ कठिनाईयाँ भी आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कमी रहती है। ऐसा जातक धर्म से धन को अधिक महत्त्व देता है। वह पुरुषार्थी धनी, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी भी होता है।

मिथुन लग्नः
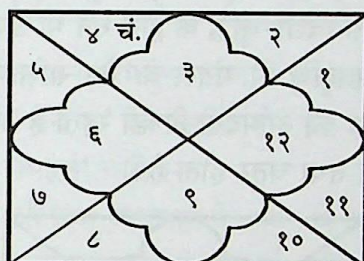
चतुर्थ भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा सुख स्थान में अपने मित्र बुध की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में तो कुछ कमी आती है; परन्तु धन, भूमि, सम्पत्ति तथा कुटुम्ब का सुख खूब प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक के पिता एवं राज्य के द्वारा सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही व्यवसाय में सफलता एवं धन की उन्नति के योग भी बनते हैं। ऐसा जातक धनी, सुखी तथा प्रतिभा सम्पन्न होता है।

मिथुन लग्नः
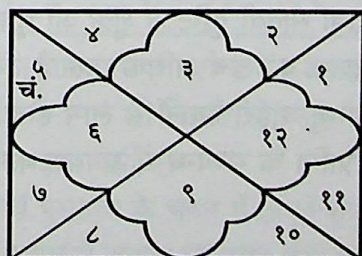
पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या व सन्तान के भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान के सुख में तो कुछ रुकावटें आती हैं परन्तु विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है और वह अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा धन भी उपार्जित करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल के मेष राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह ऐश्वर्यशाली, प्रतिष्ठित, सुखी, धनी तथा चतुर होता है।

मिथुन लग्नः
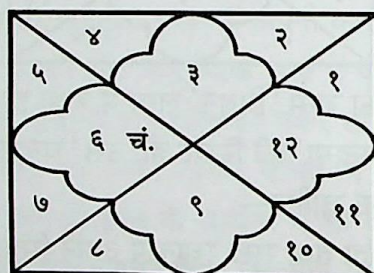
४ ३ २ ५ १ ६ चं. १२ ७ ९ ११ ८ १०

षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि वृश्चिक पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा शत्रु पक्ष द्वारा हानि पहुँचने की सम्भावना भी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से शुक्र की वृष राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण धन का संचय नहीं हो पाता परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को धन प्राप्ति के सम्बन्ध में अपयश का भागी भी बनना पड़ सकता है।

मिथुन लग्नः
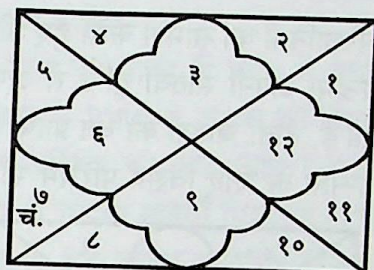
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सुख के साधनों में कुछ रुकावटों के साथ सफलता की प्राप्ति होती है तथा विवाहोपरान्त धन, व्यवसाय एवं भोगादि की उन्नति होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है तथा धन वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।
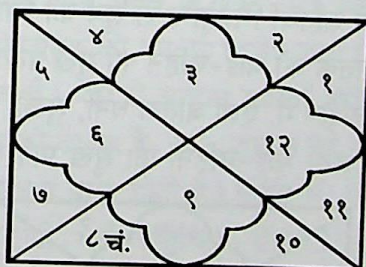
मिथुन लग्नः

अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ परेशानी बनी रहती है तथा धनकोष एवं कुटुम्ब के सुख में भी बाधा पड़ती

है। दैनिक जीवन में परेशानियों का सामना करते हुए भी जातक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अत: जातक को धन प्राप्ति के साधन मिलते रहते हैं तथा कुटुम्ब की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

मिथुन लग्नः
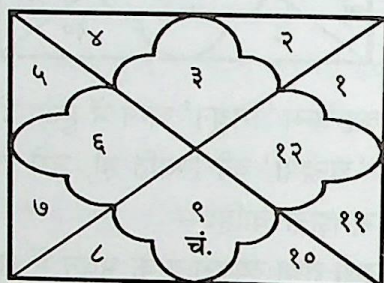
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाग्य पक्ष में कुछ असन्तोष के साथ लाभ होता है और वह धन की वृद्धि के लिए धर्म का पालन करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में तृतीय भाव को देखता है अत: जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी, प्रभावशाली, पराक्रमी, हिम्मतदार तथा भाई-बहिनों का सुख पाने वाला होता है।

मिथुन लग्नः
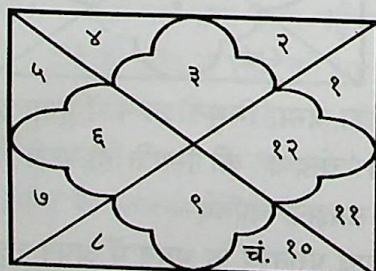
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र गुरु की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य द्वारा लाभ, सुख, धन तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्त होती है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में प्रथम भाव को देखता है, अत: जातक शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है तथा धन-वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।
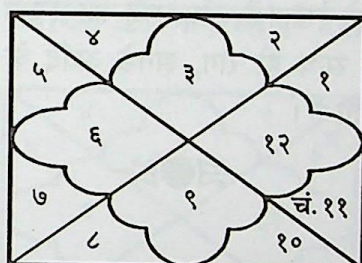
मिथुन लग्न:

एकादश भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है। साथ ही कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचम भाव को देखता है, अत: जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सन्ततिवान, विद्वान्, बुद्धिमान, सुखी, धनी, प्रतिष्ठित, यशस्वी एवं कुटुम्ब का सुख पाने वाला होता है।

मिथुन लग्न:
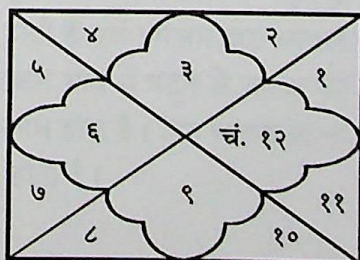
द्वादश भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भाव में शुक्र की वृष राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। साथ ही कुटुम्ब की शक्ति में कुछ कमी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में उसे झुक कर अपना काम निकालना पड़ता है, साथ ही रोग, झगड़े आदि के कारण मन में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

मिथुन लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

मिथुन लग्नः
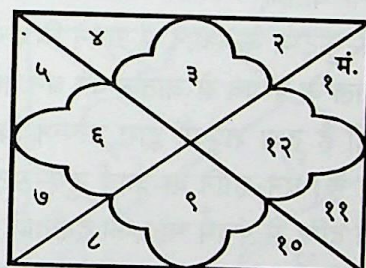
प्रथम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक श्रम द्वारा धन का यथेष्ट लाभ होता है तथा शत्रु पक्ष में भी विजय प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता तथा सुख के पक्ष में कुछ असन्तोषयुक्त लाभ होता है। सातवीं दृष्टि के सप्तम भाव में पड़ने से स्त्री के सम्बन्ध में कुछ रोग तथा परेशानी होती है एवं परिश्रम द्वारा व्यवसाय से लाभ होता है। आठवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव में पड़ने से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा जातक क्रोधी, परिश्रमी, झगड़ालू तथा लाभ कमाने वाला होता है।

मिथुन लग्नः
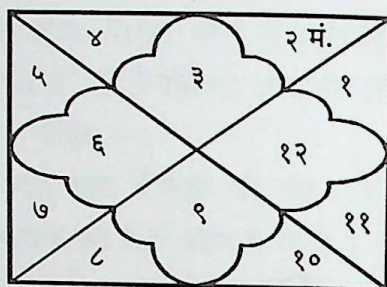
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में हानि उठानी पड़ती है तथा शत्रुओं द्वारा उत्पन्न किए गए झगड़ों में भी नुकसान उठाना होता है। धन-हानि के कार्य जुए-सट्टे द्वारा भी हो सकते हैं। यहाँ से बुध चौथी दृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान के पक्ष में भी कुछ कष्ट होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाई पड़ती है तथा धर्म में सच्ची श्रद्धा नहीं होती। ऐसा जातक धन प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करता है।

मिथुन लग्नः
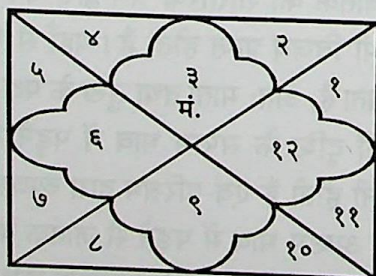
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का कुछ परेशानी के साथ सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है एवं पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि के षष्ठम भाव को देखता है, अत: शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है और उससे लाभ भी उठाता है, सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के पक्ष में सामान्य लाभ होता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता तथा राज्य पक्ष से धन, सम्मान, यश एवं प्रभाव की वृद्धि होती है और जातक अपने परिश्रम द्वारा धनोपार्जन के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है।
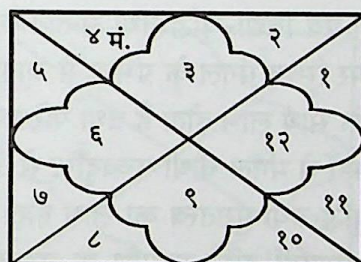
मिथुल लग्न:

चतुर्थ भाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं स्थान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में सामान्य वैमनस्य युक्त लाभ प्राप्त होता है तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है अत: स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी कुछ झंझट के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य के क्षेत्र से परिश्रम द्वारा लाभ एवं यश की प्राप्ति होती है तथा आठवीं दृष्टि से एकादश भाव को अपनी मेष राशि में देखने के कारण आमदनी अच्छी होती है। संक्षेप में, जातक को कुछ परेशानियों के साथ परिश्रम द्वारा सभी क्षेत्रों में लाभ एवं उन्नति के योग प्राप्त होते हैं।

मिथुन लग्नः
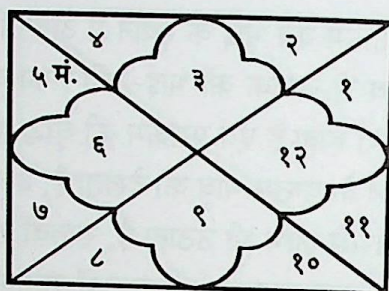
पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष में सामान्य वैमनस्य के साथ लाभ होता है तथा परिश्रम के द्वारा विद्या-बुद्धि की प्राप्ति होती है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है एवं दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। सातवीं दृष्टि स्वराशि के एकादश भाव में पड़ने से जातक गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता है एवं आठवीं दृष्टि द्वादश भाव में पड़ने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। ऐसे जातक को पेट सम्बन्धी बीमारियाँ भी बनी रहती हैं। प्रायः ऐसा जातक परिश्रम द्वारा धनी तथा सुखी होता है।

मिथुन लग्नः
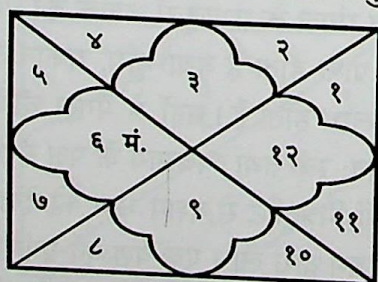
षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रखता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी में भी वृद्धि करता है। उसे झगड़े-झंझटों के मामलों तथा मामा के पक्ष से भी लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी एवं असन्तोष रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर से परिश्रमी होता है तथा परिश्रम द्वारा ही धनोपार्जन करता है।

मिथुन लग्नः

सप्तम भावः मंगल
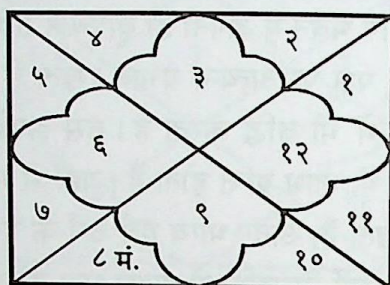
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से कुछ झंझटों के साथ व्यावसायिक-क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा स्त्री पक्ष में भी रोग एवं झंझटों के साथ लाभ होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता तथा राज्य के द्वारा भी कुछ परेशानियों के साथ धन, मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक की शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार आदि रोग भी होते हैं। आठवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन-संग्रह में कमी रहती है, जिसके कारण दुःख का अनुभव होता है। साथ ही, कुटुम्ब के कारण भी क्लेश प्राप्त होता है।

मिथुन लग्नः

अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में शत्रु शनि की मकर राशि में स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी कुछ परेशानी के बाद सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है तथा विदेश के सम्बन्धों से भी आमदनी होती है। जीवन-निर्वाह के लिए बँधी हुई आमदनी का योग रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन-संग्रह में कमी तथा कुटुम्ब से क्लेश रहता है। आठवीं दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ परेशानी के साथ लाभ प्राप्त होता है।

मिथुन लग्नः
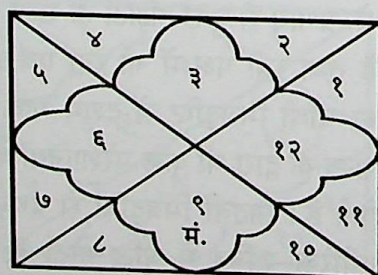
नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति परिश्रम एवं कुछ कठिनाईयों के बाद होती है तथा अरुचिकर रूप से धर्म का पालन भी होता है। शत्रु पक्ष में भी कुछ कठिनाईयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कठिनाईयों के बाद सफलता मिलती है।
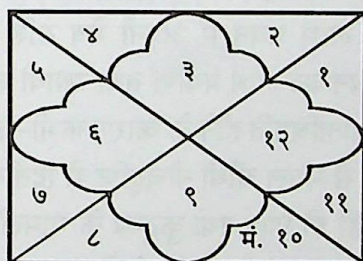
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को परिश्रम द्वारा पिता तथा राज्य के क्षेत्र में लाभ तथा यश की प्राप्ति होती है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी बड़ा प्रभाव बना रहता है। यहाँ से मंगल चौथी-मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अत: शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा कभी-कभी रोग का शिकार भी होना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता तथा भूमि आदि के सुख में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष से वैमनस्ययुक्त लाभ होता है तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक की आमदनी अच्छी रहती है।

मिथुन लग्नः
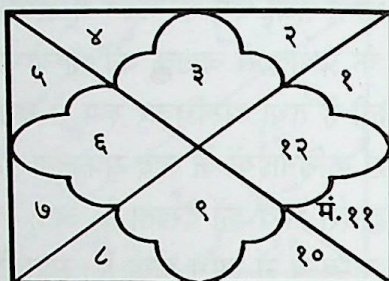
एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपनी मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का लाभ पर्याप्त तथा स्थायी रूप से प्राप्त होता है, परन्तु मंगल के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण कभी-कभी कुछ कठिनाईयाँ उठानी पड़ती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन का संग्रह नहीं हो पाता तथा कुटुम्ब के मामलों में भी कष्ट मिलता है। सातवीं दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष से कुछ परेशानी के साथ लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है और शत्रुओं तथा झगड़ों द्वारा लाभ भी मिलता है।

मिथुन लग्नः
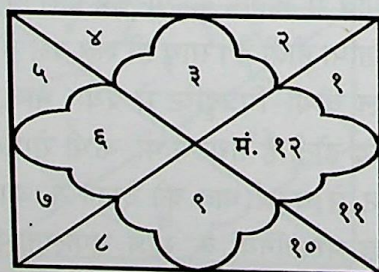
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के पक्ष से भी कुछ परेशानियों के बाद लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृश्चिक राशि में षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से हानि और लाभ दोनों ही मिलते हैं तथा मामा पक्ष कमजोर रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण परिश्रम द्वारा लाभ होता है तथा स्त्री पक्ष से कुछ परेशानी बनी रहती है। विद्वानों का मत है कि ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग हो सकते हैं।

मिथुन लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

मिथुन लग्नः
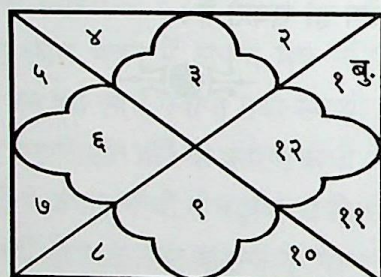
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र, एवं शरीर स्थान में स्वराशि मिथुन स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है, साथ ही उसे माता, भूमि, मकान तथा घरेलू सुख भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। ऐसा जातक विवेकी एवं यशस्वी भी होता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री का विशेष सुख प्राप्त होता है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। ऐसा जातक सुखी, शान्त, धनी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्रापत करने वाला होता है।
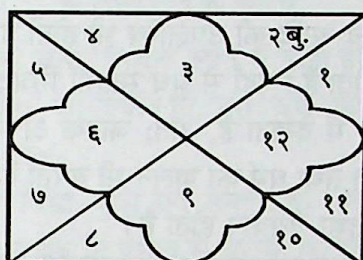
मिथुन लग्नः

द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक धन एवं कुटुम्ब के सुख को प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक सुख में कुछ कमी बनी रहती है। उसे माता के सुख में भी कुछ कमी रहती है परन्तु भूमि, सम्पत्ति आदि का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र शनि की मकर राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

मिथुन लग्नः
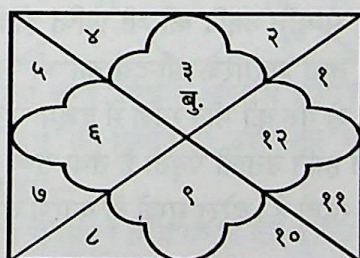
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान पराक्रम एवं भाई-बहिन के घर में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। साथ ही जातक को माता के

सुख एवं भूमि, मकान आदि की उपलब्धि भी होती है। ऐसा जातक बहादुर तथा हिम्मत वाला होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अतः जातक अपने पुरुषार्थ एवं विवेक द्वारा भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक स्वभाव से सज्जन, यशस्वी तथा धैर्यवान होता है।

मिथुन लग्नः
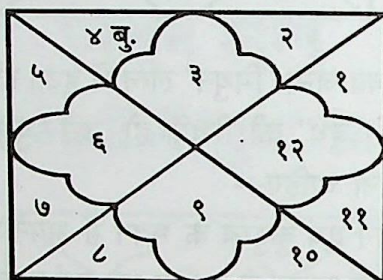
चतुर्थ भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि-भवन के स्थान में अपनी कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को माता द्वारा बहुत सुख प्राप्त होता है तथा भूमि, मकान, सम्पत्ति आदि की भी प्राप्ति होती है। ऐसे जातक को मनोविनोद के साधन तथा शारीरिक सौन्दर्य का भी लाभ होता है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से गुरु की मीन राशि में दशम भाव को देखता है, अतः पिता के स्थान में कुछ हानि उठानी पड़ती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। घरेलू सुखों के कारण जातक कुछ लापरवाह-सा बना रहता है।

मिथुन लग्नः
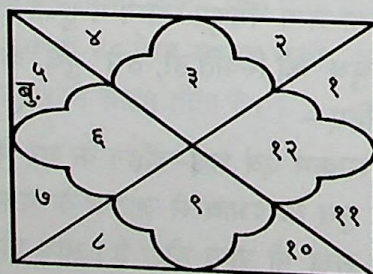
पंचम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भाव में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान एवं विद्या-बुद्धि का विशेष लाभ प्राप्त होता है। ऐसा जातक बड़ा समझदार, गम्भीर, चतुर तथा आत्मविश्वासी होता है। सब लोग उसे बहुत योग्य व्यक्ति मानते हैं। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को अपनी शारीरिक एवं बौद्धिक शक्ति द्वारा पर्याप्त लाभ होता है। साथ ही माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक प्रायः शान्ति प्रिय तथा गम्भीर स्वभाव का होता है।

मिथुन लग्नः
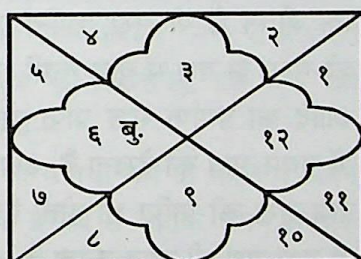
४ ३ २ ५ १ ६ बु. १२ ७ ९ ११ ८ १०

षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में अपनी विवेकशक्ति द्वारा सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति शरीर से खूब परिश्रम करने वाला होता है। उसे माता के सुख तथा भूमि-भवन आदि के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है तथा शारीरिक-सौन्दर्य में भी कमी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से न्याय भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध से सुख प्राप्त होता है। उसे मामा से भी सुख मिलता है, झगड़े, झंझट के कारण कुछ परेशानी भी रहती है।

मिथुन लग्नः
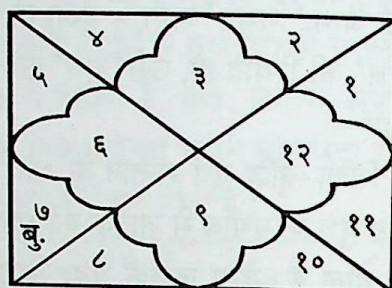
सप्तम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से श्रेष्ठ सुख एवं स्नेह प्राप्त होता है तथा दैनिक जीवन में भी सुख, शान्ति एवं सफलता मिलती रहती है। ऐसे जातक को माता के पक्ष में कुछ कमी रहती है, परन्तु भूमि, मकान, भोग-विलास आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी ही मिथुन राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक-सौन्दर्य, मान-सम्मान, चतुराई तथा सुख की प्राप्ति भी होती है। ऐसा जातक प्रायः बड़ा स्वाभिमानी होता है तथा यश भी प्राप्त करता है।

मिथुन लग्नः
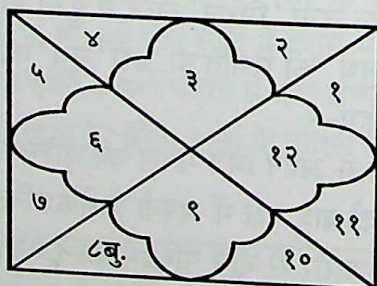
अष्टम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है,

परन्तु माता के सुख में कमी होती है। शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा जातक को अपनी मातृभूमि से हटकर किसी अन्य स्थान पर रहना पड़ता है। भूमि, मकान आदि के पक्ष में भी हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा कुटुम्ब से सुख प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक सुख एवं शान्ति में परेशानी उपस्थित होती रहती है।

मिथुन लग्नः
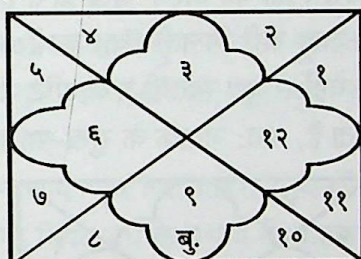
नवम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम तथा विवेक-शक्ति द्वारा उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। वह भूमि, मकान, माता के सुखों आदि को भी प्राप्त करता है तथा भाग्यशाली बन कर अनेक प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिन का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक भाग्यवान, समझदार, सुखी, धनी, विवेकी, सन्तुष्ट तथा यशस्वी होता है।

मिथुन लग्नः
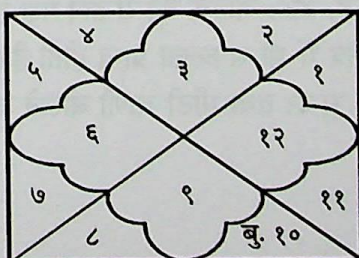
दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक कठिन शारीरिक परिश्रम द्वारा उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है। उसे पिता का अल्प-सुख प्राप्त होता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी विशेष सफलता नहीं मिलती। वह कभी अपमानित और कभी सम्मानित भी होता है। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथम भाव को बुध की कन्या राशि में देखता है, अतः जातक के सुख-साधनों में वृद्धि होती है।

मिथुन लग्नः
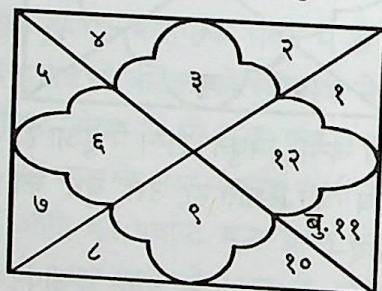
४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ बु. ११ ८ १०

एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर, स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम एवं विवेक के द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। साथ ही भूमि, सम्पत्ति, मकान तथा माता के सुख को भी प्राप्त करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान पक्ष से भी सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, विवेकी, विद्वान्, सुन्दर तथा मीठी वाणी बोलने वाला होता है।

मिथुन लग्न:
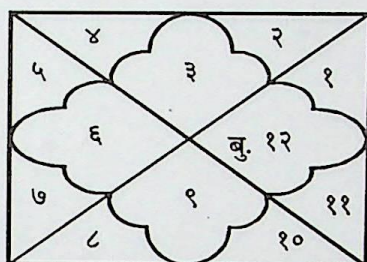
द्वादश भाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भाव तथा बाहरी सम्बन्धों के भाव में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता रहता है। साथ ही माता, भूमि, मकान के सुख सम्बन्ध में कुछ कमी बनी रहती है तथा जातक को अपनी जन्म भूमि से दूर रहकर सुख प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को मंगल की मेष राशि में देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष में शान्ति एवं विवेक के द्वारा सफलता प्राप्त करता है। खर्च की अधिकता के कारण आन्तरिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी वह अपने प्रभाव तथा सम्मान को बनाए रखता है।

मिथुन लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल

मिथुन लग्न:
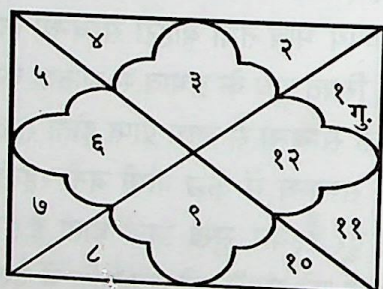
प्रथम भाव: गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, स्वाभिमान, मनोबल तथा सुख की प्राप्ति होती है। साथ ही पिता एवं राज्य द्वारा सहयोग, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु सातवीं दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अत: स्त्री द्वारा भी सुख मिलता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान के पक्ष में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। नौवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी अल्प सफलता मिलती है।

मिथुन लग्नः
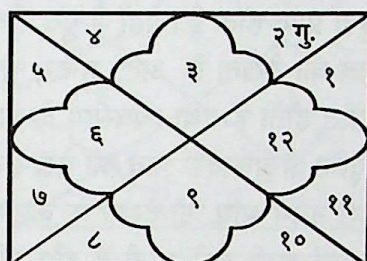
द्वितीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है। अतः शत्रु पक्ष में प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है तथा मामा के पक्ष से सहयोग मिलता है। सातवीं नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। नौवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने के कारण पिता तथा राज्य के द्वारा सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है तथा व्यवसाय द्वारा धन की खूब वृद्धि होती है।

मिथुन लग्नः
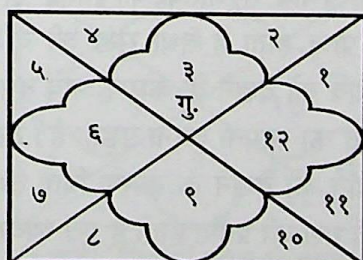
तृतीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है

तथा भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से आपको धनु राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः सुन्दर, सुशिक्षिता एवं सुयोग्य पत्नी द्वारा सुख की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत सफलता मिलती है। नौवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ असन्तोष एवं कमी बनी रहती है और परिश्रम द्वारा धन लाभ होता है।
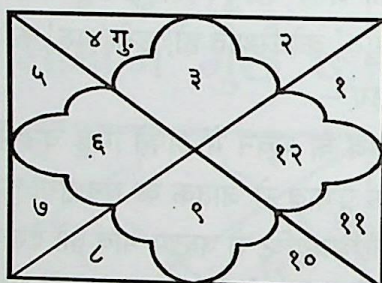
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र माता तथा भूमिसुख भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है तथा सुख की वृद्धि होती है। पाँचवीं नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ हानि एवं अशान्ति का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से अपनी राशि मीन में दशम भाव को देखने के कारण पिता तथा राज्य द्वारा पर्याप्त सहयोग, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है एवं व्यवसाय की उन्नति होती है। नौवीं दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध बना रहता है।

मिथुन लग्नः
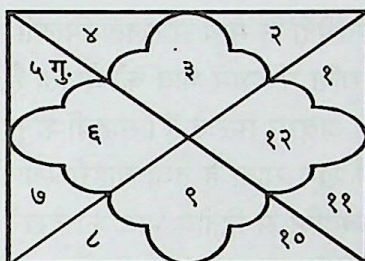
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या, सन्तान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष में कुछ कमी, परन्तु विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण लाभ खूब होता है। नौवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक प्रायः विद्वान्, बुद्धिमान, दूरदर्शी, उन्नतिशील, वाणी की शक्ति का धनी, चतुर, सुखी तथा सफल होता है।

मिथुन लग्नः
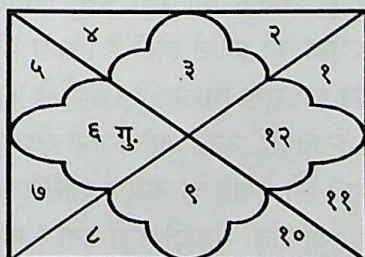
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त होती है। साथ

ही स्त्री पक्ष में कुछ मतभेदों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी मीन राशि में दशम भाव को देखता है, अतः उसे राज्य द्वारा सम्मान एवं उन्नति के अवसर मिलते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। नौवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण परिश्रम के द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से सहयोग प्राप्त होता है। ऐसा जातक उन्नतिशील होता है।

मिथुन लग्नः
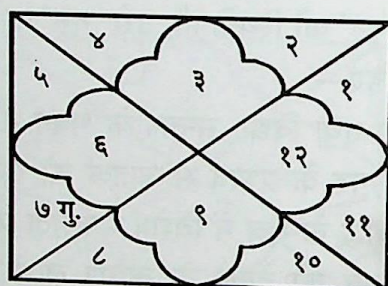
४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ गु. ९ ११ ८ १०

सप्तम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही धनु राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बड़ी सफलता, सुख एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। साथ ही पिता तथा राज्य पक्ष से भी सहयोग, सम्मान एवं सुख मिलता है। यहाँ से जातक पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को लाभ खूब होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य तथा सम्मान की प्राप्ति भी होती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती तथा भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक अधिकांशतः सुन्दर, धनी, सुखी, स्वाभिमानी तथा जीवन में सफलताएँ पाने वाला होता है।

मिथुन लग्नः
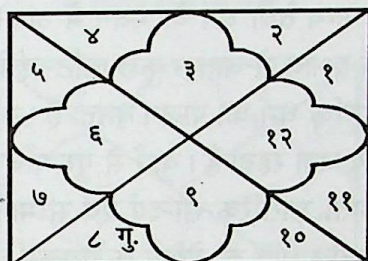
४ ३ २ ५ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ गु. १०

अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में गुरु की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कठिनाईयाँ उपस्थित होती हैं। साथ ही स्त्री, पिता तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कष्ट का अनुभव होता है। उसे उदर-विकार तथा मूत्रेन्द्रिय विकारों का भी सामना करना पड़ता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के कपटपूर्ण सम्बन्धों से गृहस्थी का संचालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक धन वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, मकान, भूमि आदि का सुख प्राप्त होता है।

मिथुन लग्नः
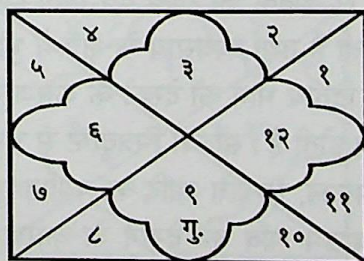
नवम भावः गुरु

जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाईयों के साथ भाग्योन्नति करता है तथा अरुचिपूर्वक धर्म का पालन करता है। साथ ही स्त्री तथा पिता के पक्ष में भी असन्तोष बना रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सहयोग भी मिलता है। नौवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुशलता प्राप्त होती है।

मिथुन लग्नः
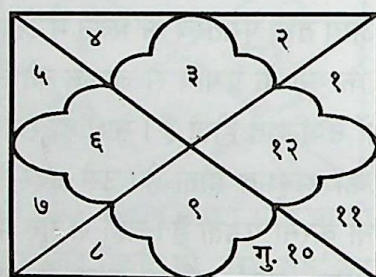
दशम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपनी ही मीन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को राज्य एवं पिता द्वारा सुख, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। पाँचवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन-संचय की उत्तम शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान, सम्पत्ति आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा मामा द्वारा भी सहायता मिलती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

मिथुन लग्नः
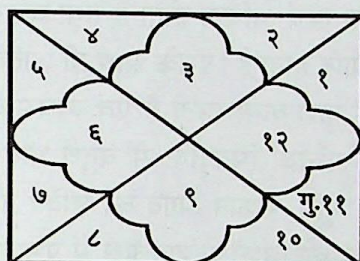
एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा पिता के द्वारा भी पर्याप्त लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष से कुछ असन्तोष के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की खूब प्राप्ति होती है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में विशेष सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है।
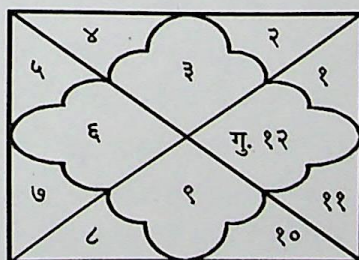
मिथुन लग्नः

द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भाव में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु

के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान तथा लाभ प्राप्त होता है। इसके साथ ही जातक को स्त्री तथा पिता के सुख सम्बन्ध में भी कुछ कमी रहती है एवं व्यवसाय में भी हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता तथा घरेलू सुख, भूमि, मकान आदि की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से शत्रु पक्ष में प्रभाव तथा विजय मिलती है एवं नौवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ हानि उठानी पड़ती है। ऐसे जातक को आयु के सम्बन्ध में खतरों का भी सामना करना पड़ता है।

मिथुन लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

मिथुन लग्नः
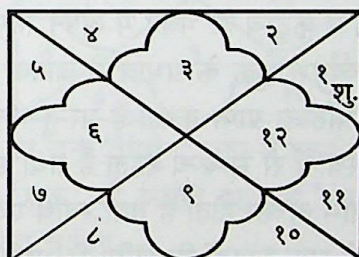
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है, परन्तु विद्या, बुद्धि एवं चातुर्य की पर्याप्त मात्रा में प्राप्ति होती है। ऐसा जातक खूब खर्चीला होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अत: स्त्री से कुछ मतभेद के साथ आसक्ति बनी रहती है तथा बड़ी-बड़ी युक्तियों तथा परिश्रम के साथ दैनिक कार्यों एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। ऐसा जातक बहुत भोगी भी होता है।

मिथुन लग्नः
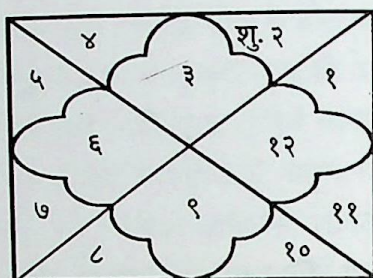
द्वितीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन व कुटुम्ब के भवन में अपने सामान्य शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने बुद्धियोग एवं चातुर्य द्वारा धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता। उसका बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रहता है तथा सन्तान-सुख में कमी आती है। विद्या का लाभ अच्छा होता है तथा स्वार्थ एवं चतुराई की भावना प्रबल रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में हानि-लाभ दोनों ही प्राप्त होते रहते हैं। परन्तु ऐसा जातक अपना जीवन बड़े ठाट-बाट एवं शानदार ढंग से व्यतीत करता है।

मिथुन लग्नः
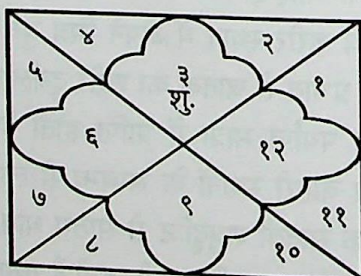
तृतीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख

में कुछ कमी आती है। साथ ही वह विद्या तथा सन्तान के पक्ष में भी कुछ कमजोरी के साथ शक्ति प्राप्त करता है। परन्तु विद्या-बुद्धि में कमजोर होते हुए भी चतुराई एवं वार्तालाप तथा वाक्चतुराई द्वारा अपना काम निकालने में प्रवीण होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, जातक भाग्य वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है तथा धार्मिक मामलों में भी रुचि लेता है। ऐसा जातक पुरुषार्थ द्वारा अपने खर्च को चलाता है तथा चतुराई से काम निकालता है।

मिथुन लग्नः
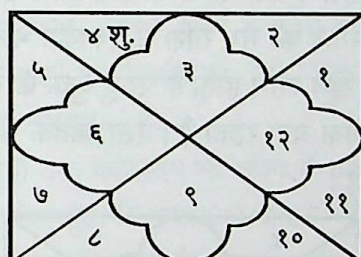
चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में कन्या राशि स्थित व्ययेश नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन आदि के सुख में कमी बनी रहती है। साथ ही सन्तान का सुख भी कम मिलता है तथा व्यय के कारण उसकी सुख-शान्ति में भी बाधा पड़ती है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से गुरु की मीन राशि में दशम भाव को देखता है, अतः पिता तथा राज्य के द्वारा उसे सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है तथा गुप्त चतुराई के बल पर मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

मिथुन लग्नः
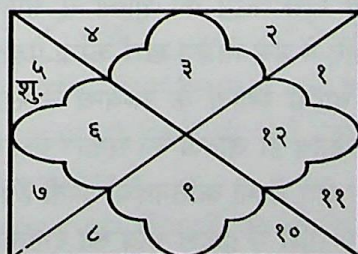
पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में अपनी ही तुला राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में शक्ति प्राप्त होते हुए भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा जातक बुद्धिमान तथा चतुर होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को बुद्धि द्वारा खूब लाभ होता है परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है। ऐसा जातक बहुत बातूनी तथा चतुर व चालाक भी होता है।

मिथुन लग्नः
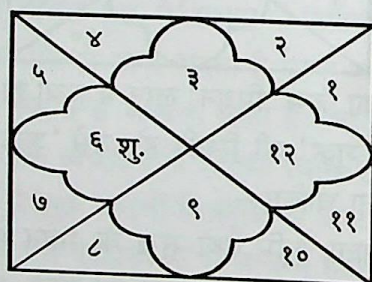
षष्ठम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु तथा रोग भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में अपनी बुद्धिमत्ता, चतुराई एवं खर्च करने की शक्ति से सफलता प्राप्त होती है। झगड़े मुकदमे रोग आदि में उसे विशेष खर्च करना पड़ता है। गुप्त चतुराई से काम निकालने तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाने में जातक कुशल होता है। इसके साथ ही जातक को सन्तान पक्ष से बाधा उत्पन्न होती है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती हैं। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृष राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का

खर्च आय से अधिक बना रहता है।

मिथुन लग्नः
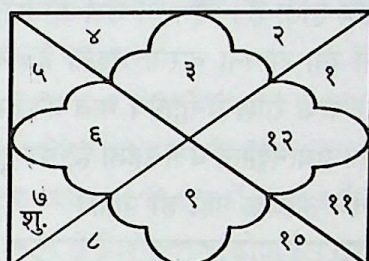
सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को बुद्धिमान एवं चतुर स्त्री मिलती है तथा बुद्धि एवं चतुराई के बल से वह अपने दैनिक खर्चों को भी चलाता रहता है। साथ ही कभी-कभी स्त्री पक्ष से क्लेश एवं चिन्ताएँ भी प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को बुध की मिथुन राशि में देखता है, अत: जातक के शरीर में कुछ कमजोरी बनी रहती है, परन्तु सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसी जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है तथा सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है।

मिथुन लग्नः
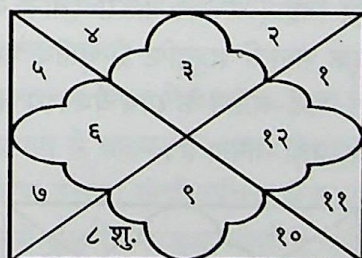
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें एवं पुरातत्त्व भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित

शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। वह परिश्रमी तथा कूटनीतिज्ञ होता है। साथ ही उसे सन्तान, विद्या एवं खर्च के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धनवृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील बना रहता है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण धन का संचय अधिक नहीं हो पाता।

मिथुन लग्नः
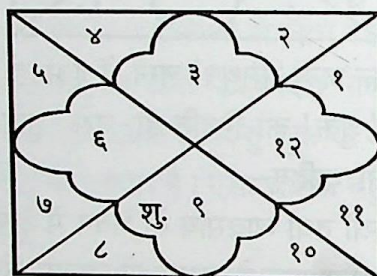
नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण कुछ परेशानियाँ भी आती रहती हैं। इसे साथ ही जातक विद्या एवं सन्तान के सुख को प्राप्त करता है बुद्धिमान एवं विद्वान् बनकर बाहरी स्थानों के सम्पर्क द्वारा लाभ उठाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को सूर्य की सिंह राशि में देखता है, अतः भाई-बहिन के साथ वैमनस्य रहता है और वह भाग्य को पुरुषार्थ से अधिक बड़ा मानता है।

मिथुन लग्नः
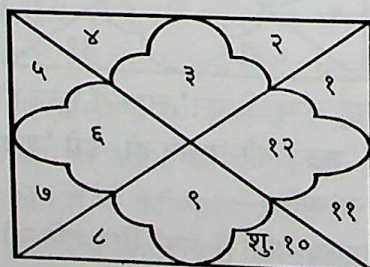
दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि में स्थित व्ययेश तथा उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को अपने पिता की सम्पत्ति तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत हानि उठानी पड़ती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ होता है। साथ ही राज्य द्वारा भी कुछ लाभ तथा सम्मान मिलता है। उसे सन्तान तथा विद्या की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से शुक्र चौथी नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता के सुख एवं भूमि-सम्पत्ति आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसा जातक अपने अहंभाव के कारण बार-बार हानि उठाता है।

मिथुन लग्नः
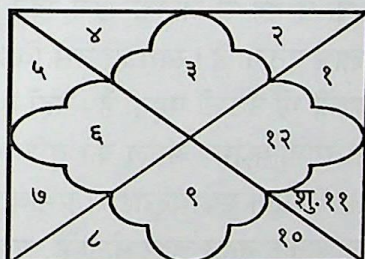
एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब होती है। परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण उसका खर्च अधिक बना रहता है। इसके साथ ही जातक के मस्तिष्क में कुछ चिन्ता तथा परेशानी बनी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान के पक्ष से सुख प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है, परन्तु व्ययेश होने के कारण जातक की सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ भी उठानी पड़ती हैं तथा मस्तिष्क में

चिन्ता भी बनी रहती है।

मिथुन लग्नः
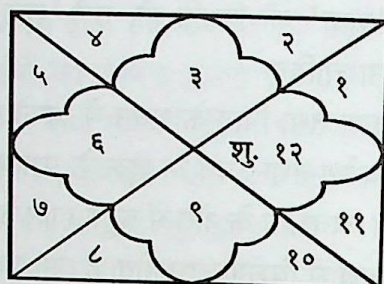
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध वाले घर में अपनी ही वृष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक खर्च खूब करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ उठाता है। साथ ही उसे विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमी एवं परेशानी भी उठानी पड़ती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से षष्ठम भाव को अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में नम्रता एवं चतुराई से प्रभाव स्थापित करके अपना काम निकालेगा। ऐसा जातक बहुत चतुर होता है, परन्तु उसके मस्तिष्क में परेशानियाँ भी बनी रहती हैं।

मिथुन लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फल

मिथुन लग्न:
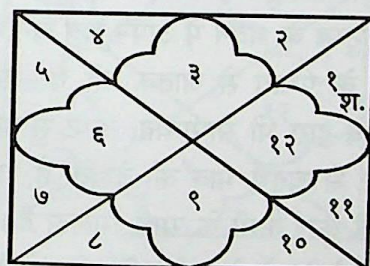
प्रथम भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है। साथ ही आयु, धर्म, भाग्य तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहन से वैमनस्य रहता है एवं पराक्रम में कुछ कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में असन्तोष रहता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को गुरु की मीन राशि में देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है।

मिथुन लग्नः
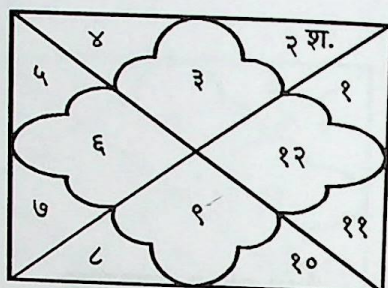
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन व कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक की धन-संचय शक्ति में हानि पहुँचती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी सामान्यतः कष्ट से प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि, मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्व राशि में अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है तथा दसवीं नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाईयाँ आती है। संक्षेप में ऐसा जातक बहुत भाग्यवान समझा जाता है और वह स्वार्थी तथा सज्जन होता है।

मिथुन लग्नः
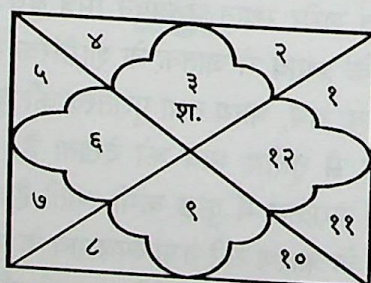
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर

स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कुछ कमी आ जाती है तथा भाई-बहिनों से वैमनस्य बना रहता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है, परन्तु शनि के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाईयाँ भी आती हैं।

दसवीं दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है।

मिथुन लग्नः
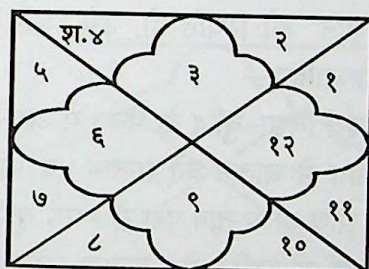
चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक को माता का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। इसी प्रकार भूमि, मकान आदि के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है। परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धर्म का पालन भी होता रहता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष के प्रति कड़ाई से काम लेकर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों द्वारा लाभ प्राप्त करता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य तथा राज्य के क्षेत्र से असन्तोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति की वृद्धि होती है तथा भाग्यवान समझा जाता है।
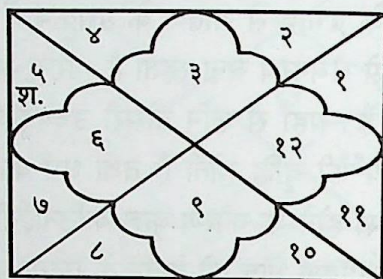
मिथुन लग्नः

पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के भवन में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होती है। साथ ही सन्तान पक्ष से भाग्य वृद्धि का योग भी बनता है। यहाँ से शनि सातवीं नीचदृष्टि से एकादश भवन को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण बड़ी कठिनाईयों के साथ धन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तथा कुटुम्ब द्वारा अल्प-सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक को भाग्योन्नति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है।

मिथुन लग्नः
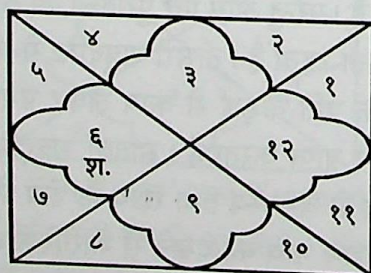
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शत्रु तथा झगड़े-झंझट के क्षेत्र में सफलता एवं विजय प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले अष्टम भाव को देखने से आयु में वृद्धि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च बहुत अधिक बना रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख में बाधा पड़ती है तथा पराक्रम में कमी आती है। ऐसा जातक बहुत परिश्रमी होता है।

मिथुन लग्नः
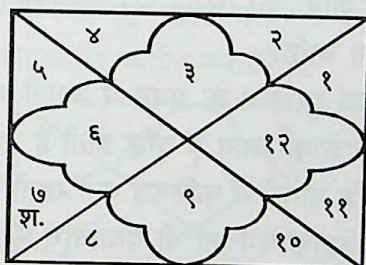
सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के घर में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नवमेश शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख-दुःख तथा हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती है। साथ ही, उसे जननेन्द्रिय में कष्ट भी होता है, परन्तु आयु की वृद्धि होती है। यहाँ शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर के पक्ष में कुछ चिन्तायुक्त प्रभाव प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा मकान के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों में सुख प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक परेशानियों पर विजय प्राप्त कर परिश्रम के द्वारा उन्नति करता है।

मिथुन लग्नः
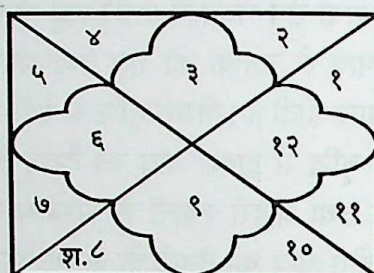
अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी मकर राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु भाग्य के मामले में कठिनाई बनी रहती है तथा सम्मान में भी कमी आती है। ऐसा जातक धर्म का भी यथाविधि पालन नहीं करता। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय में कमी बनी रहती है तथा दसवीं उच्चदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक वाणी की शक्ति द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा भाग्यवान समझा जाता है।
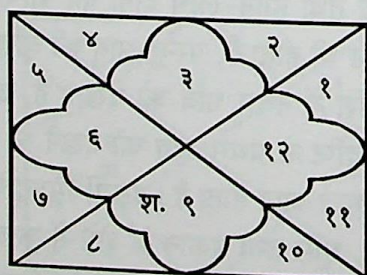
मिथुन लग्नः

नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपनी कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमियाँ तो रहती हैं, परन्तु वह अधिकांश रूप से भाग्यवान समझा जाता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का अच्छा लाभ मिलता है। धर्म पालन में रुचि एवं यश की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पुरुषार्थ में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से परेशानी होने पर भी जातक उनकी चिन्ता नहीं करता तथा उन पर विजय पाता है। ऐसा जातक वैभवशाली का जीवन व्यतीत करता है।

मिथुन लग्नः
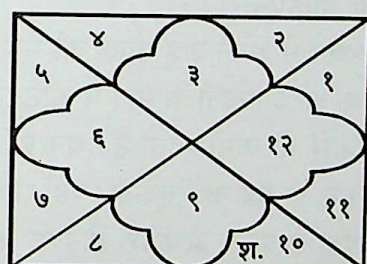
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी मिलती है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में धन, यश तथा सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक स्वार्थ-साधक, भाग्यवान तथा धर्म का पालन करने वाला होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है तथा दसवीं दृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता

मिलती है। कुल मिलाकर जातक प्रत्येक क्षेत्र में परेशानियों के साथ सफलता पाता है।
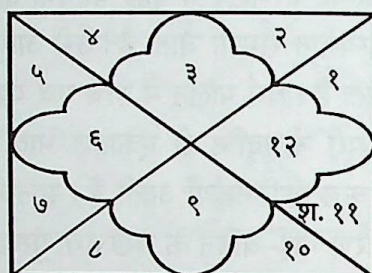
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में कठिनाईयाँ आती हैं। उसके भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमी रहती है। धन प्राप्ति के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग करने से भी वह नहीं चूकता। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है परन्तु अष्टमेश होने के कारण वह जातक के शरीर में कुछ कष्ट देता है तथा नवमेश होने के कारण भाग्यवान भी बनाता है। सातवीं उच्चदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है और दसवीं दृष्टि से अपनी ही मकर राशि में अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि करता है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी देता है। परन्तु नीच का शनि होने के कारण जातक को अपने जीवन में अनेक संकटों तथा असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

मिथुन लग्नः
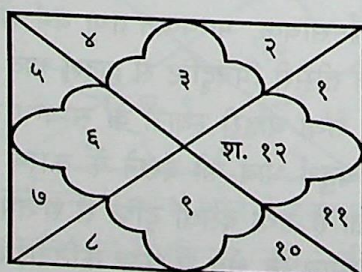
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भाव में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता है। इससे जातक के पुरातत्त्व पक्ष में भी कुछ हानि पहुँचती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-संचय एवं कुटुम्ब के पक्ष में त्रुटि तथा अशान्ति बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष में कठिनाईयों के साथ विजय प्राप्त होती हे एवं दसवीं दृष्टि से अपनी कुम्भ राशि में नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा वह सामान्य रूप से धर्म का पालन भी करता है। ऐसे जातक को सुख-दुःख एवं यश-अपयश की प्राप्ति होती रहती है, परन्तु वह जन साधारण के दृष्टिकोण से भाग्यवान माना जाता है।

मिथुन लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

मिथुन लग्नः
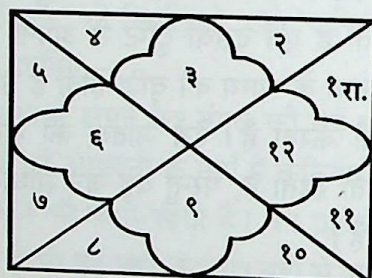
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक का शरीर लम्बा तथा प्रभावशाली होता है। वह विवेकी, गुप्त युक्तिसम्पन्न तथा प्रतिष्ठा पाने वाला होता है। उसके मन में बड़ी हिम्मत बनी रहती है तथा वह अपनी उन्नति के लिए कष्टसाध्य कर्मों को करता तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। ऐसा जातक लम्बी-चौड़ी बातें बनाने वाला, स्वार्थी तथा अपने युक्तिबल पर धन एवं सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

मिथुन लग्नः
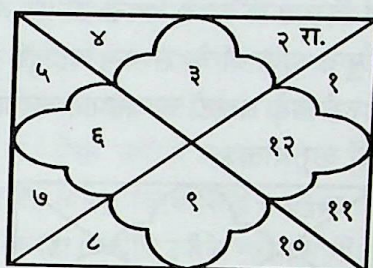
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-सम्पत्ति एवं कुटुम्ब के मामले में बहुत हानि उठानी पड़ती है तथा कष्टों का सामाना करना पड़ता है। वह धन-प्राप्ति के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा कठोर परिश्रम करता है, फिर भी उसे कठिनाईयाँ निरन्तर परेशान करती रहती हैं। ऐसे जातक को अपने जीवन में बहुत समय बाद अत्यधिक मेहनत से धन का अल्प सुख प्राप्त होता है।

मिथुन लग्नः
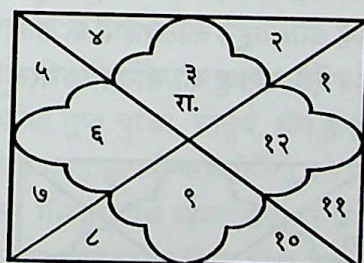
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव पराक्रम तथा बन्धु स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख-सम्बन्ध में कमी एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है।

वह परिश्रम, कष्ट एवं हिम्मत के साथ अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करता है। वह धैर्यवान तथा गुप्त युक्तियों के सम्पन्न बहादुर स्वभाव का भी होता है। परन्तु कभी-कभी उसे बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है; अतः वह अपनी पूर्ण उन्नति नहीं कर पाता।

मिथुन लग्नः
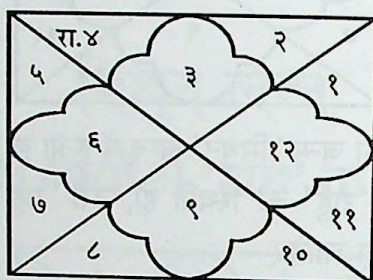
चतुर्थ भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र एवं माता के सुख भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त होती है तथा भूमि, सम्पत्ति, मकान एवं घरेलू सुख में भी कुछ असन्तोष एवं झगड़े-टंटे का योग बना रहता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों के बल पर सुख प्राप्ति का प्रयत्न करता है और बहुत कठिनाईयों के बाद सुख के साधन प्राप्त करने में सफल होता है। ऐसे जातक को जीवनभर घरेलू सुख शान्ति में कमी का अनुभव होता रहता है।

मिथुन लग्नः
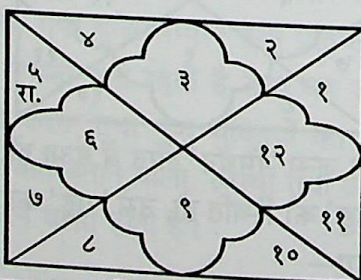
पंचम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में अनेक युक्तियों के बाद सफलता प्राप्त होती है परन्तु सन्तान पक्ष से कुछ कष्ट बना रहता है। ऐसा जातक बहुत चतुर, गुप्त युक्तियों वाला तथा बुद्धिमान होता है। वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए असत्य भाषण करने में भी संकोच नहीं करता। यद्यपि उसके मस्तिक में अनेक प्रकार की चिन्ताएँ बनी रहती हैं, परन्तु उसकी बातचीत बड़ी प्रभावोत्पादक होती है।

मिथुन लग्नः
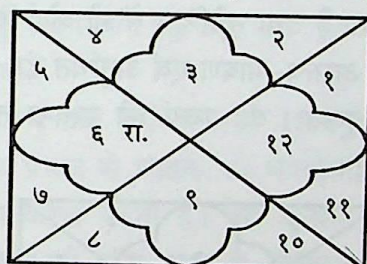
४ २ ५ ३ १ ६ रा. १२ ७ ९ ११ ८ १०

षष्ठम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष में अत्यन्त प्रभाव बनाए रहता है। वह शत्रुओं द्वारा परेशानियों का अनुभव करने पर भी उन पर विजय प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्ति, चातुर्य, धैर्य, साहस, हिम्मत तथा वीरता की प्रतिमूर्त्ति होती है। वह अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता तथा प्रत्येक झगड़े-झंझट में लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है। परन्तु वह अपने मामा के पक्ष को कुछ हानिकारक सिद्ध होता है।

मिथुन लग्नः
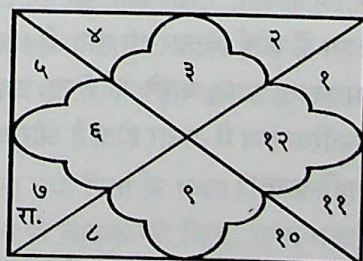
सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री के द्वारा विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। उसे अपनी गृहस्थी का संचालन करने के लिए हर समय चिन्तित एवं परेशान रहना पड़ता है तथा मूत्रेन्द्रिय में भी कोई विकार होता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों, असत्य-भाषण एवं अनुचित ढंग से भी अपना स्वार्थ सिद्ध करने में नहीं चूकता। वह स्वयं को परतन्त्र तथा परेशान-सा भी अनुभव करता रहता है।

मिथुन लग्नः
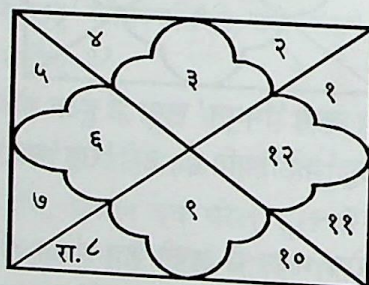
अष्टम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कठिनाईयों, मुसीबतों, निराशाओं का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निचले भाग में कोई विकार भी होता है। वह गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता रहता है। उसके बाह्य तथा आभ्यन्तरिक रूप में अन्तर होता है और वह अपनी कठिनाईयों को किसी पर प्रकट नहीं करता।

मिथुन लग्नः
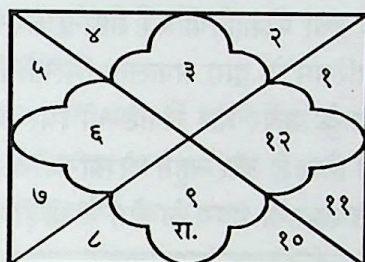
नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म-भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति के क्षेत्र में अन्य कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वह अत्यन्त परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों द्वारा अपने भाग्य की वृद्धि करता है, लेकिन जीवन भर उसे पूर्ण सुख तथा सम्मान प्राप्त नहीं होता। इसी प्रकार उसका धर्म पालन भी दिखावटी होता है। क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की उपस्थिति के कारण जातक कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा बाद में थोड़ी-सी सफलता अर्जित कर लेता है।

मिथुन लग्नः
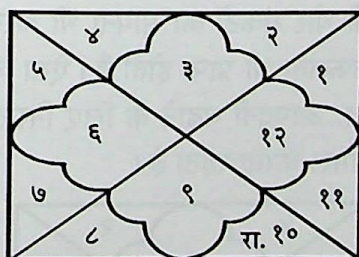
दशम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के सुख-

सम्बन्ध में कठिनाईयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता मिलती है, परन्तु कभी-कभी व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा के ऊपर घोर संकट भी घिर आते हैं। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः आदर्शवादी होता है और बहुत परेशानियाँ व संकट उठा चुकने के बाद अन्त में यश, प्रतिष्ठा तथा भाग्य के क्षेत्र में थोड़ी सफलता पा लेता है।

मिथुन लग्नः
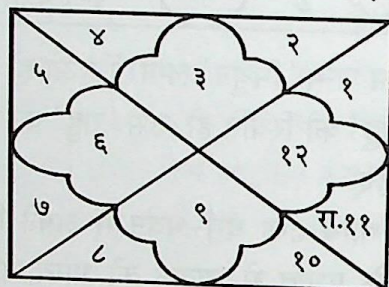
एकादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' राशि में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक बड़ी गुप्त युक्तियों से काम लेकर अपने उद्‌देश्य में सफलता प्राप्त करता है वह कठिन परिश्रम द्वारा लाभ अर्जित करता है। यद्यपि उसे कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, तथापि अन्त में उसे विशेष सफलता भी प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति थोड़े लाभ से सन्तुष्ट नहीं होता, अतः आमदनी बढ़ाने के लिए निरन्तर नई-नई योजनाएँ बनाता और उन पर अमल करता रहता है।

मिथुन लग्नः
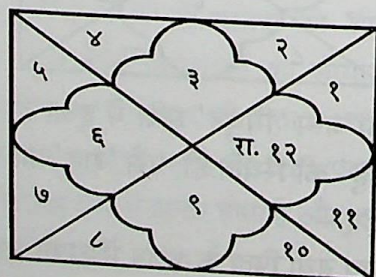
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है और उस सम्बन्ध में उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा जातक अपनी गुप्त योजनाओं, युक्तियों एवं चातुर्य के बल पर अपने व्यय का संचालन करता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से परिश्रम द्वारा लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बहुत परिश्रमी होता है और सामाजिक दृष्टि में प्रभावशाली बना रहता है।

मिथुन लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

मिथुन लग्नः
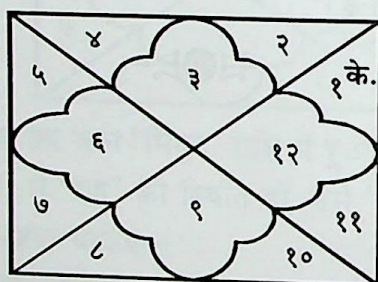
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है वह गुप्त चिन्ताओं से चिन्तित बना रहता है और रोग तथा चोट का सामना भी करता है। वह अपने शारीरिक श्रम तथा गुप्त युक्तियों द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा विवेक शक्ति द्वारा स्वार्थ-साधन में सफलता भी प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति में स्वाभिमान की मात्रा कम होती है, परन्तु वह विवेकशील होता है।

मिथुन लग्नः
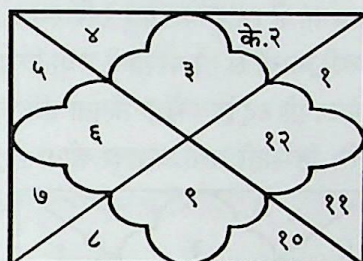
द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित के केतु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में चिन्ताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। धन का संचय न हो पाने से वह कभी-कभी बहुत कष्ट भी पाता है तथा कौटुम्बिक कारणों से मानसिक-क्लेश का शिकार बना रहता है। ऐसा जातक धन-संचय के लिए गुप्त धैर्य एवं साहस से काम लेता है और अनेक कठिनाईयों के बाद थोड़ी बहुत सफलता प्राप्त करता है।

मिथुन लग्नः
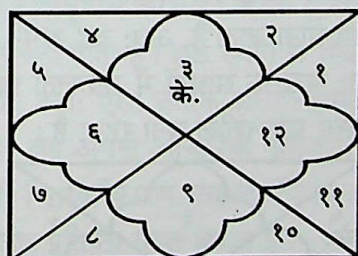
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान पराक्रम एवं सहोदर भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है; क्योंकि तृतीय भाव में स्थित क्रूर

ग्रह विशेष शक्तिशाली होता है। राहु के शत्रु राशिस्थ होने के कारण जातक को अपने पुरुषार्थ सम्बन्धी कार्यों से ही परेशानी तथा निराशा का अनुभव होता रहेगा, परन्तु अन्त में उसे अपने उद्देश्य में सफलता एवं विजय भी प्राप्त होगी। ऐसा जातक दृढ़निश्चयी, हिम्मती तथा बहादुर होता है।

मिथुन लग्नः

४ के. २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०
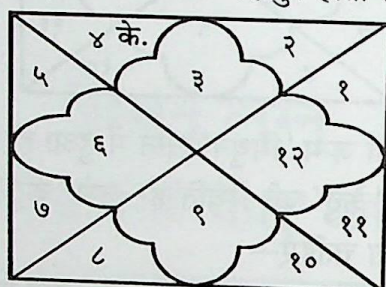
चतुर्थ भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक घरेलू सुख को प्राप्त करने के लिए चतुराई का आश्रय लेता है, परन्तु उसे माता, भूमि तथा मकान आदि के सुख में कुछ कमी एवं असन्तोष का सामना करना पड़ता है। कन्या राशि पर स्थित 'केतु' को स्वक्षेत्री जैसा माना जाता है, अतः वह अपने गुप्त धैर्य एवं साहस के बल पर वह अन्ततः सुख के साधनों में सफलता प्राप्त कर लेता है तथा स्थायी सुख पाने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

मिथुन लग्नः
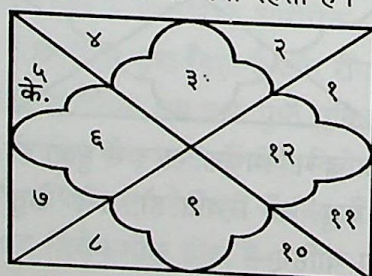
पंचम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से मिलता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाईयाँ आती हैं, परन्तु वह अपने गुप्त धैर्य की शक्ति द्वारा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। सन्तान पक्ष में भी उसे कठिनाईयों के द्वारा सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा जातक अत्यन्त चतुर तथा हिम्मती होता है।
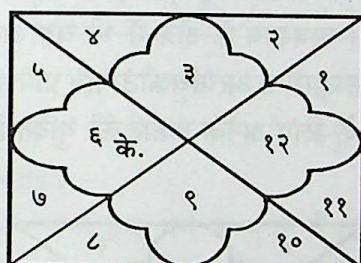
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थिति 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष का दमन करता है और गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर उन पर विजय पाता है। छठे स्थान में स्थित क्रूर ग्रह अधिक शक्तिशाली कहा गया है, अतः ऐसा जातक झगड़े-झंझट-मुकदमे आदि में सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी आन्तरिक कमजोरी को छिपाकर बड़ी हिम्मत से काम लेता है, जिसके कारण सब लोग उसका लोहा मानते रहते हैं। इसी से वह सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

मिथुन लग्नः
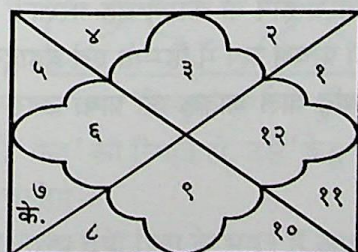
सप्तम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर उच्च के 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में कुछ कठिनाईयों के बाद अनेक प्रकार की सफलताएँ प्राप्त होती हैं तथा इन्द्रिय-भोगादि की विशेष प्राप्ति होती है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी वह अत्यन्त कठिन परिश्रम तथा दौड़-धूप करने के उपरान्त अत्यधिक उन्नति प्राप्त करता है तथा निरन्तर उन्नतिशील बने रहने के लिए अनेक प्रकार की युक्तियों का प्रयोग करता है तथा सफल होता है।

मिथुन लग्नः
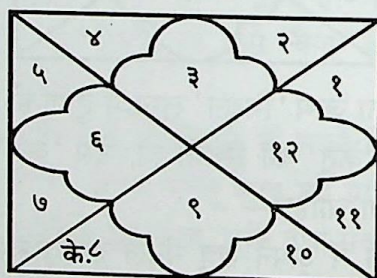
अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है, परन्तु केतु के मित्र राशिस्थ होने के कारण वह परेशानी के समय भी अपने धैर्य को नहीं खोता तथा प्रत्यक्ष रूप में हिम्मत एवं बहादुरी का प्रदर्शन करता रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को प्रायः उदर-विकार से भी ग्रस्त होना पड़ता है।
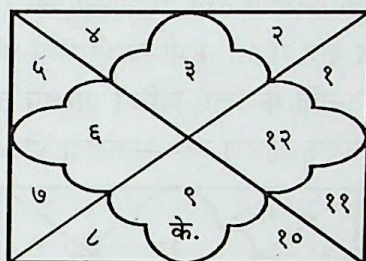
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के सम्बन्ध में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उस सम्बन्ध में वह कठिन परिश्रम करके थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक धर्म का यथार्तः पालन नहीं कर पाता तथा उसके यश में कमी बनी रहती है। फिर भी, क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की स्थिति होने से गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम द्वारा उक्त सभी क्षेत्रों में जातक को थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त हो जाती है।
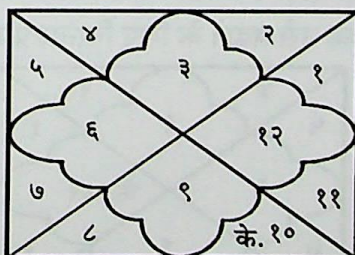
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु बृहस्पति की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य के पक्ष

में अनेक प्रकार की कठिनाईयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा मान-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी कभी-कभी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। ऐसा जातक अपनी उन्नति के लिए कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा उनके कारण कुछ सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

मिथुन लग्नः
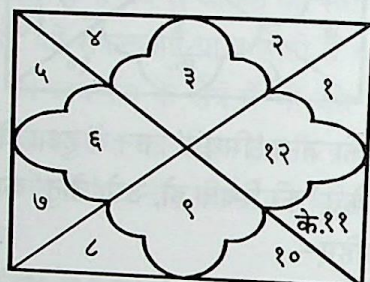
४ ३ २ ५ १ ६ १२ ७ ९ के.११ ८ १०

एकादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आमदनी के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं साहस के बल पर वह कठिनाईयों पर विजय पाकर अन्त में सफल होता है। यद्यपि उसे अपनी आमदनी से पूर्ण सन्तोष नहीं होता, फिर भी वह उसे बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।
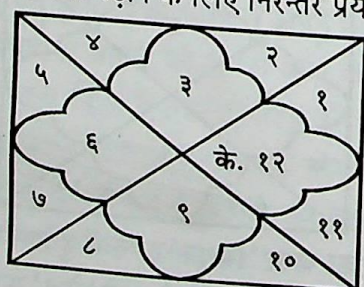
मिथुन लग्नः

द्वादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से घर में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक बना रहता है, जिसके कारण उसे कठिनाईयों तथा कभी-कभी बड़े भारी संकट का सामना भी करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी परेशानी प्राप्त होती है, परन्तु केतु के अपने मित्र की राशि पर स्थित होने के कारण जातक अपनी गुप्त युक्ति, चातुर्य, परिश्रम एवं हिम्मत के बल पर अपने खर्च को चलाते रहने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।
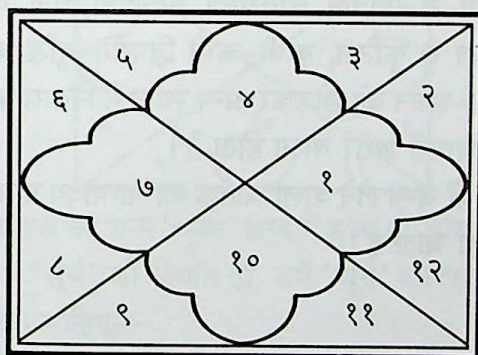
कर्क लग्न

कर्क लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

‘कर्क’ लग्न का संक्षिप्त फलादेश

‘कर्क’ लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर गौर वर्ण होता है। वह पित्त प्रकृति वाला, जल क्रीड़ा का प्रेमी, मिष्ठान्न-भोजी, भले लोगों से स्नेह करने वाला, उदार, विनम्र, बुद्धिमान, पवित्र, क्षमाशील, धर्मात्मा, दृढ़निश्चयी, कन्या-सन्ततिवान, व्यवसायी, मित्रद्रोही, धनी, व्यसनी, शत्रुओं से पीड़ित, स्वभाव से कुटिल, कभी-कभी विपरीत-बुद्धि का परिचय देने वाला, अपने जन्म-स्थान को छोड़कर अन्य स्थान में निवास करने वाला और कृष, परन्तु शक्तिशाली शरीर वाला होता है।

कर्क लग्न में जन्म लेने वाला जातक का भाग्योदय प्राय: १६-१७ वर्ष की आयु में ही हो जाता है।
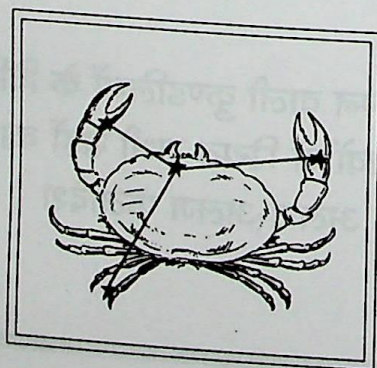
कर्क लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल

कर्क लग्नः
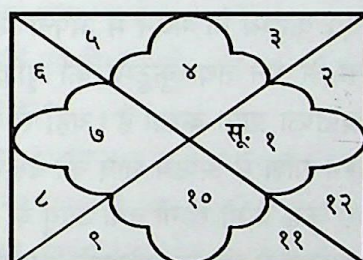
प्रथम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति, सौन्दर्य एवं तेज में वृद्धि होती है तथा वह धन एवं कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त कर दूसरों की दृष्टि में धनी तथा प्रतिष्ठित समझा जाता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष एवं कठिनाईयों के साथ लाभ प्राप्त होता है।

कर्क लग्नः
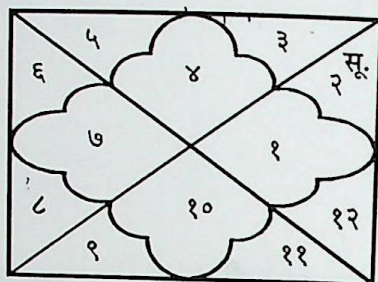
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, जिसके कारण वह प्रभाव तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कमी रहेगी तथा आयु के सम्बन्ध में सामान्य कठिनाई एवं दैनिक जीवनचर्या में भी कुछ परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

कर्क लग्नः
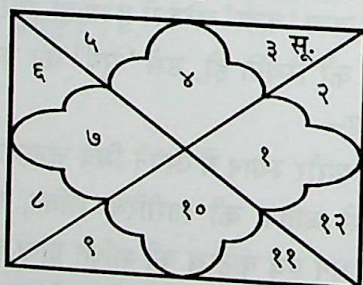
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान पराक्रम एवं सहोदर के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों के पक्ष में कुछ त्रुटियों के साथ शक्ति प्राप्त होती है। पराक्रम द्वारा ही जातक अपने धन की वृद्धि भी करता है और प्रतिष्ठित होता

है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक अपने पराक्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि तथा धर्म का पालन करता है। उसे प्रभाव तथा सम्मान की प्राप्ति भी होती है।

कर्क लग्नः — चतुर्थ भावः सूर्य
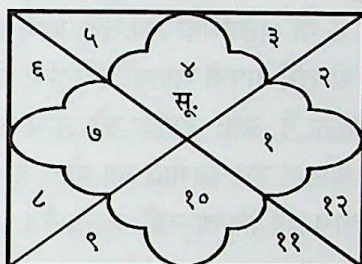
(५, ३, ६, ४ सू., २, ७, १, ८, १०, १२, ९, ११)

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को माता, भूमि व भवन के सुख में कमी रहती है। साथ ही, धन एवं कुटुम्ब का सुख भी कम मिल पाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, धन तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए धन तथा सुख की विशेष चिन्ता नहीं करता।

कर्क लग्नः — पंचम भावः सूर्य
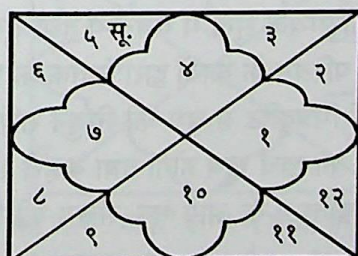
(५ सू., ३, ६, ४, २, ७, १, ८, १०, १२, ९, ११)

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण तथा विद्या-बुद्धि सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कुछ बाधा मिलती है, परन्तु एक सन्तान अत्यन्त प्रभावशाली होती है। साथ ही विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है तथा धन की भी वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में एकादश भाव को देखता है अतः जातक को लाभ की शक्ति भी पर्याप्त मिलती है। परन्तु ऐसा जातक उग्र स्वभाव का होता है और वह स्पष्ट बात कहने में अपने हानि-लाभ की चिन्ता नहीं करता है।

कर्क लग्नः
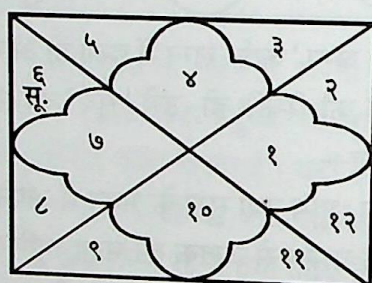
५ ४ ३ २ ६ सू. ७ १ ८ १० १२ ९ ११

षष्ठम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में अत्यधिक प्रभावशाली बना रहता है, परन्तु धन-संचय के क्षेत्र में कमजोरी एवं कौटुम्बिक सुख में वैमनस्य तथा सुख दोनों प्राप्त करता है। झगड़े-टंटे से युक्त परिश्रम के कार्यों द्वारा जातक के प्रभाव में वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च खूब होगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होगा। वह प्रतिष्ठा के आगे धन-संचय की चिन्ता नहीं करेगा।
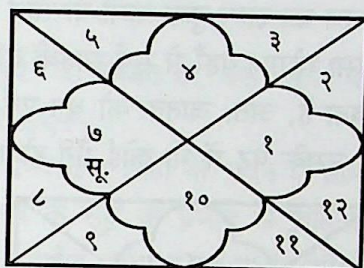
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित धन स्थान के स्वामी सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कमी तथा कष्ट की प्राप्ति होगी। स्त्री से उसका वैमनस्य रहेगा। परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियों के साथ धन का लाभ होता रहेगा। मूत्रेन्द्रिय में विकार तथा गृहस्थी के सम्बन्ध में कुछ कठिनाईयाँ भी हो सकती हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक शरीर के सम्बन्ध में प्रभावशाली बना रहेगा तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेगा।
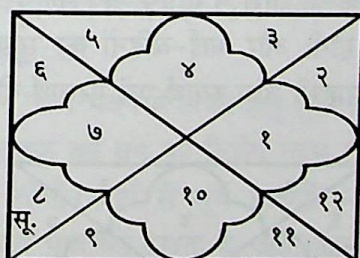
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से आयु के पक्ष में कभी-कभी संकटों का सामना

करना पड़ेगा तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कमी के साथ प्राप्त होगा। उसका रहन-सहन धनवानों जैसा रहेगा। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से स्वराशि सिंह में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। उसके पेट में भी कोई रोग हो सकता है।

कर्क लग्नः
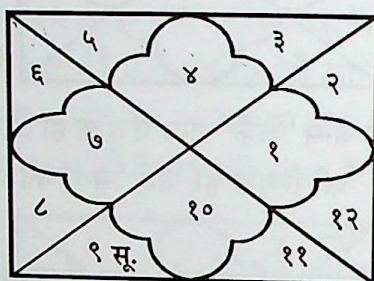
नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की भाग्यशक्ति प्रबल रहेगी, जिसके कारण उसे धन तथा कौटुम्बिक सुख की भी प्राप्ति होगी। वह धर्म का पालन भी करेगा तथा यश, मान व प्रतिष्ठा को प्राप्त होगा। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होगी और भाई-बहिनों का सुख भी मिलेगा। ऐसा जातक धनी, सुखी, साहसी तथा स्वार्थ एवं परमार्थ दोनों का साधन करने वाला होता है।

कर्क लग्नः
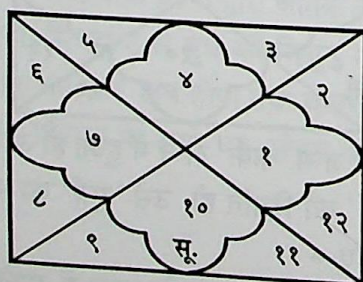
दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, प्रतिष्ठा एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। वह धनी एवं सम्मानित माना जाता है तथा उच्चपद प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि तथा जन्म-स्थान के सुख में कमी होगी तथा घरेलू सुख-शान्ति में भी कमी बनी रहेगी।

कर्क लग्नः
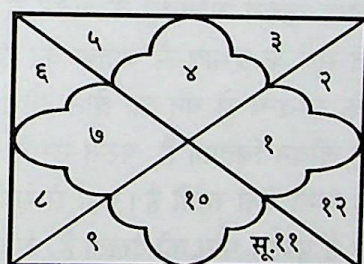
५ ३ ६ ४ २ ७ १ ८ १० १२ ९ सू.११

एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होगा, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहेगी। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान पक्ष से लाभ होगा तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी प्रवीणता तथा सफलता प्राप्त होगी। ऐसा जातक ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है तथा अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा धनोपार्जन में उन्नति करता रहता है।

कर्क लग्नः
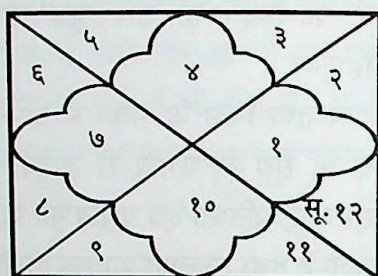
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय तथा बाहरी सम्बन्धों के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन का श्रेष्ठ लाभ होता रहता है। ऐसा जातक रईसी ढंग का जीवन बिताता है, परन्तु उसके कौटुम्बिक सुख एवं धन-संचय के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की वृश्चिक राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक को शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति खुला खर्च करता हुआ धन के संचय की चिन्ता नहीं करता।

कर्क लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल
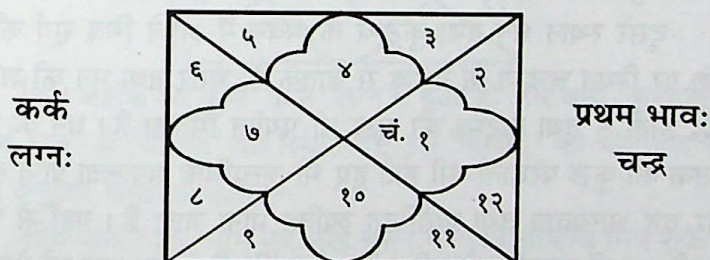
कर्क लग्न:

प्रथम भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, आत्मिकशक्ति तथा यश-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति के मनोभाव बहुत श्रेष्ठकोटि के होते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तम भाव को देखता है, अत: जातक को सामान्य असन्तोष के साथ स्त्री तथा भोग की प्राप्ति होती है। साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र तथा सांसारिक कार्यों में भी विशेष सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक यशस्वी भी होता है।

कर्क लग्नः
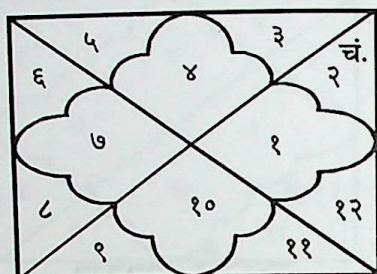
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शरीर तथा मन की शक्ति में वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है। धन के क्षेत्र में जातक को कुछ परेशानी-सी होते हुए भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है और वह भाग्यवान तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु के सम्बन्ध में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कठिनाईयों के साथ होता है। परन्तु वह अपने जीवन को वैभवशाली ढंग के साथ व्यतीत करता है।

कर्क लग्नः
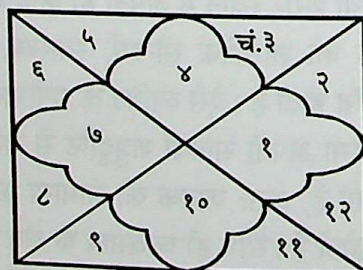
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई तथा पराक्रम के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या

राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख यथेष्ट मात्रा में मिलता है तथा पराक्रम की भी अत्यधिक वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को गुरु की मीन राशि में देखता है, अतः जातक की भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी उन्नति होती है। ऐसा जातक शरीर से सुन्दर, ईश्वर-भक्त, धार्मिक, धनी, पुरुषार्थी, साहसी, उत्साही, सज्जन तथा शारीरिक बल एवं मनोबल से सम्पन्न होता है।

कर्क लग्नः
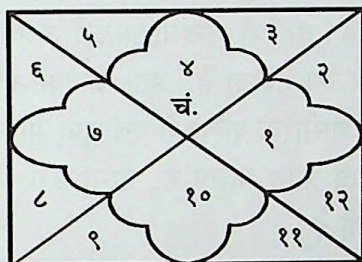
चतुर्थ भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के **'चतुर्थ भाव'** में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र माता, भूमि एवं सुख स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन आदि का सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। उसका शरीर सुन्दर, मन कोमल तथा स्वभाव विनोदी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक के पिता-स्थान की उन्नति होती है और वह राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यश तथा सम्मान अर्जित करता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी तथा सम्मानित होता है।

कर्क लग्नः
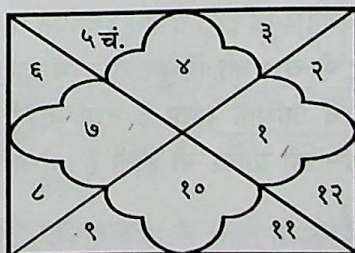
पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि में कमी तथा सन्तान पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है। साथ ही शरीर तथा मन में भी दुर्बलता आती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक आर्थिक-लाभ के लिए अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों एवं गुप्त युक्तियों का प्रयोग करता है और उसमें सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे थोड़ी-बहुत मानसिक अशान्ति भी बनी रहती है।

कर्क लग्नः
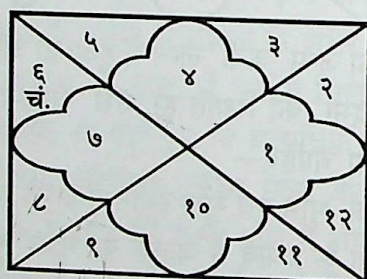
षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र बृहस्पति की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में कुछ दुर्बलता प्राप्त करता है तथा अपने नम्र व्यवहार के द्वारा प्रभाव स्थापित करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः ज्ञातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान, यश तथा धन की प्राप्ति भी होती है। ऐसा जातक आत्मबली तथा गौरवशाली होता है।

कर्क लग्नः
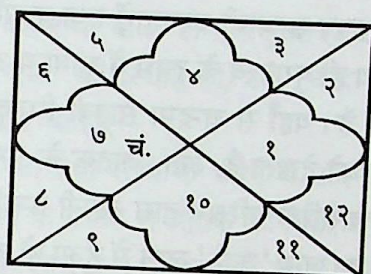
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में कुछ असन्तोष के बाद सफलता प्राप्त होती है तथा भोगादि में विशेष रुचि बनी रहती है। साथ ही दैनिक कार्य संचालन एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी कर्क राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव, मनोबल, आत्मिक शक्ति एवं लौकिक कार्यों में सफलता मिलती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी, सुन्दर तथा विलासी होता है।

कर्क लग्नः
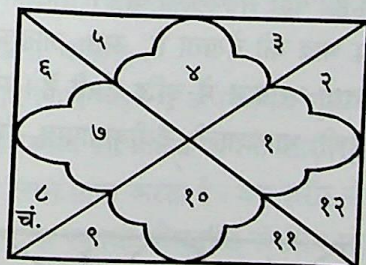
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कमी

आती है तथा जीवनयापन सम्बन्धी व्यवहारों तथा कार्यों में कुछ परेशानी का अनुभव होता है। साथ ही पुरातत्त्व के लाभ में सामान्य असन्तोष रहता है तथा आयु की वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक के धन-जन की वृद्धि होती है तथा वह कठिन शारीरिक परिश्रम द्वारा अपनी उन्नति करता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः
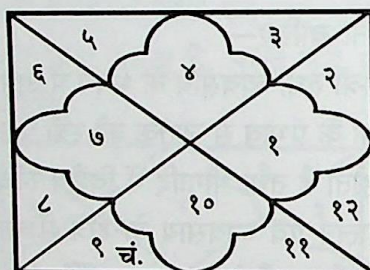
नवम भावः चन्द्र

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शरीर तथा मन की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है और उसके द्वारा वह भाग्य की विशेष उन्नति करता हुआ धर्म का पालन करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सज्जन, सरल, सतोगुणी, भाग्यशाली, दैवीकृपापात्र, ईश्वरभक्त तथा यशस्वी होता है।

कर्क लग्नः
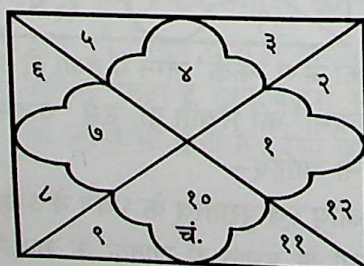
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केतु, पिता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में सहयोग, सुख, लाभ तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह किसी उच्चपद को पाता है। उसके शरीर में सौन्दर्य एवं शक्ति दोनों का निवास रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अत: जातक के सुख में भी वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुन्दर, सुखी तथा भाग्यवान होता है।

कर्क लग्नः
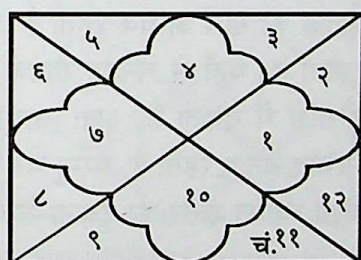
एकादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति द्वारा धन का विशेष लाभ प्राप्त करता है। वह शरीर से सुन्दर तथा स्वस्थ भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में पंचम भाव को देखता है, अत: जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग भी करता है।
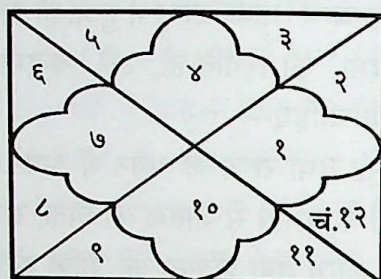
कर्क
लग्नः

द्वादश भावः
चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को गुरु की धनु राशि में देखता है, अतः जातक शत्रुओं पर अपने शान्तिमय व्यवहार से प्रभाव बनाए रहता है, परन्तु मन में कुछ अशान्ति का अनुभव भी करता है ऐसा व्यक्ति शरीर का दुबला-पतला होता है।

कर्क लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल
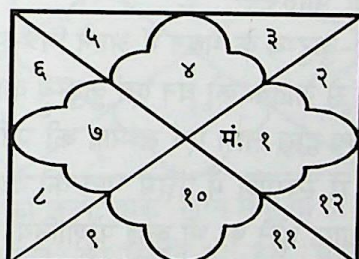
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीचे के मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा विद्या, सन्तान, राज्य एवं पिता के सुख में भी असन्तोष बना रहता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष में असन्तोष के साथ वृद्धि होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण दैनिक जीवन में कठिनाईयाँ आती हैं तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

कर्क लग्नः
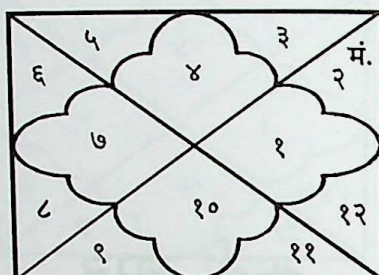
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। उसे पिता तथा राज्य द्वारा लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान एवं विद्या की शक्ति प्राप्त होने पर भी कुछ परेशानियों का अनुभव होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से आयुस्थान को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में कुछ कमी रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य, धर्म तथा यश की वृद्धि होती है।

कर्क लग्नः
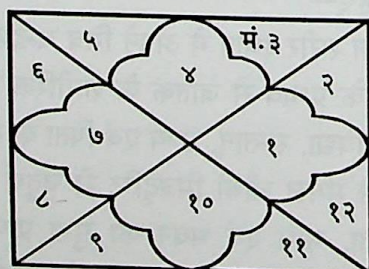
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान सहोदर एवं पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-

बहिनों का सुख प्राप्त होता है साथ ही विद्या तथा सन्तान की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से मंगल सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक बुद्धि-बल से भाग्यशाली होता है तथा धर्म और यश को प्राप्त करता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है तथा चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है।
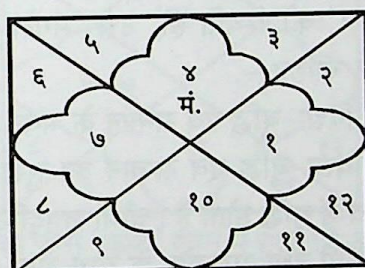
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन सम्बन्धी सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं उन्नति का योग बनता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सहयोग, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से धन का लाभ भी प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी तथा सफल जीवन व्यतीत करता है।

कर्क लग्नः
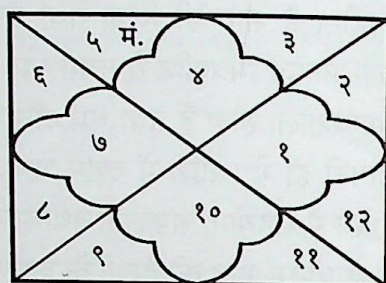
पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का सुख प्राप्त होता है तथा मान-सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण कुछ कमी तथा असन्तोष के साथ आयु-पुरातत्त्व एवं दैनिक जीवन के सुख का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ प्राप्ति के लिए मानसिक परिश्रम अधिक करना पड़ता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से यश, धन तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

कर्क लग्नः
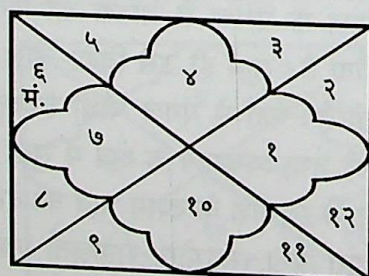
षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त होती है तथा

विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का भी सुख मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः बुद्धियोग द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभदयाक सम्बन्ध बनते हैं और आठवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य, सुख तथा शान्ति में कुछ कमी बनी रहती है।

कर्क लग्नः
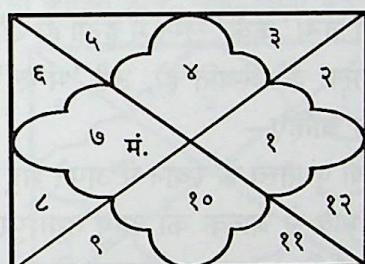
सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को कई सुन्दर स्त्रियों का संयोग प्राप्त होता है, परन्तु उनसे कुछ मतभेद भी रहता है और व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। इसके साथ ही विद्या-बुद्धि एवं सन्तान की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय की शक्ति श्रेष्ठ रहती है तथा इनसे सुख, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा घरेलू सुख में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक की धन-संचय शक्ति प्रबल रहती हैं तथा वाणी में भी विशेष प्रभाव पाया जाता है।

कर्क लग्नः
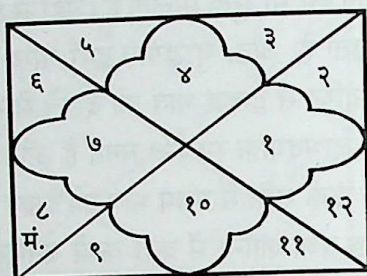
अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ लाभ मिलेगा, परन्तु पिता, राज्य, व्यवसाय, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ेगी। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होगा। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन की वृद्धि होगी तथा कुटुम्ब का सुख मिलेगा। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होगी एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलेगा।

कर्क लग्नः
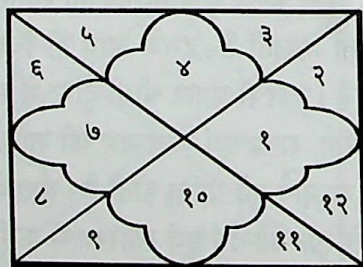
नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण एवं भाग्यभवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा विद्या-

बुद्धि, सन्तान, पिता एवं राज्य से सुख तथा सम्मान प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ रहेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन का श्रेष्ठ सुख मिलेगा तथा पराक्रम की वृद्धि होगी तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ असंतोष एवं कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक प्रायः धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

कर्क लग्नः
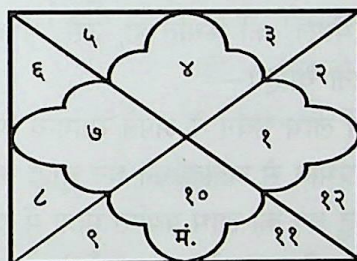
दशम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सम्मान, सफलता, यश तथा धन की प्राप्ति होती है। यहाँ से मंगल आठवीं दृष्टि से अपनी ही वृश्चिक राशि में पंचम भाव को भी देखता है, अतः सन्तान एवं विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा उच्चपद की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति राजनीति एवं कानून का ज्ञाता भी होता है। चौथी नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी तथा दुर्बलता रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ असन्तोष एवं कम सफलता मिलती है।

कर्क लग्नः
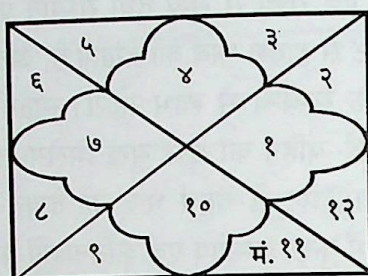
एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु धन का लाभ पर्याप्त मात्रा में होता है, साथ ही पिता, राज्य एवं व्यवसाय से भी लाभ होता है। यहाँ से सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है, जिससे लाभ के साधनों में वृद्धि होती है तथा राज्य के द्वारा सम्मान एवं सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बढ़ता है तथा उन पर विजय प्राप्त होती रहती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, योग्य, विजयी तथा सफल होता है।

कर्क लग्नः
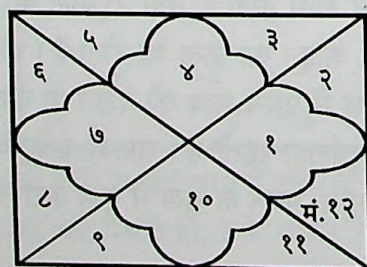
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही राज्य, पिता, सन्तान, विद्या-बुद्धि एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। परन्तु ऐसे जातक की बुद्धि में कुछ भ्रम तथा मस्तिष्क में परेशानी भी बनी रहती है।

कर्क लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

कर्क लग्नः
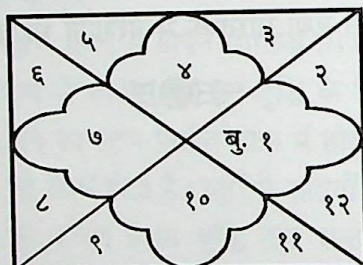
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता रहती है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। साथ ही पराक्रम एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। खर्च खूब होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ शक्ति द्वारा जातक स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु सामान्य त्रुटियाँ भी बनी रहती हैं।

कर्क लग्नः
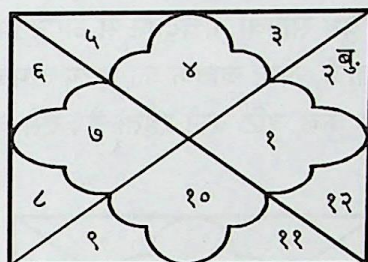
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक धन-संग्रह का विशेष प्रयत्न करता है, परन्तु वह संचय नहीं कर पाता, साथ ही जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम में कुछ वृद्धि होती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु का सुख प्राप्त होता है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अधूरा रहता है। ऐसे जातक का दैनिक जीवन सुख पूर्ण तथा प्रभाव युक्त बना रहता है।

कर्क लग्नः
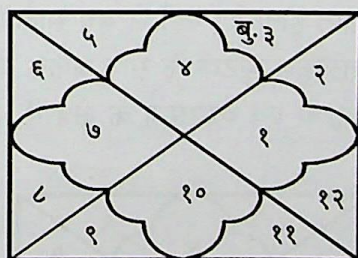
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी बनी रहती है, क्योंकि बुध

व्ययेश भी है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक का भाग्य कमजोर बना रहता है तथा धर्म के सम्बन्ध में भी कुछ त्रुटि बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति के यश में भी कमी आ जाती है।
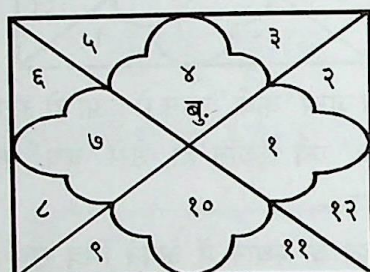
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। परन्तु भाई-बहिन और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः कुछ त्रुटियों के साथ जातक को पिता के स्थान से शक्ति मिलती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सामान्य सफलता प्राप्त होती है।
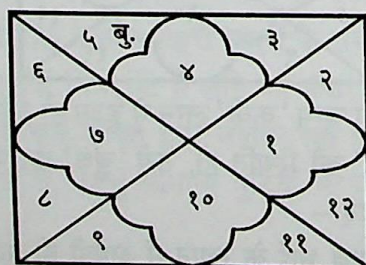
कर्क
लग्नः

पंचम भावः
बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि व सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सामान्य त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति विवेक द्वारा खर्च चलाने में सफल होता है तथा हिम्मत एवं बुद्धि का धनी रहता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अत: उसे बुद्धि-बल द्वारा लाभ प्राप्त होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी सफलता मिलती है।

कर्क लग्न:
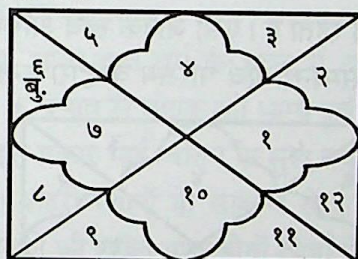
षष्ठम भाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में कुछ नम्रता तथा शान्ति द्वारा सफलता प्राप्त करता है। साथ ही उसके भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में द्वादश भाव को देखता है, अत: खर्च कम करने का प्रयत्न करने पर भी अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध सामान्य बना रहता है।

कर्क लग्न:
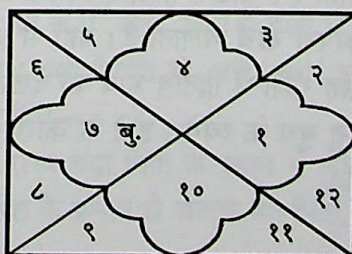
सप्तम भाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री का सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है। परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण कुछ असन्तोष भी बना रहता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में शक्ति एवं दुर्बलता दोनों का ही प्रभाव बना रहता है। ऐसा जातक खर्च अधिक करता है तथा घर के भीतरी एवं बाहरी सम्बन्धों एवं परिश्रम के द्वारा उन्नति भी करता है।
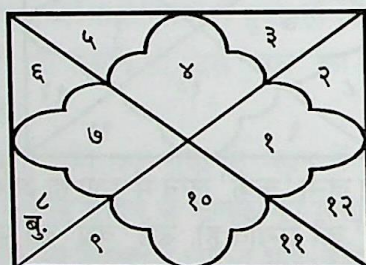
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ कमियों के साथ सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी आ जाती है। कठिन परिश्रम, विवेक तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध द्वारा जातक अपना खर्च चलाता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः उसे धन का लाभ भी होगा परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कमियाँ भी बनी रहेंगी।

कर्क लग्नः
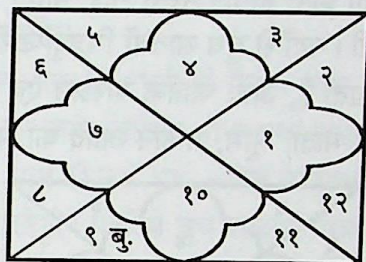
नवम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलेगी। इस प्रकार भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी अपूर्ण लाभ रहेगा। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सामान्य लाभ उठाते हुए सामान्य खर्च को चलाने की शक्ति प्राप्त होगी। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी कन्या राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक भाग्य के समक्ष पुरुषार्थ को विशेष मानेगा तथा बुध के व्ययेश होने के कारण उसकी भाग्योन्नति में बाधाएँ भी आती रहेंगी।

कर्क लग्नः
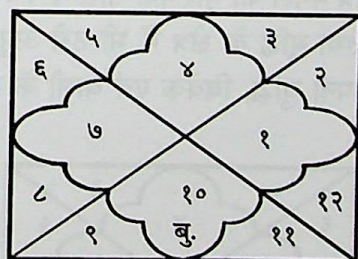
दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के

क्षेत्र में अपूर्ण सफलता प्राप्त होगी। परन्तु भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम की शक्ति विशेष रहेगी। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम एवं व्यय की शक्ति द्वारा सुख प्राप्त करेगा और माता, भूमि, मकान आदि का सामान्य लाभ रहेगा।

कर्क लग्नः
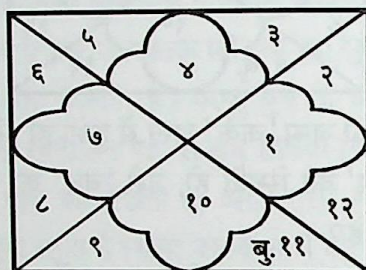
एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी तो खूब होगी, बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ होगा, परन्तु खर्च अधिक बना रहेगा। साथ ही उसे भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम का लाभ होता रहेगा। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी उसे अपूर्ण लाभ प्राप्त होगा। परन्तु ऐसा जातक अपनी बुद्धि, विवेक एवं वाणी के बल पर लाभ उठाता रहता है।

कर्क लग्नः
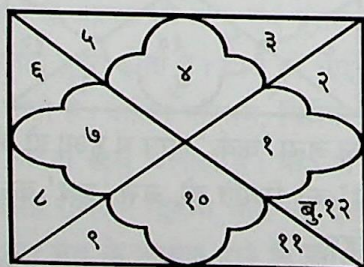
द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपनी ही मिथुन राशि में स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहेगा। साथ ही उसे भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहेगी। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः उसे अपने शान्त स्वभाव पुरुषार्थ एवं खर्च की शक्ति द्वारा शत्रु पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होगी और वह अपने खर्च करने के बल पर अनेक कठिनाईयों पर नियन्त्रण बनाए रहेगा।

कर्क लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल

कर्क लग्न:
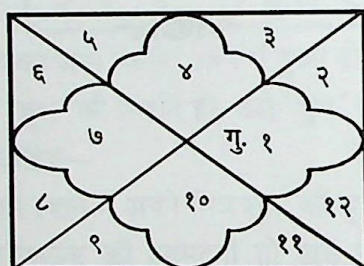
प्रथम भाव: गुरु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र **तथा शरीर** स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के **प्रभाव** से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का पूर्ण सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं नीचदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा दैनिक खर्च में कभी-कभी कठिनाईयाँ पड़ती हैं। नौवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को स्वक्षेत्र में देखने के कारण भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है तथा धर्म का भी यथावत् पालन होता है। संक्षेप में ऐसा जातक विद्वान्, बुद्धिमान, सज्जन, उदार, विनम्र, आत्मबली तथा शत्रु पक्ष पर विजय पाने वाला होता है।

कर्क लग्नः
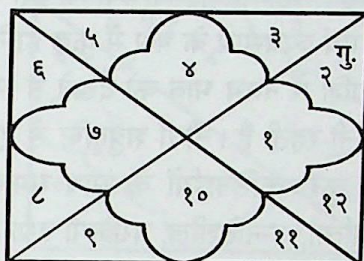
द्वितीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से षष्ठम भाव को स्वराशि में देखता है, अत: धन की शक्ति से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं। नौवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा धन का लाभ होता है तथा ननिहाल पक्ष से भी लाभ मिलता है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

कर्क लग्नः
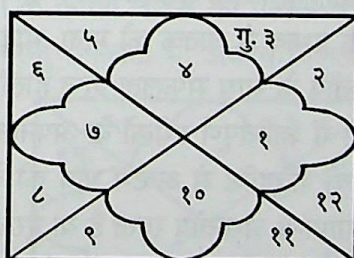
तृतीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान पर अपने मित्र बुध की कन्या राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम

में वृद्धि प्राप्त होती है। यहाँ से गुरु पाँचवी नीचदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि तथा क्लेश रहता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म में निष्ठा बनी रहती है। नौवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक शत्रुजयी, धर्मात्मा, उन्नतिशील, पराक्रमी तथा हिम्मती होता है, परन्तु गुरु के शत्रु स्थानिधिपति होने के कारण उसे कभी-कभी कठिनाईयों का भी सामना करना पड़ता है।
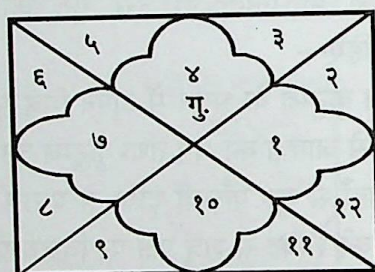
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, मातृभूमि, स्थान तथा सुख के पक्ष में कुछ असन्तोष के साथ सफलता प्राप्त होती है। साथ ही शत्रु पक्ष एवं झगड़े के मामलों में शान्तिपूर्ण तरीकों के अपनाने पर सफलता मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखत है, अतः जातक को आयु के क्षेत्र में सामान्य असन्तोष रहता है या पुरातत्त्व का भी कुछ कमी के साथ लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। नौवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

कर्क लग्नः
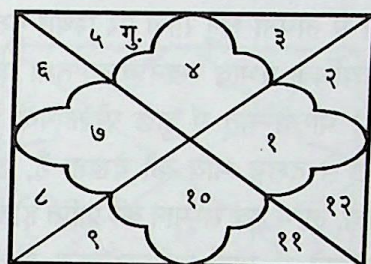
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता मिलती है तथा शत्रु पक्ष पर भी प्रभाव प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखता है, अतः बुद्धि और सन्तान के सहयोग से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण लाभ के क्षेत्र में कुछ असन्तोष के साथ असफलता मिलती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य, आत्मबल एवं सुयश प्राप्त होता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियाँ तो अनुभव होती हैं, परन्तु सफलता भी अवश्य मिलती है।

कर्क लग्नः
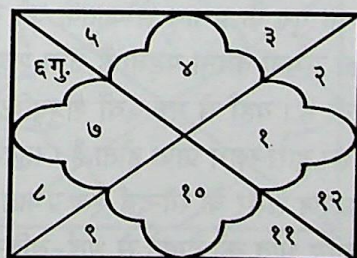
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना अत्यधिक प्रभाव रखने वाला तथा यशस्वी होता है। परन्तु गुरु के षष्ठेश होने से भाग्योन्नति में कुछ परेशानियाँ भी आती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सफलता, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। नौवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।
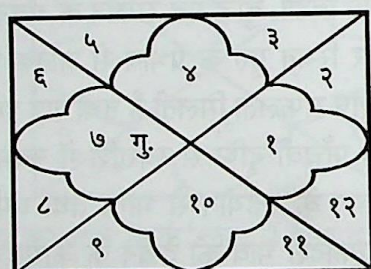
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों का समना करना पड़ता है तथा शत्रु पक्ष से भी व्यवसाय को कुछ हानि पहुँचती है। यहाँ से गुरु ५वीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर के सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में सफलता प्राप्त होती है। परन्तु गुरु के षष्ठेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में सामान्य कठिनाईयाँ आती रहती हैं।

कर्क लग्नः
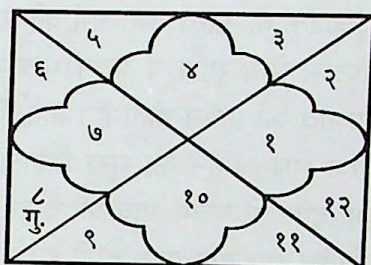
अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

अष्टम, आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। परन्तु शत्रु पक्ष की ओर से अशान्ति एवं भाग्य पक्ष में दुर्बलता भी बनी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता तथा भूमि आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

कर्क लग्नः
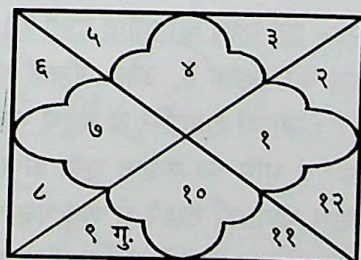
नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपनी ही मीन राशि पर

स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्चदृष्टि से मित्र राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नौवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक विद्वान्, बुद्धिमान, सज्जन, सुखी, धनी, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है।
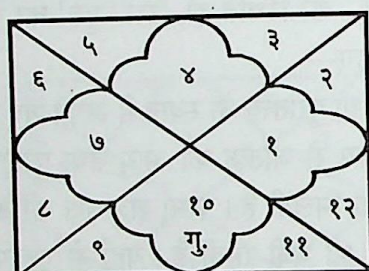
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा पूर्ण सहयोग, सुख, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन तथा कुटुम्ब की शक्ति से सम्पन्न रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ माता एवं भूमि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है तथा नौवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर भारी प्रभाव बना रहता है। ऐसा जातक परिश्रम तथा झगड़ों के योग से भाग्योन्नति एवं पदोन्नति करता है तथा भाग्यशाली बनता है।
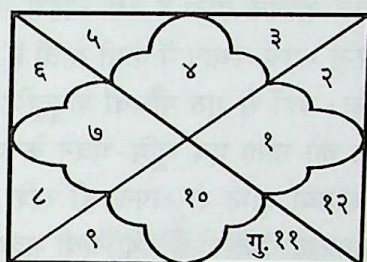
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त करता है। उसे शत्रु पक्ष से भी लाभ होता है और वह धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को सामान्य वैमनस्य के साथ भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा पराक्रम में वृद्धि होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलेगी एवं नौवीं नीचदृष्टि से सप्तम भाव को देखने कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कष्ट, हानि तथा असन्तोष बना रहेगा। सामान्यतः ऐसा जातक अवश्य धनी होता है।
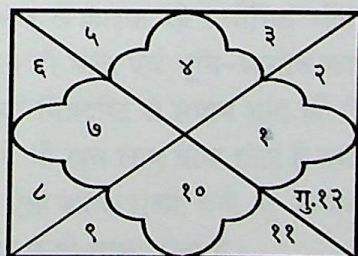
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के

प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता है। परन्तु भाग्य-स्थान में कमी रहती है और धर्म का पालन भी यथाव नहीं हो पाता। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता एवं भूमि-भवन के पक्ष में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होती है।
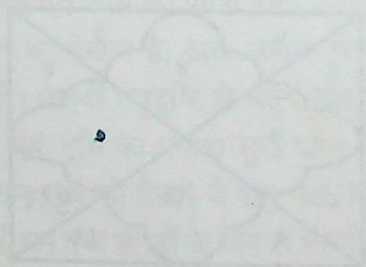
कर्क लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

कर्क लग्नः
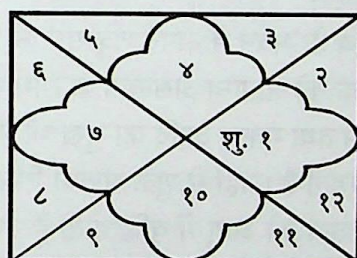
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, सुख एवं चातुर्य का लाभ होता है। साथ ही माता एवं भूमि-सम्पत्ति का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी खूब लाभ प्राप्त होता है तथा भोगादिक में रुचि बनी रहती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी, भू-सम्पत्तिवान, भोगी, ऐश्वर्यशाली तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

कर्क लग्नः
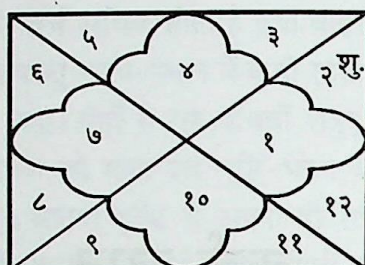
द्वितीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सामान्य असन्तोष के साथ धन-कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। उसे भूमि तथा मकान आदि का सुख भी मिलता है, परन्तु माता के सुख मे कुछ कमी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा सुखी होता है।

कर्क लग्नः
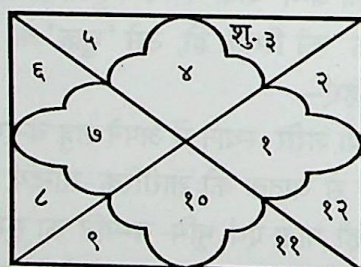
तृतीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। साथ ही माता के सुख में भी त्रुटि का अनुभव होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक

के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक अपनी भीतरी कमजोरियों को छिपाकर बाहर से हिम्मत प्रकट करने वाला, धनी, सुखी तथा धार्मिक विचारों का होता है।
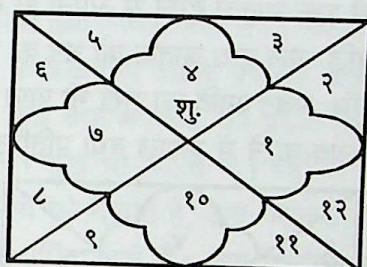
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख-भवन में अपनी तुला राशि पर स्थित स्वेक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख का श्रेष्ठ लाभ होता है। उसकी आमदनी में वृद्धि होती है और वह धनवान बना रहता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख, सहयोग, सम्मान, सफलता तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बड़ा होशियार, चतुर, प्रतिष्ठित, सुखी तथा धनी होता है।
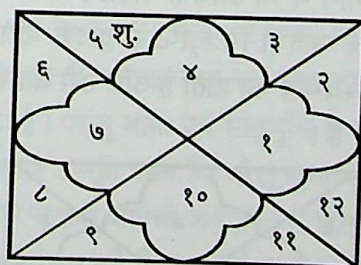
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि व सन्तान के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ठ लाभ होता है। वह धन, सुख, सफलता एवं चातुर्य को प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः बुद्धि-बल द्वारा जातक को धन का यथेष्ट लाभ होता है। साथ ही उसे माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक बड़ा समझदार, वार्तालाव करने में कुशल तथा प्रतिष्ठित होता है।
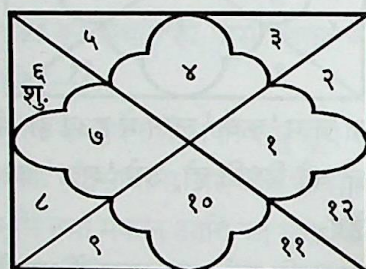
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु माता एवं भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी तथा अशान्ति का योग उपस्थित होता है। इसी प्रकार लाभ के मार्ग में भी अधिक परिश्रम तथा परतन्त्रता का-सा योग बनता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक बहुत खर्चीले स्वभाव का होता है और उसे बाहरी स्थानों से सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक आमदनी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है। उसे माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है। यहाँ से जातक अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, चातुर्य एवं सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, यशस्वी, गम्भीर, बुद्धिमान, चतुर, भोगी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

कर्क लग्नः

५	४	३	
६	७	१	२
८ शु.	१०	१२	
९		११	

अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त करता है। परन्तु माता एवं मातृभूमि के सुख में कमी आ जाती है। वह परदेश में रहकर उन्नति पाता है। घरेलू सुख-शान्ति में भी कुछ कमी बनी रहती है। यहाँ से जातक सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय की चिन्ता नहीं रहती। उसे कुटुम्ब का सुख भी अल्पमात्रा में मिलता है।

कर्क लग्नः

५ ३ ६ ४ २ ७ १ ८ १० १२ ९ शु. ११

नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में विशेष वृद्धि होती है, साथ माता, मकान, भूमि आदि का भी उत्तम सुख प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है। अतः जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमजोरी बनी रहती है तथा पराक्रम को भी वह भाग्य की तुलना में कम समझता है। ऐसा जातक भाग्यवादी, सुखी, धनी तथा भाग्यशाली होता है।

कर्क लग्नः
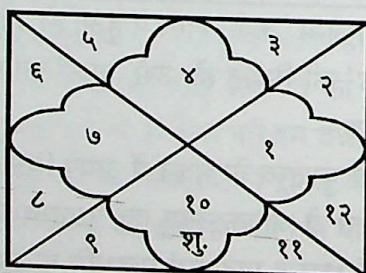
५ ३ ६ ४ २ ७ १ ८ १० १२ ९ शु. ११

दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता राज्य एवं व्यवसाय द्वारा यथेष्ट सुख, सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से शुक्र

सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। ऐसा जातक गम्भीर, चतुर, बुद्धिमान, धनी, सुखी, ऐश्वर्यशाली तथा सौन्दर्य-श्रृंगार का प्रेमी होता है।
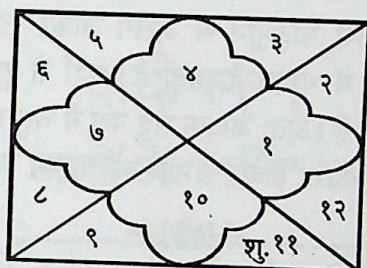
कर्क लग्नः

५ ३ ६ ४ २ ७ १ ८ १० १२ ९ शु. ११

एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही वृष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आमदनी का श्रेष्ठ योग प्राप्त होता है। साथ ही मातृ-स्थान के सुख एवं भूमि-भवन आदि का भी लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा जातक श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला, योग्य, चतुर, समझदार, धनी, सुखी तथा अनेक प्रकार की विद्याओं में निपुण होता है।

कर्क लग्नः
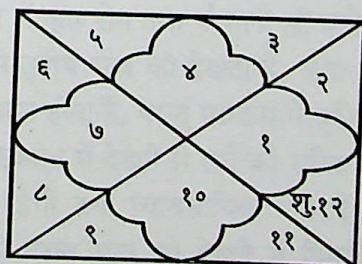
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। साथ ही उसके माता के सुख में कमी आती है और उसे मातृभूमि से अलग जाकर रहना पड़ता है भूमि, मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है। अतः जातक शत्रु पक्ष में चतुराई तथा खर्च से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है एवं प्रभाव को कायम रखता है।
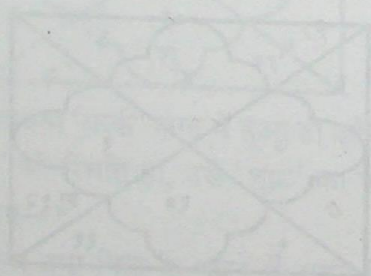
कर्क लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फल

कर्क लग्न:
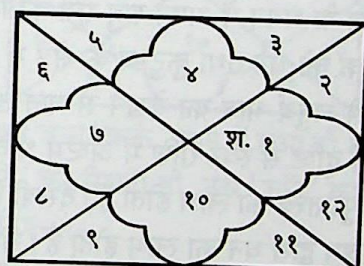
प्रथम भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा शरीर में कुछ रोग तथा परेशानी भी बनी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से सप्तम भाव के स्वक्षेत्र में देखने से स्त्री की शक्ति तो मिलेगी परन्तु उससे कुछ परेशानी भी रहेगी तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। दसवीं नीचदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सामान्य सफलता एवं सम्मान का लाभ रहेगा।

कर्क लग्नः
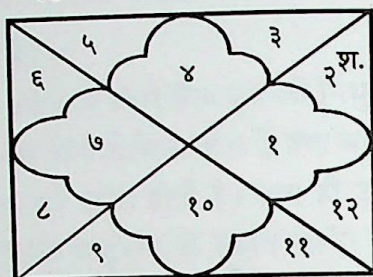
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन–कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। तीसरी उच्चदृष्टि से चतुर्थ भाव का देखने से मात तथा भूमि–भवन का सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वर राशि में अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टिसे एकादश भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक अमीरी ढंग का जीवन व्यतीत करता है, परन्तु धन की कमी बनी रहती है तथा पारिवारिक सुख में भी न्यूनता रहती है।

कर्क लग्नः
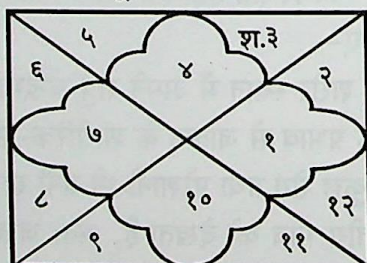
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र बुध की कन्य राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई बहिन के द्वारा कुछ परेशानी मिलती है। यहाँ से तीसरी शत्रुदृष्टि से शनि

पंचम भाव को देखता है, अत: सन्तान द्वारा कष्ट एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कठिनाई एवं कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य के सम्बन्ध में परेशानी एवं धर्म के क्षेत्र में अरुचि रहती है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ क्रोधी स्वभाव का भी होता है।

कर्क लग्नः
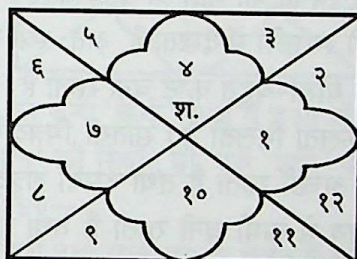
चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ परेशानी के साथ सुख एवं भूमि तथा मकान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अत: शत्रु पक्ष में प्रभाव रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयाँ आती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में परेशानी रहती है तथा घरेलू सुख के साधनों की प्राप्ति के पक्ष में आलस्य बना रहता है।

कर्क लग्नः
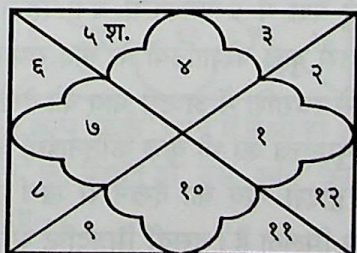
पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के भाव में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के पक्ष से परेशानी एवं चिन्ता का योग प्राप्त करता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से सप्तम भाव को स्वराशि में देखता है, अतः स्त्री बुद्धिमान मिलती है, परन्तु उसके कारण भी थोड़ा-बहुत कष्ट बना रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि के योग द्वारा सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय में कमी बनी रहती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी कुछ परेशानी एवं चिन्ताओं का अनुभव होता रहता है।

कर्क लग्नः
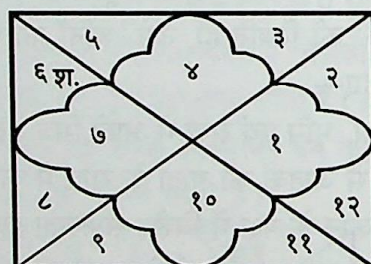
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उसे कुछ परेशानियों के बाद सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु की शक्ति बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव का देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने

से पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सम्बन्ध में वैमनस्य युक्त सफलता मिलती है।

कर्क लग्नः
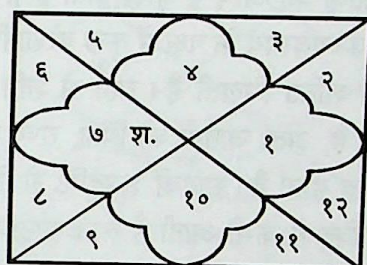
सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्वराशि मकर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा भोगादि के सुख भी खूब प्राप्त होते हैं। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृश्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में त्रुटि रहती है तथा दसवीं उच्च एवं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, मकान तथा घरेलू सुख में वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक कठिनाईयों के साथ उन्नति प्राप्त करता है।

कर्क लग्नः
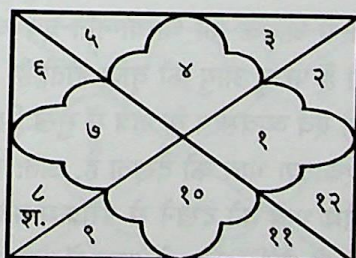
अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अत: जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानी का अनुभव होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय की शक्ति में कमी आती है तथा कौटुम्बिक सुख में भी त्रुटि रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी चिन्ता एवं कठिनाईयों का अनुभव होता है।
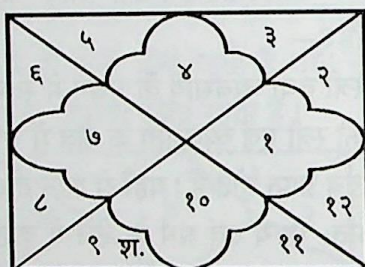
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म के क्षेद्धत्र में कुछ कठिनाईयाँ बनी रहती हैं परन्तु आयु की वृद्धि होती है, पुरातत्त्व का साधारण लाभ होता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अत: लाभ अच्छा रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु शनि के अष्टमेश होने से भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष में कुछ कठिनाईयों के बाद प्रभाव स्थापित होता है। आन्तरिक रूप से कुछ कमजोर रहने पर भी प्रकट में ऐसा जातक बहुत भाग्यशाली समझा जाता है।

कर्क लग्नः
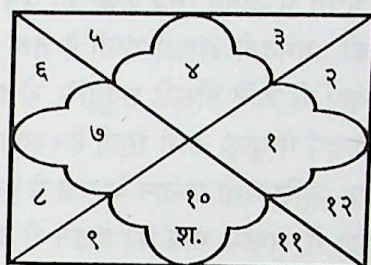
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है तथा दसवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक रोजगार की अच्छी शक्ति मिलती है। ऐसा जातक कुछ कमजोरियों के रहते हुए भी अपने सब कार्यों का ठीक से संचालन करता है तथा सुखी एवं धनी प्रतीत होता है।

कर्क लग्नः
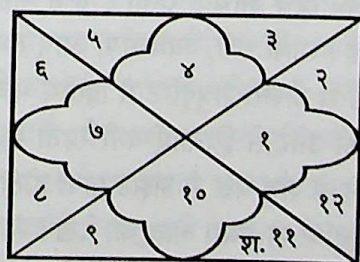
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा स्त्री एवं रोजगार का भी सुख मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष से कुछ कष्ट रहता है तथा दसवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने से आयु की शक्ति बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक अधिक पढ़-लिख नहीं पाता, परन्तु अपनी चतुराई, प्रपंच एवं परिश्रम द्वारा अपना तथा अपने परिवार का निर्वाह करता रहता है।

कर्क लग्नः
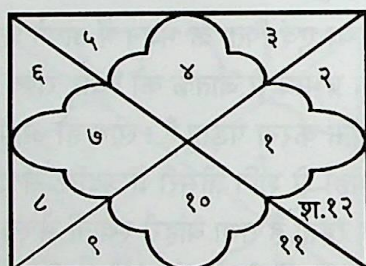
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलती है। साथी स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में हानि होती है। यहाँ से तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटऊम्ब की ओर से चिन्ताएँ बनी रहती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि के षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष से झंझट प्राप्त होता है, परन्तु प्रभाव बना रहता है, दसावीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य एवं धर्म पालन में कठिनाई बनी रहती है। परन्तु परेशानियों के बावजूद भी ऐसा जातक शानदार जीवन बिताता है।

कर्क लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

कर्क लग्न:
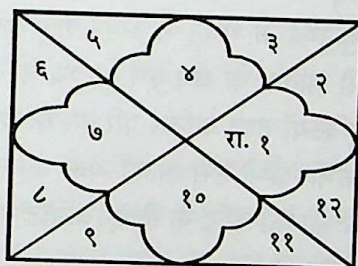
प्रथम भाव: राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दउर्य में कमी आती है तथा हृदय में चिन्ताएँ बनी रहती हैं, साथ ही उसे कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्टों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा अपने प्रभाव तथा सम्मान को स्थिर बनाए रखने का प्रयत्न करता है तथा अपनी उन्नति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है, परन्तु उसे स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्तित बना रहना पड़ता है।

कर्क लग्नः
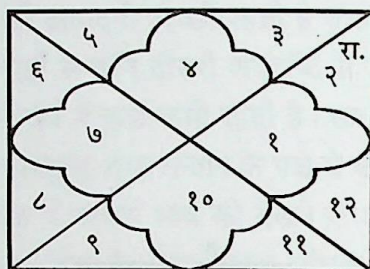
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली से 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के धन एवं कुटुम्ब के सुख में हानि उठानी पड़ती है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर धन वृद्धि का प्रयत्न करता है तथा कभी-कभी उसे आकस्मिक धन लाभ भी हो जाता है। ऐसा जातक अपनी प्रतिष्ठा की वृद्धि के लिए चिन्तित बना रहता है तथा बड़ा हिम्मती और परिश्रम होता है।

कर्क लग्नः
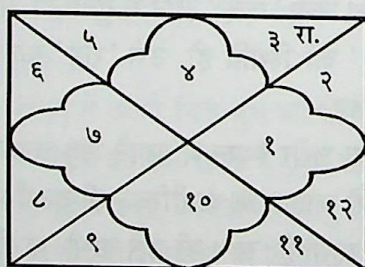
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं सहोदर के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की बहुत वृद्धि होती है तथा कुछ परेशानियों के साथ भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए गुप्त युक्तियों, कठिन-परिश्रम तथा

पुरुषार्थ से काम लेता है। वह भीतरी रूप से कमजोर होने पर भी ऊपरी दृष्टि से बड़ा हिम्मतवर बना रहता है तथा अपने प्रभाव को स्थिर रखने के लिए उद्योगशील रहता है।

कर्क लग्नः
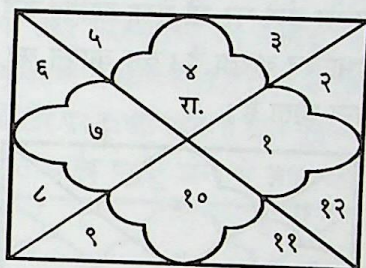
चतुर्थ भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है। इसी प्रकार भूमि, भवन तथा जन्म स्थान का सुख भी न्यून मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में सफलता पाने के लिए गुप्त युक्तियों, चतुराईयों तथा कठिन परिश्रम से काम लेता है, परन्तु कभी-कभी असफलताओं के कारण विशेष कष्ट भी पाता रहता है।

कर्क लग्नः
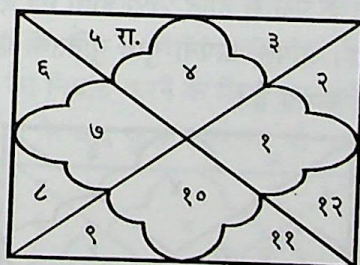
पंचम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के भवन में अपने शत्रु मंगल

की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट होता है, विद्या ग्रहण करने में कठिनाई होती है तथा मस्तिष्क के भीतर चिन्ताएँ व्याप्त रहती हैं। ऐसे जातक को बहुत समय बीत जाने पर सन्तान का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि से कमजोर होने पर भी ऐसा व्यक्ति बड़े बुद्धिमानों जैसी बातें कह कर लोगों को प्रभावित करता है। वह कानून को जानने वाला, जिद्दी तथा गुप्त युक्ति सम्पन्न होता है।
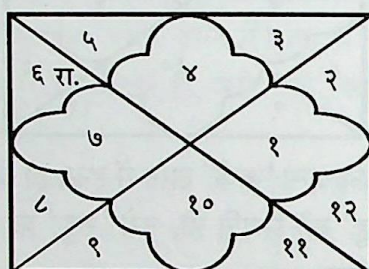
षष्ठम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से कुछ परेशानियाँ तो होती रहती हैं, परन्तु वह भेद-नीति का आश्रय लेकर उनका दमन करता और सफनलता पाता है। उसे ननसाल के पक्ष से हानि प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति पाप-पुण्य की चिन्ता नहीं करता। अपितु, अपनी गुप्त युक्तियों एवं चतुराई पर भरोसा रखकर स्वार्थ-साधन करता है।

कर्क लग्नः
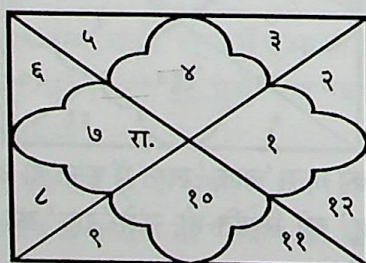
सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में चिन्ताओं, कठिनाईयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उनके निवारणार्थ वह गुप्त युक्तियों से काम लेता है। ऐसे व्यक्ति की इन्द्रिय में विकार होता है। वह अन्दरूनी तौर पर दुःखी रहता है तथा गृहस्थी के सम्बन्ध में कभी-कभी घोर कष्ट भी उठाता है, परन्तु अन्त में सफलता भी पा लेता है।

कर्क लग्नः
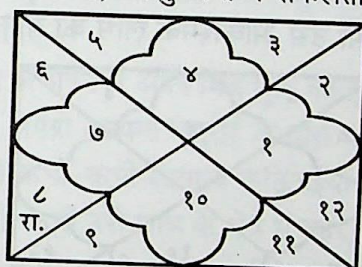
५ ३ ६ ४ २ ७ १ ८ रा. १० १२ ९ ११

अष्टम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में कभी-कभी चिन्ताजनक स्थितियों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट में किसी प्रकार का विकार रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए गुप्त युक्तियों से काम लेता है तथा अनेक कठिनाईयों के बाद कुछ सफलता भी पाता है।

कर्क लग्नः
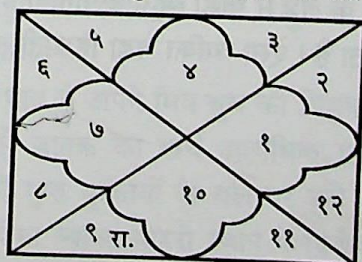
नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाईयाँ आती रहती हैं तथा धर्म का भी यथावत पालन नहीं हो पाता। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा कष्टों को सहन करने के उपरान्त वह थोड़ा-बहुत सफलता भी पा लेता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ का योग भी प्राप्त होता है।
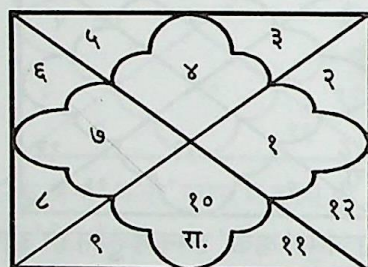
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कमी, हानि, कष्ट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अनेक कष्टों को भोगने तथा अनेक बार निराश और विफल होने के बाद अन्त में वह व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ी बहुत उन्नति पाता है तथा अपनी मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा धैर्यवान होता है।

कर्क लग्नः
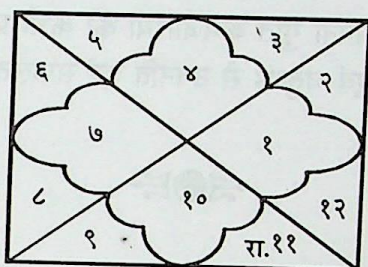
एकादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपनी अत्यन्त चतुराई के द्वारा धन का यथेष्ट उपार्जन करता है, यद्यपि उसे कभी-कभी सामान्य कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है। परन्तु कभी-कभी उसे लाभ के क्षेत्र में गहरे संकटों का सामना भी करना पड़ता है और कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप से अधिक लाभ हो जाने की प्रसन्नता भी प्राप्त होती है।

कर्क लग्नः
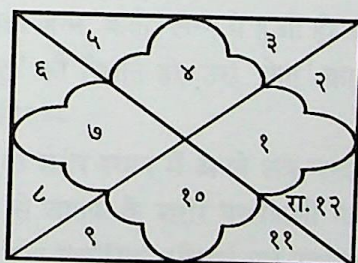
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अत्यधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से गुप्त युक्तियों के बल पर उसे लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति भी होती है। ऐसा व्यक्ति बाहरी स्थान में विशेष सम्मान एवं प्रभाव

प्राप्त करता है। वह अपनी गुप्त कमजोरियों को कभी प्रकट नहीं होने देता तथा बड़ी बुद्धिमानी एवं चतुराई से उननति एवं सफलता प्राप्त करता चला जाता है।

कर्क लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

कर्क लग्न:
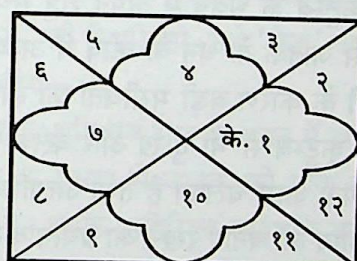
प्रथम भाव: केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर किसी गहरी चोट अथवा घाव का निशान बनता है तथा शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। चेचक की बीमारी होने की भी सम्भावना रहती है। मानसिक शक्ति दुर्बल होती है तथा कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्ट एवं रोग का शिकार भी बनना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रसिद्धि एवं प्रभाव वृद्धि के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।
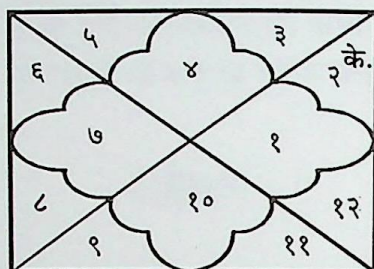
द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के धन के कोष में अत्यधिक हानि होती है तथा उसे आर्थिक कमी के कारण बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है इसी प्रकार उसे अपने कुटुम्ब से भी दुःख और क्लेश प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा अत्यधिक परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों द्वारा अपने प्रभाव को बनाए रखने का प्रयत्न करता है। बहुत बाद में उसे थोड़ी-बहुत सफलता भी मिलती है।

कर्क लग्नः
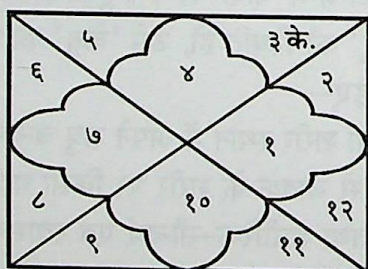
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। गुप्त युक्तियों, विवेक तथा कठिन परिश्रम के द्वारा उसे सफलता भी मिलती है।

परन्तु ऐसा व्यक्ति उद्दण्ड प्रकृति एवं उग्र स्वभाव का होता है। उसमें शालीनता नहीं पाई जाती। उसे भाई-बहिन का सुख भी कुछ कठिनाईयों के बाद प्राप्त होता है।

कर्क लग्नः
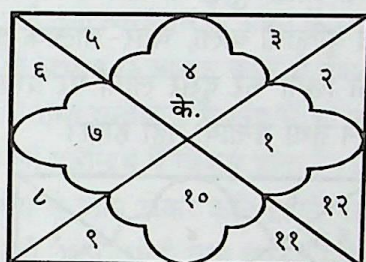
चतुर्थ भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी तथा परेशानी बनी रहती है। इसके अतिरिक्त मातृभूमि का वियोग सहन करके बार-बार स्थान परिवर्तन करना और दूसरी जगह में जाकर रहना पड़ता है। उसे घरेलू सुखों की प्राप्ति के लिए भी विशेष परिश्रम करना पड़ता है। परन्तु कभी-कभी घोर संकटों का सामना करना होता है। अन्त में उसे सामान्य सुख भी मिलता है।

कर्क लग्नः
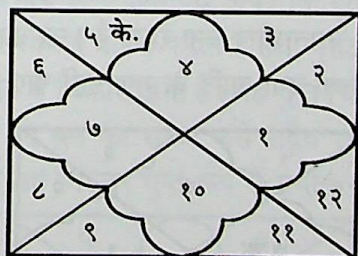
पंचम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती हैं। परन्तु ऐसा जातक गुप्त युक्तियों वाला, चतुर-चालाक तथा बातूनी होता है। वह अपनी योग्यता को छिपा कर दूसरे लोगों पर प्रभाव डालने में सफल होता है, परन्तु शीलवान तथा सन्तोषी नहीं होता।
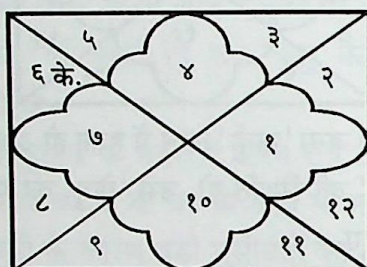
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर बड़ी सफलता एवं विजय प्राप्त करता है तथा कठिन-से-कठिन संकट के समय में भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता। वह गुप्त युक्तियों एवं कठोर परिश्रम के बल पर अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। उसका शरीर स्वस्थ रहता है, परन्तु उसमें शील तथा दया आदि के गुण नहीं पाए जाते।
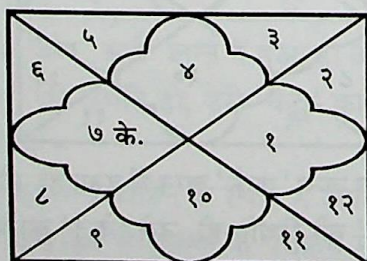
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में हानि एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का अनुभव होता है। ऐसे व्यक्ति की मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है। उसकी विशेयेच्छा बढ़ी रहती है। वह गुप्त धैर्य से काम लेकर कठिनाईयों पर विजय पाता है। ऐसे लोग स्वभाव के जिद्दी, हठी, भोगी तथा कठिन परिश्रमी होते हैं।
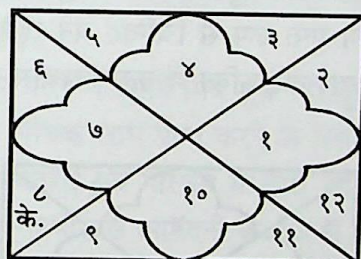
कर्क लग्नः

५ ३ ६ ४ २ ७ १ ८ के. १० १२ ९ ११

अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में अनेक बार मृत्युतुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार रहता है। वह गुप्त चिन्ताओं तथा परेशानियों से ग्रस्त बना रहता है। धन का संकट उसे सदैव रहता है, परन्तु उस पर विजय पाने के लिए वह निरन्तर गुप्त रूप से प्रयत्न करता रहता है।
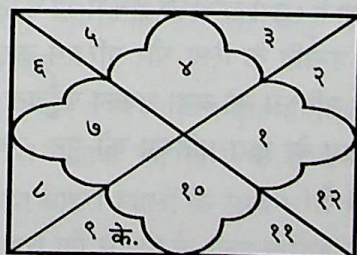
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने भाग्य की उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी उसे बहुत बड़े संकटों एवं असफलताओं का शिकार भी बनना होता है। ऐसे व्यक्ति की भाग्योन्नति बहुत धीरे-धीरे तथा संघर्षों से मुकाबला करते हुए होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह-स्थिति वाले लोग गुप्त रूप से चिन्तित बने रहने वाले, परेशानियों में उलझे रहने वाले, ईश्वर की शक्ति में कम विश्वास करने वाले तथा मन्द भाग्य वाले होते हैं।

कर्क लग्नः
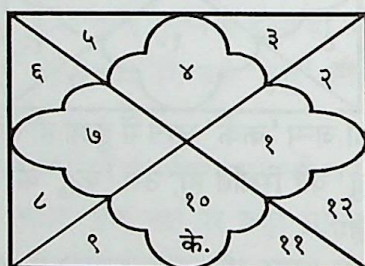
दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता के स्थान में हानि तथा कष्ट का सामना करना पड़ता है। उसे राज्य के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए घोर परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी उसके यश तथा प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का पहुँचता है, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति एवं परिश्रम के द्वारा प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

कर्क लग्नः
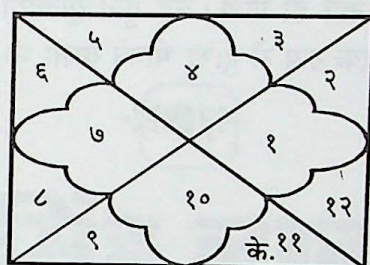
एकादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करता है और गुप्त युक्ति, चतुराई एवं परिश्रम के द्वारा उसकी आय में वृद्धि भी होती है। परन्तु कभी-कभी उसे आमदनी के क्षेत्र में परेशानियों एवं संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, हिम्मतवर, परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है।

कर्क लग्नः
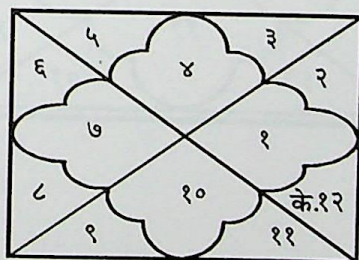
द्वादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाईयाँ उपस्थित होती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने खर्च को चलाने के लिए कठिन परिश्रम करता है, परन्तु

उसकी सम्यक पूर्ति नहीं हो पाती। वह गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला, परिश्रमी तथा आन्तरिक रूप से दुःख भोगने वाला भी होता है।
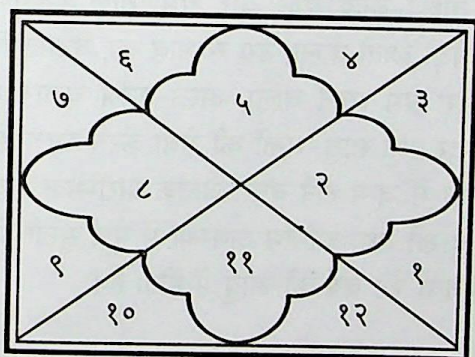
सिंह लग्न

सिंह लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

'सिंह' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाले जातक को शरीर पाण्डुवर्ण होता है। वह पित्त तथा वायु विकार से पीड़ित रहने वाला, मांसभोजी, रसीली वस्तुओं को पसन्द करने वाला, कृशोदर, अल्पभोजी, अल्प पुत्रवान, अत्यन्त पराक्रमी, अहंकारी, भोगी, तीक्ष्ण-बुद्धि, ढीठ, वीर, भ्रमणशील, रजोगुणी, क्रोधी, बड़े हाथ-पाँव तथा चौड़ी छाती वाला, उग्र स्वभाव का, वेदान्त विद्या का ज्ञाता, घोड़े की सवारी से प्रेम रखने वाला, अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण, तेज स्वभाव वाला, उदर तथा साधु-सन्तों की सेवा करने वाला होता है।

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाला जातक प्रारम्भिक अवस्था में सुखी, मध्यमावस्था में दुःखी तथा अन्तिम अवस्था में पूर्ण सुखी होता है। उसका भाग्योदय २१ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है।
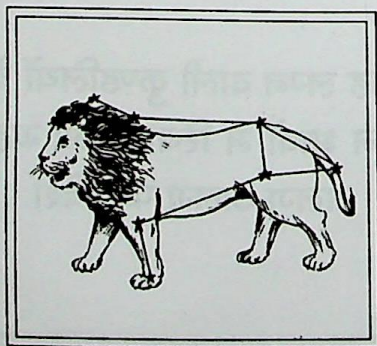
सिंह लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल

सिंह लग्न:
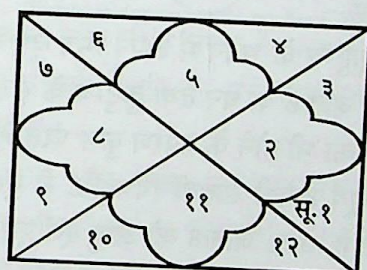
प्रथम भाव: सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपनी सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति, आत्मबल, स्वाभिमान, सौन्दर्य, हिम्मत तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। ऐसा जातक लम्बे कद का होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तम भाव को देखता है, अत: जातक को स्त्री पक्ष से असन्तोष रहता है तथा दैनिक खर्च एवं व्यवसाय के मार्ग में भी कुछ कठिनाईयाँ आती रहती हैं।

सिंह लग्नः
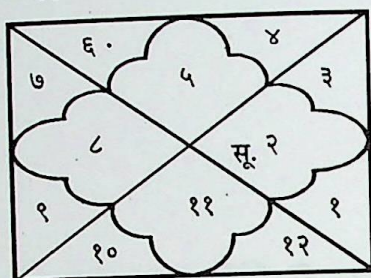
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है, परन्तु यह स्थान बन्धन का भी होने के कारण कुछ परतन्त्रता का-सा अनुभव भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है और वह प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता है।

सिंह लग्नः
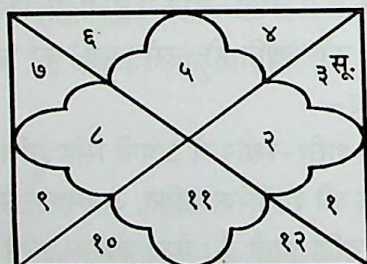
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के सुख में कमी तथा वैमनस्य मिलता है एवं पराक्रम में भी कुछ कमी आती है, परन्तु तृतीय भाव में बैठा हुआ क्रूर अधिक प्रभावशाली होता है, इसलिए जातक

बहुत हिम्मत वाला भी बना रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म में भी वास्तविक रूप में आस्था रखता है।
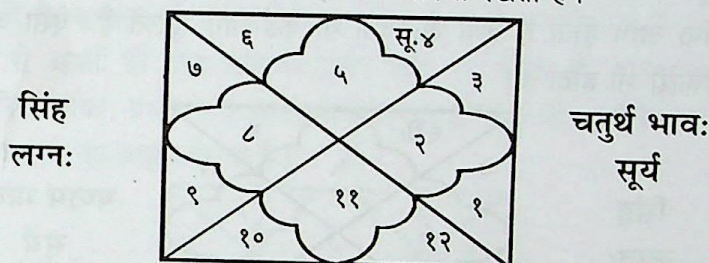
सिंह लग्नः

चतुर्थ भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि, मकान एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा शरीर आनन्दित बना रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक का पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रयत्न द्वारा कुछ सफलता प्राप्त होती है।
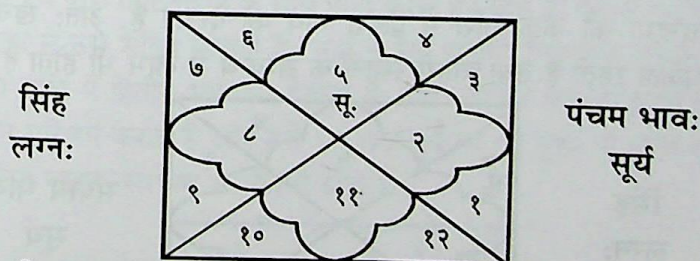
सिंह लग्नः

पंचम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि की श्रेष्ठ

शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति आत्मज्ञानी भी होता है, परन्तु उसके मस्तिष्क में उग्रता रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को बुद्धिबल द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा आमदनी के कई मार्ग खुलते हैं। ऐसा जातक अहंकारी भी होता है।
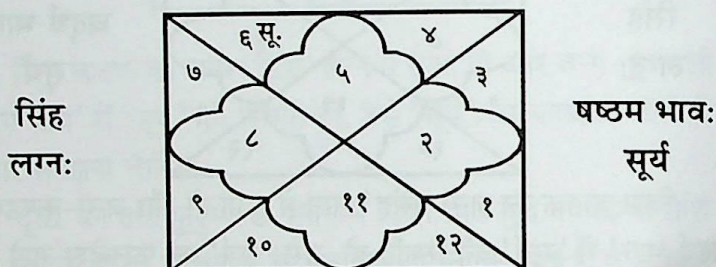
षष्ठम भावः
सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और कठिनाईयों तथा मुसीबतों की चिन्ता नहीं करता। उसके शारीरिक-सौन्दर्य में कमी, रोग तथा परतन्त्रता का योग भी रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।
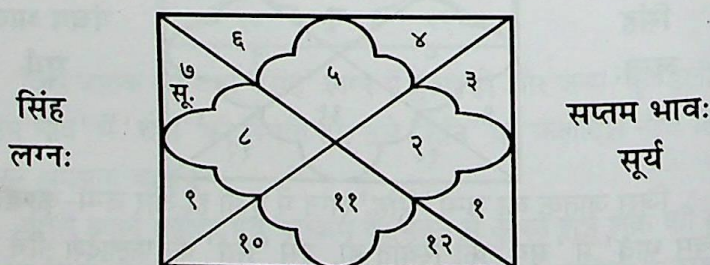
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम के बाद सफलता प्राप्त होती है। परन्तु भोगादि के सम्बन्ध में जातक की आसक्ति रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं स्वाभिमान सम्पन्न होता है और अपने नाम को ऊँचा उठाने का प्रयत्न करता है।

सिंह लग्नः
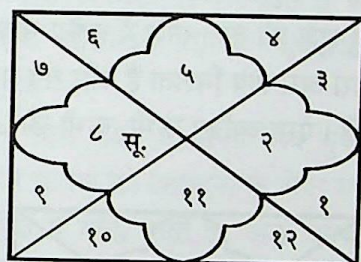
६ ४ ७ ५ ३ ८ सू. २ ९ ११ १ १० १२

अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ शारीरिक शक्ति एवं कुछ कठिनाईयों के साथ प्राप्त करता है। साथ ही बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे शक्ति मिलती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है और उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक स्वभाव का क्रोधी होता है।

सिंह लग्नः
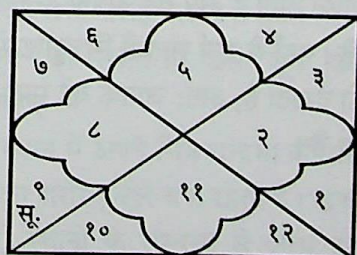
नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को भाग्य की प्रबल शक्ति प्राप्त होती है तथा धर्म के पक्ष में भी रुचि बनी रहती है। ऐसा जातक ईश्वर-विश्वासी, भाग्यवान तथा स्थूल शरीर वाला होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः उसे भाई-बहिन के द्वारा असन्तोष मिलता है और वह पराक्रम के सम्बन्ध में लापरवाह बना रहता है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी छोटे-मोटे अनुचित काम भी करता है।
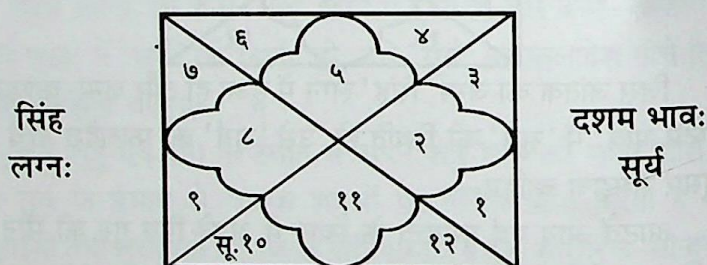
सिंह लग्नः

दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता से वैमनस्य एवं राज्य के क्षेत्र से मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

सिंह लग्नः
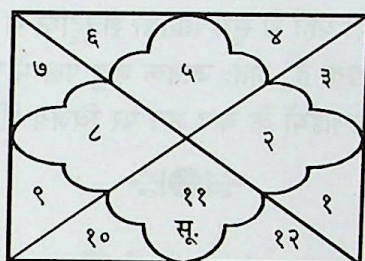
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के श्रेष्ठ साधन उपलब्ध होते हैं। उसकी शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, अतः आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की समुचित शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी होता है तथा उसकी वाणी में भी कुछ उग्रता बनी रहती है।

सिंह लग्नः
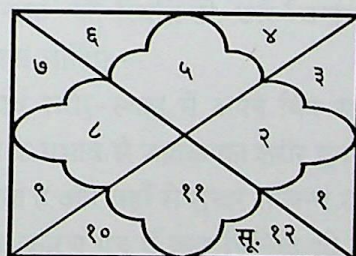
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल बना रहता है। खर्च पर वह अपना प्रभाव रखता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। ऐसा व्यक्ति

भ्रमणशील भी होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव रखता है और अनेक प्रकार की कठिनाईयों के बाद उन पर विजय भी पाता है।

सिंह लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

सिंह लग्न:
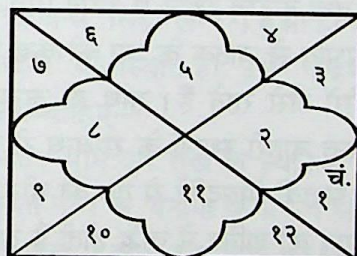
प्रथम भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है, वह बाहरी स्थानों का भ्रमण करता है और वहाँ से सुन्दर सम्बन्ध स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति अपने खर्च के कारण मन में कुछ चिन्तित भी बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तम भाव को देखता है, अत: उसे स्त्री पक्ष से कुछ परेशानी होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयों एवं हानि का सामना करना पड़ता है।

सिंह लग्नः
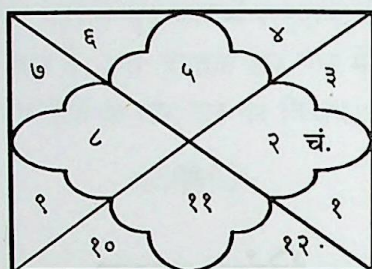
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव धन तथा कुटुम्ब स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के धन की कुछ हानि होती है, परन्तु उसके ठाट-बाट अमीरों जैसे रहते हैं। साथ ही कुटुम्ब पक्ष से भी कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा कुछ कमजोरी के साथ पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति शानदार जीवन बिताता है।

सिंह लग्नः
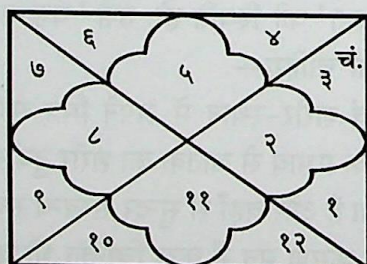
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में कुछ कमजोरी बनी रहती है, परन्तु बाहरी

स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः कुछ कमी के साथ जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा खर्च को व्यस्थित तरीके से चलाता है और जातक सुखी तथा धनी समझा जाता है।
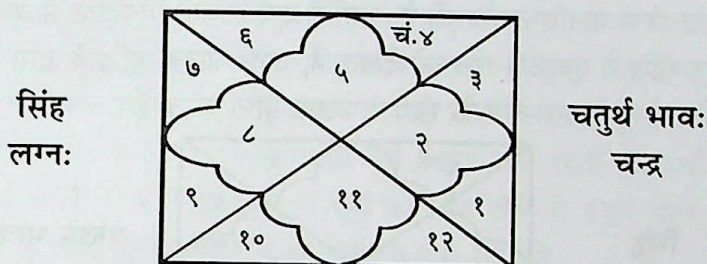
सिंह लग्नः

चतुर्थ भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि के सुख में कमी तथा कष्ट की प्राप्ति होती है तथा घरेलू खर्चों के कारण भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा भी सुख, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है।
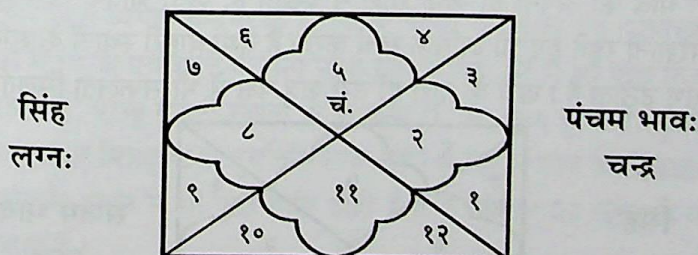
सिंह लग्नः

पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष में बाधा आती है तथा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। साथ ही खर्च की चिन्ता से मानसिक परेशानी है। यहाँ से सूर्य सावतीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक बुद्धि के द्वारा लाभ के क्षेत्र में कुछ असन्तोष के साथ सफलता प्राप्त करता है।
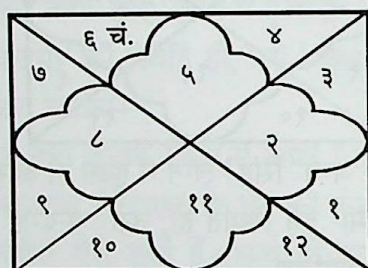
षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में चन्द्रमा की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा उत्पन्न किए गए झगड़े-टंटे तथा रोग आदि में खर्च करना पड़ता है तथा खर्च की चिन्ता से मन चिन्तित एवं दुःखी बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से द्वादश भाव को अपनी ही कर्क राशि में देखता है, अतः जातक खर्च जुटाने की परेशानी रहते हुए भी अधिक खर्च करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। खर्च के द्वारा ही उसे शत्रु पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सिंह लग्नः
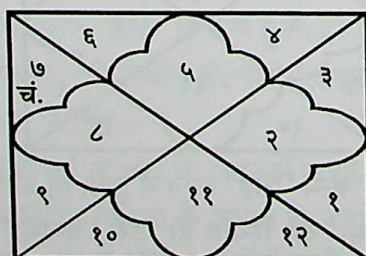
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि में स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है तथा घरेलू खर्च चलाने में कुछ असन्तोष एवं कठिनाईयों का अनुभव होता है। साथ ही उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु मन में कमजोरी एवं चिन्ता बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः उसके शरीर में भी दुर्बलता बनी रहती है।

सिंह लग्नः
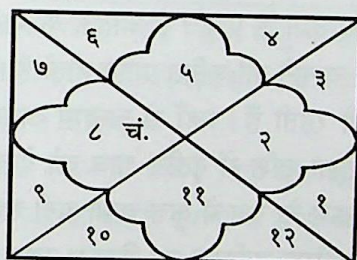
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में चिन्ता एवं हानि के योग प्राप्त होते हैं तथा पेट में भी कुछ विकार बना रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे लाभ होता है। यहाँ से चन्द्रमा सावतीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन के स्थान में भी कुछ हानि होती है तथा परिवार का सुख भी कम मिल पाता है।

सिंह लग्नः
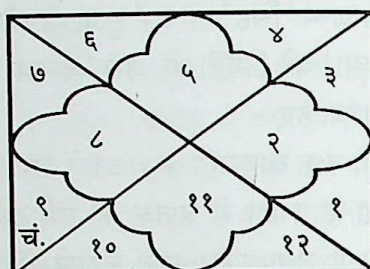
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तथा मनोबल द्वारा खर्च चलाने की शक्ति प्राप्ति होती है। धर्म पालन के क्षेत्र में भी कुछ त्रुटियाँ बनी रहती हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्यमित्र शुक्र की तुला राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा जातक प्रसन्न रहते हुए भी मानसिक दुर्बलता का शिकार रहता है।

सिंह लग्नः
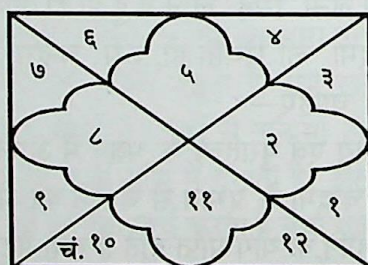
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य व पिता के भवन में अपने सामान्यमित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित व्ययेश तथा उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक पैतृक सम्पत्ति का अधिक व्यय करता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ

त्रुटिपूर्ण सफलता पाता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है और खर्च की अधिकता के कारण मन अशान्त बना रहता है।
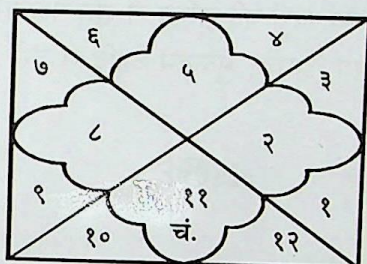
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित व्ययेश के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में भी कुछ कमजोरी बनी रहेगी। ऐसा जातक कुछ चिन्ताओं के साथ अपना व्यय चलाता है, परन्तु सामाजिक तौर पर धनी मालूम होता है।
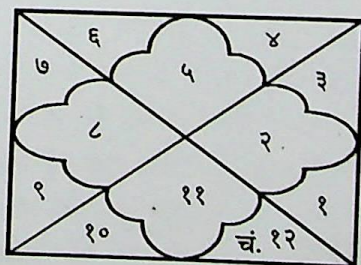
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपनी ही कर्क राशि में स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे सुख, यश एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक अपने मनोबल एवं खर्च की शक्ति से शत्रु पक्ष पर प्रभाव एवं विजय प्राप्त करता है परन्तु रोग, झगड़े, मुकदमे आदि में उसे अधिक खर्च करना पड़ता है।

सिंह लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

सिंह लग्नः
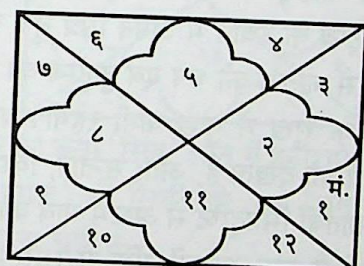
प्रथम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले भाव केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शरीर से बड़ा प्रभावशाली होता है। वह भाग्यशाली, धर्मात्मा तथा भाग्य पर भरोसा करने वाला होता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि के चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, भवन आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों के साथ सुख मिलता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

सिंह लग्नः
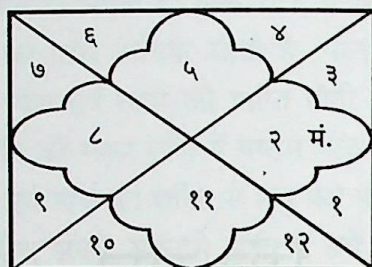
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन व कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहेगी। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलेगी। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, धर्मात्मा तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

सिंह लग्नः
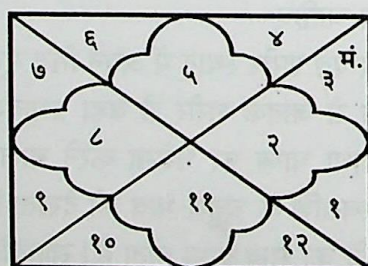
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त

होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में सफलता, प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सुख, सम्मान एवं उन्नति की प्राप्ति होती है।
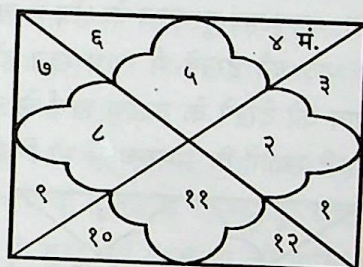
सिंह लग्नः **चतुर्थ भावः मंगल**

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है। अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के पक्ष में पर्याप्त सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती रहती है।
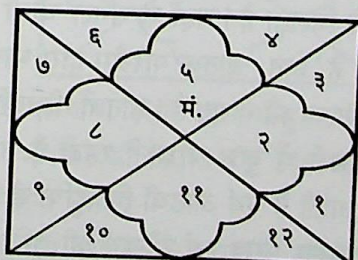
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में सुख, सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। उसे माता तथा मातृभूमि से भी स्नेह मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा आठवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च के कारण कुछ परेशानी बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी निर्बलता रहती है।

सिंह लग्नः
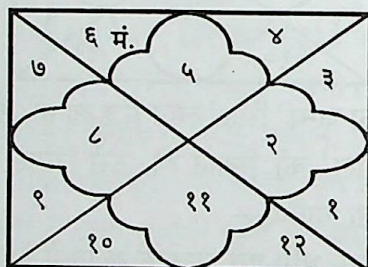
६ मं.
४
७
५
३
८
२
९
११
१
१०
१२

षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त होती है तथा भाग्य की शक्ति से सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है। साथ ही धर्म का पालन भी करता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च के मामले में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कमजोरी आती है एवं आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव, सुख एवं सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

सिंह लग्नः
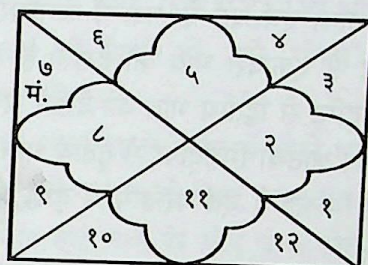
सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कठिनाईयों के साथ स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है अतः कुछ मतभेद के साथ पिता एवं राज्य के द्वारा सुख, सम्मान तथा प्रभाव एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सिंह लग्नः
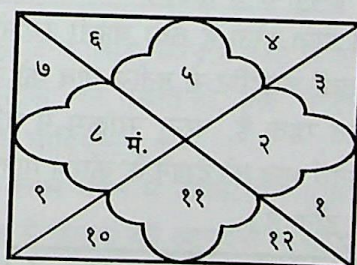
अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का

लाभ होता है, परन्तु भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कमजोरी आती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी खूब होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख मिलता है एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक यशस्वी भी होता है।

सिंह लग्नः
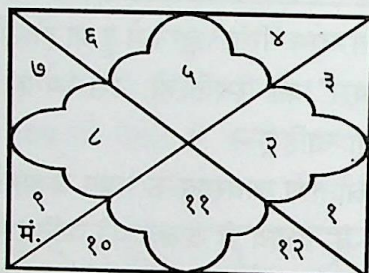
नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च में कमी के कारण कष्ट प्राप्त होता है तथां बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन का सुख असन्तोषयुक्त रहता है, परन्तु पराक्रम में षृद्धि होती है। आठवें दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

सिंह लग्नः
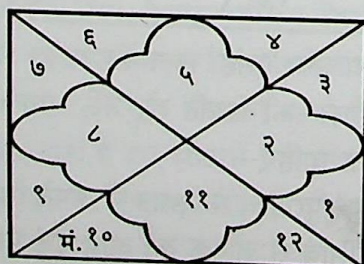
दशम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति, सफलता, सम्मान एवं लाभ के योग प्राप्त होते हैं। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में प्रभाव रहता है और सौभाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है और आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी, विनम्र तथा सज्ज़न होता है।

सिंह लग्नः
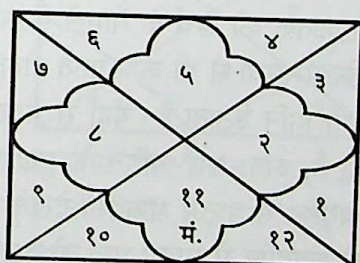
एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है अतः धन की प्राप्ति होती है एवं कुटुम्ब द्वारा सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलती है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रुओं, रोगों तथा झंझटों पर विजय प्राप्त होती है।

ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रभावशाली, शत्रुजयी, धनी तथा ननिहाल का भी सुख प्राप्त करने वाला होता है।

सिंह लग्नः
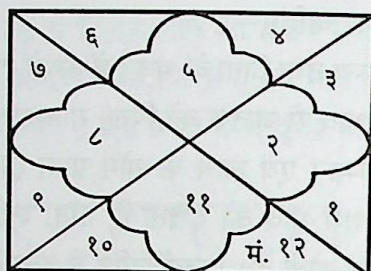
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट प्राप्त होता है। वह भाग्य, माता एवं भूमि के पक्ष से भी हानि उठाता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रुओं पर विजय मिलती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय द्वारा सुख एवं लाभ होता है। परन्तु ऐसा जातक धर्म के पक्ष में लापरवाह होता है।

सिंह लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

सिंह लग्नः
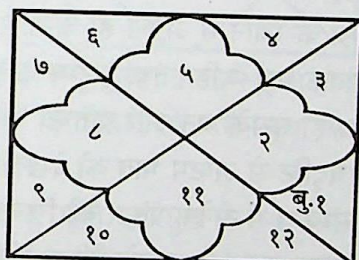
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक विवेकी, सम्मानित, भोगी तथा धनी होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से भी अत्यन्त उन्नति, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

सिंह लग्नः
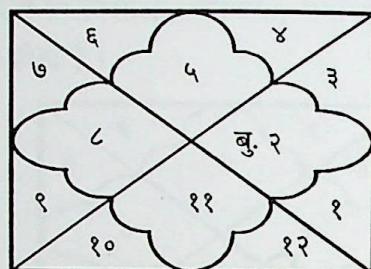
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन, कुटुम्ब के स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक भाई-बहिन तथा कुटुम्ब के सुख को यथेष्ट मात्रा में प्राप्त करता है, साथ ही उसके धन और प्रतिष्ठा की वृद्धि भी होती है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की चिन्ताओं, कठिनाईयों एवं दुविधाओं का शिकार बनना पड़ता है। उसके दैनिक जीवन में कुछ असन्तोष बना रहता है तथा पेट में भी खराबी रहती है।

सिंह लग्नः
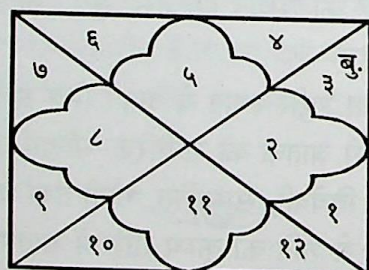
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। वह पुरुषार्थ द्वारा धन भी कमाता है तथा

विवेक द्वारा लाभ के मार्ग में उन्नति करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, साहसी, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है।
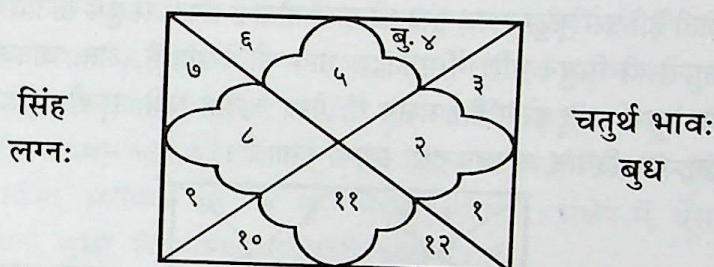
चतुर्थ भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और वह धन का संचय भी करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता के स्थान से उन्नति मिलती है एवं राज्य तथा व्यवसाय के द्वारा भी सहयोग, सुख, सम्मान, यश तथा लाभ की प्राप्ति होती है।
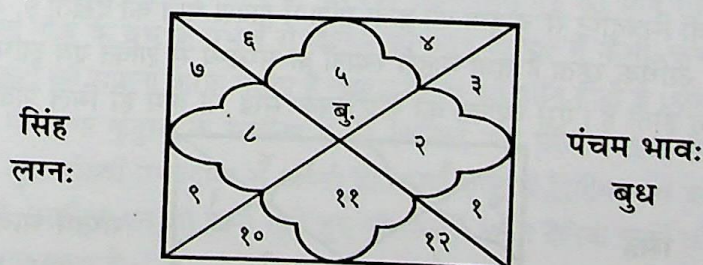
सिंह लग्नः

पंचम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के द्वारा धन की उन्नति भी होती है। उसे कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को अच्छा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, बुद्धिमान, विद्वान, सन्ततिवान, सज्जन तथा स्वार्थी होता है।
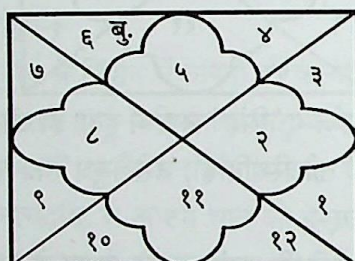
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में नम्रता एवं धन के खर्च की शक्ति से काम लेता है, परन्तु उसे धन की कुछ हानि भी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को कौटुम्बिक सुख भी कम ही मिल पाता है।
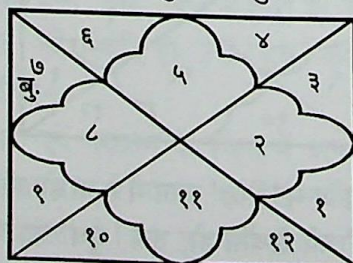
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ भी होता है। उसे धन एवं कुटुम्ब का सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में प्रथम भाव को देखता है, अत: जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, विवेक शक्ति, आत्मिक बल तथा यश भी प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, विवेकी तथा प्रतिष्ठित होता है।

सिंह लग्न:
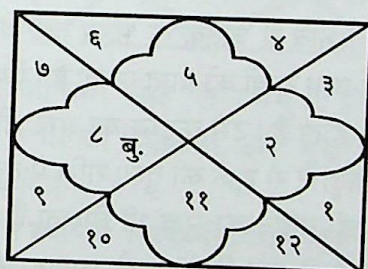
अष्टम भाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को आयु के पक्ष में कभी-कभी घोर संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में भी चिन्तित और परेशान रहता है। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में द्वितीय भाव को देखता है, इसलिए धन की कमी रहते हुए भी जातक अपने दैनिक खर्चों की पूर्ति करता रहता है।
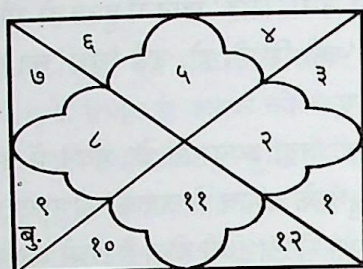
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है और वह धन, ऐश्वर्य तथा सुखों को प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति ईमानदार, ईश्वरभक्त तथा सज्जन होता है। उसे कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख भी मिलता है और उसके पराक्रम में भी वृद्धि होती है। ऐसी ग्रह स्थित वाले जातक यशस्वी होते हैं तथा निरन्तर उन्नति करते जाते हैं।
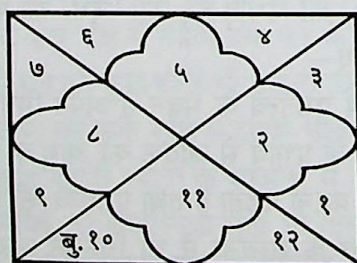
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा लाभ प्राप्त होता है तथा

राज्य के क्षेत्र में सम्मान एवं सफलता मिलती है। वह अपनी विवेक बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बहुत सफल होता है तथा पर्याप्त धन एवं प्रतिष्ठा अर्जित करता है। उसे धन तथा कुटुम्ब का पूर्ण सहयोग एवं सुख रहता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है।

सिंह लग्नः
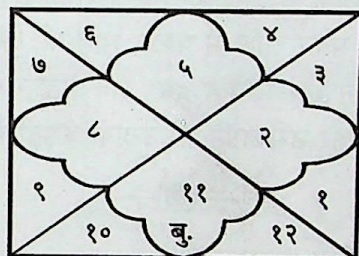
६ ४ ७ ५ ३ ८ २ ९ ११ १ १० बु. १२

एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक बुद्धि द्वारा यथेष्ट लाभ अर्जित करता है तथा धन की वृद्धि के साथ ही सुख तथा कीर्ति की वृद्धि भी होती रहती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः उसे सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक विद्वान, सन्ततिवान, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

सिंह लग्नः
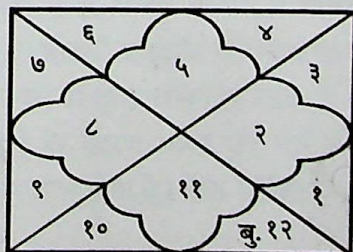
द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे कष्ट का अनुभव होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ लाभ भी होता है। ऐसे जातक के कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में खर्च, धन एवं विवेक द्वारा अपना काम निकालता है, परन्तु झगड़े-झंझटों में फँसकर उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

सिंह लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल
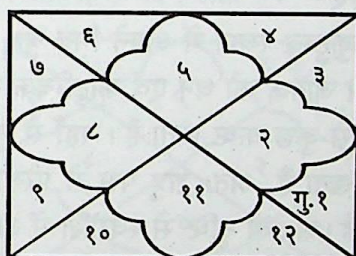
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरुं' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव तथा दीर्घायु प्राप्त होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि, सन्तान के पक्ष में शक्ति, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष रहता है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति वैभवशाली ढंग का जीवन व्यतीत करता है।

सिंह
लग्नः
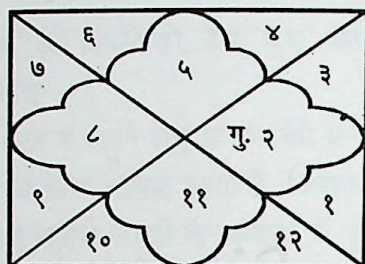
द्वितीय भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन एवं कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान पक्ष से कुछ कष्ट होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष से परेशानी तथा ननसाल से हानि का योग बनता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता से मतभेद रहता है तथा राजकीय सम्पर्कों से असन्तोष मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने सम्मान की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता रहता है।

सिंह
लग्नः
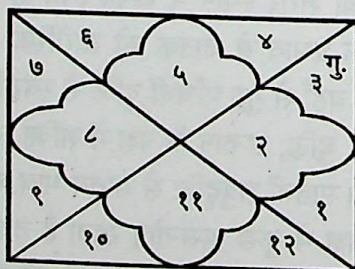
तृतीय भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर

स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों से मतभेद रहता है तथा पराक्रम की शक्ति प्राप्त होती है। उसे कुछ कठिनाईयों के साथ सन्तान का सुख मिलता है तथा आयु की वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण लाभ की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में साहस से काम लेता है।

सिंह लग्नः

६ ४ गु. ७ ५ ३ ८ २ ९ ११ १ १० १२
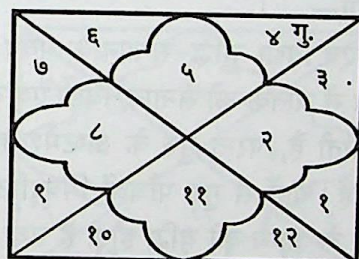
चतुर्थ भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान के सुख में कमी प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान एवं विद्या के पक्ष से लाभ होता है। यहाँ से गुरु के पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र से भी पूर्ण लाभ नहीं होता एवं नौवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है।

सिंह लग्नः
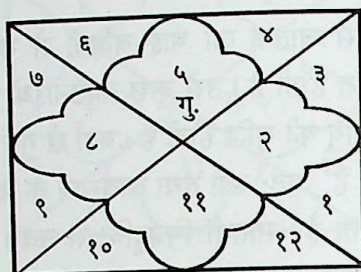
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि-सन्तान के भवन में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में सुख एवं सफलता प्राप्ति होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाईयाँ भी आती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म की भी उन्नति रहती है। साथ ही पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ अच्छा होता है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सुख, मनोबल, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण सुख-दुःख दोनों का ही अनुभव होता रहता है।

सिंह लग्नः

षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष से चिन्ता रहेगी तथा सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहेगी। पुरातत्त्व की हानि तथा दैनिक जीवन के सुख में भी कमी आती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी थोड़ी सफलता मिलती है। पिता से वैमनस्य भी रहता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छी शक्ति मिलती है। नौवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री के वैमनस्य तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानी का अनुभव होता है। साथ ही विद्या तथा सन्तान पक्ष से सामान्य शक्ति प्राप्त होती है। आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का साधारण लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः लाभ अच्छा होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में मान, प्रभाव एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि के लिए जातक प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपनी राशि मीन में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व में वृद्धि होती है। अपने दैनिक जीवन में वह प्रभावशाली रहता है, परन्तु सन्तान पक्ष से कष्ट पाता है और विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध लाभदायक रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक धन वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त करता है एवं नौवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता तथा भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।
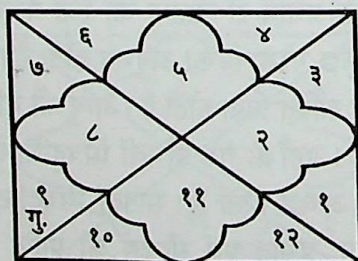
सिंह लग्नः
६
४
७
५
३
८
२
९ गु.
११
१
१०
१२
नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपनी बुद्धि के द्वारा भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में प्रभाव, मनोबल एवं सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सम्बन्ध असन्तोषजनक रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। नौवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की यथेष्ट उपलब्धि होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव भी होता है।

सिंह लग्नः
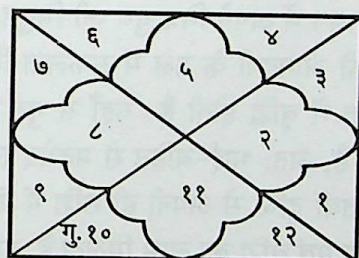
दशम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से कुछ हानि मिलती है, परन्तु राज्य के क्षेत्र में सम्मान प्राप्त होता है। वह पुरातत्त्व, आयु, सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की शक्ति भी अर्जित करता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन एवं कुटुम्ब का सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सामान्य सुख उपलब्ध होता है। नौवीं नीचदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी होती है तथा झगड़े-टंटों के कारण चिन्ता बनी रहती है।
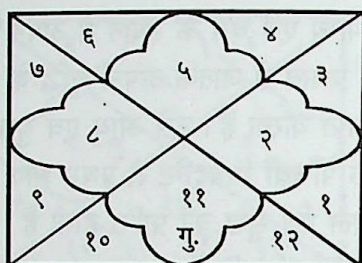
एकादश भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी के पक्ष में सफलता मिलती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन से मतभेद रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता है, परन्तु ग्रह के अष्टमेश होने के कारण कुछ परेशानी रहती है। नौवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक रोजगार के क्षेत्र में कुछ वैमनस्य तथा परेशानियाँ बनी रहती हैं।

सिंह
लग्नः
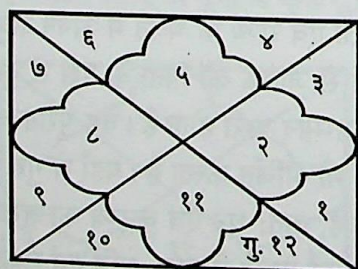
द्वादश भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित

उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक खर्च अधिक करता है तथा बाहरी स्थानों से लाभदायक सम्बन्ध स्थापित करता है। उसे विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कुछ असन्तोषपूर्ण शक्ति मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से परेशानी होती है तथा नौवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने से आयु की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।
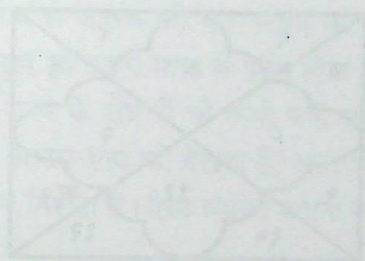
सिंह लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

सिंह लग्नः
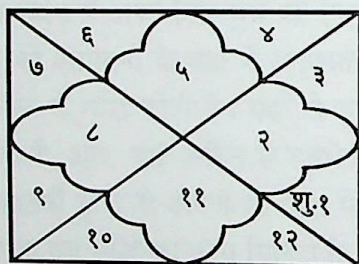
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र, एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, शृंगार, मान एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है, तथा भाई-बहिन एवं पिता के साथ कुछ मतभेद रहते हुए भी सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक अपनी उन्नति के लिए बहुत परिश्रम करता है तथा चातुर्य का सहारा लेता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अतः जातक को स्त्री पक्ष से सफलता, शक्ति तथा प्रतिष्ठा मिलती है एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है।

सिंह लग्नः
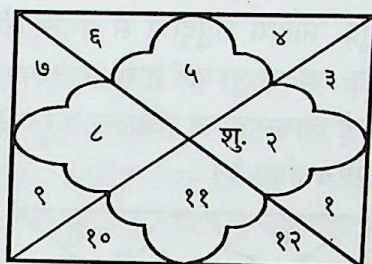
द्वितीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन तथा कुटुम्ब के भवन में बुध की कन्या राशि में स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की धन-संचय की शक्ति में कमी आती है तथा कुटुम्ब का सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। साथ ही पराक्रम, व्यवसाय, पिता एवं राज्य के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपना जीवन बड़े ठाठ-बाट से बिताता है।

सिंह लग्नः
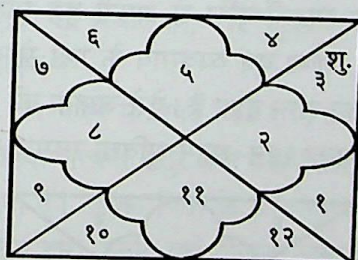
तृतीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है। साथ ही पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी लाभ

मिलता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य तथा धर्म की वृद्धि करता है। वह बहुत बड़े व्यवसाय का संचालन करता है तथा बड़ा हिम्मती, परिश्रमी, चतुर तथा योग्य होता है।

सिंह लग्नः
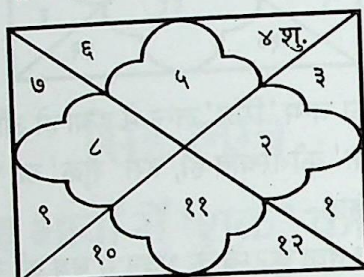
चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक माता के द्वारा सामान्य मतभेद के साथ सुख एवं शक्ति प्राप्त करता है और उसे भूमि, भवन आदि का लाभ भी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी वृष राशि में दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, धन, सफलता, सहयोग एवं सम्मान का लाभ होता है। ऐसे जातक को भाई-बहिन का सुख भी मिलता है तथा उसका रहन-सहन सुविधा सम्पन्न होता है।

सिंह लग्नः
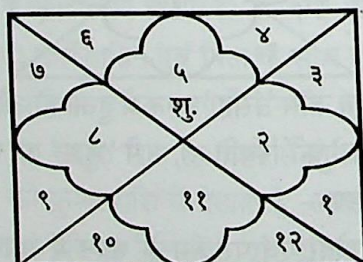
पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। वह अपनी योग्यता एवं चातुर्य के द्वारा प्रभावशाली तथा सम्मानित होता है और उसे भाई-बहिन तथा पिता का सुख भी मिलता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा उसे लाभ भी खूब होता है। साथ ही राज्य के पक्ष में भी उसे सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति चतुर, राजनीतिज्ञ, यशस्वी, धनी तथा सुखी होता है।
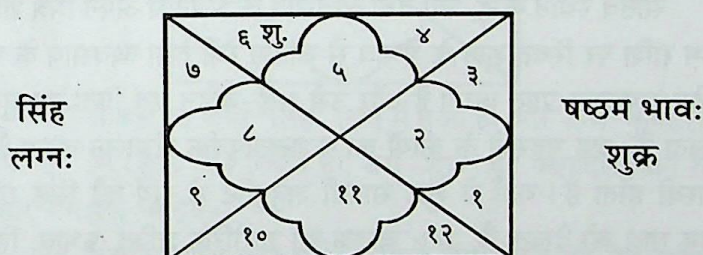
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अत्यन्त चतुर तथा प्रभावशाली होता है तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। उसका पिता के साथ कुछ मतभेद रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख मिलता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों के बल पर सफलता पाता रहता है।

सिंह लग्नः
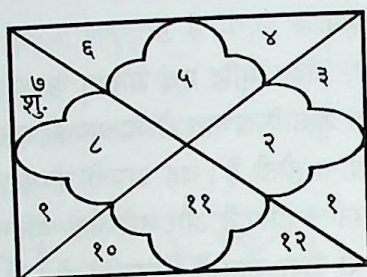
सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें स्थान केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है और उसे भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी मिलता है। वह गृहस्थी के कार्यों का कुशलतापूर्वक संचालन करता है तथा यशस्वी होंता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव, हिम्मत, पुरुषार्थ तथा मनोबल की प्राप्ति होती है। वह शासन करने वाला न्यायी, साहसी तथा बहादुर होता है।

सिंह लग्नः
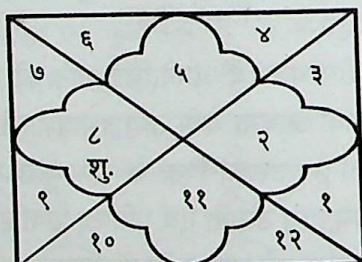
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का

लाभ मिलता है। भाई-बहिन तथा पिता के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन में बड़ा प्रभाव बना रहता है। उसे राज्य के पक्ष से भी सफलता एवं शक्ति मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-संचय तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

सिंह लग्नः ६ ४ ७ ५ ३ ८ २ ९ शु. ११ १ १० १२ **नवम भावः शुक्र**
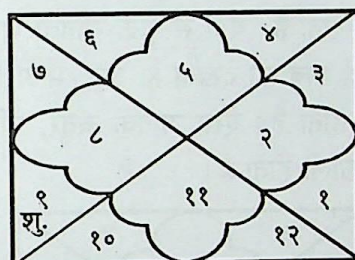
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण भाग्य तथा धर्म में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र से भी सुख, सफलता, सहयोग एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन की श्रेष्ठ शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक परिश्रमी, सद्गुणी, सुन्दर, सुखी, हिम्मतवर, धनी, यशस्वी तथा चतुर होता है।

सिंह लग्नः
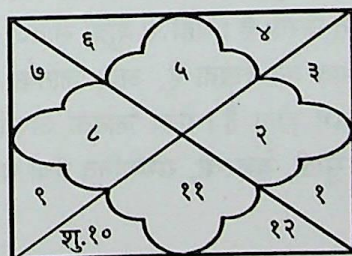
दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपनी ही वृष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से अत्यधिक शक्ति, सफलता, सहयोग, सम्मान एवं सुख की प्राप्ति होती है साथ ही भाई-बहिन का सुख भी मिलता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, मकान तथा भूमि के सुख का श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा जातक चतुर, परिश्रमी, उन्नतिशील, भाग्यवान तथा प्रभावशाली होता है।
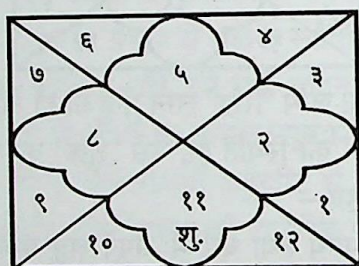
सिंह लग्नः

६ ४
७ ५ ३
८ २
९ ११ १
१० शु. १२

एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी प्राप्त होता है। वह राज्य के क्षेत्र से भी लाभ एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक अपनी वाणी द्वारा प्रभाव स्थापित करने वाला, सुखी, यशस्वी, सम्मानित तथा धनी होता है।

सिंह लग्नः
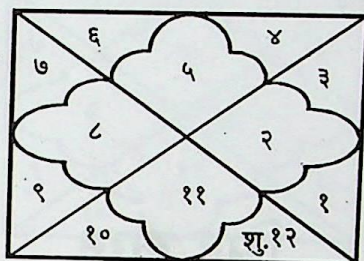
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय तथा बाहरी सम्बन्धों के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलती है। उसे पिता तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ हानि उठानी पड़ती है तथा शारीरिक पुरुषार्थ में भी कमजोरी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक अपने चातुर्य द्वारा शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है तथा अपनी हिम्मत के द्वारा झगड़े-झंझटों में विजय प्राप्त करता है।

सिंह लग्न
बारह भावों में 'शनि' का फल

सिंह लग्नः
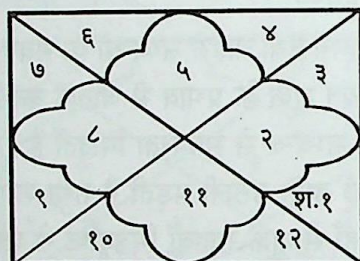
प्रथम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शरीर के सम्बन्ध में परेशानी एवं रोग आदि का सामना करना पड़ता है, परन्तु शत्रु पक्ष पर कुछ प्रभाव रहता है। यहाँ से शनि तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तम भाव को देखने से कुछ परेशानियों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय का सुख एवं लाभ मिलता है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलता, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

सिंह लग्नः
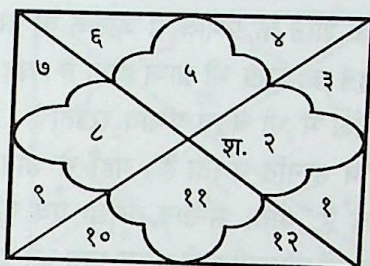
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन के क्षेत्र में हानि-लाभ तथा कुटुम्ब के पक्ष में सुख-दुःख दोनों की ही प्राप्ति होती है। स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बाधाएँ आती हैं। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी बनी रहती है तथा विघ्न उपस्थित होते रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी असन्तोष रहता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी में वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुख-दुःखपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

सिंह लग्नः
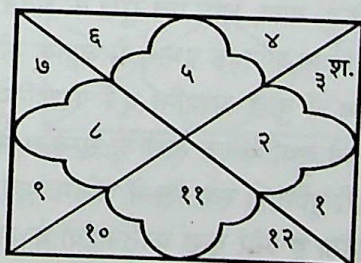
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला

राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में बहुत वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। वह शत्रु पक्ष पर विजय पाता है तथा स्त्री के पक्ष में भी बहुत प्रभाव रखता है। दैनिक खर्च के मार्ग पर परिश्रम द्वारा विशेष उन्नति करता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कुछ परेशानी रहती है। सातवीं नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी आती है तथा परेशानी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण परेशानी भी बनी रहती है।

सिंह लग्नः
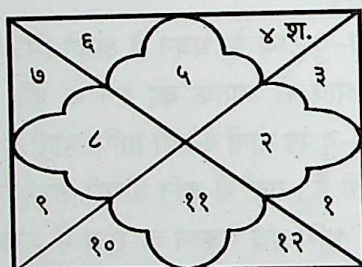
चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे स्थान में केतु, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता के सुख तथा भूमि-भवन के सम्बन्ध में कुछ अशान्ति एवं परेशानियों के बाद सफलता मिलती है। साथ ही स्त्री तथा दैनिक खर्च के सम्बन्ध में भी असन्तोष रहता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है और कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सम्मान तथा सुख प्राप्त होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर में रोग एवं चिन्ताओं का निवास रहता है तथा शारीरिक-सौन्दर्य में भी कुछ कमी रहती है।
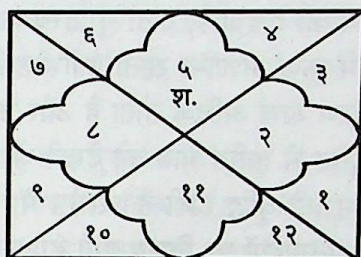
सिंह लग्न: पंचम भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष से कुछ परेशानी एवं कमी बनी रहती है। स्त्री बुद्धिमती होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख भी प्राप्त करता है। ऐसा जातक विषयी भी अधिक होता है।
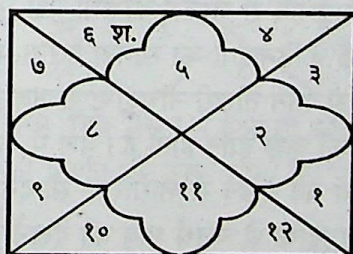
सिंह लग्न: षष्ठम भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है। उसे अपनी ननसाल से भी शक्ति प्राप्त होती है। दैनिक खर्च के संचालन में कुछ कठिनाई रहती है तथा स्त्री पक्ष से कुछ असन्तोष बना रहता है। यहाँ से शनि तीसरी

शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है तथा आयु के क्षेत्र में कुछ अशान्ति रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है और उसके कारण परेशानी रहती है दसवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक परिश्रम तथा हिम्मत के द्वारा कठिनाईयों पर विजय पाते हुए उन्नति करता है।

सिंह लग्नः

६ ४ ७ श. ५ ३ ८ २ ९ ११ १ १० १२
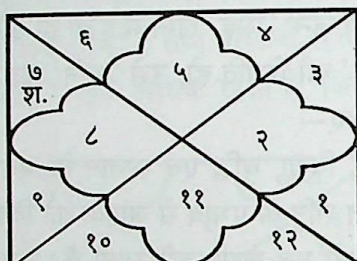
सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम् भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। शत्रु पक्ष में प्रभाव रहता है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य तथा धर्म की कुछ हानि होती है। यश में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक-सौन्दर्य एवं शान्ति का ह्रास होता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, भवन आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है।

सिंह लग्नः
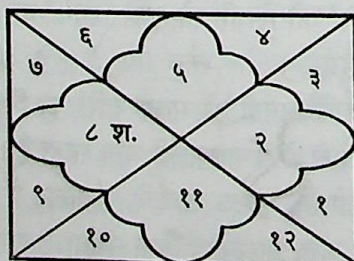
अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री पक्ष से अशान्ति, शत्रु पक्ष से परेशानियों तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष से मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा कुछ लाभ की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक धन-वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि के पक्ष में कमी तथा सन्तान पक्ष से कष्ट होता है।

सिंह लग्न:
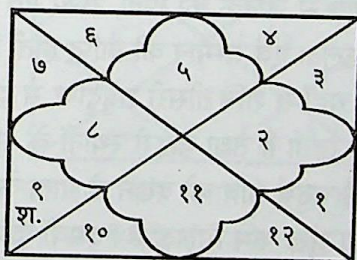
नवम भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अत: आमदनी की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी ही राशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से कुछ हानि और कुछ

लाभ रहता है। शनि के सप्तमेश होने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता कम ही मिलती है।

सिंह लग्नः
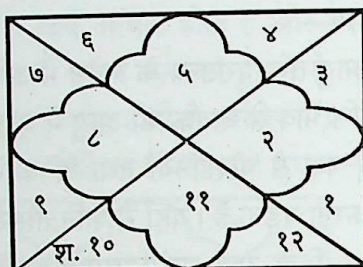
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से परिश्रम द्वारा सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी प्रभाव रहता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन का सुख कम मिलता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख तो मिलता है, परन्तु शनि के षष्ठेश होने के कारण कुछ परेशानी भी रहती है।

सिंह लग्नः
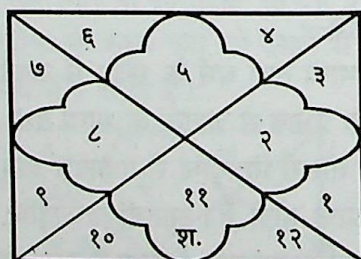
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। विशेषकर शत्रु पक्ष से लाभ होता है। स्त्री का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा अच्छी सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा बीमारी भी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान एवं विद्या के पक्ष में कमी रहती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से पुरातत्त्व के लाभ में कमी आती है तथा जीवन के सम्बन्ध में भी चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सिंह लग्नः
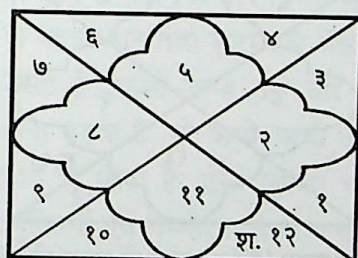
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ होता है। साथ ही शत्रु पक्ष से परेशानी मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन-जन के सुख की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है। सातवीं दृष्टि से षष्ठम भाव को अपनी ही राशि में देखने से शत्रुओं पर प्रभाव बना रहता है। दसवीं नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कठिनाईयाँ आती हैं तथा धर्म की भी हानि होती है, ऐसा जातक रोगी, अपयशी, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से कष्ट पाने वाला भी होता है।

सिंह लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

सिंह लग्नः
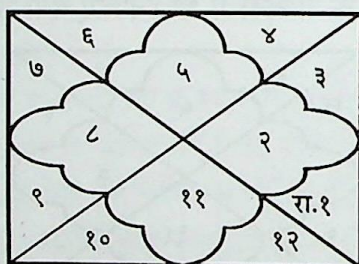
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा सुख-शान्ति में बाधा पड़ती है। उसे शरीर में कभी-कभी बड़े कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा भीतरी चिन्ताओं से चिन्तित बना रहता है। ऐसा व्यक्ति किसी उच्चपद पर पहुँचने अथवा किसी विशेष कार्य को करने के लिए गुप्त युक्ति, परिश्रम एवं साहस का सहारा लेता है और सफलता की ओर बढ़ता भी है।

सिंह लग्नः
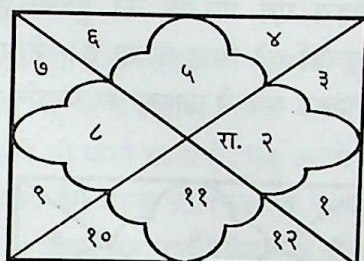
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन-कुटुम्ब भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ उन्नति प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है और ऋण लेना पड़ता है, तो कभी-कभी उसे अकस्मात् ही जैसे मुफ्त धन की प्राप्ति भी हो जाती है, ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों एवं गम्भीरता से काम लेता है। वह चतुर तथा चालाक भी होता है।

सिंह लग्नः
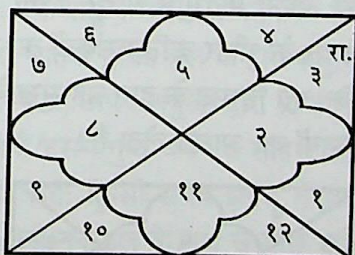
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति

गुप्त-चातुर्य, धैर्य, साहस एवं परिश्रम का पुतला होता है। वह बड़ी गम्भीरतापूर्वक अपने स्वार्थ को सिद्ध करता है। भीतर से कभी कमजोरी अनुभव करने पर भी प्रकट रूप से साहस का प्रदर्शन करता है तथा दृढ़-निश्चयी होता है।

सिंह लग्नः
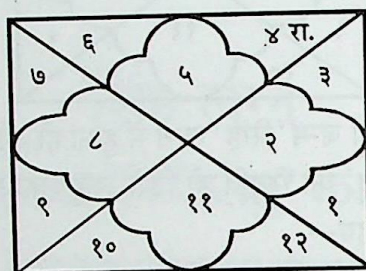
चतुर्थ भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक माता के पक्ष से कष्ट पाता है। उसे भूमि, मकान आदि के सुख में भी बाधा मिलती है तथा घरेलू सुख-शान्ति में भी कमी रहती है। उसे अपनी मातृभूमि से दूर जाकर भी रहना पड़ता है। कभी-कभी उसे अपने घर के भीतर कठिन संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु भाग्य की शक्ति एवं हिम्मत के द्वारा वह सुख के साधनों को जुटाता रहता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

सिंह लग्नः
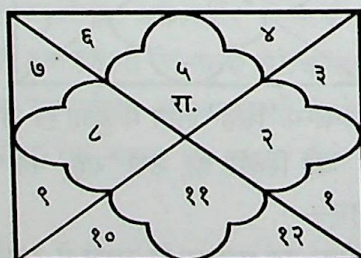
पंचम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष में कष्ट मिलता है तथा विद्या की भी कमी रहती है। वह अपने बुद्धि-बल से अपनी अयोग्यताओं को छिपाता है। परन्तु बोलचाल में शिष्टाचार, विनम्रता एवं सत्य का पालन नहीं कर पाता। वह गुप्त युक्तियों से स्वार्थ सिद्ध करने वाला होता है तथा कभी-कभी अपने मन में घबरा भी जाता है।
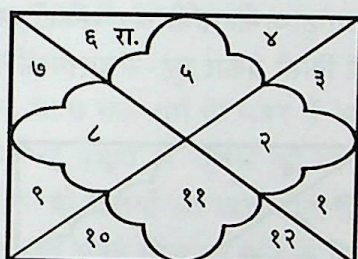
सिंह लग्नः **षष्ठम भावः राहु**

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग तथा शत्रु के घर में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक युक्ति बल के द्वारा शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है, परन्तु कभी-कभी अपने शत्रुओं द्वारा प्राप्त परेशानी का भी विशेष रूप से अनुभव करता है उसमें गुप्त धैर्य एवं साहस की शक्ति होती है। वह बड़ा हिम्मती होता है, अतः किसी समय झगड़े में वह अपनी बहादुरी का प्रदर्शन भी करता है। उसे ननसाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है।

सिंह लग्नः
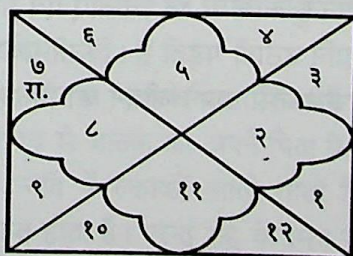
सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी घोर कठिनाईयाँ आती हैं, परन्तु यह बड़े परिश्रम, गुप्त युक्ति, धैर्य एवं हिम्मत के साथ अपने व्यवसाय एवं गृहस्थी का संचालन करता है तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु बाद में किसी प्रकार गृह-संचालन की शक्ति उसे प्राप्त हो जाती है।
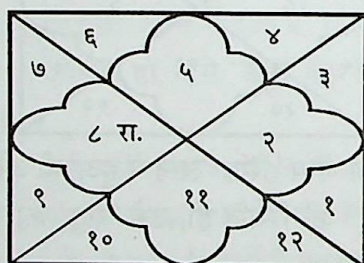
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्युतुल्य कष्ट का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है तथा दैनिक कार्यों में भी चिन्ताएँ एवं परेशानियाँ बनी रहती हैं। उसे पुरातत्त्व की हानि उठानी पड़ती है। किसी प्रकार का गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर वह जैसे-तैसे अपने जीवन का निर्वाह करता है।

सिंह लग्नः
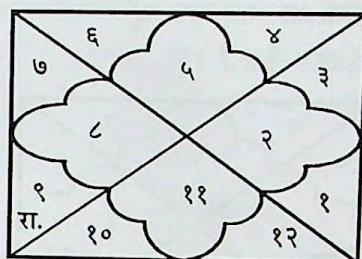
नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक बार रूकावटें आती हैं तथा परेशानियाँ उठ खड़ी होती हैं। धर्म के पालन में भी उसे अरुचि रहती है। वह अपने भाग्य की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस का आश्रय लेता है और अनेक परेशानियों को पार करने के बाद थोड़ी-सी सफलता भी पा लेता है।

सिंह लग्नः
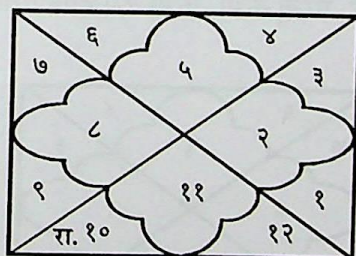
दशम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता के सुख में कमी रहती है तथा व्यावसायिक उन्नति में रुकावटें आती रहती हैं। उसे राज्य द्वारा भी परेशानी का योग प्राप्त होता है। परन्तु राहु के मित्र राशिस्थ होने के कारण

जातक अनेक कठिनाईयों के बाद गुप्त युक्तियों के बल पर व्यवसाय में थोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है।

सिंह लग्नः
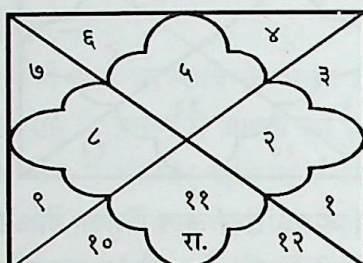
६ ५ ४ ७ ३ ८ २ ९ ११ १ १० रा. १२

एकादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त होती है और कभी-कभी उसे आकस्मिक धन की प्राप्ति भी होती है। वह गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के बल पर लाभ के क्षेत्र को बढ़ाता रहता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि तथा परेशानी भी उठानी पड़ती है।

सिंह लग्नः
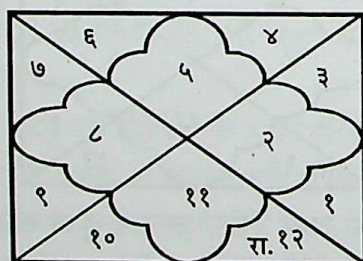
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए हर समय चिन्तित रहना

पड़ता है तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी हानि उठानी पड़ती है। मन की प्रबल शक्ति द्वारा बारम्बर के प्रयत्न, परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बलपर अन्त में उसे थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।
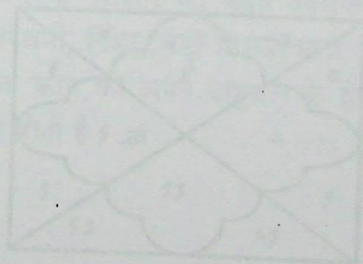
सिंह लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

सिंह लग्नः
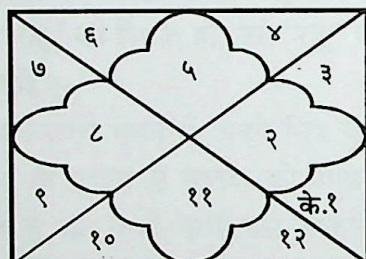
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान के अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा कभी कोई गहरी चोट भी लगती है अथवा घाव होता है। ऐसा व्यक्ति भीतर से चिन्तित रहते हुए भी गुप्त धैर्य से काम लेता है तथा सुख की प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करता रहता है।

सिंह लग्नः
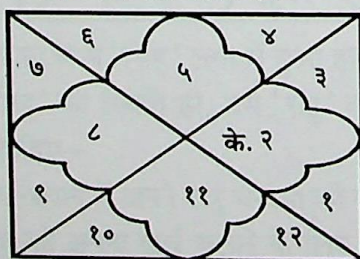
द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन-संचय के क्षेत्र में दुर्बलता प्राप्त होती है तथा धन की कमी के कारण अनेक प्रकार की चिन्ताओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वह धन वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है। कभी-कभी उसे ऋण भी लेना पड़ता है। वह गुप्त युक्तियों के बल पर अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने का प्रयत्न करता है। उसे कुटुम्ब का पूर्ण सुख भी नहीं मिलता।
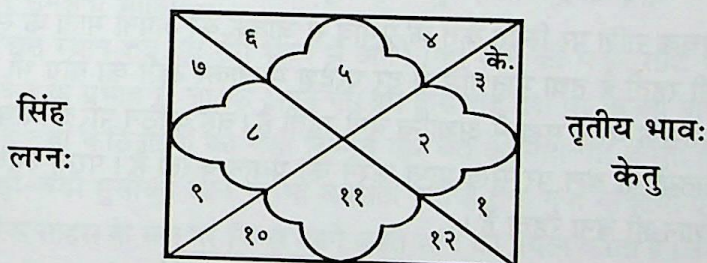
सिंह लग्नः

तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के पक्ष में परेशानी एवं कष्ट का योग बनता है, परन्तु पराक्रम की बहुत अधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थी, परिश्रमी, निडर, बड़ी हिम्मतवाला, चतुर तथा शक्तिशाली होता है। वह प्रत्येक काम को अपने बाहुबल के द्वारा पूरा करता है और लापरवाह तथा हठी होता है।
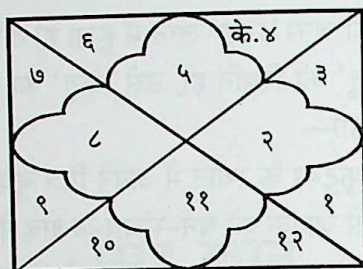
चतुर्थ भावः
केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के घर में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी माता के सुख में कमी रहती है तथा मातृभूमि से दूर परदेश में जाकर रहने का योग भी बनता है। उसके घरेलू सुख में अशान्ति बनी रहती है। वह कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। परन्तु अधिकतर परेशान ही बना रहता है।

सिंह
लग्नः

६
४
७
५
के.
३
८
२
९
११
१
१०
१२
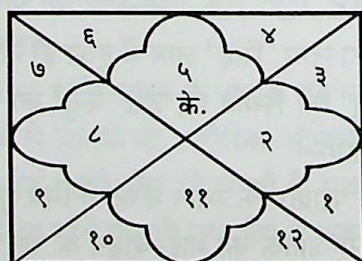
पंचम भावः
केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से शक्ति मिलती है, परन्तु कभी-कभी कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। वह विद्या के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है, परन्तु विद्या-बुद्धि

में कुछ कमी ही बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति स्वयं को बुद्धिमान समझता है, परन्तु उसकी वाणी अधिक प्रभावशाली नहीं होती।

सिंह लग्नः
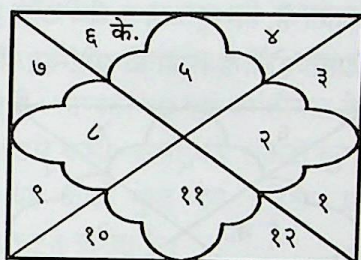
षष्ठम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिनाईयों को बड़ी हिम्मत एवं धैर्य के साथ पार करता है। वह बड़ी-बड़ी मुसीबतें आने पर भी घबराता नहीं है तथा गुप्त युक्तियों एवं आन्तरिक साहस के बल पर निन्तर आगे बढ़ते रहने का प्रयत्न करता है। उसे ननसाल के पक्ष से हानि प्राप्त होती है।

सिंह लग्नः
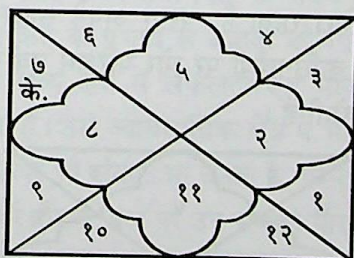
सप्तम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री के सुख में कमी एवं

व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वह गुप्त धैर्य एवं साहस के साथ अपनी गृहस्थी का पालन करता है तथा कभी-कभी गहरी मुसीबतों में भी फँस जाता है, परन्तु अपना धैर्य और साहस नहीं छोड़ता। अन्ततः उसे सफलता प्राप्त होती है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार भी होता है।
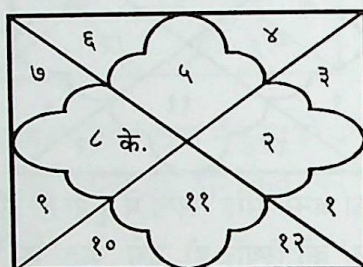
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि में स्थित केतु के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार मृत्युतुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है। वह हर समय चिन्ताओं से घिरा रहता है, परन्तु अपने साहस और धैर्य को नहीं छोड़ता। अन्ततः उसे कठिनाईयों पर घोर परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर विजय भी प्राप्त होती है।
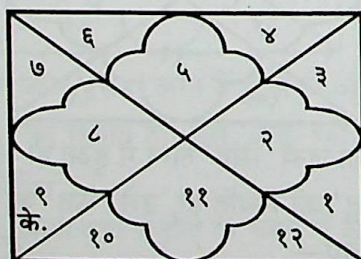
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाईयाँ आती रहती हैं और उसे घोर परिश्रम करना पड़ता है। इसी प्रकार धर्म के पक्ष में भी कमजोरी बनी रहती है। भाग्यहीनता एवं धर्महीनता के कारण उसके यश को भी धब्बा लगता है। उसे कभी-कभी बड़े संकटों का शिकार भी होना पड़ता है। परन्तु अन्त में वह अपने गुप्त धैर्य, परिश्रम एवं साहस के बल पर सफलता एवं शक्ति प्राप्त करता है।
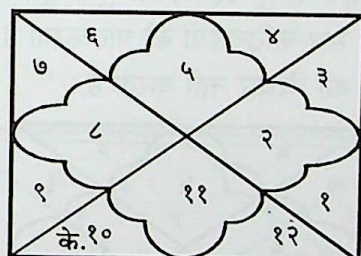
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, माता, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता स्थान से कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा राज्य क्षेत्र में सफलता एवं मान पाने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ प्राप्त होती हैं तथा प्रतिष्ठा के ऊपर भी संकट आ बनता है, परन्तु वह गुप्त धैर्य, साहस, बुद्धि, चतुराई एवं परिश्रम के बल पर उन सबको पार करके उन्नति पाता है।
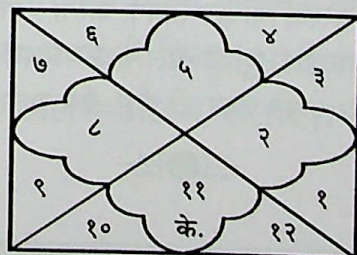
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से ज़ातक को अपनी आय के क्षेत्र में घोर कठिनाईयों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ता है। धनोपार्जन में कमी के कारण उसे दु:ख का अनुभव होता है तथा कभी-कभी धन की कमी से घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य, परिश्रम तथा साहस के बल पर उन सब कठिनाईयों को पार करता है और लाभ उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार नहीं करता है।

सिंह लग्नः
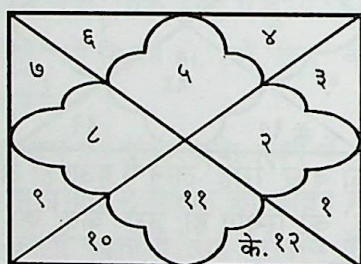
द्वादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के कारण अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। उसे मानसिक चिन्ताएँ घेरे रहती हैं। कई बार उसे हानि, संकट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु अन्त में वह अपने गुप्त-धैर्य, साहस, युक्ति-बल तथा परिश्रम के द्वारा कठिनाईयों पर विजय पाता है और अपने काम को जैसे-तैसे चलाता रहता है।

६.

कन्या लग्न
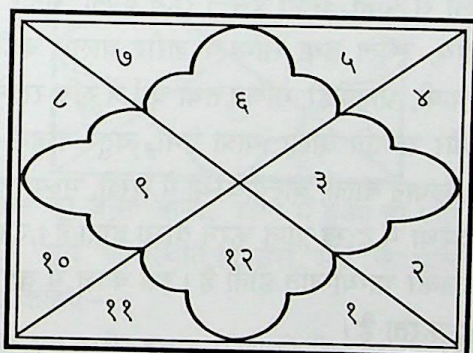
कन्या लग्न वाली कुण्डलियों के
विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का
अलग-अलग फलादेश

'कन्या' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाला जातक कफ एवं पित्त प्रकृति वाला, सौन्दर्यवान, विचारशील, सन्तान से युक्त, स्त्री द्वारा पराजित, डरपोक, मायावी, कामवासना से दुःखी शरीर वाला, कामक्रीड़ा में निपुण, अनेक प्रकार के गुणों तथा कौशलों से युक्त, सदैव प्रसन्न रहने वाला, सुन्दर स्त्री प्राप्त करने वाला, शृंगार-प्रिय, स्थूल तथा सामान्य शरीर वाला, बड़ी आँखों वाला, प्रियवादी, अल्पभाषी, भ्रातृद्रोही, गणित तथा धर्म में रुचि रखने वाला, गम्भीर, अधिक कन्या और सन्तति वाला, यात्रा प्रेमी, चतुर नाजुक-मिजाज, अपने मन की बात को छिपाने वाला, बाल्यावस्था में सुखी, मध्यमावस्था में सामान्य तथा अन्तिम अवस्था में दुःख प्राप्त करने वाला होता है। २४ से ३६ वर्ष की आयु के बीच उसकी भाग्योन्नति होती है। इस काल में वह अपने धन और ऐश्वर्य की वृद्धि करता है।

कन्या लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल

कन्या लग्नः
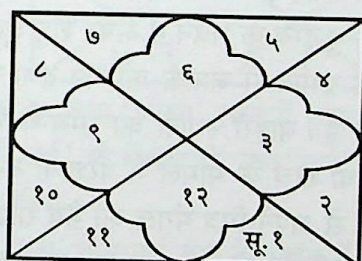
प्रथम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह अत्यधिक खर्च करने वाला होता है, परन्तु कभी-कभी खर्च के कारण कुछ परेशानी का अनुभव भी होता है। बाहरी स्थानों के सम्पर्क से उसे विशेष लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः उसे स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष एवं हानि का भी सामना करना पड़ता है।

कन्या लग्नः
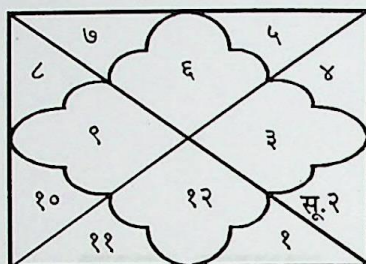
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख की बहुत हानि प्राप्त होती है। बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी आर्थिक दृष्टि से दुर्बल बना रहता है तथा खर्च के मामले में परेशानी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक दीर्घायु होता है और उसे पुरातत्त्व का लाभ भी प्राप्त होता है।

कन्या लग्नः
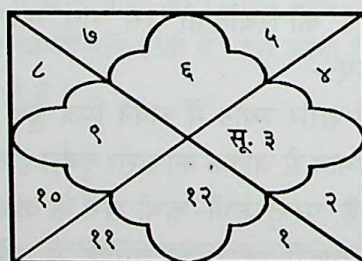
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की सामान्य वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक

अपने पुरुषार्थ द्वारा खर्च भली-भाँति चलाता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ उठाता है। वह बड़ा हिम्मती एवं प्रभावशाली भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में नवम भाव को देखता है, अत: जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमी का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।
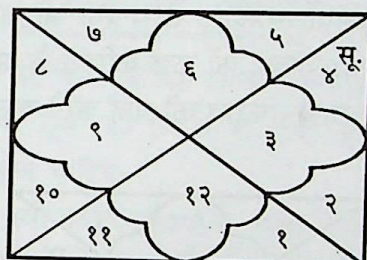
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को मातृ-सुख तथा भूमि, भवन आदि के लाभ में कमी रहती है। वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख प्राप्त करता है तथा खर्च को चलाता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में दशम भाव को देखता है, अत: जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी कुछ कमी तथा असन्तोष का अनुभव होता है।
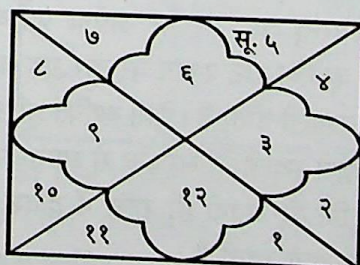
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में हानि प्राप्त होती है तथा खर्च के कारण मानसिक परेशानी बनी रहती है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी सामान्य लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कमियों के साथ लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी घुमाव-फिराव की बातें करने वाला तथा चंचल-बुद्धि का होता है।
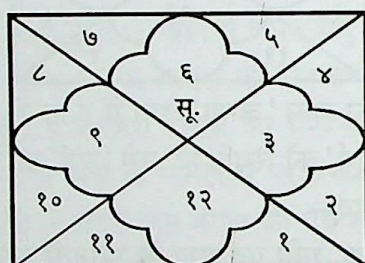
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु एवं रोग के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से परेशानी रहेगी तथा खर्च अधिक पड़ेगा। परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेगा, क्योंकि छठे स्थान पर क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की स्थिति विशेष प्रभावशाली होती है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा अपना खर्च चलाता है और उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सामान्य लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च की बहुलता बनी रहती है।

कन्या लग्नः
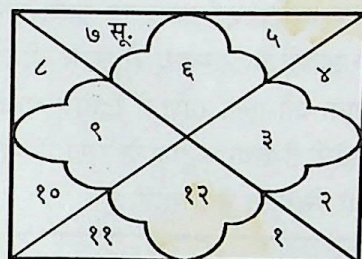
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कमी एवं हानि का योग प्राप्त होता है। वह व्यवसाय द्वारा ही अपना खर्च चलाता है, तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करता है, परन्तु सूर्य के व्ययेश होने के कारण कभी-कभी व्यवसाय में नुकसान भी उठाना पड़ता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह स्वभाव से चंचल, क्रोधी तथा खर्च के कारण चिन्तित भी रहता है।

कन्या लग्नः
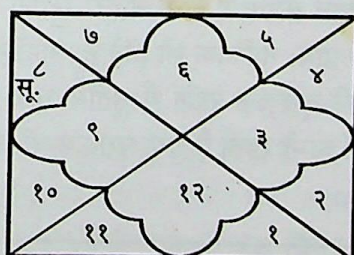
अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में

कुछ परेशानियों के साथ वृद्धि एवं सफलता प्राप्त होती है। खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अत: धन की अधिक हानि होती है तथा कुटुम्ब के सुख में भी कमी आती है। ऐसा व्यक्ति धन की ओर से चिन्तित बना रहता है।

कन्या लग्न:
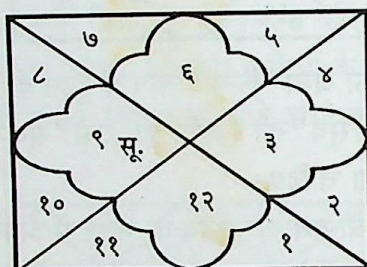
नवम भाव: सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म-स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वह भाग्य द्वारा ही खर्च-संचालन की शक्ति प्राप्त करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। ऐसे व्यक्ति प्राय: नास्तिक भी होते हैं। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीय भाव को देखता है, अत: भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं हो पाती।

कन्या लग्न:
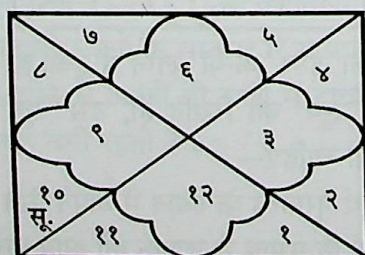
दशम भाव: सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वह खर्च खूब करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी उठाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

कन्या लग्नः
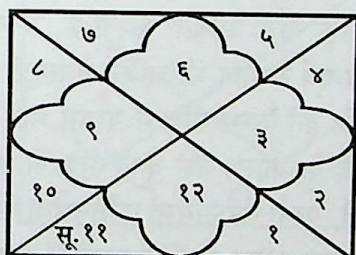
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र चन्द्रमा को कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को लाभ तो खूब होता है, परन्तु सूर्य के व्ययेश होने के कारण खर्च भी अत्यधिक बना रहता है। अतः आमदनी में वृद्धि होते हुए भी जातक को खर्च चलाने के सम्बन्ध में कुछ चिन्ता बनी रहती है। परन्तु बाहरी स्थानों के सम्पर्क से उसे लाभ, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा विद्या-बुद्धि का पक्ष भी कमजोर रहता है।

कन्या लग्नः
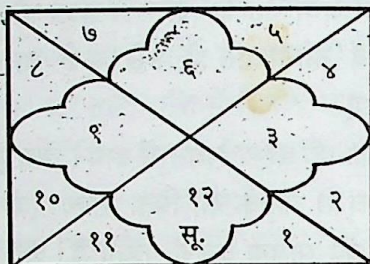
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक खर्च अधिक करता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से पर्याप्त लाभ एवं सम्मान भी अर्जित करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष एवं रोग आदि के कारण उसे कुछ परेशानी उठानी पड़ती है तथा खर्च भी करना पड़ता है, परन्तु वह समस्त कठिनाईयों के समय साहस बनाए रखता है और शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करने में सफल होता है।

कन्या लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

कन्या लग्न:
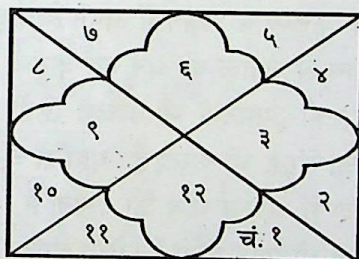
प्रथम भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, मनोबल एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। वह शारीरिक परिश्रम द्वारा धन का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है तथा यशस्वी एवं प्रभावशाली भी बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अत: जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है और उसके पक्ष से लाभ भी होता है। इसी प्रकार व्यवसाय के द्वारा भी यथेष्ट लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का गृहस्थ जीवन सुख एवं सन्तोषपूर्ण बना रहता है।

कन्या लग्नः
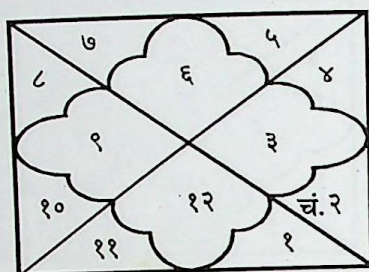
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है, जिसके कारण उसकी आमदनी भी अच्छी रहती है और वह खूब धन कमाता है। वह धन का संग्रह भी करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति शानशौकत का जीवन बिताता है तथा यशस्वी और प्रतिष्ठित होता है।

कन्या लग्नः
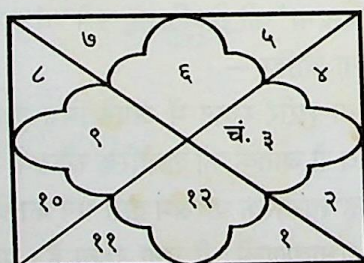
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के पक्ष से परेशानी होती है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी बनी रहती है। वह

मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है तथा धनोपार्जन के क्षेत्र में कठिनाईयों का सामना करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने शत्रु की वृष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः कठिन परिश्रम द्वारा उसके भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म-पालन में भी विशेष रुचि बनी रहती है।

कन्या लग्नः
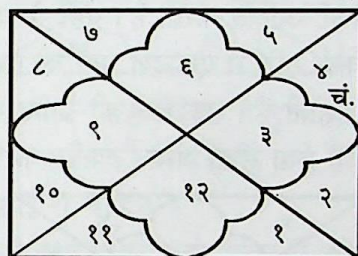
चतुर्थ भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने स्थान पर रहकर ही सुख प्राप्त करता है। उसे माता, भूमि, मकान आदि के स्नेह तथा सुख का विशेष लाभ होता है, वह सदैव प्रसन्न बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यश, सम्मान, सफलता, लाभ उन्नति एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है।

कन्या लग्नः
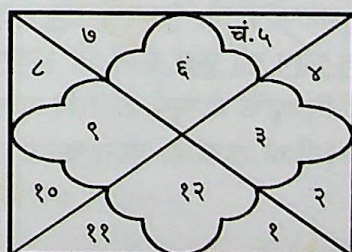
पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। साथ ही, वह अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा धन का लाभ भी अर्जित करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि द्वारा अपनी ही कर्क राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में वृद्धि होती है। वह धन की प्राप्ति एवं उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

कन्या लग्नः
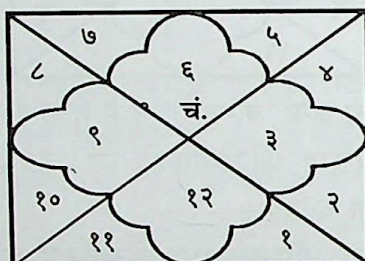
षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा मानसिक अशान्ति मिलती है, परन्तु वह अपनी नम्रता द्वारा शत्रुओं पर सफलता प्राप्त करता है और उनसे लाभ उठाता है। ऐसा जातक झगड़े, मुकदमे, शत्रु, झंझट आदि के पक्ष से लाभ कमाता है, परन्तु लाभ की कुछ कमी भी अवश्य रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में द्वादश भाव को देखता है। अतः खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है।

कन्या लग्नः
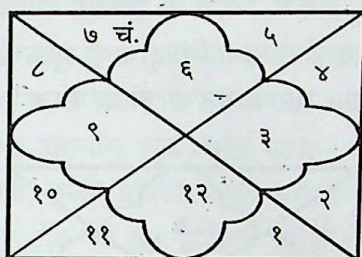
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री का लाभ होता है, भोगादि के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, मनोबल एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। उसे लाभ के अवसर निरन्तर मिलते रहते हैं। ऐसा जातक सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

कन्या लग्नः
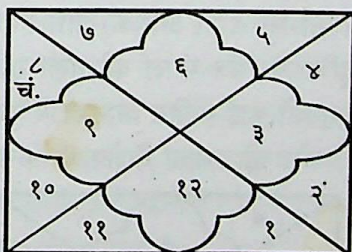
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसे आय के साधनों में कुछ कठिनाईयों तथा कमियों का सामना तो

करना पड़ता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन का संग्रह करता है और कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

कन्या लग्नः
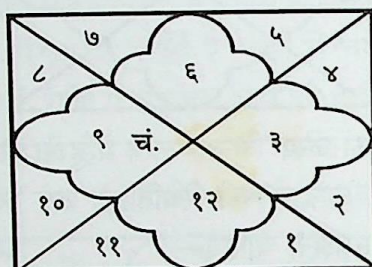
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन का यथेष्ठ लाभ होता है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे समय-समय पर दैवी सहायताएँ भी मिलती रहती हैं। फलतः उसे बहुत भाग्यवान समझा जाता है। उसे आकस्मिक धन का भी बहुत अधिक लाभ होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की तुला राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम की वृद्धि की ओर भी उसका विशेष ध्यान नहीं जाता।

कन्या लग्नः
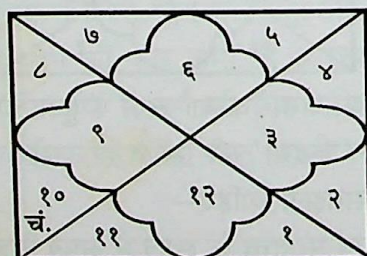
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से पूर्ण सफलता, सहयोग, स्नेह, सुख, सम्मान और लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, प्रतिष्ठित और यशस्वी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता के पक्ष से भी लाभ होता है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।
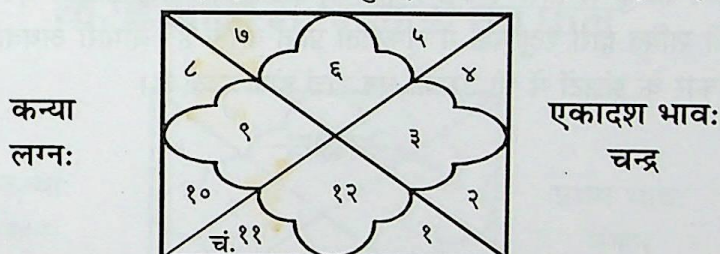
कन्या लग्नः

एकादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को लाभ के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता मिलती है तथा प्रसन्न रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान पक्ष में वैमनस्य तथा विद्या के पक्ष में कमी बनी रहती है। परन्तु वह अपनी चतुराई द्वारा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता चला जाता है।
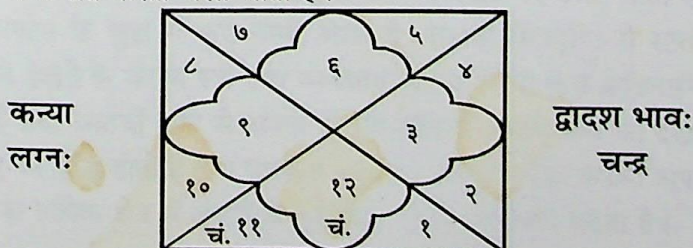
कन्या लग्नः

द्वादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक खर्च करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से पर्याप्त लाभ भी उठाता है। आमदनी और खर्च बराबर रहने के कारण उसके मन में कभी-कभी चिन्ताएँ भी घर कर लेती हैं। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः वह खर्च एवं नम्रता की शक्ति द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करता है। बीमारी अथवा अन्य प्रकार के झंझटों में भी उसका धन खर्च होता रहता है।

कन्या लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

कन्या लग्नः
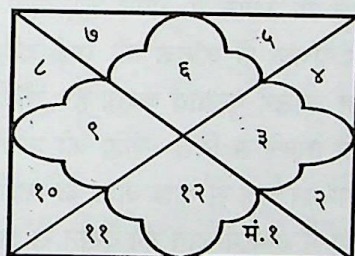
प्रथम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आ जाती है, साथ ही भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि-मकान के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कठिनाईयाँ आती हैं तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघर्षों से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ता है।

कन्या लग्नः
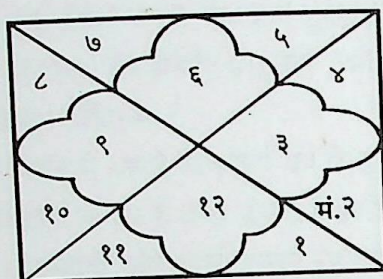
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है और वह कठिन पुरुषार्थ करता है। चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु राशि में पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि की उन्नति के लिए अधिक प्रयत्न करता है तथा सन्तान पक्ष से कुछ कष्ट के साथ उन्नति मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म पालन में कुछ कमी तथा असन्तोष रहता है।

कन्या लग्नः
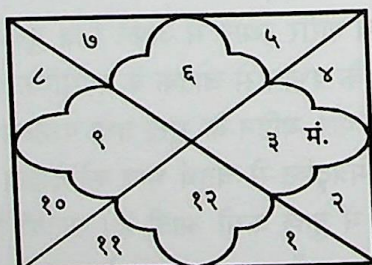
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपनी वृश्चिक राशिगत

व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन के मार्ग में कठिनाईयाँ आती हैं एवं आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता के सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में विशेष परिश्रम करने पर भी थोड़ी सफलता मिलती है।

कन्या लग्नः
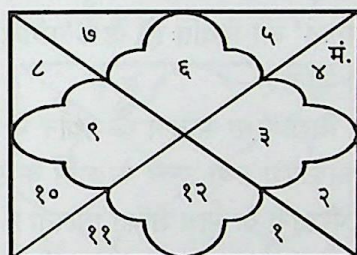
चतुर्थ भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से माता, भूमि एवं मकान के सुख में कमी आती है। भाई-बहिन का सुख भी कम मिलता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ परेशानी के साथ शान्ति मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है तथा आठवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में एकादश भाव को देखने से लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाईयों का अनुभव होता है।

कन्या लग्नः
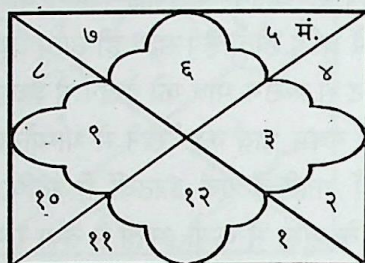
पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो, और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश तथा उच्च के शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष में कुछ परेशानी के साथ शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाईयाँ आती हैं तथा आठवीं मित्रदृष्टि से व्यवसाय को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है और बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ प्राप्त होता है व प्रभाव में वृद्धि होती है।

कन्या लग्नः
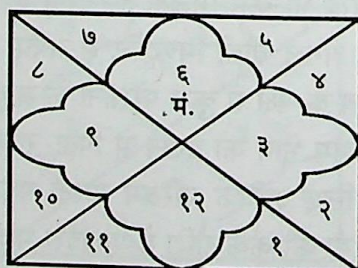
षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित

मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। वह पुरुषार्थी तथा परिश्रमी होता है एवं भाई-बहिन से कुछ विरोध प्राप्त करता है। आयु एवं पुरातत्त्व के सम्बन्ध में उसे शक्ति मिलती हैं। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कम सम्बन्ध रखता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानी रहती हैं और रक्त-विकार आदि रोग होते हैं।
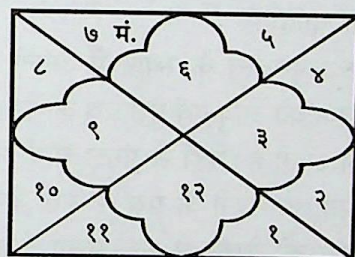
सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से कष्ट मिलता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख में उतार-चढ़ाव आता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ द्वारा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानी के साथ उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानी के साथ हिम्मत एवं शक्ति मिलेगी एवं आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन-संचय एवं कुटुम्ब के सुख में कमी बनी रहेगी।

कन्या लग्नः
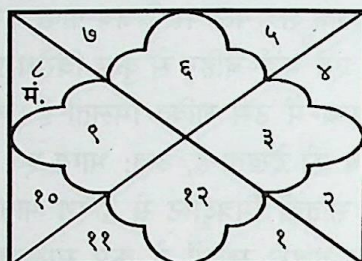
अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपनी मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी के पक्ष में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ असन्तोष रहता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ वृद्धि होती है तथा गुप्त मंत्रणायें व हिम्मत अधिक बनी रहती है।

कन्या लग्नः
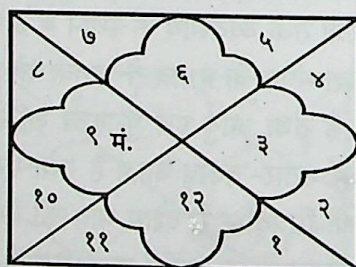
नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के

पक्ष में कुछ कमी प्राप्त होती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से कुछ कठिनाईयों के साथ भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है, परन्तु सामान्यतः जीवन ठाठ-बाट के साथ व्यतीत होता है।
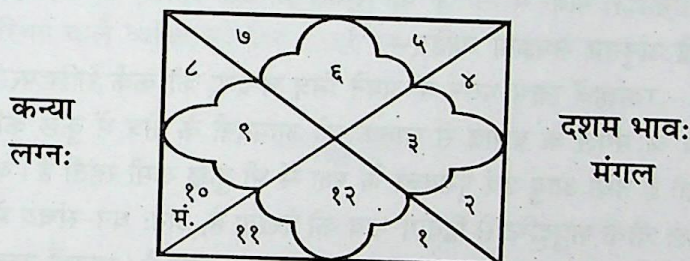
दशम भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपने शत्रु बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सम्मान, सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है, परन्तु भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ कमी बनी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ विकार बना रहता है, परन्तु हिम्मत अधिक होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का त्रुटिपूर्ण सुख मिलता है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की अधिक वृद्धि होती है।

कन्या लग्नः
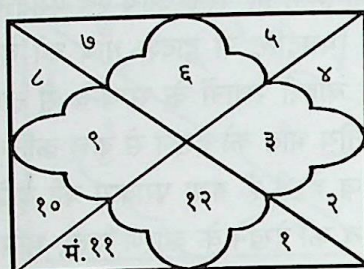
एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-संचय में कुछ कमी तथा कौटुम्बिक पक्ष में कुछ क्लेश उत्पन्न होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान के क्षेत्र में कुछ परेशानी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में उन्नति रहती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर प्रभाव प्राप्त होता है। ऐसा जातक बहुत बोलने वाला, साहसी तथा बहादुर होता है।

कन्या लग्नः
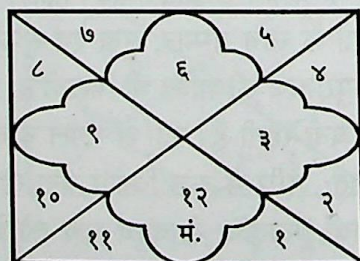
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल

के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ शक्ति मिलती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती रहती हैं, यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी राशि में तृतीय भाव को देखता है, अत: भाई-बहिन का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम की साधारणत: वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर कुछ कठिनाई के साथ प्रभाव स्थापित होता है एवं आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के पक्ष में कुछ कष्ट रहता है तथा व्यवसाय में परिश्रम एवं कठिनाईयों के योग से उन्नति प्राप्त होती है। ऐसे ग्रह स्थित वाले व्यक्ति को प्राय: उदर एवं इन्द्रिय विकारों का सामना भी करना पड़ता है।

कन्या लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

कन्या लग्नः
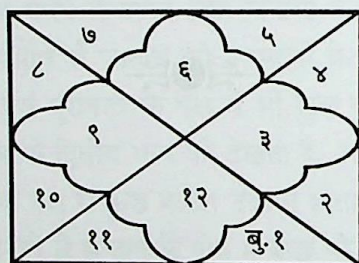
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी सुख, सहयोग, सफलता, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री पक्ष तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कमी का योग बनता है। उसे भोगादि सुखों की भी समुचित उपलब्धि नहीं होती तथा अत्यधिक स्वाभिमानी होने के कारण व्यवसाय में भी उन्नति नहीं मिलती।

कन्या लग्नः
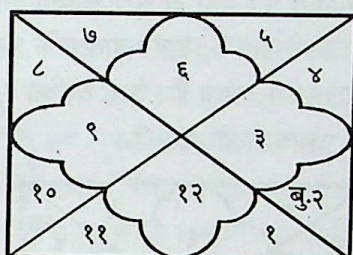
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल से धन का विशेष संग्रह करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पाता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष से भी यश, मान, सहयोग, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। उसका रहन-सहन वैभवशाली होता है और वह धनी तथा सुखी भी होता है।

कन्या लग्नः
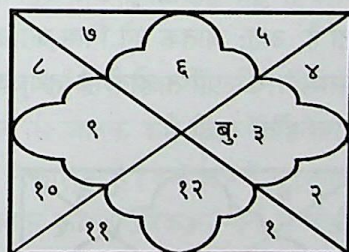
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य व व्यवसाय के

पक्ष से भी सफलता मिलती है। यहाँ से बुध सावतीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, यशस्वी, धनी, धार्मिक, पराक्रमी तथा प्रभावशाली होता है।
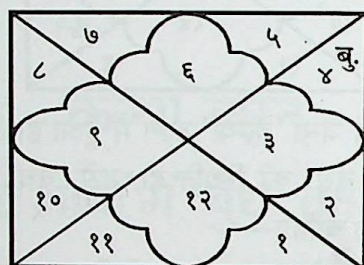
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं सुख के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे शारीरिक सौन्दर्य एवं शान्ति-सुखपूर्ण वातावरण मिलता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को पिता की ओर से सुख मिलता है, राज्य की ओर से सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती रहती है।
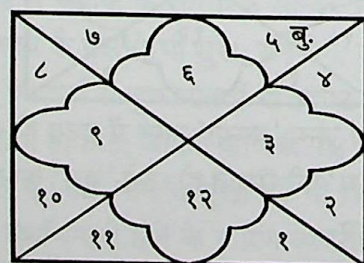
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। वह अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर उच्चपद को पाता है तथा अनेक प्रकार के प्रशंसनीय कार्य करता है। यहाँ से बुध सातवीं शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में वृद्धि होती रहती है। वह व्यवसाय, पिता एवं राज्य के द्वारा भी सहयोग एवं लाभ प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, स्वाभिमानी, सुखी तथा धनी होता है।
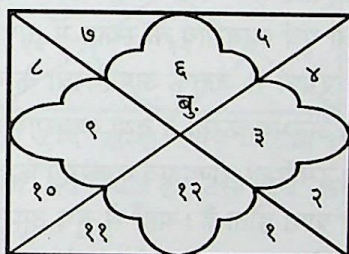
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में विवेक तथा अनेक प्रकार की युक्तियों द्वारा काम निकालता है। उसे अपनी ननसाल के पक्ष से कुछ शक्ति मिलती है। ऐसे जातक को शारीरिक सौन्दर्य में कमी तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ असन्तोष बना रहता है। यहाँसे बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे यथेष्ट लाभ एवं सुख प्राप्त होता रहता है।

कन्या लग्नः
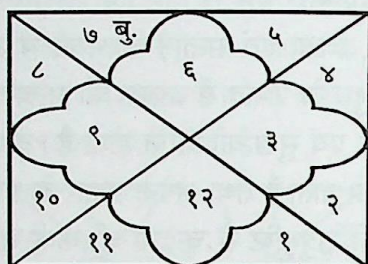
७ बु. ५ ८ ६ ४ ९ ३ १० १२ २ ११ १

सप्तम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी स्त्री के व्यक्तित्व के सम्मुख स्वयं को कुछ हीन-सा अनुभव करता है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सामान्य सफलता एवं लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य, मान, प्रभाव एवं सुख-शान्ति में भी कुछ कमी बनी रहती है।

कन्या लग्नः
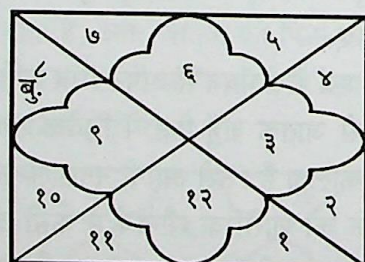
अष्टम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सुख एवं सौन्दर्य में कमी आ जाती है। उसे पिता का भी अल्प-सुख प्राप्त होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय

के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का अनुभव होता है। वह विदेश अथवा घर से बाहर के अन्य स्थानों में रहकर भी जीविका चलाता है। ऐसे व्यक्ति की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक अपने कुटुम्ब से प्रेम करता है तथा धन की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

कन्या लग्नः
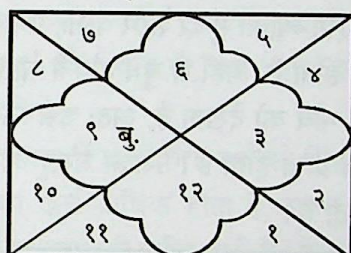
नवम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। वह पिता से सहयोग एवं सुख प्राप्त करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सफलता एवं धन की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, सज्जन, यशस्वी तथा धार्मिक होता है। उसकी उन्नति स्वयमेव होती रहती है।

कन्या लग्नः
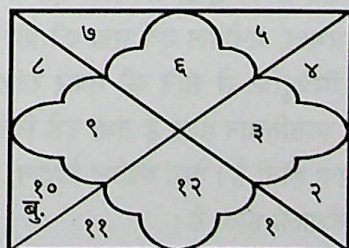
दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति एवं सुख की प्राप्ति होती है। वह राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता, यश व लाभ अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर शरीर वाला, प्रभावशाली, स्वाभिमानी, सुखी तथा उन्नतिशील होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। उसका घरेलू जीवन शान्तिमय, सुख एवं वैभवपूर्ण बना रहता है।

कन्या लग्नः
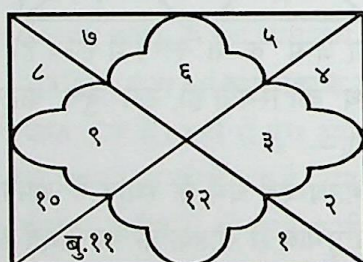
एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक आमदनी के श्रेष्ठ योग को प्राप्त करता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से भी सुख, सफलता एवं सम्मान पाता रहता है। उसे शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, मनोबल एवं सुख की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक सन्ततिवान होता है तथा उसे विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति विद्वान, बुद्धिमान, वाणी का धनी, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

कन्या लग्नः
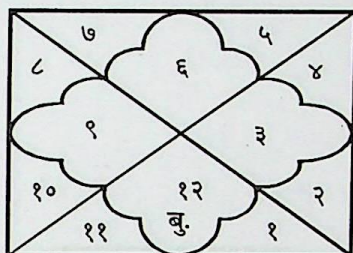
द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु उसे बाहरी स्थानों के सम्पर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति देश-विदेश की यात्राएँ करता है, परन्तु उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से असन्तोष बना रहता है तथा कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अतः वह अपने शारीरिक-बल एवं अन्य युक्तियों द्वारा शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति विवेकी, बुद्धिमान तथा दूरदर्शी भी होता है।

कन्या लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल

कन्या लग्नः
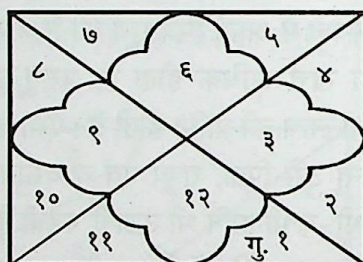
प्रथम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' से 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। वह माता, भूमि, मकान आदि के सुख को भी पाता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शनि की मकर राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के पक्ष में परेशानियाँ बनी रहती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के द्वारा सुख एवं लाभ प्राप्त होता है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में सामान्य बाधाएँ आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु सामान्यतः ऐसा जातक धनी तथा सज्जन होता है।

कन्या लग्नः
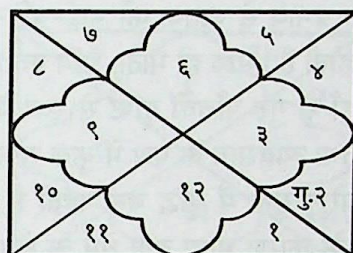
द्वितीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन-कुटुम्ब के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता एवं स्त्री के सुख में कुछ परेशानियाँ आती हैं। जबकि व्यवसाय के पक्ष में उन्नति होती रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नौवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से पिता द्वारा सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, प्रतिष्ठा, सम्मान, प्रभाव-लाभ एवं धन की प्राप्ति होती रहती है।

कन्या लग्नः
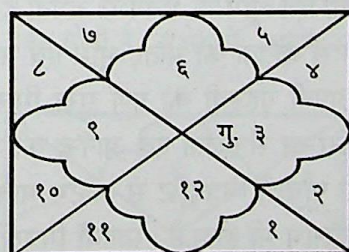
तृतीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक

राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ सफलता मिलती है। स्त्री सुन्दर होती है तथा घरेलू सुख में वृद्धि बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ रुकावटों के साथ उन्नति होती रहती है। नौवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

कन्या लग्नः
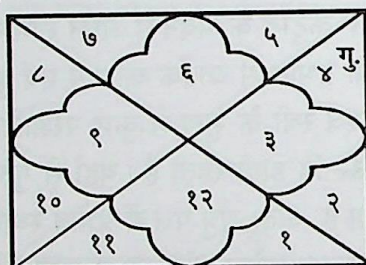
चतुर्थ भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। उसे अपनी गृहस्थी का पूर्ण सुख मिलता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में निरन्तर सफलता एवं आनन्द की उपलब्धि होती रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होती है। नौवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध सुखकर एवं लाभदायक बना रहता है।

कन्या लग्नः
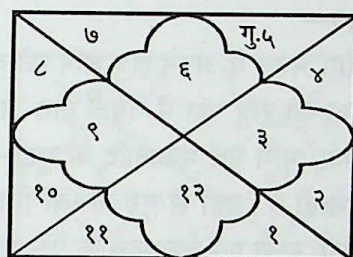
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक सन्तान पक्ष से कष्ट का अनुभव करता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी का अनुभव करता है। उसे स्त्री तथा माता के पक्ष से भी कमजोरी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक अपनी मानसिक शक्ति से आय को बढ़ाने का प्रयत्न करता रहता है तथा लाभ में वृद्धि भी होती है, परन्तु मस्तिष्क में परेशानियाँ बनी रहती हैं। नौवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-शक्ति, मान, प्रभाव तथा कार्य-कुशलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, जातक सुखी और सामान्य रूप से धनी होता है।

कन्या लग्नः
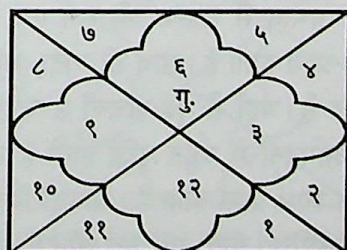
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में नम्रता द्वारा अपना काम निकालना पड़ता है तथा स्त्री, माता, भूमि एवं मकानादि के सुख-सम्बन्ध में कमजोरी तथा कठिनाईयाँ बनी रहती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ सफलता, सुख एवं यश मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से व्यय भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। नौवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव के देखने से धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

कन्या लग्नः
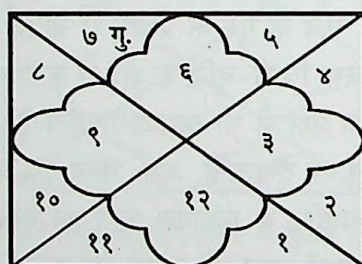
सप्तम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से पर्याप्त सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। साथ ही माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी यथेष्ट मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी में बहुत वृद्धि होती है तथा अपने स्थान पर रहकर ही सुख-पूर्वक लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-सुख, मान एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है और पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी तथा

यशस्वी होता है।
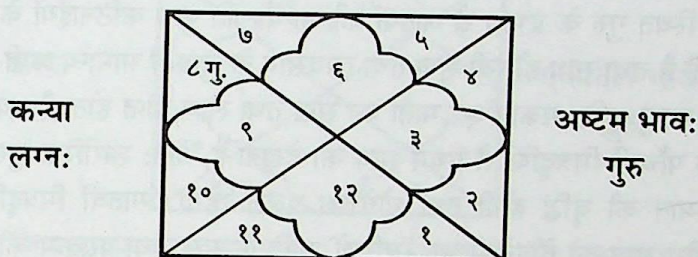
कन्या लग्नः

अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का अल्प लाभ होता है, परन्तु स्त्री सुख एवं व्यवसाय के लाभ में भी कमी आ जाती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सुख भी कम मिलता है। नौवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को स्वराशि में देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परन्तु उसमें कुछ परेशानियाँ भी आती हैं।
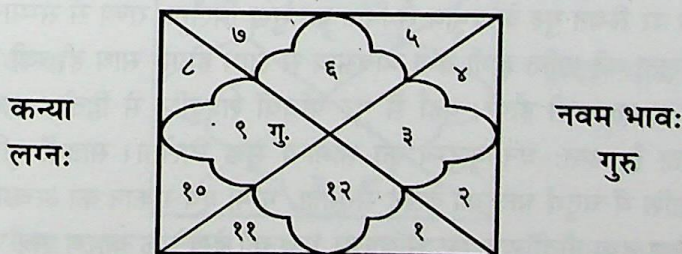
कन्या लग्नः

नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति कुछ कठिनाईयों के साथ होती है तथा साथ ही स्त्री सुख तथा व्यवसाय के सुख में सामान्य कमी आती है, परन्तु भूमि, मकान एवं माता का सुख तथा लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक सुख एवं सम्मान की वृद्धि होगी तथा भोगेच्छा प्रबल रहेगी। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों आदि के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होगी तथा नौवीं नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहेगी।
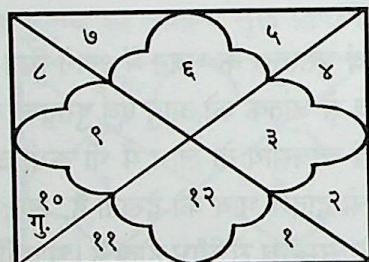
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, माता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से पिता का सुख मिलेगा, राज्य से सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा व्यवसाय से लाभ होगा। साथ ही स्त्री सुन्दर तथा प्रभावशाली होगी। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलेगा। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, एवं मकान का अच्छा सुख मिलेगा तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में शान्ति की नीति से विजय प्राप्त करेगा तथा झगड़ों द्वारा लाभ उठाएगा।

कन्या लग्नः
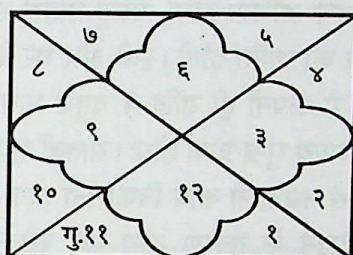
एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा माता, भूमि, मकान आदि का भी श्रेष्ठ लाभ मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन का सुख मिलेगा तथा पराक्रम की वृद्धि होगी। सातवीं नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष से कुछ परेशानी तथा विद्या के क्षेत्र में कमी रहेगी। मस्तिष्क भी घरेलू कारणों से चिन्तित रहेगा। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तम भाव को देखने के कारण सुन्दर एवं योग्य स्त्री मिलेगी, व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी तथा भोग आदि का भी श्रेष्ठ सुख मिलेगा।

कन्या लग्नः
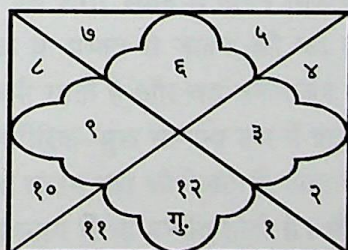
द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के

प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होगा, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। स्त्री और घर के सुख में भी न्यूनता आएगी। पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख प्राप्त होगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम् भाव को देखने से शत्रु पक्ष से नम्रता से काम निकालना होगा तथा नौवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होगा। सामान्यतः ऐसा जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।
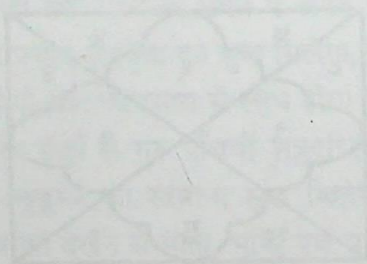
कन्या लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

कन्या लग्नः
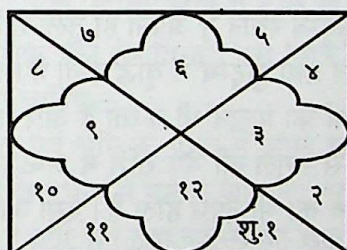
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो,. उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को धन एवं कौटुम्बिक सुख के सम्बन्ध में कुछ कमी रहती है और वह धनोपार्जन के लिए धर्म की चिन्ता नहीं करता। उसे शारीरिक-सुख सामान्य रूप में प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री सुन्दर एवं भाग्यवान मिलती है तथा व्यवसाय में भी उन्नति होती है। भोगादि का सुख भी खूब मिलता है।
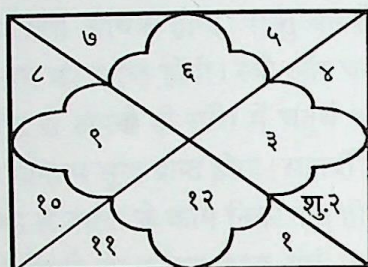
द्वितीय भावः
शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब में वृद्धि होती है। वह भाग्यशाली होता है तथा धन के द्वारा धर्म का पालन भी करता है और यश पाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा जातक धनी तथा चतुर होता है।

कन्या
लग्नः
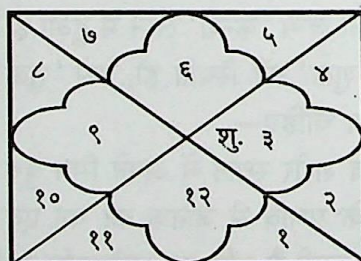
तृतीय भावः
शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। पराक्रम के द्वारा वह अपने धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि भी करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से

अपनी ही वृष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की बहुत वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, धार्मिक तथा भाग्यवान होता है।

कन्या लग्नः
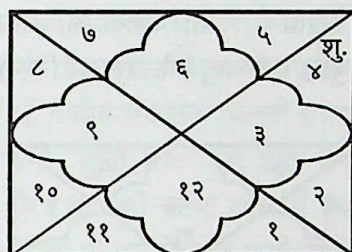
चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है और धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः उसे पिता की शक्ति मिलती है, राज्य के क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के पक्ष में लाभ होता है। वह धर्म का यथोचित पालन भी करता है।

कन्या लग्नः
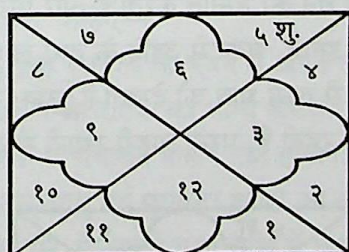
पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की

मकर राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि के साथ ही धन, भाग्य तथा धर्म की भी उन्नति होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की मकर लग्न में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर निरन्तर उन्नति करता चला जाता है।

कन्या लग्नः — **षष्ठम भावः शुक्र**
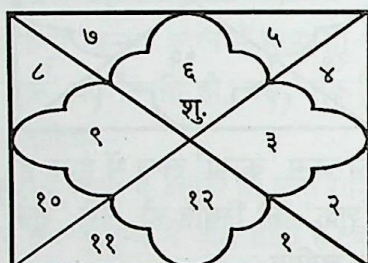
७ ५ ८ ६ ४ शु. ९ ३ १० १२ २ ११ १

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमी आती है तथा धन एवं कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। उसे धर्म में भी अरुचि रहती है। परन्तु वह अपने चातुर्य द्वारा भाग्य तथा धन की उन्नति करता है और परिश्रम द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता पाता है तथा झगड़े, मुकदमे आदि के द्वारा लाभ उठाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से व्यय भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहने से मानसिक चिन्ताएँ बनी रहती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों से अच्छा सुख एवं लाभ मिलता है।

कन्या लग्नः — **सप्तम भावः शुक्र**
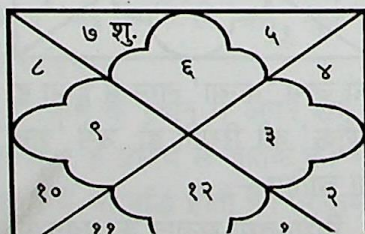
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है। वह धर्म का पालन करने वाला, भाग्यवान, भोगी, सुखी तथा धनी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा धन की वृद्धि के लिए वह शारीरिक-सुख की चिन्ता नहीं करता।

कन्या लग्नः
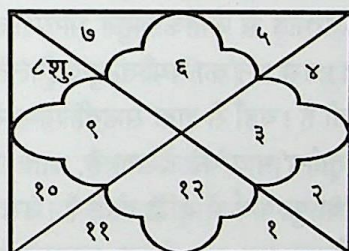
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का भाग्य कमजोर रहता है, धन-संग्रह में परेशानी होती है। धर्म का यथावत पालन नहीं होता तथा कुटुम्ब से भी क्लेश मिलता है, जबकि उसे आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपनी तुला राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक गुप्त चतुराई एवं कठोर परिश्रम से धनोपार्जन करता है।

कन्या लग्नः
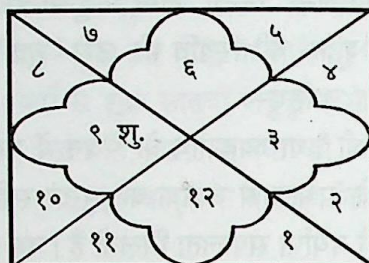
नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपनी ही वृष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यशाली होता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे धन का पर्याप्त सुख मिलता है साथ ही यश व सम्मान में वृद्धि भी होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः उसे भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। उसे धन एवं कुटुम्ब का भी पूर्ण सुख मिलता है।

कन्या लग्नः
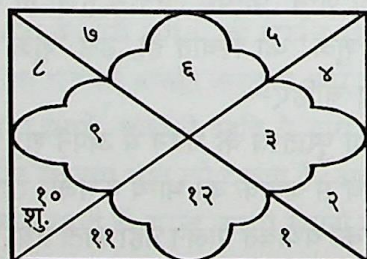
दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता तथा राज्य भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक पिता की विशेष शक्ति प्राप्त करता है। उसे राज्य द्वारा उन्नति एवं सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा लाभ मिलता है। वह

अपने श्रेष्ठ कर्म एवं चातुर्य के बल पर धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है तथा यशस्वी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि में चतुर्थ भाव को देखता है। उसके प्रभाव से जातक को कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है।

कन्या लग्नः
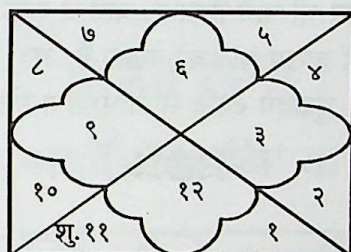
एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह बहुत भाग्यवान, धनवान, कुटुम्बवान, न्यायी तथा धर्म का पालन करने वाला होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान के पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। ऐसा जातक चतुर, निपुण, योग्य, वाणी में प्रभाव रखने वाला, यशस्वी तथा सुखी होता है।

कन्या लग्नः
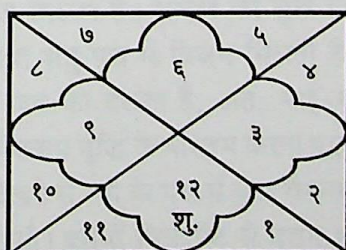
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है तथा धन का संचय नहीं हो पाता। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी हानि होती है और कुटुम्ब का सुख भी नहीं मिलता। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है तथा झगड़े-मुकदमे आदि से लाभ प्राप्त होता है।

कन्या लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फल

कन्या लग्न:
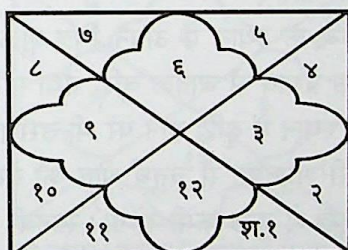
प्रथम भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शरीर में रोग तथा परेशानी-सी रहती है। विद्या-बुद्धि का सुख मिलता है। सन्तान का सुख होते हुए भी उससे कुछ वैमनस्य रहता है तथा शत्रु पक्ष में विजय मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम वृद्धि के परिश्रम करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के पक्ष में कुछ वैमनस्य रहेगा तथा व्यवसाय में मेहनत करनी पड़ेगी। दसवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता की ओर से सामान्य परेशानी रहेगी तथा राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।
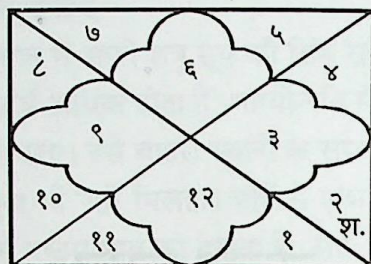
द्वितीय भावः
शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक बुद्धि तथा परिश्रम द्वारा बहुत धन कमाता है तथा कुटुम्ब स्थान में वृद्धि होने पर भी उससे कुछ परेशानी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहेगी। सातवीं नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी रहेगी। दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आएँगीं। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक प्रत्येक क्षेत्र में परेशान रहता है, परन्तु शत्रु पक्ष पर विजयी होता है।

कन्या
लग्नः
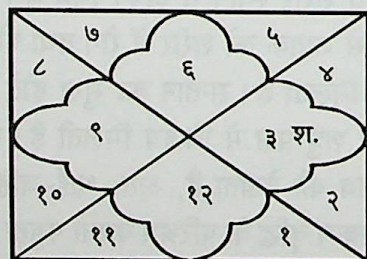
तृतीय भावः
शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे धन कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर

स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है, शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी बनी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष में सामान्य कठिनाईयाँ आती हैं तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति होती है एवं दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च के सम्बन्ध में कड़िनाईयों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी असन्तोष बना रहता है। संक्षेप में, ऐसा जातक प्रायः संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।
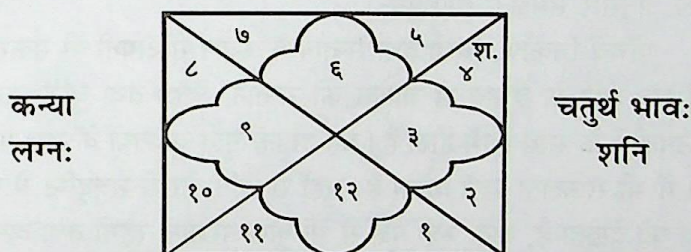
कन्या लग्नः

चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं सुख के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुखों में कमी रहती है तथा सन्तान पक्ष से भी परेशानी होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है, परन्तु झगड़े-झंझटों के कारण सुख-दुःख दोनों ही प्राप्त होते रहते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता, यश एवं लाभ की प्राप्ति होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर में कुछ बीमारी रहती है, परन्तु प्रभाव एवं परिश्रम की वृद्धि होती है।

कन्या लग्नः
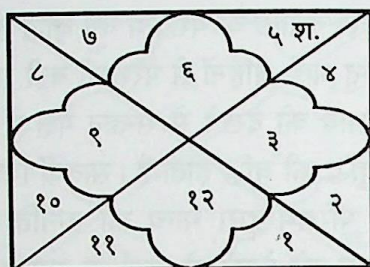
पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के स्थान में अपनी ही मकर राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री पक्ष से भी कुछ परेशानी रहेगी तथा व्यवसाय में कड़िनाईयाँ आती रहेंगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण बुद्धि के परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होगा तथा दसवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। ऐसा जातक संघर्षपूर्ण परन्तु सुखी जीवन व्यतीत करता है।

कन्या लग्नः
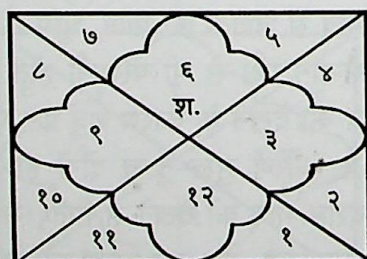
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से

जातक शत्रु पक्ष में अपने बुद्धि-बल पर सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सामान्य कठिनाईयाँ आती हैं। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु के क्षेत्र में अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखद नहीं रहता।

दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से परेशानी रहती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।
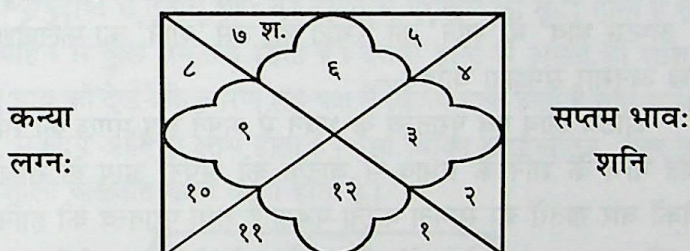
कन्या लग्नः

७ श. ५
८ ६ ४
९ ३
१० १२ २
११ १

सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है और वह विद्या के उपयोग से परिवार का पालन करता है। ऐसे व्यक्ति को सन्तान पक्ष से भी परेशानी रहती है परन्तु शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः बुद्धि द्वारा जातक की भाग्योन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर में रोग रहते हैं तथा प्रभाव की वृद्धि भी होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि एवं मकान के सुख में भी न्यूनता आती है। ऐसा जातक अपने जन्म-स्थान में रहते हुए भी परेशानियों का अनुभव करता

रहता है।

कन्या लग्नः
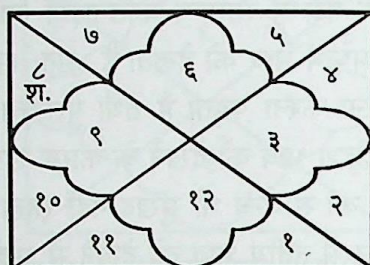
अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में अनेकों बार खतरों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। उसे सन्तान पक्ष से कष्ट होता है, शत्रु पक्ष से परेशानी रहती है तथा विद्या के पक्ष में कमी रहती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के पक्ष में कुछ झंझट बना रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक धन-जन का सुख पाने के लिए कठोर परिश्रम करता है। दसवीं दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है, परन्तु चतुराई अधिक होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन घोर अशान्तिपूर्ण बना रहता है।

कन्या लग्नः
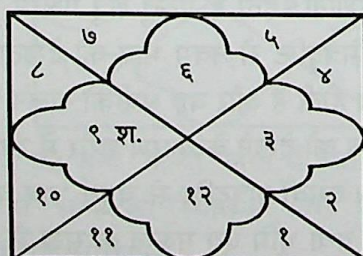
नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि के बल पर भाग्योन्नति करता है तथा धर्म का सामान्य रूप से पालन करता है। उसे सन्तान तथा विद्या के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष प्रयत्न करता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन से कुछ वैमनस्य रहता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त होती है तथा झगड़े-झंझट, मुकदमे आदि से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा नीतिज्ञ, चतुर तथा प्रभावशाली बातचीत करने वाला होता है।

कन्या लग्नः
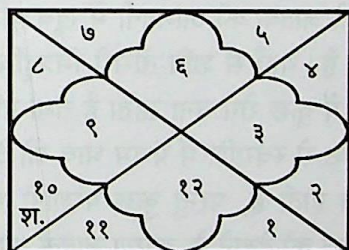
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता तथा राज्य के स्थान में बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक पिता के पक्ष में कुछ परेशानी पाता है तथा राज्य पक्ष से सम्मान एवं व्यवसाय पक्ष से लाभ उठाता है। उसे विद्या तथा सन्तान पक्ष से लाभ उठाता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखद नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी आती है। दसवीं

शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री के सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करने पर सफलता मिलती है।
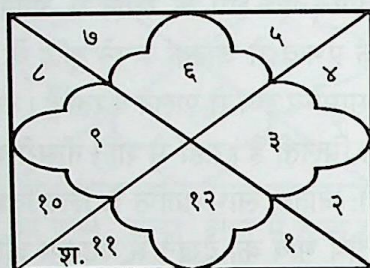
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा शत्रु पक्ष से भी लाभ होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ रोग बना रहता है तथा परिश्रम की शक्ति भी मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु कुछ परेशानी भी रहती है। दसवीं नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक को आयु के सम्बन्ध में कठिन संघर्ष एवं कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है।

कन्या लग्नः
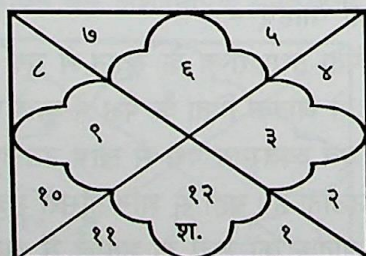
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानी अनुभव होती है। यहाँ से शनि तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अत: जातक धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा रोगादि पर भी कुछ परेशानियों के बाद विजय पाता है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से बुद्धि-बल द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म में भी रुचि रहती है। ऐसा व्यक्ति बहुत शान से खर्च करने वाला होता है।

कन्या लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

कन्या लग्नः
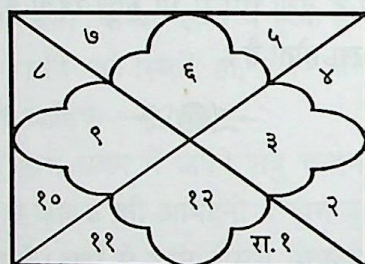
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का शारीरिक शक्ति, स्वाभिमान तथा मनोबल की प्राप्ति होती है, परन्तु कभी-कभी शारीरिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा जातक गहरी सूझ-बूझ वाला होता है। उसकी दिमागी शक्ति बढ़ी रहती है। वह अपनी उन्नति के लिए कठोर श्रम करता है। मानसिक रूप से कभी-कभी चिन्तित रहते हुए भी वह बड़े धैर्य से काम लेता है तथा उन्नति भी करता है।

कन्या लग्नः
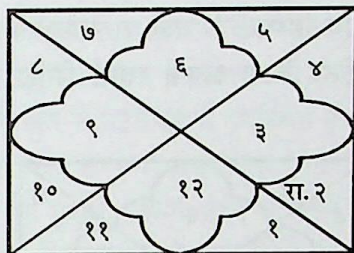
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की ओर से परेशानी बनी रहती है। कभी-कभी उसे भारी आर्थिक-हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति धन बढ़ाने के लिए गुप्त प्रयत्न तथा कठिन परिश्रम करता है, अतः वह कुछ धन का संचय भी कर लेता है तथा प्रकट रूप में धनवान माना जाता है। उसे कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ होता है।

कन्या लग्नः
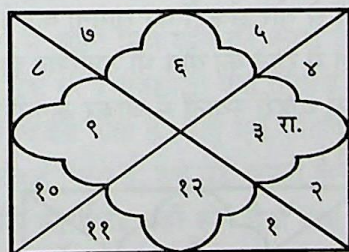
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के पक्ष में परेशानी, असन्तोष एवं कमी बनी रहती है। कभी-कभी विशेष संकट उपस्थित होने पर भी वह धैर्य धारण किए रहता है तथा

अपनी गुप्त युक्तियों एवं हिम्मत के बल पर सफलता प्राप्त करता है। वह भले-बुरे का विचार किए बिना अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।
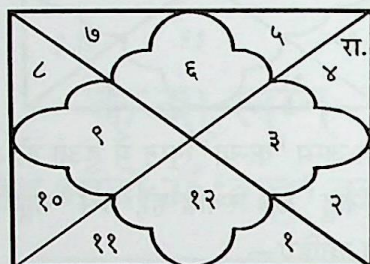
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को माता का सुख खूब प्राप्त होता है, परन्तु भूमि, मकान एवं घरेलू सुख-शान्ति में कमी बनी रहती है। कभी-कभी उसे घरेलू कारणों से घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। मातृभूमि से वियोग अर्थात् परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। उसे मातृभूमि में कष्ट मिलते हैं, परन्तु बाहरी स्थानों में जाकर अपनी गुप्त योजनाओं द्वारा सुख की प्राप्ति होती है।
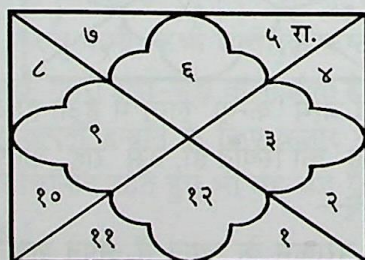
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाईयाँ उपस्थित होती हैं। अधिक विद्वान न होने पर भी जातक बातें करने में बड़ा चतुर होता है और सत्यासत्य की चिन्ता किए बिना अपना स्वार्थ-साधन करने में तत्पर रहता है। कभी-कभी उसका मस्तिष्क चिन्ताओं के कारण परेशान भी हो जाता है, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों से लाभ उठाता है।

कन्या लग्नः
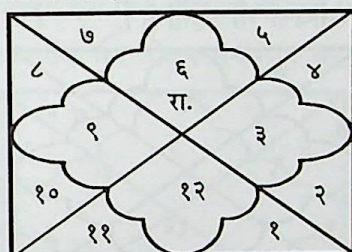
षष्ठम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-झंझटों में अपने शक्ति-बल से विजय पाता है। शत्रु एवं रोगादि के कारण जब कभी उसके ऊपर कठिन संकट घिरते हैं, तब वह अपनी हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर अपनी कमजोरी को प्रकट नहीं होने देता तथा उन पर नियन्त्रण भी प्राप्त कर लेता है।

कन्या लग्नः
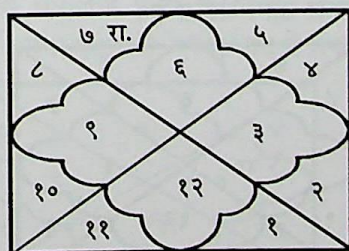
सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वह अपने गुप्त धैर्य एवं युक्तियों के बल पर किसी प्रकार अपना काम चलाता है तथा उन्नति पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होने की सम्भावना भी रहती है।
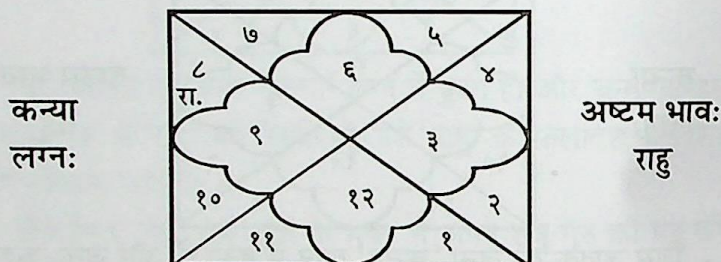
अष्टम भावः
राहु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में कई बार खतरों का सामना करना पड़ता है और मृत्युतुल्य कष्ट भोगना पड़ता है। उसे पुरातत्त्व की भी हानि उठानी पड़ती है। ऐसे जातक के पेट में विकार होता है। चिन्ताएँ, परेशानियाँ उसे घेरे रहती हैं, परन्तु गुप्त युक्ति, धैर्य एवं साहस के बल पर वह किसी प्रकार आगे बढ़ता है।
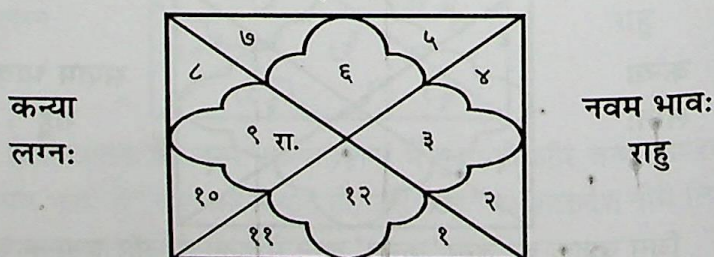
नवम भावः
राहु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता तथा भाग्य की उन्नति करने के लिए भी कठोर परिश्रम करता है। कभी-कभी उसे भाग्य के क्षेत्र में कठिन संकटों का सामना करना पड़ता है तो कभी अपने धैर्य, चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर थोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षमय बना रहता है।

कन्या लग्नः **दशम भावः राहु**
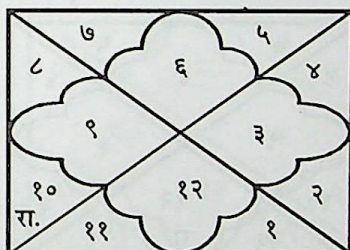
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसा रसमझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता तथा राज्य के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक पिता के साथ संघर्ष करता हुआ उन्नति प्राप्त करता है। राज्य के क्षेत्र में चातुर्य एवं युक्ति बल पर उसे सम्मान एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा गुप्त युक्तियों द्वारा वह व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु बाद में स्थिति ठीक हो जाती है।

कन्या लग्नः **एकादश भावः राहु**
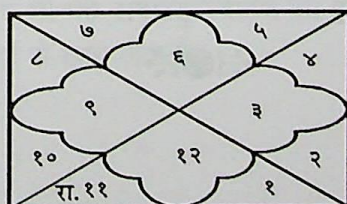
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ-भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, परन्तु कठिनाईयों का सामना भी बहुत करना पड़ता है। कभी-कभी उसे विशेष लाभ हो जाता है तो कभी बहुत घाटा भी हो जाता है। अत्यधिक परिश्रम, धैर्य, साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल पर वह लाभ उठाने का विशेष प्रयत्न करता है, परन्तु कभी-कभी वह धोखा भी खा जाता है।

कन्या लग्नः
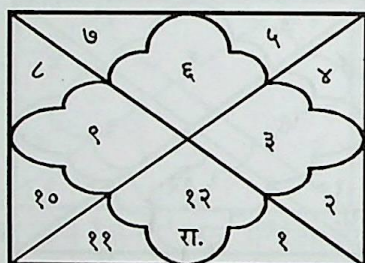
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च के सम्बन्ध में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से दुःख का अनुभव होता है। वह अपना खर्च चलाने के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं हिम्मत से भी काम लेता है। साथ ही कभी-कभी उसे आकस्मिक-धन की प्राप्ति भी हो जाती है।

कन्या लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

कन्या लग्नः
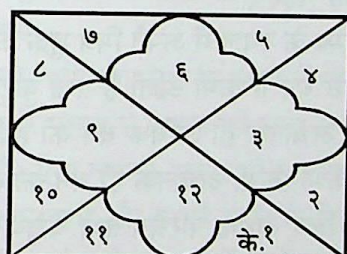
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है तथा शरीर में कभी गहरी चोट लगने अथवा होने का योग भी बनता है। उसके शारीरिक सौन्दर्य में भी कमी रहती है। ऐसे जातक में गुप्त हिम्मत, गुप्त युक्ति तथा गुप्त धैर्य बहुत पाया जाता है, अतः शरीर से कमजोर होते हुए भी वह अक्खड़ स्वभाव को होता है। वह कभी तेजी से और कभी नरमाई से काम लेता है।

कन्या लग्नः — **द्वितीय भावः केतु**
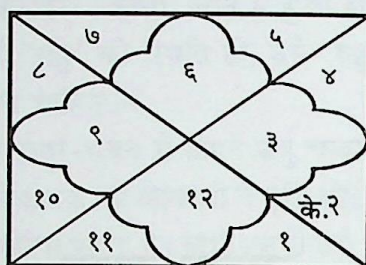
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के धन में कमी आती है तथा कुटुम्ब से भी कष्ट प्राप्त होता है। कभी-कभी अचानक ही अधिक धन की हानि हो जाने के कारण चिन्ता रहती है तथा कभी-कभी अचानक ही धन का लाभ भी हो जाता है। वह धन की वृद्धि के लिए अथक परिश्रम तथा चातुर्य का प्रदर्शन करता है, परन्तु हर समय परेशान बना रहता है।

कन्या लग्नः
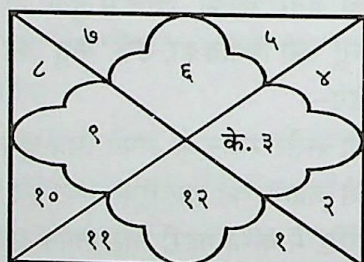
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के कारण परेशानी प्राप्त होती है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, अतः वह अपने प्रभाव की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है। ऐसा व्यक्ति किसी संकट

के समय हिम्मत नहीं हारता तथा बाहुबल की शक्ति भी रखता है।
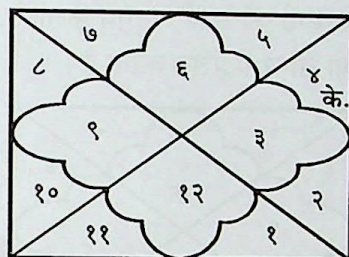
कन्या लग्नः **चतुर्थ भावः केतु**

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपना घरेलू जीवन शान, बुजर्गी तथा ठसक के साथ व्यतीत करता है और इनकी प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है। कभी-कभी उसके घरेलू सुख में विशेष संकट आ जाता है तो कभी वृद्धि भी हो जाती है।

कन्या लग्नः
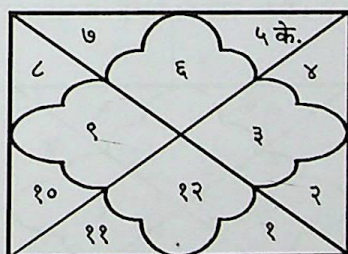
पंचम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहती है तथा विद्या प्राप्ति के लिए भी विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा

कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति बातचीत में बहुत उग्र होता है। वह अपनी विद्या-बुद्धि की कमी को स्वयं अनुभव करता है, परन्तु प्रकट में स्वयं को बड़ा समझदार तथा योग्य प्रदर्शित करता है।

कन्या लग्नः
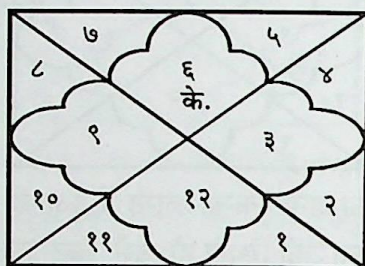
षष्ठम् भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग-भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना बहुत प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में गुप्त हिम्मत, धैर्य, युक्ति, अकड़ तथा निर्भयता से काम लेकर लाभ उठाता एवं सफलता प्राप्त करता है। उसे ननसाल पक्ष से परेशानी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी बड़ी बहादुरी का प्रदर्शन भी कर बैठता है।

कन्या लग्नः
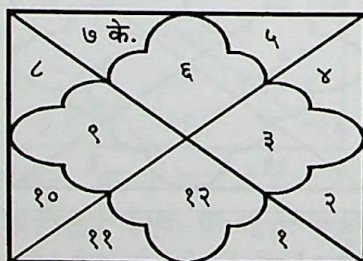
सप्तम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन

राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा बुद्धि के बल पर उन कठिनाईयों के निवारण का प्रयत्न करता है तथा सफलता भी पा लेता है। ऐसे व्यक्ति की मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है और गृहस्थ-जीवन बड़ी कठिनाईयों से सफल हो पाता है।

कन्या लग्नः
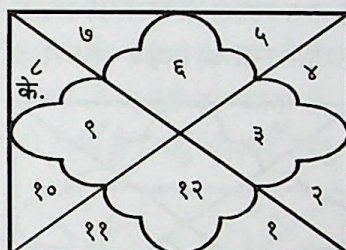
अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार प्राणों के संकट का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। पेट में कोई विकार रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी होता है, परन्तु कभी-कभी अत्यधिक चिन्तित भी हो जाता है। वह क्रोधी, धैर्यवान, हिम्मती, तेजी से काम करने वाला तथा संघर्षशील होता है।

कन्या लग्नः
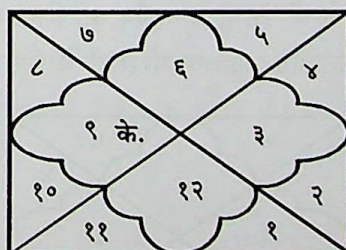
नवम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के क्षेत्र में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है तथा धर्म के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने भाग्य की वृद्धि के लिए कठोर परिश्रम करता है। वह गुप्त युक्तियों, चातुर्य, बुद्धि तथा साहस के बल पर संकटों से अपनी रक्षा करता रहता है तथा कभी-कभी चिन्ता के विशेष योग से हानि प्राप्त करता है।

कन्या लग्नः
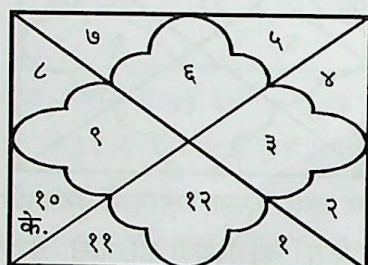
७ ५ ८ ६ ४ ९ ३ १० के. १२ २ ११ १

दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता के क्षेत्र में हानि एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है। राज्य के क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान अधिक नहीं रहता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। उसे कभी-कभी मानहानि का शिकार भी बनना पड़ता है तथा कभी किसी संकट झगड़े अथवा परेशानी में फँस जाना होता है।

कन्या लग्नः
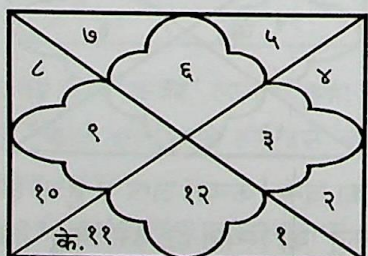
एकादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आय के साधनों में उन्नति तो होती है परन्तु मानसिक परेशानियों अथवा किसी अवसर पर किसी विशेष प्रकार के संकट एवं हानि का सामना भी करना पड़ता है। आमदनी की वृद्धि के लिए चिन्तित जातक अपने मन में दुःखी भी रहता है और कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी हो जाता है। वह परिश्रमी तथा धैर्यवान होता है।
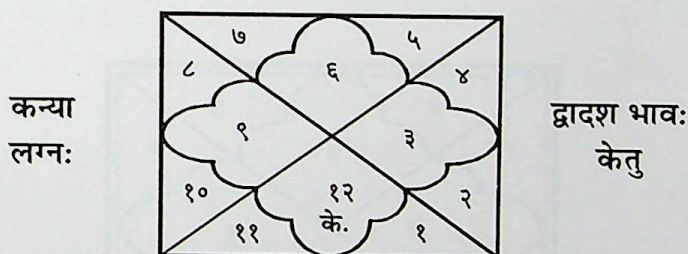
कन्या लग्नः

द्वादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भाव में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण चिन्ताओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट एवं असन्तोष की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति खर्च के क्षेत्र में कभी-कभी संकटों का शिकार भी बन जाता है, परन्तु अपनी गुप्त-हिम्मत एवं धैर्य के बल पर काम चलाता रहता है।

७.

तुला लग्न
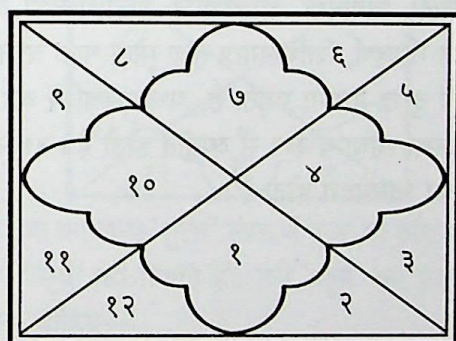
तुला लग्न वाली कुण्डलियों के
विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का
अलग-अलग फलादेश

'तुला' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाला जातक गुणी, व्यवसाय में निपुण, धनी, यशस्वी, कुलभूषण, कफ प्रकृति वाला, सत्यवादी, परस्त्रियों से प्रेम रखने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित, देवपूजन में तत्पर, परोपकारी, सतोगुणी, तीर्थ-प्रेमी, प्रियवादी, ज्योतिषी, भ्रमणशील, निर्लोभ तथा वीर्य-विकार से युक्त होता है। वह गौरवर्ण, शिथिलगात्र तथा मोटी नाक वाला होता है। उसे प्रारम्भिक आयु में दुःख उठाना पड़ता है, मध्यावस्था में वह सुखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था सामान्य रूप से व्यतीत होती है। ३१ अथवा ३२ वर्ष की आयु में उसका भाग्योदय होता है।
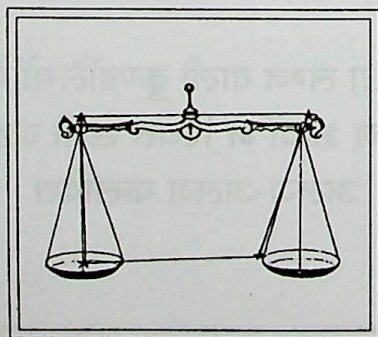
तुला लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल
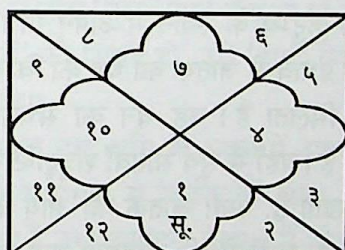
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता तथा सौन्दर्य में कमी आती है। उसको परतन्त्रता के मार्ग से हानि होती है तथा पराक्रम की भी कमी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को अपने मित्र मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः स्त्री के पक्ष में लाभ होता है। स्त्री सुन्दर मिलती है, भोगादि की शक्ति बढ़ती है तथा व्यावसायिक उन्नति भी होती है।

तुला लग्नः
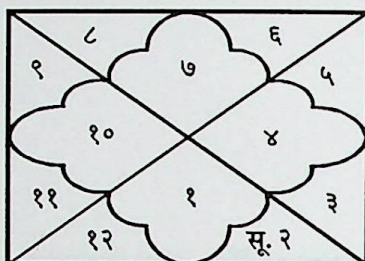
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। वह धन का संचय भी करता है तथा प्रभावशाली बना रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी असन्तोष बना रहता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः धनी होता है।

तुला लग्नः
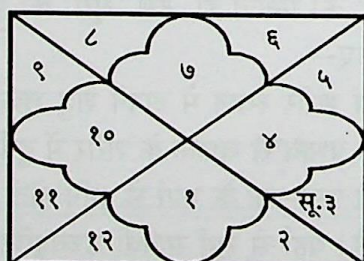
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव भाई और पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। वह अपने बाहुबल पर भरोसा रखने

वाला होता है। यहाँसे सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य तथा धर्म में वृद्धि होती है। अच्छी आमदनी होने के कारण जातक भाग्यवान समझा जाता है।

तुला लग्नः
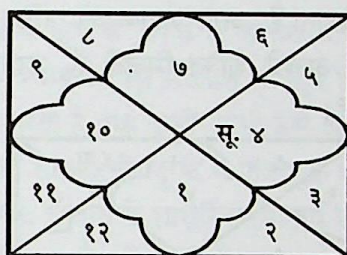
चतुर्थ भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान का अपूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा आमदनी के पक्ष में भी कुछ कठिनाईयाँ आती रहती हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

तुला लग्नः
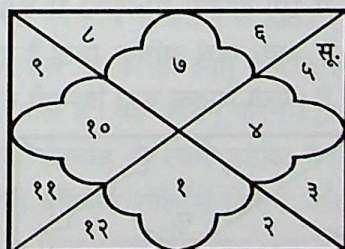
पंचम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की

कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान के पक्ष से असन्तोष के साथ सामान्य लाभ होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाईयों के बाद सफलता मिलती है। यहाँसे सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को कठिन परिश्रम एवं बुद्धि-योग से आमदनी की अच्छी शक्ति मिलती है, परन्तु मस्तिष्क में कुछ परेशानियाँ भी रहती हैं।

तुला लग्नः
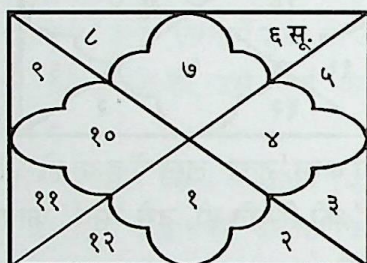
षष्ठम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग तथा शत्रु स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को झगड़े-झंझट एवं शत्रु पक्ष से लाभ होता है तथा शत्रुओं पर विजय मिलती है। कठिन परिश्रम के द्वारा उसकी आमदनी भी अच्छी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ रहता है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है।

तुला लग्नः
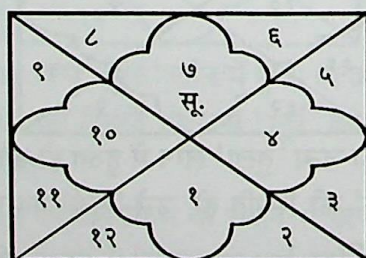
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, तथा स्त्री पक्ष एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ भी खूब होता है। वह अपने घर के भीतर सुख प्राप्त करता है तथा कभी-कभी उसे अत्यधिक लाभ भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में दुर्बलता रहती है तथा मन में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।
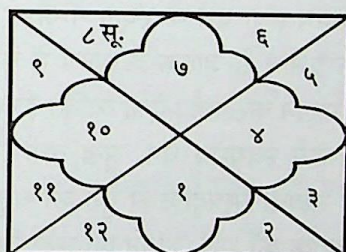
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व के लाभ में कमी आ जाती है। वह कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है और उसे कौटुम्बिक-सुख की प्राप्ति होती रहती है।

तुला लग्नः
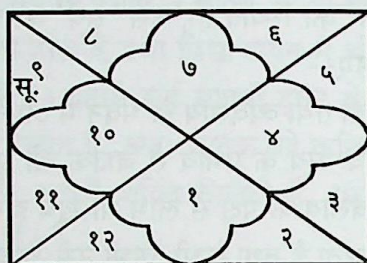
नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर-भक्त, न्यायी तथा सौभाग्यवान होता है। उसे स्वयमेव धन, सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।
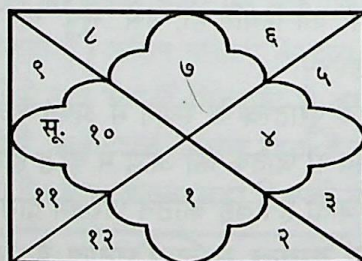
तुला लग्नः

दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान, सफलता, यश, शक्ति तथा लाभ की प्राप्ति होती है। वह

प्रभावशाली कर्म करता है तथा अपनी आमदनी को बढ़ाता रहता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, फलतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी बनी रहती हैं।

तुला लग्नः
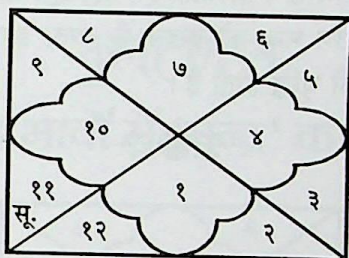
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती रहती है और उसका प्रभाव बढ़ता चला जाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्या-बुद्धि में भी कुछ कमी रहती है। ऐसे जातक की वाणी में तेजी पाई जाती है।

तुला लग्नः
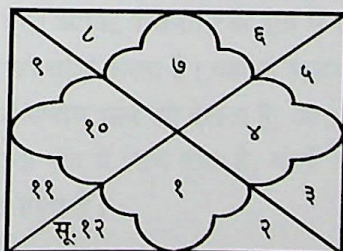
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख, सफलता एवं लाभ की शक्ति प्राप्त होती है। परन्तु लाभ चाहे जितना कर लिया जाए, वह सब खर्च हो जाता है। यहाँ सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः झगड़ों के मार्ग से लाभ होता है एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

तुला लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

तुला लग्नः
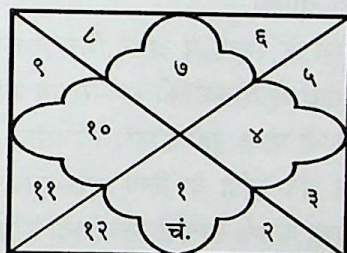
प्रथम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में सम्मानित होता है तथा पितृ पक्ष के सम्मान की वृद्धि करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है, भोगों की प्राप्ति होती है तथा सर्वत्र प्रभाव स्थापित होता है।

तुला लग्नः
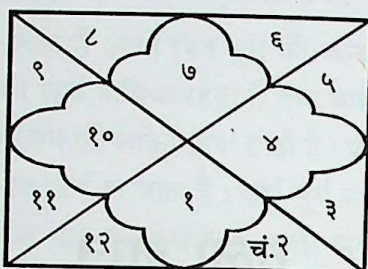
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की धन-संचय शक्ति में कमी आती है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त नहीं होता। व्यवसाय एवं सुख के मार्ग में बाधाएँ पड़ती हैं तथा धन-वृद्धि के लिए गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व के लाभ की वृद्धि होती है।

तुला लग्नः
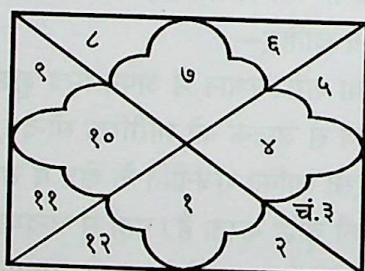
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई तथा पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे पिता एवं राज्य के क्षेत्र में भी सम्मान एवं

सफलता प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पक्ष भी प्रबल होता है। ऐसा व्यक्ति बहुत हिम्मतवर होता है।
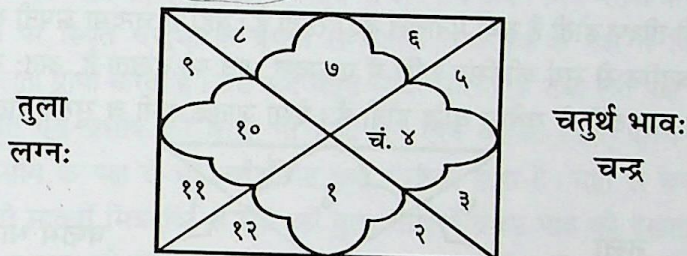
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का लाभ त्रुटिपूर्ण प्राप्त होता है, परन्तु मनोबल में वृद्धि होने के कारण सुख के साधन बने रहते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से कर्क राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती रहती है।
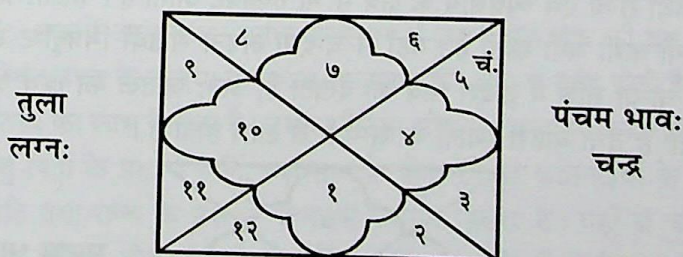
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एव सन्तान के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान की शक्ति प्राप्ति होती है तथा मनोबल द्वारा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। वह राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ तथा सम्मान प्राप्त करता है। उसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण होती है तथा मनोबल बढ़ा रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में यथेष्ठ वृद्धि होती है। ऐसा जातक धनी व सुखी होता है।

तुला लग्नः **षष्ठम भावः चन्द्र**
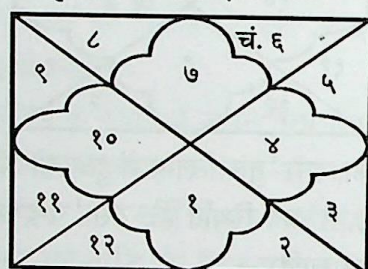
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में अपने मनोबल, चातुर्य एवं शान्त स्वभाव के कारण सफलता मिलती है। उसे पिता की ओर से असन्तोष रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी रुकावटें आती हैं। फलतः प्रतिष्ठा में भी कमी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है।

तुला लग्नः
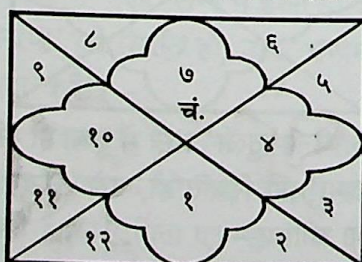
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है। उसे स्त्री बहुत सुन्दर मिलती है तथा स्त्री पक्ष द्वारा उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि भी होती है। ऐसा व्यक्ति पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी लाभान्वित तथा यशस्वी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, मान एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है।
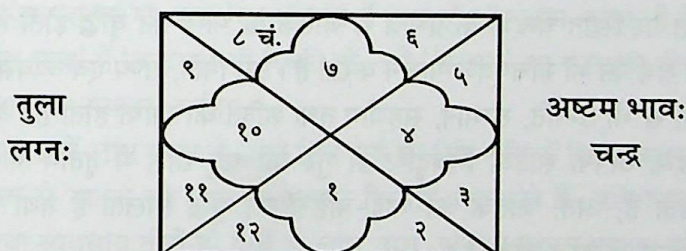
तुला लग्नः

८ चं. ६ ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि में स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। उसका दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है, परन्तु पिता के पक्ष में हानि, व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ उन्नति तथा राज्य के पक्ष से साधारण सम्मान मिलता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक के धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब का पक्ष भी दुर्बल रहता है।

तुला लग्नः
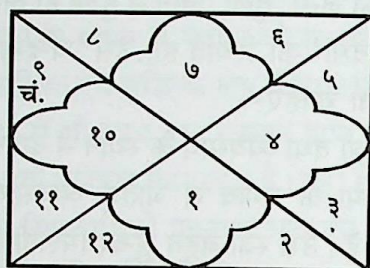
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का भी रुचिपूर्वक पालन करता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्षों से भी उन्नति, सम्मान, सहयोग तथा शक्ति की प्राप्ति होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा उसके पराक्रम में वृद्धि होती है।

तुला लग्नः
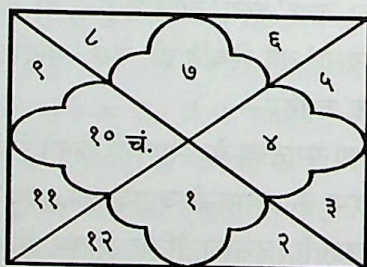
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपनी कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से शक्ति, राज्य के पक्ष से सम्मान, व्यवसाय के पक्ष से उन्नति, लाभ तथा धन की प्राप्ति होती है।

वह स्वाभिमानी, यशस्वी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता के पक्ष में कुछ शक्ति मिलती है तथा भूमि और मकान का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है।
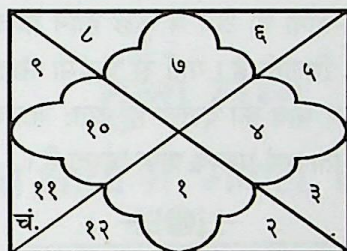
एकादश भावः
चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को लाभ के अवसर निरन्तर प्राप्त होते हैं। उसे पिता, राज्य तथा व्यवसाय तीनों ही पक्षों से लाभ, यश, प्रतिष्ठा तथा सफलता की प्राप्ति होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः उसे सन्तान पक्ष से सामान्य असन्तोष के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या एवं वाणी की शक्ति खूब प्राप्त होती है। ऐसा जातक चतुर, चालाक, स्वार्थी तथा समझदार होता है।

तुला
लग्नः
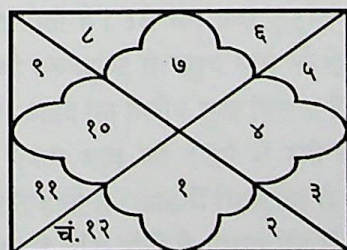
द्वादश भावः
चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ, उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति पिता, व्यवसाय तथा राज्य—तीनों के क्षेत्र में कुछ हानि प्राप्त करता है और उसे मान-प्रतिष्ठा भी कम मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में शान्ति एवं चातुर्य द्वारा सफलता एवं प्रभाव प्राप्त करता है।

तुला लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

तुला लग्नः
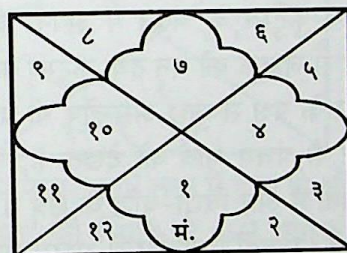
प्रथम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख तथा घर में प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का विशेष सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय की उन्नति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है, परन्तु पेट में विकार रहता है।

तुला लग्नः
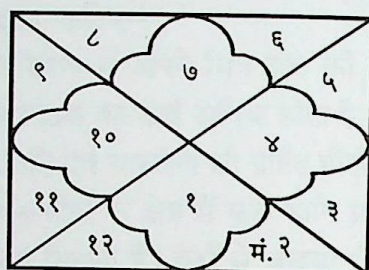
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन-कुटुम्ब के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख तो मिलता है, परन्तु स्त्री एवं परिवार के पक्ष से कुछ असन्तोष भी बना रहता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष से बाधायुक्त शक्ति मिलती है और विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाईयों के साथ तरक्की होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति सामान्य रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन स्वार्थ के लिए किया जाता है।

तुला लग्नः
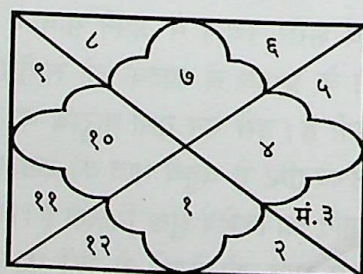
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु

राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है, स्त्री पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है, पराक्रम की वृद्धि होती है तथा पुरुषार्थ द्वारा धन भी खूब मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव देखता है, अतः जातक को शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है एवं आठवीं नीचदृष्टि से दशम भाव देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में उन्नति मिलने के मार्ग में बाधायें आती रहती हैं।
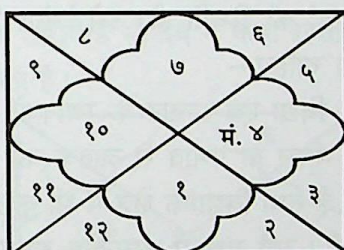
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान आदि का विशेष सुख मिलता है एवं धन का संचय होता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के द्वारा भी सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र राशि में दशम भाव को देखने से पिता के सुख में कमी एवं राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में उन्नति में व्यवधान पड़ता है।

आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के पक्ष में विशेष सफलता मिलती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक धनी और सुखी रहता है।

तुला लग्नः
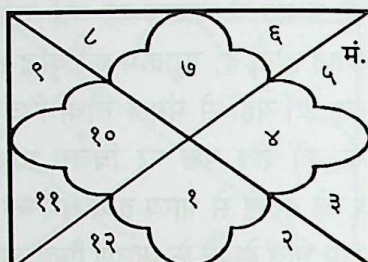
पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष में कुछ कठिनाईयाँ प्राप्त होती है तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता मिलती है। स्त्री पक्ष में असन्तोष रहता है तथा कुटुम्ब से वैमनस्य प्राप्त होता है। व्यवसाय के मार्ग में बुद्धि-बल से सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु तथा जीवन के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं तथा कुछ परेशानियों के साथ पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

तुला लग्नः
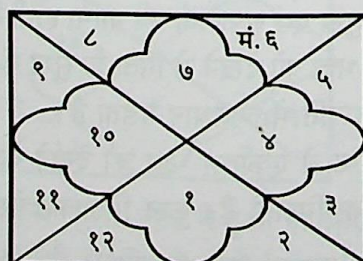
षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखता है। धन-संचय में कमी रहती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयों के बाद सफलता मिलती है, यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा स्वार्थ के लिए धर्म का पालन करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है तथा झगड़ों-झंझटों के मार्ग से लाभ होता है।
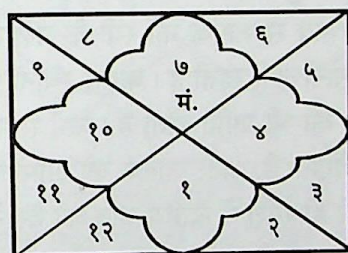
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से कुछ बन्धन-सा रहता है, परन्तु भोग की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है और दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं रोजगार के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ गर्मी का विकार रहता है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने के कारण धन का संचय होता है तथा कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है।

तुला लग्नः
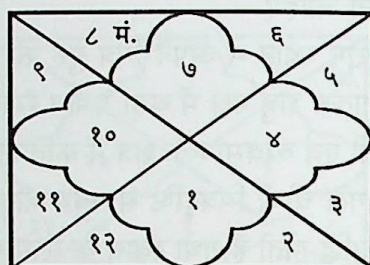
अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष से कष्ट होता है तथा दैनिक रोजगार में परेशानी बनी रहती है। बाहरी स्थानों पर व्यवसाय करने से लाभ होता है पुरातत्त्व की भी प्राप्ति होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी का लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ परिश्रम द्वारा होता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।
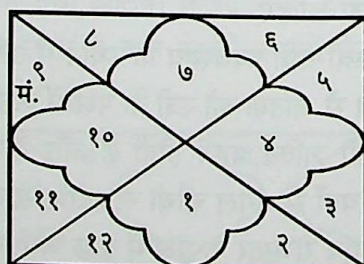
तुला लग्नः

नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि

पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति खूब होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। उसे भाग्यवती स्त्री मिलती है, अतः विवाह के बाद विशेष उन्नति होती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। ऐसा जातक लौकिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति करता है।
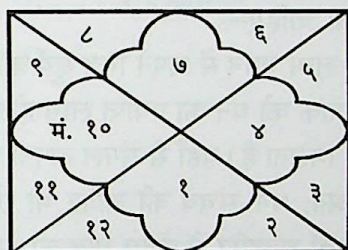
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयाँ आती हैं। स्त्री तथा कुटुम्ब के पक्ष में भी कमजोरी तथा कष्ट की स्थिति रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कमजोरी रहती है, परन्तु सम्मान प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष से वैमनस्य तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

तुला लग्नः
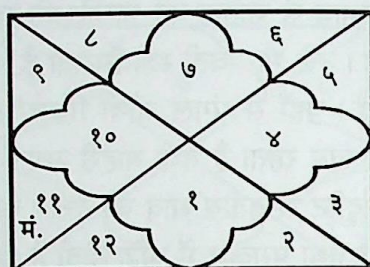
एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा स्त्री के पक्ष से भी लाभ तथा सुख मिलता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-संचय की शक्ति भी रहेगी तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलेगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष से असन्तोष रहेगा तथा विद्या की भी कमी होगी। आठवीं मित्रदृष्टि से शत्रु भाव को देखने से शत्रु पक्ष से लाभ होगा तथा उस पर प्रभाव बना रहेगा। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी तथा प्रभावशाली होता है।

तुला लग्नः
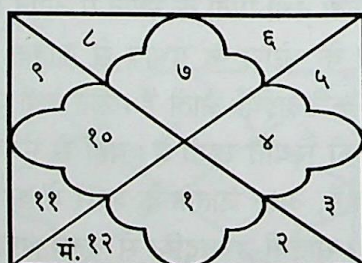
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध

से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी असन्तोष एवं हानि के योग उपस्थित होते हैं। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है। अत: भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने के कारण दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में व्यवसाय में लाभ होता है, परन्तु स्त्री के पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है।
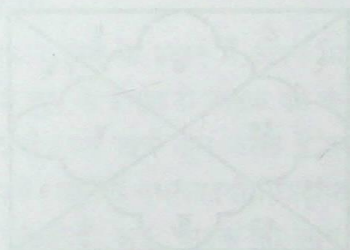
तुला लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

तुला लग्नः
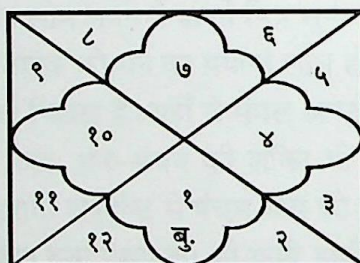
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है तथा खूब खर्च करता है। भाग्य के क्षेत्र में कमी का अनुभव करते हुए भी वह भाग्यवान गिना जाता है तथा धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

तुला लग्नः
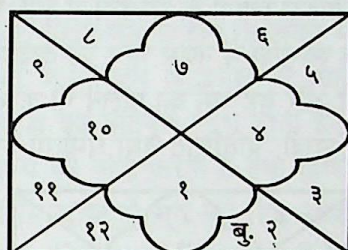
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कम प्राप्त होता है। वह खर्च खूब करता है तथा धर्म का पालन भी स्वार्थ के लिए करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व पक्ष की वृद्धि होती है। उसे दैनिक जीवन में शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है, अतः वह धनी एवं प्रतिष्ठित माना जाता है।

तुला लग्नः
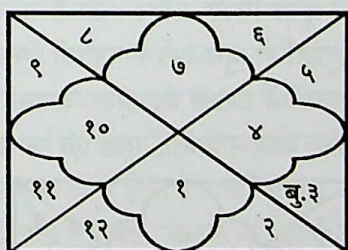
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। भाग्योन्नति के मार्ग में साधारण रुकावटें

आया करती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, यशस्वी, सुखी, प्रतिष्ठित तथा धर्मात्मा होता है।
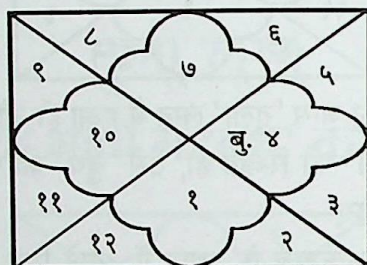
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परन्तु घरेलू शान्ति में कुछ कमी बनी रहती है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ होता है और वह खर्च भी बड़ी शानदारी से करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से यश, मान, प्रतिष्ठा, सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।
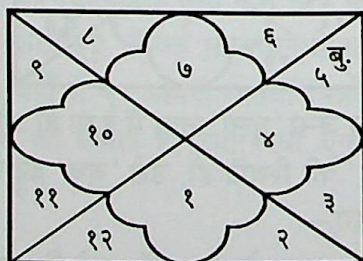
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से शक्ति तथा विद्या-बुद्धि का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अपने भाग्य की वृद्धि करता है तथा खर्चीला भी बहुत होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी खूब रहती है और वह भाग्यवान माना जाता है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन करने वाला तथा प्रतिष्ठित भी होता है।
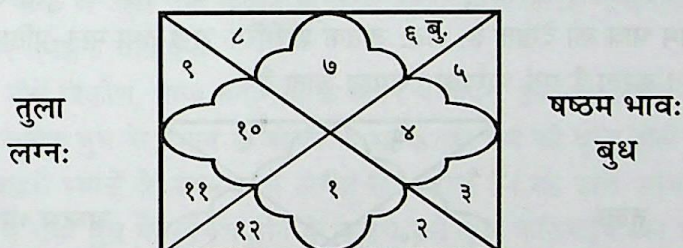
तुला लग्नः

८ ६ बु. ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश एवं नीच के बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा अपना खर्च चलाने के लिए भी बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ होता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक बना रहता है।
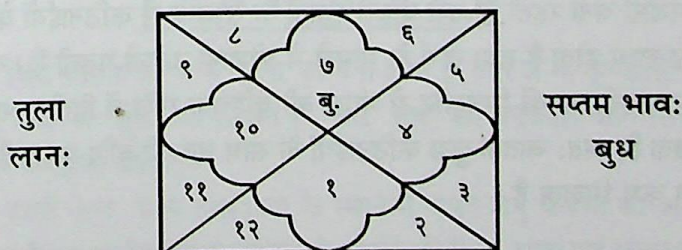
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री, व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। वह गृहस्थी का खर्च खूब चलाता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक शारीरिक सुख तथा मान-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है एवं भाग्यवान समझा जाता है।
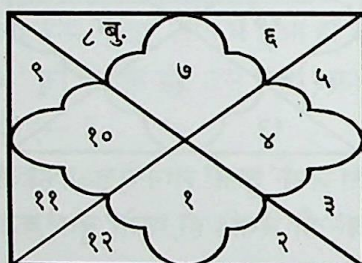
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। परन्तु भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कमजोरी बनी रहती है, उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कठिनाईयों के साथ कुछ लाभ होता है तथा खर्च के मामले में परेशानी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक कुछ कठिनाईयों के साथ धन की वृद्धि करता है। उसे यश कम मिलता है।

तुला लग्नः
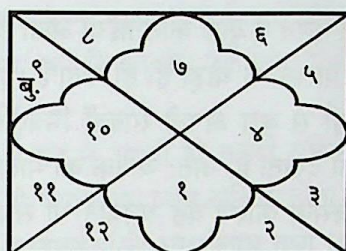
नवम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अच्छा लाभ होता है। वह खर्च अधिक करता है तथा बुध के व्ययेश होने के कारण उसे कुछ कठिनाईयों का भी अनुभव होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है।

तुला लग्नः
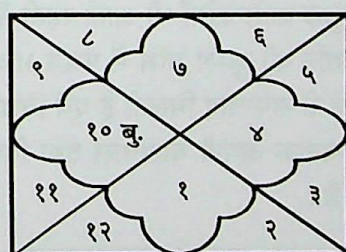
दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय

के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं तथा कुछ कमजोरी-सी रहती है। धर्म का पालन भी थोड़ा ही हो पाता है। इसी कारण भाग्योन्नति भी कम होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है जिसके कारण वह धनवान भी समझा जाता है।

तुला लग्नः
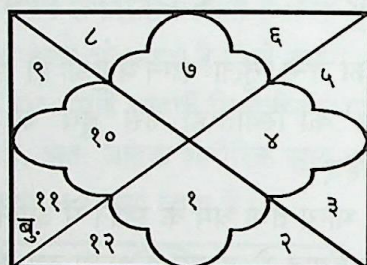
एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह धर्म का पालन करता है तथा भाग्यवान भी होता है। परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में कुछ कठिनाईयाँ भी आती रहती हैं। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान पक्ष से सफलता मिलती है एवं विद्या-बुद्धि की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसा जातक अपनी बोलचाल तथा विद्या-बुद्धि के बल पर विशेष उन्नति करता है।

तुला लग्नः
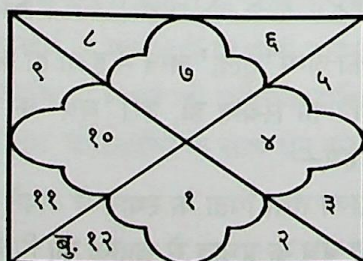
द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा उच्च के बुध प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ तथा सुख की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र गुरु की मीन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक को शत्रु पक्ष से कुछ परेशानियाँ बनी रहती हैं और उनसे वह कुछ अनुचित उपायों का आश्रय लेकर काम निकालता है। संक्षेप में, ऐसा प्रायः जातक धनी तथा सुखी होता है।

तुला लग्न
बारह भावों में 'गुरु' का फल

तुला लग्नः
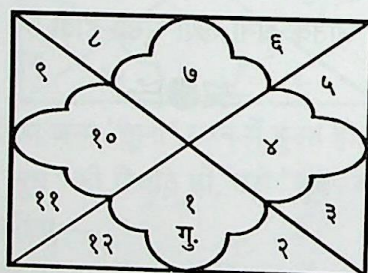
प्रथम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं पुरुषार्थ की वृद्धि होती है तथा पुरुषार्थ द्वारा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है तथा शत्रु पक्ष में हिम्मत के द्वारा प्रभाव स्थापित होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष से वैमनस्य एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी। नौवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में उन्नति रहेगी तथा यश भी प्राप्त होगा।

तुला लग्नः
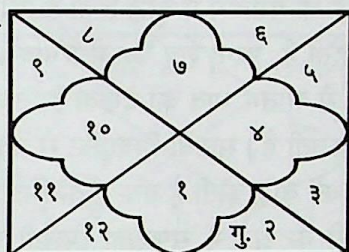
द्वितीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि करता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही मीन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक अपने धन तथा शक्ति के बल पर शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त करता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण पुरातत्त्व की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है तथा आयु की वृद्धि होती है। नौवीं उच्च एवं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से राज्य द्वारा सम्मान, पिता द्वारा सुख तथा व्यवसाय में सफलता एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

तुला लग्नः
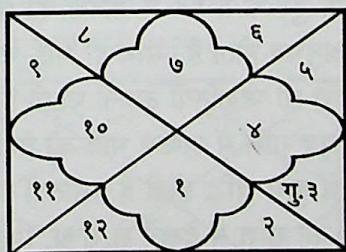
तृतीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपनी धनु राशि पर स्थित

गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में सामान्य परेशानी रहती है, परन्तु शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती रहती है तथा जातक सुखी, प्रभावशाली एवं सम्पन्नजीवन व्यतीत करता है। उसे राजकीय क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है।

तुला लग्नः — **चतुर्थ भावः गुरु**
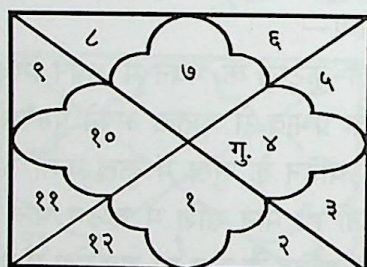
(कुण्डली: १ लग्न; ४ — गु.)

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे स्थान माता, सुख एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को भूमि, मकान एवं माता के सुख में कमी का अनुभव होता है। साथ ही भाई-बहिन के सुख में कमी आती है तथ शत्रु पक्ष से भी परेशनियाँ उठानी पड़ती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति में कुछ वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को मित्र चन्द्रमा की राशि में देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय द्वारा सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। नौवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

तुला लग्नः
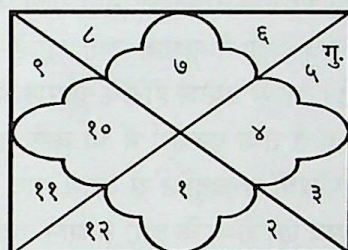
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है एवं शत्रु पक्ष में प्रभाव बढ़ता है। भाई-बहिनों से कुछ मतभेद बना रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ द्वारा भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन बना रहता है सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ होता रहता है तथा नौवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। परन्तु गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक के स्वास्थ्य एवं सन्तान के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है।

तुला लग्नः
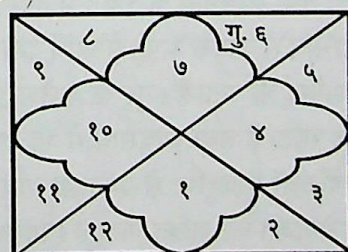
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव तथा झगड़े-झंझट के कामों में सफलता प्राप्त करता है। गुरु से षष्ठेश होने के कारण भाई-बहिन के पक्ष में कुछ वैमनस्य बना रहता है तथा पुरुषार्थ में भी कुछ परतन्त्रता का अनुभव होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्चदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, व्यवसय एवं राज्य के द्वारा सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नौवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब के साथ कुछ मतभेद रहता है। ऐसे व्यक्ति की प्रतिष्ठा के क्षेत्र में वृद्धि भी होती है।
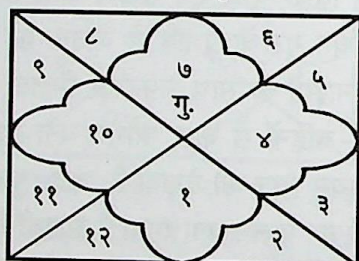
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय की उन्नति करता है तथा स्त्री की शक्ति भी पाता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक का स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय में भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जन की शक्ति पाता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर में सामान्य परेशानी रहती है, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही धनुराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि

होती है। ऐसा जातक सामान्य सुखी श्रेणी में गिना जाता है।
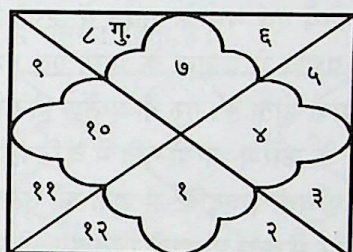
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व की सामान्य-शक्ति प्राप्ति होती है तथा आयु की वृद्धि होती है। साथ ही भाई-बहिन के सुख में कमी, पराक्रम के क्षेत्र में कमजोरी तथा शत्रु पक्ष से परेशानी का अनुभव भी होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। नौवीं नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा परतन्त्रता का-सा अनुभव भी होता है।
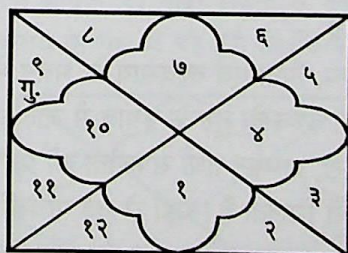
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है, साथ ही उसे यश भी प्राप्त होता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को शत्रु पक्ष अथवा झगड़ों के कारण भाग्योन्नति में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ परेशानी रहते हुए भी प्रभाव की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य की उन्नति भी होती है। नौवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा परिश्रम द्वारा विद्या, बुद्धि एवं वाणी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है और जातक प्रभावशाली होता है।

तुला लग्नः

८ ६ ९ ७ ५ १० गु. ४ ११ १ ३ १२ २
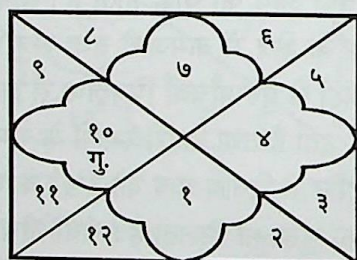
दशम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही भाई-बहिन का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को कुटुम्ब का सुख मिलता है तथा धन की वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता एवं भूमि मकान आदि के सुख में कुछ कमी आती है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही

राशि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष में विजय एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ होता है, परन्तु गुरु के पराक्रमेश होने के कारण भाई-बहिनों से मतभेद रहता है।

तुला लग्नः
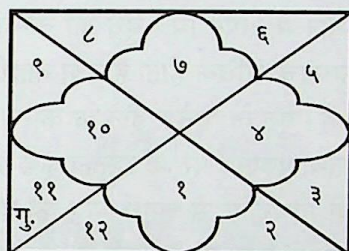
एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी एवं ऐश्वर्य की वृद्धि करता है और उसे शत्रु पक्ष से लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को स्वराशि में देखता है, अतः भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमी रहती है, परन्तु बुद्धि अधिक होती है। नौवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा स्त्री पक्ष से भी शक्ति प्राप्त होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक का भाई-बहिनों से कुछ मतभेद बना रहता है तथा लाभ एवं व्यवसाय के पक्ष में भी उसे विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

तुला लग्नः
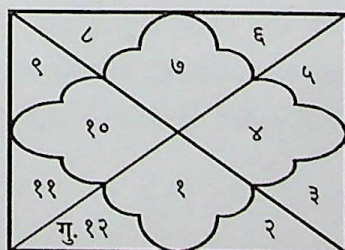
द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पुरुषार्थ पर भी उसका कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक गुप्त-युक्तियों द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे कुछ दबना भी पड़ता है। नौवीं दृष्टि से अष्टम भाव को शत्रु शुक्र की वृष राशि में देखने से कुछ कठिनाईयों के साथ आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है तथा गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई-बहिनों से कुछ परेशानी भी रहती है।

तुला लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

तुला लग्न:
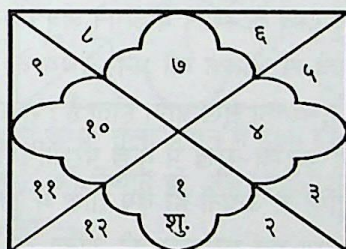
प्रथम भाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र और शरीर स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के कारण जातक के आत्मबल तथा शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। वह मनस्वी एवं मानी होता है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण कभी-कभी शरीर में परेशानी का अनुभव भी करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्यशत्रु मंगल की मेष राशि में सप्तम भाव को देखता है, अत: जातक को स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसायिक उन्नति के लिए भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

तुला लग्नः
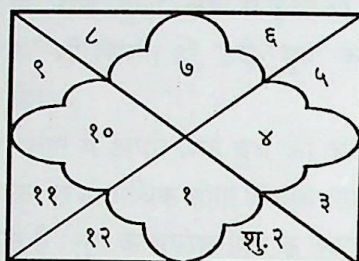
द्वितीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। शुक्र के अष्टमेश होने के कारण धन-संचय तथा कुटुम्ब-सुख में कुछ परेशानियाँ भी आती रहती हैं। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृष राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। कुल मिलाकर जातक वैभव सम्पन्न ढंग का जीवन बिताता है तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

तुला लग्नः
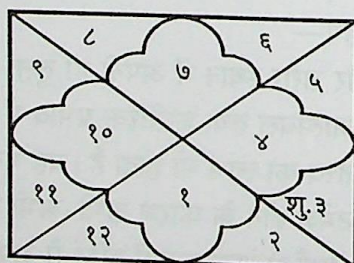
तृतीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव भाई-बहिन तथा पराक्रम के स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों के

साथ कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि के बुध की मिथुन राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता प्राप्त होती है। चातुर्य एवं शारीरिक-परिश्रम के द्वारा जातक प्रभावशाली जीवन व्यतीत करता है।

तुला लग्नः
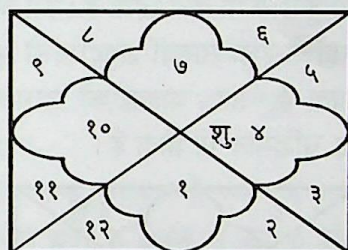
चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, सुख एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख तो प्राप्त होता है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण उसमें कुछ कमी भी बनी रहती है। जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। वह सुखी जीवन व्यतीत करता है।

तुला लग्नः
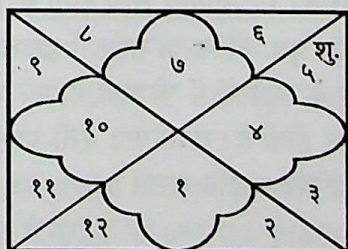
पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को वाक्चातुर्य, बुद्धि एवं विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण सन्तान के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के क्षेत्र में सफलता मिलती है साथ ही वह बुद्धिमान भी होता है।
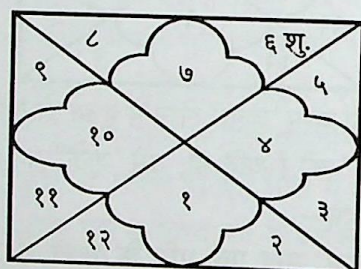
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु, रोग एवं पीड़ा के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा बड़ी-बड़ी कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी सामान्य लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में परेशानी उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों से भी कुछ कष्ट होता है। सामान्यतः ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक पूरी शान-शौकत का जीवन व्यतीत करता है।

तुला लग्नः
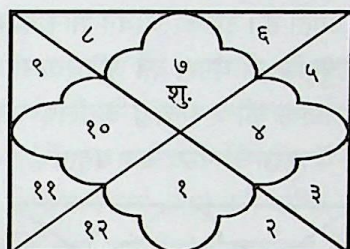
सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाईयाँ रहते हुए भी उससे शक्ति प्राप्त होती है तथा शारीरिक-परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का भी लाभ होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-सौन्दर्य, आत्म-बल तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

तुला लग्नः
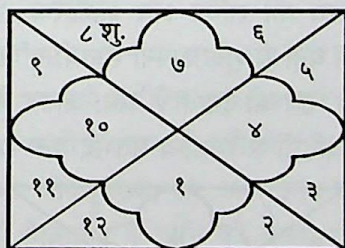
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही वृष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं

स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है। उसका जीवन शान के साथ व्यतीत होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीय भाव को देखता है, इस कारण जातक को धन वृद्धि के लिए चतुराई का आश्रय लेना पड़ता है तथा परिवार में कुछ वैमनस्य बना रहता है।
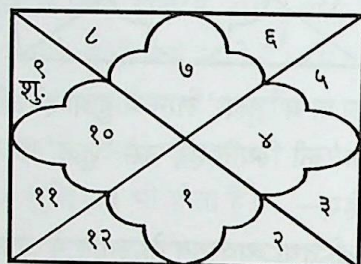
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म के कुछ कमी के साथ उन्नति होती है। ऐसा जातक भाग्य पर अधिक निर्भर रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति और शारीरिक सौन्दर्य एवं शील की उपलब्धि भी होती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य शुक्र गुरु की धनु राशि में तृतीय भाव को देखता है अतः जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से सामान्य मतभेद बना रहता है।
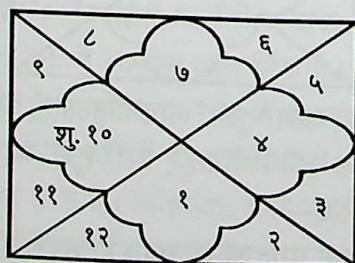
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता प्राप्त होती है। उसे शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं आयु की शक्ति मिलती है। शारीरिक-परिश्रम तथा चातुर्य के द्वारा उसे विशेष सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है।
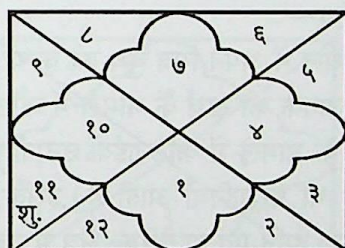
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम एवं चातुर्य के द्वारा आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। साथ ही उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। उसका जीवन सामान्यतः आनन्दमय व्यतीत होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पंचम भाव को देखता है अतः जातक को विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है, वाणी की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता प्राप्त होती है।

तुला लग्नः

८ ६ ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ शु. १२ २
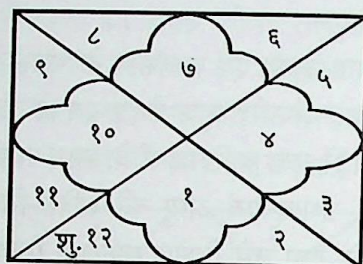
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के मामले में कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी परेशानियाँ आती हैं। इसके साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ हानि एवं शारीरिक-क्षेत्र में दुर्बलता प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष में विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में हिम्मत और चतुराई से सफलता प्राप्त करता है।

तुला लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फल

तुला लग्न:
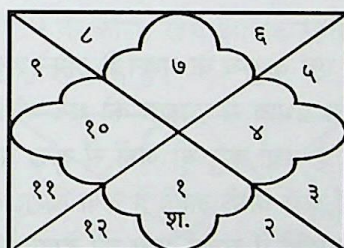
प्रथम भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक का शरीर स्थूल एवं प्रभावशाली होता है। उसे माता, भूमि तथा मकान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। सन्तान पक्ष भी प्रबल रहता है एवं विद्या के क्षेत्र में भी उन्नति होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अत: भाई-बहिन के सम्बन्धों में कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम के क्षेत्र में विशेष परिश्रम करने पर ही सफलता मिलती है। सातवीं नीचदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयाँ आती हैं। दसवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता के सुख में कुछ कमी रहती है, राज्य के क्षेत्र में सम्मान मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में

सफलता प्राप्त होती है।

तुला लग्नः

द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है तथा कुटुम्बी जनों से कुछ मतभेद बना रहता है। साथ ही सन्तान पक्ष में कुछ कमी आती है तथा विद्या की शक्ति प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है तथा लाभ प्राप्ति के लिए बुद्धि का विशेष उपयोग करना पड़ता है।

तुला लग्नः

तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होते हुए भी उनसे कुछ वैमनस्य बना रहता है। उसे माता के द्वारा भी क्षति प्राप्त होती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या और सन्तान की शक्ति यथेष्ट प्राप्त होती है, परन्तु उसकी वाणी में उत्तेजना रहती है और सन्तान से सुख प्राप्त होते हुए भी कुछ मतभेद बना रहता है। यहाँ से शनि सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः बुद्धि योग से जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म में रुचि बनी रहती है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है।
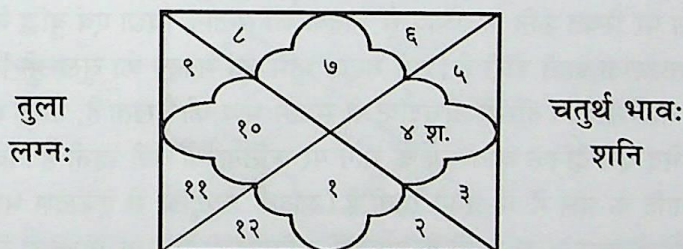
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं भवन के स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसे सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में विशेष प्रभाव रखता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता से मतभेद रखते हुए भी सुख प्राप्त होता है तथा राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं उच्चदृष्टि

से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है और जातक बड़ा, प्रभावशाली, सुखी तथा यशस्वी होता है।

तुला लग्नः

८ ६ ९ ७ ५ श. १० ४ ११ १ ३ १२ २
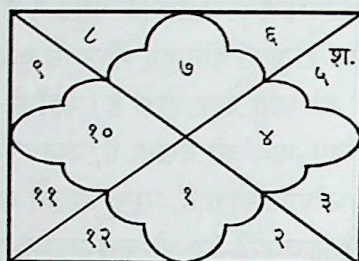
पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री से मतभेद एवं दैनिक व्यवसाय के मार्ग पर कठिनाईयाँ बनी रहती हैं। विषय-भोगादि के पक्ष में भी कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाईयां के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब से भी मतभेद बना रहता है परन्तु ऐसा व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा मनमौजी होता है।

तुला लग्नः
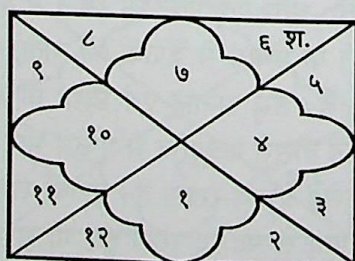
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं झंझट के स्थान में अपने गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में अपनी बुद्धि के द्वारा सफलता प्राप्त करता है। साथ ही उसे माता, भूमि, सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पुरुषार्थ में वृद्धि होती है।
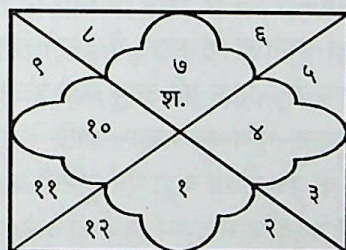
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री, गृहस्थी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अशान्ति एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही विद्या व सन्तान के पक्ष में भी कमजोरी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक बुद्धि योग से भाग्य की वृद्धि तथा धर्म का पालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर का कद लम्बा होता है तथा शारीरिक-सुख की प्राप्ति होती है। दसवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को अपनी ही मकर राशि में देखने के

कारण माता के पक्ष से कुछ शक्ति मिलती है तथा कठिन परिश्रम द्वारा कुछ कमी के साथ घरेलू सुख भी प्राप्त होता है। फिर मानसिक चिन्ताओं से घिरा रहता है।

तुला लग्नः
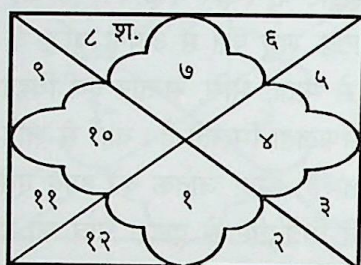
अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु बड़ी होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसके माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है तथा विद्या एवं सन्तान के पक्ष में भी कष्ट एवं त्रुटियों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कष्ट, वैमनस्य एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कौटुम्बिक-सुख में व्यवधान पड़ता है। दसवीं दृष्टि से पंचम भाव को स्वराशि में देखने के कारण विद्या एवं सन्तान की सामान्य-शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु ऐसे जातक के मस्तिष्क में परेशानियाँ घर किए रहती हैं।

तुला लग्नः
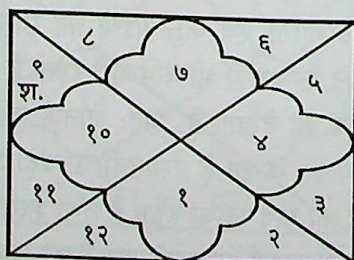
नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक अपनी बुद्धि द्वारा भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। वह विद्या एवं सन्तान के पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों से मतभेद रहता है तथा परिश्रम द्वारा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा बुद्धि-बल से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा जातक अपनी बुद्धि के प्रयोग से भाग्य की उन्नति करता है तथा आनन्द का उपयोग करता है।

तुला लग्नः
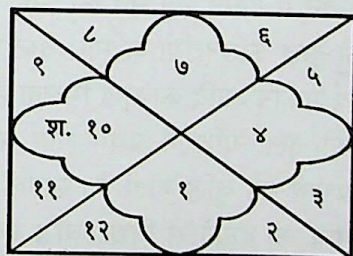
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होती है। वह विद्वान होता है, परन्तु सन्तान के साथ उसका मतभेद बना रहता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक खूब खर्चीला होता है और उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से

अपनी ही मकर राशि में चतुर्थ भाव में देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। दसवीं नीचदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयाँ आती रहती हैं।
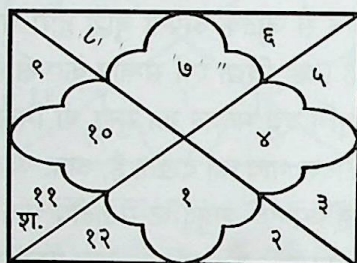
एकादश भावः
शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख मिलता है। तीसरी उच्चदृष्टि से अपने मित्र शुक्र की तुला राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-शक्ति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही कुम्भ राशि में पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति विशेष स्वार्थी होता है। वह लापरवाह तथा मस्तमौला स्वभाव का भी होता है।

तुला
लग्नः
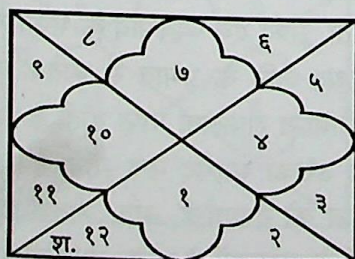
द्वादश भावः
शनि

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है। यहाँ से तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-संचय में कमी आती है तथा कुटुम्ब से मतभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में सामान्य प्रभाव रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म के मामलों में रुचि बनी रहती है। ऐसे जातक की बुद्धि एवं वाणी में कुछ भ्रम-सा भी बना रहता है।

तुला लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

तुला लग्न:
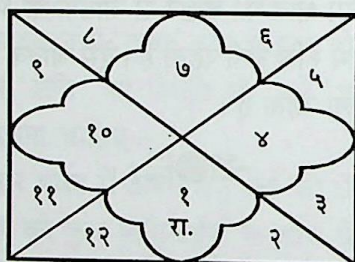
प्रथम भाव: राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता एवं परेशानी बनी रहती है। उसे अपनी उन्नति के लिए गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है परन्तु भीतरी रूप में परेशान रहता है। वह अपनी उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करता है। कभी-कभी उसकी उन्नति के मार्ग में विशेष कठिनाईयाँ आती हैं, फिर भी वह अपनी सूझ-बूझ एवं चातुर्य के बल पर संकटों पर विजय प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

तुला लग्नः
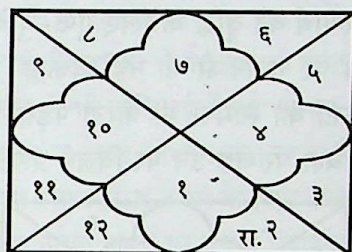
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थितिं हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-संचय के क्षेत्र में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और कभी-कभी घोर आर्थिक संकटों का सामना भी करना पड़ता है। किसी-किसी समय उसे कहीं से आकस्मिक रूप में भी धन प्राप्त हो जाता है। वह गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर किसी-न-किसी प्रकार अपना काम चलाता है। ऐसे जातक को अपनी कुटुम्ब के द्वारा भी क्लेश प्राप्त होता है।

तुला लग्नः
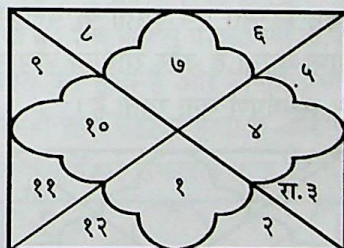
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पराक्रम के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है तथा भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति

अपनी उन्नति एवं पुरुषार्थ की वृद्धि के लिए गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है तथा अनुचित मार्ग पर चलने से भी नहीं चूकता। उसे अपनी जीवन में कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु धैर्य, गुप्त-युक्ति एवं चातुर्य के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है।
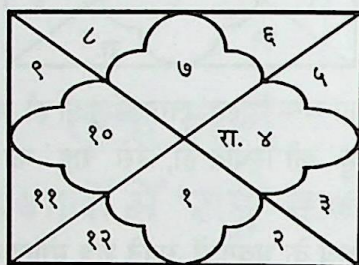
चतुर्थ भावः
राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी का अनुभव होता है, परन्तु शनि की राशि पर स्थित होने के कारण, वह गुप्त-युक्ति, हिम्मत एवं दृढ़ता के बल पर संकटों का सामना करते हुए सफलता प्राप्त करता है और सामान्य रूप से सुखी भी होता है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षपूर्ण बना रहता है।

तुला
लग्नः
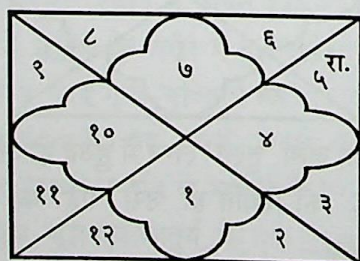
पंचम भावः
राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क कुछ-न-कुछ परेशान बना रहता है। वह सदैव चिन्तित बना रहता है तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए सत्य-असत्य की परवाह नहीं करता। ऐसा जातक अपने शब्दों पर दृढ़ता प्रदर्शित करता है और गुप्त-युक्तियों से काम लेता है।
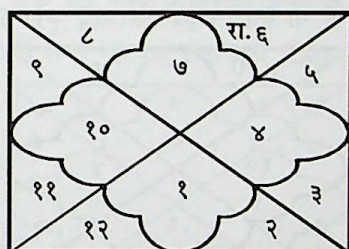
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं झगड़े के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से परेशानियाँ तो उठानी पड़ती हैं, परन्तु वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है और अपना प्रभाव स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है और गुप्त-युक्तियों के बल पर शत्रु, झंझट एवं विपक्षियों पर सफलता पाता रहता है।
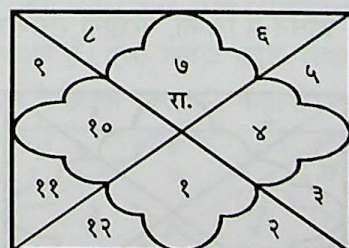
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से संकटों का सामना करना पड़ता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं, परन्तु गुप्त-युक्ति, धैर्य एवं हिम्मत के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त करता है। व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी महान् संकट के अवसर उपस्थित होते हैं, परन्तु कठिन संघर्ष के बाद वह उन पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार स्त्री पक्ष से भी कठिनाईयों के बाद कुछ सफलता पाता है।

तुला लग्नः
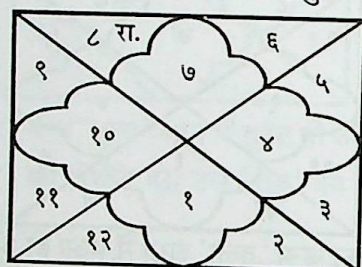
अष्टम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी प्राणों पर भी मुसीबत बन आती है, परन्तु मृत्यु नहीं होती। इसके साथ ही जातक को पुरातत्त्व की हानि भी होती है। उसे अपने दैनिक जीवन में चिन्ता, परेशानी संघर्ष एवं झंझटों का सामना करना पड़ता है।

तुला लग्नः
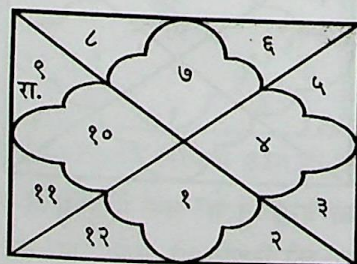
नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक गुप्त-युक्तियों के बल पर अपने भाग्य की विशेष वृद्धि करता है तथा धर्म का भी सतर्कतापूर्वक पालन करता है। ऐसे व्यक्ति की भाग्योन्नति में कभी-कभी बाधाएँ भी आती हैं, परन्तु अपने चातुर्य, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर वह उन सब पर सफलता प्राप्त करता है तथा भाग्यवान समझा जाता है।

तुला लग्नः
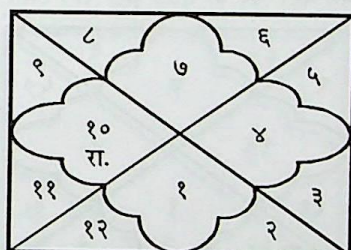
दशम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है। साथ ही राज्य के क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। व्यवसाय के क्षेत्र में उसके समक्ष बड़ी-बड़ी कठिनाईयाँ आती हैं तथा उन्नति के मार्ग में रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा जातक बहुत परेशानियों तथा कठिनाईयों के बाद ही उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर पाता है।

तुला लग्नः
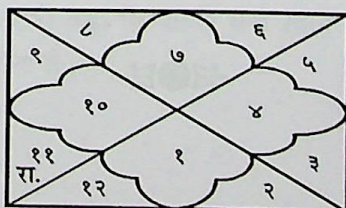
एकादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग में अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु गुप्त-युक्ति, चातुर्य एवं हिम्मत के कारण उन सब पर विजय प्राप्त करके जातक अपनी उन्नति करता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु अपनी हिम्मत एवं परिश्रम के बल पर अन्ततः उसे सफलता भी प्राप्त होती है।

तुला लग्नः
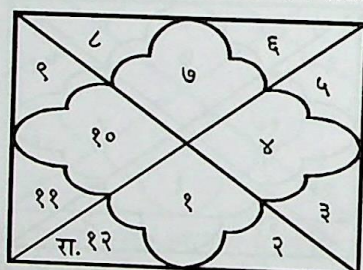
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा कभी-कभी किसी बड़े संकट का शिकार भी होना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से जातक को कुछ शक्ति भी प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक अपने गुप्त युक्ति-बल, परिश्रम, विवेक, कूटनीति, धैर्य तथा हिम्मत के कारण जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

तुला लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

तुला लग्नः
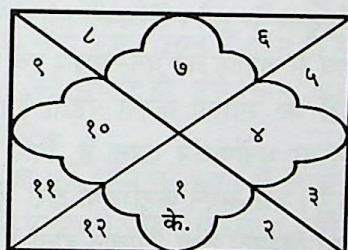
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-पक्ष में कभी-कभी विशेष कष्ट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु ऐसा जातक गुप्त-युक्ति, धैर्य एवं चातुर्य के बल पर अपने व्यक्तित्व की उन्नति करता है तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। शरीर के भीतर गुप्त कमजोरी के रहते हुए भी वह बाहर से बड़ा हिम्मतवर बना रहता है तथा बुद्धि-बल से सफल एवं विजयी होता है।

तुला लग्नः
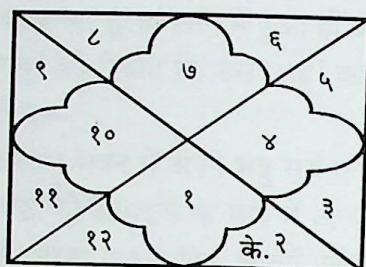
८　६　९　७　५　१०　४　११　१　३　१२　के. २

द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन-संचय एवं धन-प्राप्ति के मार्ग में कठिनाईयों एवं संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर धनोपार्जन करता है, फिर भी वह चिन्तित तथा परेशान ही बना रहता है। उसे अपने कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान होता है।

तुला लग्नः
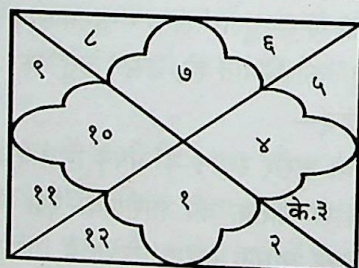
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है और उसे भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान तथा साहसी होता है। कभी-कभी

उसे भाई-बहिनों के कारण कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है तथा मन के भीतर परेशानी एवं कमजोरी उत्पन्न होती है, फिर भी वह बड़ी हिम्मत से काम लेता है तथा अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

तुला लग्नः

८ ६ ९ ७ ५ १० के. ४ ११ १ ३ १२ २
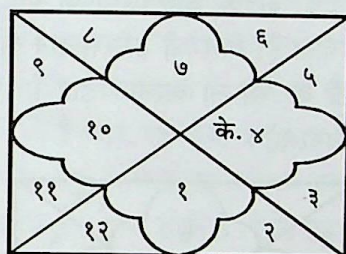
चतुर्थ भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है। वह घरेलू झंझटों का शिकार बना रहता है। कभी-कभी उसके परिवार में घोर अशान्ति उत्पन्न हो जाती है, फिर भी वह अपने धैर्य, साहस, बुद्धि एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है और थोड़ी-बहुत सफलता भी पाता है।

तुला लग्नः

८ ६ के. ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २
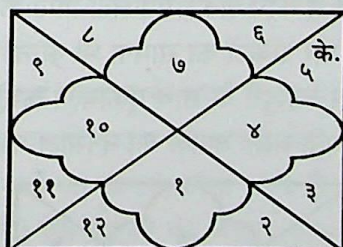
पंचम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शनि की

कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से संकट एवं परेशानी की प्राप्ति होती है, साथ ही विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती हैं। शनि की राशि पर स्थित होने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा विद्याध्ययन करता है तथा अनेक कठिनाईयों के बाद सन्तान-पक्ष में भी थोड़ी-बहुत सफलता पाता है, फिर भी उसे सन्तान की ओर से अत्यधिक परेशानियाँ तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। सम्भव है कि ऐसा व्यक्ति निःसन्तान ही बना रहे।
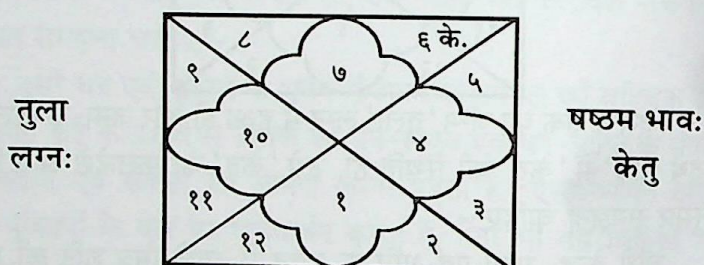
तुला लग्नः

षष्ठम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक झगड़े-झंझट, रोग एवं शत्रु पक्ष में बड़ी हिम्मत, बहादुरी, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी शत्रुओं के कारण उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह भयभीत नहीं होता और बहादुरी के साथ मुकाबला करते हुए उन पर विजय पाता है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले जातक का ननसाल पक्ष कमजोर रहता है।
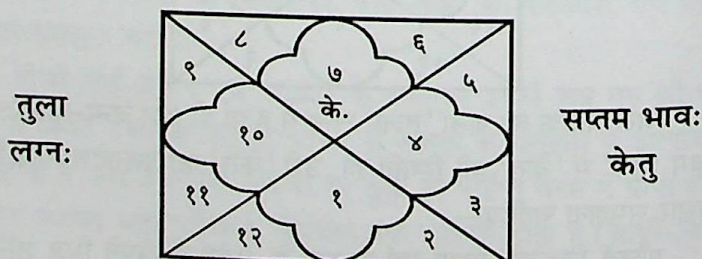
तुला लग्नः

सप्तम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष द्वारा विशेष कष्ट का अनुभव होता है तथा दैनिक आमदनी के मार्ग में भी अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वह स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए गुप्त-युक्तियों, धैर्य, हिम्मत एवं परिश्रम का सहारा लेता है, जिसके कारण थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को इन्द्रिय-विकार का भी सामना करना पड़ता है तथा गृहस्थी के संचालन में बहुत कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं।
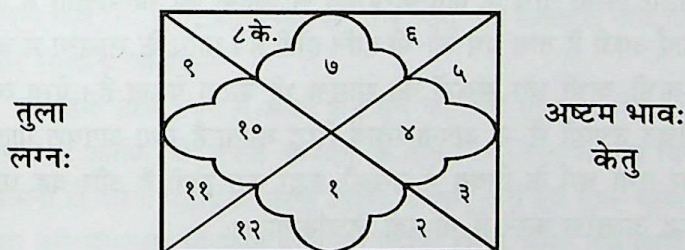
तुला लग्नः

अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के विषय में अनेक बाद कठिनाईयों तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। उसे पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन गुप्त-चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। उसके पेट में भी कुछ-न-कुछ विकार रहता है, परन्तु वह साहस, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर किसी प्रकार अपने जीवन को आगे बढ़ाता चलता है।
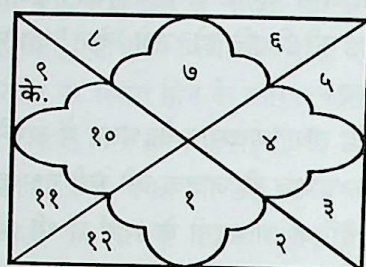
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में विशेष बाधाएँ आती हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। भाग्य के सम्बन्ध में जातक को कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनुचित उपायों से भी अपना स्वार्थ सिद्ध करता है तथा अपयश पाता है। ईश्वर तथा धर्म के विषय में उसकी श्रद्धा कम होती है और वह धर्म के विरुद्ध आचरण करने में भी नहीं हिचकिचाता।
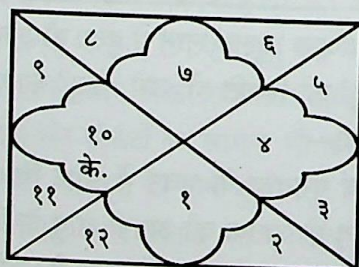
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है, राजकीय क्षेत्रों से परेशानी होती है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी

बारम्बार कठिनाईयों एवं विघ्नों का सामना करना पड़ता है। किसी-किसी समय उसके सामने बड़े व्यावसायिक संकट भी उपस्थित हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में अनेक बार उतार-चढ़ाव देखता है तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर सामान्य सफलता प्राप्त करता है।
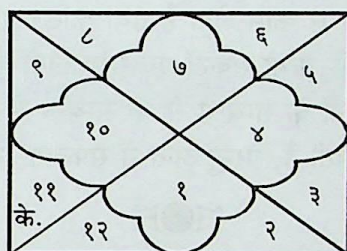
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आमदनी के क्षेत्र में कठिनाईयों तथा विघ्नों का सामना तो करना पड़ता है, परन्तु विशेष परिश्रम, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों के द्वारा उसे सफलता भी प्राप्त होती है। किसी-किसी समय उसे लाभ के क्षेत्र में गहरे संकटों में भी फँस जाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अधिक मुनाफा खाने के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा प्रभावशाली भी होता है। ऐसे लोग अनेक कठिनाईयों एवं संकटों से गुजरने के बाद सफलता प्राप्त करते हैं।
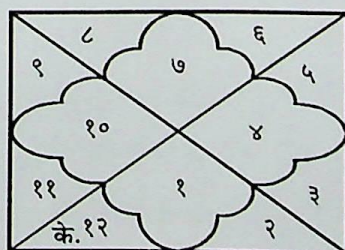
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक खूब खर्चीला होता है, साथ ही उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने खर्च को चलाते रहने के लिए विवेक-बुद्धि से काम लेता है तथा कठिन परिश्रम भी करता है। इतने पर भी उसे कभी-कभी संकटों एवं परेशानियों का शिकार बन जाना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी सम्बन्ध से भी उसे कभी-कभी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं, परन्तु अन्त में सफलता मिलती है।

८.

वृश्चिक लग्न
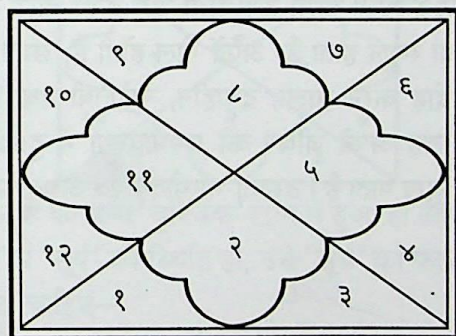
वृश्चिक लग्न वाली कुण्डलियों के
सभी भावों में स्थित सभी ग्रहों का
अलग-अलग फलादेश

'वृश्चिक' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाला जातक शूरवीर, अत्यन्त विचारशील, निर्दोष, बुद्धिजीवी, क्रोधी, राजाओं से पूजित, गुणवान, शास्त्रज्ञ, शत्रुनाशक, कपटी, पाखण्डी, मिथ्यावादी, तमोगुणी, दूसरों के मन की बात जानने वाला, पर-निन्दक, कटु स्वभाव वाला तथा सेवा कर्म करने वाला होता है। उसका शरीर ठिगना तथा स्थूल होता है, आँखें गोल होती हैं, छाती चौड़ी होती है। वह भाईयों से द्रोह करने वाला, दयाहीन, ज्योतिषी तथा भिक्षावृत्ति करने वाला होता है। वह अपने जीवन की प्रथमावस्था में दुःखी रहता है तथा मध्यमावस्था में सुख पाता है। उसका भाग्योदय २० अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है।
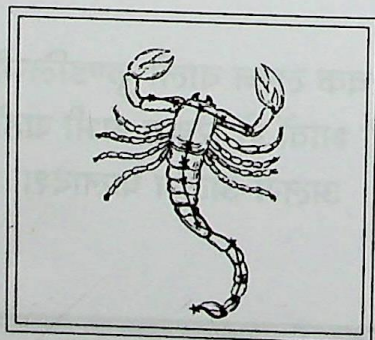
वृश्चिक लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल

वृश्चिक लग्न:
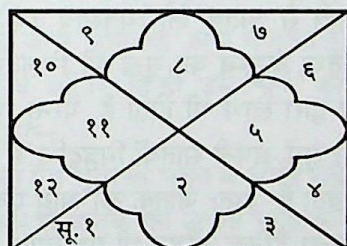
प्रथम भाव: सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक सुन्दर, स्वस्थ, सम्मानी, स्वाभिमानी, क्रोधी, प्रभावशाली तथा गौरव-युक्त होता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होता है। वह सुन्दर वस्त्राभूषणों को धारण करने वाला तथा यशस्वी होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में सप्तम भाव को देखता है, अत: जातक का अपनी स्त्री से कुछ मतभेद बना रहता है तथा दैनिक रोजगार में कुछ कठिनाईयों का अनुभव भी होता है।

वृश्चिक लग्नः
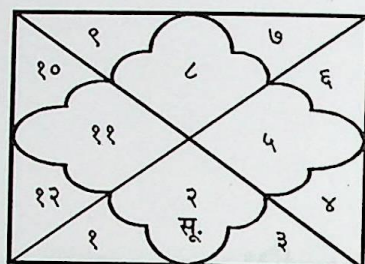
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय एवं पितृ पक्ष से धन की शक्ति प्राप्त होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। उसे राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा लाभ भी होता है, परन्तु पिता के सुख में कुछ कमी रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है और उसका दैनिक जीवन भी प्रभावपूर्ण बना रहता है।

वृश्चिक लग्नः
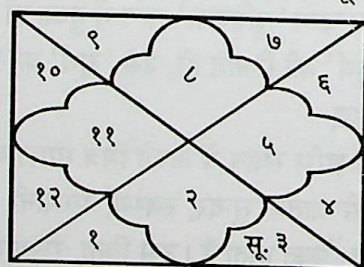
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख, सम्मान, सहयोग तथा सफलता की प्राप्ति

होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि के नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा जातक बड़ा तेजस्वी, साहसी तथा पुरुषार्थी होता है।
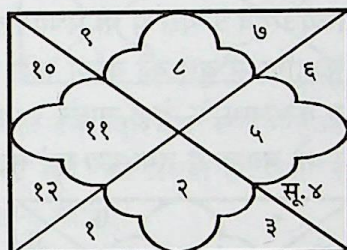
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का अपनी माता के साथ मतभेद रहता है और भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आती है। घरेलू सुख तो मिलता है, परन्तु उसमें भी कुछ त्रुटियाँ बनी रहती हैं। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं दृष्टि से दशम भाव को स्वराशि में देखता है, अतः जातक को पिता का सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति स्वयं करता है।

वृश्चिक लग्नः
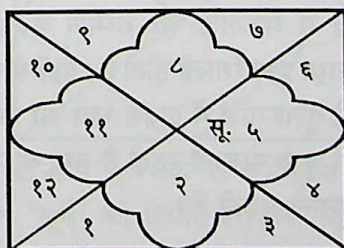
पंचम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। वह राजनीति के क्षेत्र में उन्नति करता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी सम्मान तथा सहयोग पाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं। वह अपने बुद्धि-बल से आमदनी को बढ़ाता है तथा यश एवं सुख प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्नः
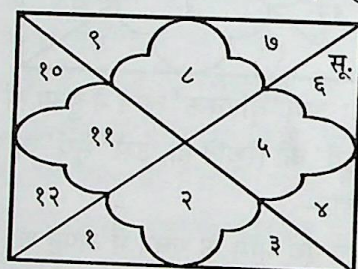
षष्ठम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में विशेष प्रभाव रखने वाला तथा विजयी होता है। अपने माता-पिता से सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा प्रभावशाली होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामलों में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं।

वृश्चिक लग्नः
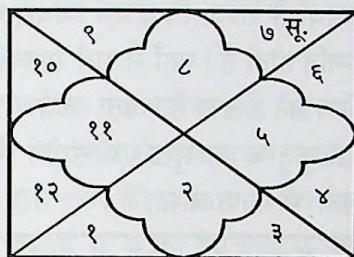
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सामान्य सन्तोष रहता है, परन्तु उसको शक्ति भी मिलती है। इसी प्रकार कुछ कठिनाईयों के साथ दैनिक रोजगार में भी सफलता मिलती है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से साधारण मान, सहयोग एवं सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक का शरीर सुन्दर एवं प्रभावशाली होता है। वह तेजस्वी तथा गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला, प्रभावशाली, त्यागी तथा उन्नतिशील होता है।

वृश्चिक लग्नः
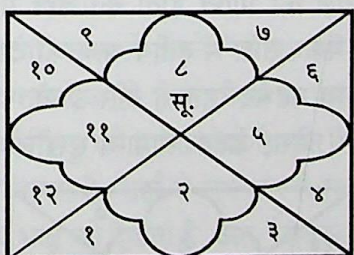
अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के आयु पक्ष में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व

का लाभ मिलता है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कठिनाईयों के साथ उन्नति होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि करता है तथा उसे कुटुम्ब का सुख एवं संयोग भी प्राप्त होता है। वह बाहरी स्थानों का सम्पर्क भी प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्नः
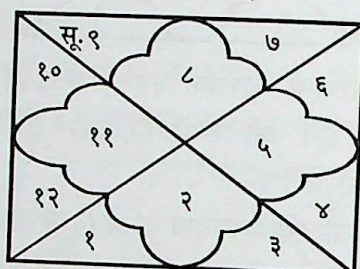
नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन करता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, सुख एवं यश की प्राप्ति होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक का भाई-बहिनों के साथ मतभेद रहता है और उसके पराक्रम में भी सामान्य वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सामान्य सुखीजीवन व्यतीत करता है।

वृश्चिक लग्नः
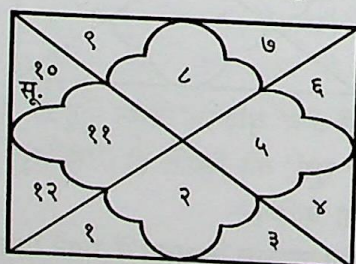
दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है। वह अपनी मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए [illegible] कर्म भी करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अत: जातक का अपनी माँ के साथ वैमनस्य रहता है। साथ ही भूमि तथा मकान आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है।

वृश्चिक लग्नः
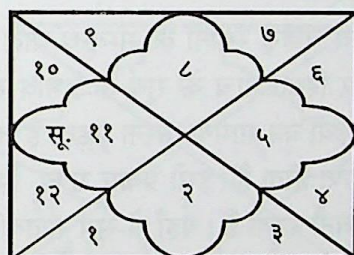
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने माता, पिता के द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है, राज्य द्वारा सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी विशेष लाभ एवं यश मिलता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचम भाव को देखता है, अत: जातक को सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या एवं बुद्धि में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति शासन करने वाला, तेजस्वी, तेज स्वभाव का, स्वाभिमानी यशस्वी तथा प्रतिष्ठित होता है।
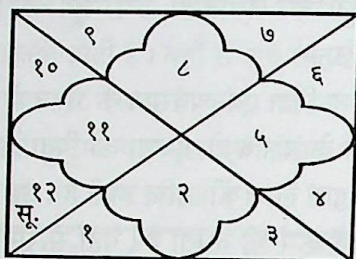
वृश्चिक लग्नः

द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध वाले भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट प्राप्त होता है। इसी प्रकार राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से भी परेशानियाँ बनी रहती हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि के कामों से लाभ प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्न
बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

वृश्चिक लग्नः
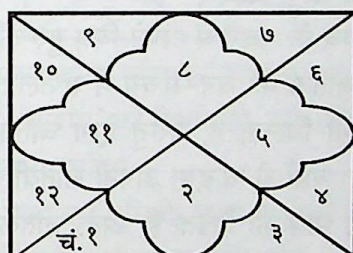
प्रथम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता रहती है तथा यश प्राप्ति के मार्ग में भी कठिनाईयाँ आती हैं, जिसके कारण मन चिन्तित-सा बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर तथा मनोनुकूल स्त्री प्राप्त होती है, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

वृश्चिक लग्नः
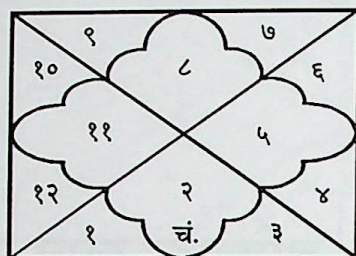
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन-संचय में सफलता प्राप्त होती है, साथ ही कौटुम्बिक सुख भी मिलता है, परन्तु ऐसा जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु की शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक प्रायः भाग्यवान, धनी तथा सुखी होता है।

वृश्चिक लग्नः

तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की मानसिक शक्ति

अत्यन्त प्रबल होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा यश प्राप्त करता है तथा भाग्यशाली समझा जाता है।
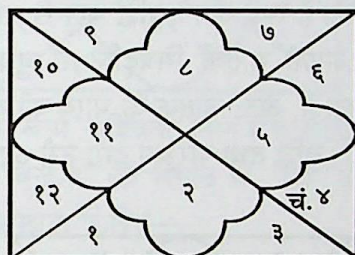
चतुर्थ भावः
चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है, परन्तु शत्रु राशिस्थ होने के कारण कुछ असन्तोष भी बना रहता है। ऐसा जातक धर्म का पालन भी करता है तथा मनोयोग द्वारा भाग्य की भी उन्नति बनाता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख-सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

वृश्चिक
लग्नः
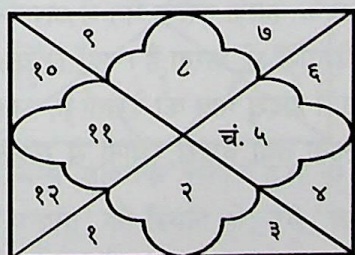
पंचम भावः
चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त होती है। वह धर्मात्मा, सज्जन, विनम्र तथा मधुरभाषी भी होता है तथा अपने बुद्धि बल से भाग्य की उन्नति करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह अच्छा लाभ कमाता है। बुद्धि तथा परिश्रम द्वारा उसे आमदनी के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते रहते हैं।
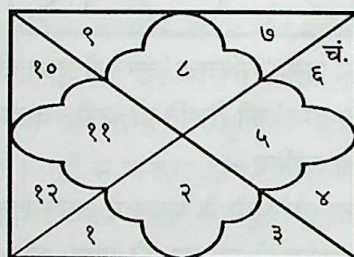
षष्ठम भावः
चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में शान्ति नीति से सफलता प्राप्त करता है। शत्रुओं तथा झंझटों के कारण उसके मन में अशान्ति बनी रहती है। वह परिश्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि भी करता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक अपने भाग्य बल से खर्च को चलाता तथा बाहरी स्थानों से सफलता एवं शक्ति प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्नः
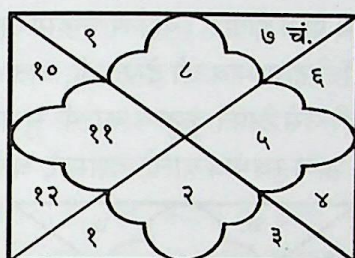
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर एवं भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा गृहस्थ-जीवन सुखमय व्यतीत होता है। वह व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है। ऐसे जातक का मनोबल बढ़ा हुआ रहता है, जिसके कारण भाग्य तथा यश में वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ कमजोरी बनी रहती है। साथ ही भाग्य तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ कमी का अनुभव होता है।

वृश्चिक लग्नः
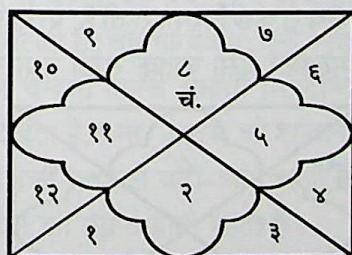
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है और उसे

पुरातत्त्व शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन का लाभ प्राप्त करता है, साथ ही उसे अपने कुटुम्ब का भी सुख-सहयोग मिलता है। संक्षेप में, ऐसा जातक शान्त स्वभाव वाला, यशस्वी, धनी तथा सुखी होता है।

वृश्चिक लग्नः
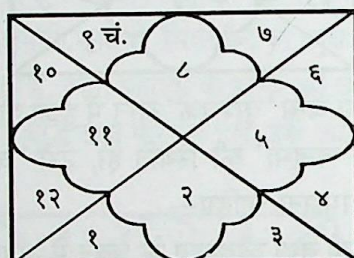
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की श्रेष्ठ उन्नति होती है। वह भाग्यवान, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों के सम्बन्ध से कुछ निराशा रहती है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक सुखी तथा समृद्धशाली होता है।

वृश्चिक लग्नः
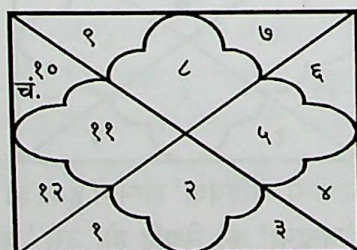
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। वह भाग्यवान तथा धर्मात्मा भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहती है। फिर भी वह सुखी, यशस्वी, सन्तुष्ट तथा धनी जीवन व्यतीत करता है।

वृश्चिक लग्न:
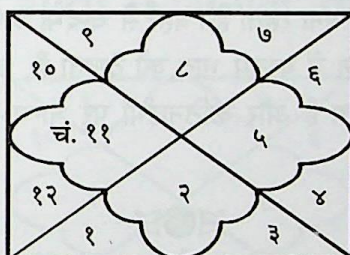
एकादश भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है तथा धन एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता मिलती है। वह भाग्यवान, धनी, सुखी, यशस्वी तथा धर्मपराम्यण होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचम भाव को देखता है, अत: जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। उसका मनोबल बढ़ा-चढ़ा रहता है। वाणी में शक्ति रहती है तथा यश एवं लाभ की प्राप्ति होती रहती है।

वृश्चिक लग्न:
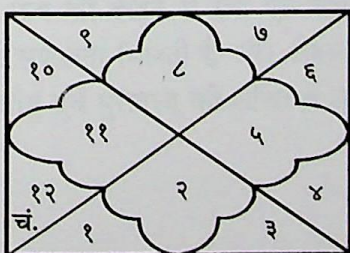
द्वादश भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु उसकी पूर्ति में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता। साथ ही उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अत्यधिक शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है। अपने स्थान पर उसका भाग्य कमजोर बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में शान्ति से काम लेता है और कठिनाईयों पर भाग्य-बल से विजय प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

वृश्चिक लग्न:
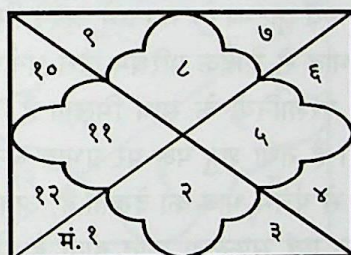
प्रथम भाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति में वृद्धि होती है और उसे शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त होती है, परन्तु कभी-कभी बीमार भी होना पड़ता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुख में कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है और आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

वृश्चिक लग्नः
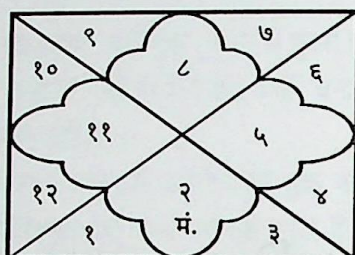
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा कुटुम्ब का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है। शारीरिक-सुख एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की हानि होती है। साथ ही यश की भी कमी रहती है।

वृश्चिक लग्नः
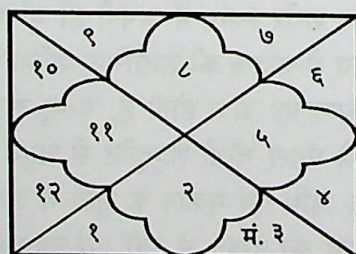
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर

स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से षष्ठम भाव को अपनी ही मेष राशि में देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा अपना प्रभाव बनाए रखता है। सातवीं नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर अधिक भरोसा रखता है तथा धर्म का भी यथाविधि पालन नहीं करता। आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में उन्नति, यश, लाभ, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति व्यवसायिक सफलता खूब प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्नः
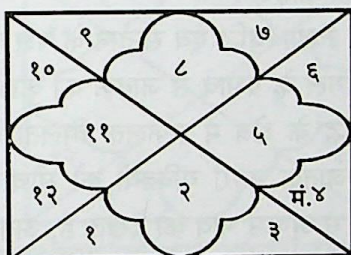
चतुर्थ भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा शारीरिक-सुख में भी कमजोरी रहती है चौथी दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष से मतभेद युक्त शक्ति प्राप्त होती है एवं परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता, यश, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।
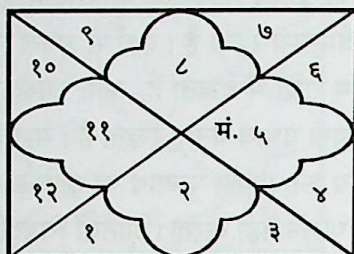
पंचम भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है और शत्रु पक्ष पर विजय पाने के लिए जातक गहरी युक्तियों को सोचता रहता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु की वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहने के कारण जातक को परेशानी होती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कठिनाईयों के साथ सामान्य लाभ होता है।

वृश्चिक
लग्नः
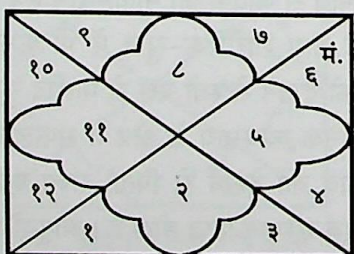
षष्ठम भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु एवं रोग-भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा विजय प्राप्त करता है। चौथी नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है तथा यश-सम्मान में भी कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित होते हैं। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ प्रभाव बना रहता है तथा परिश्रम द्वारा आत्मबल की सामान्य वृद्धि होती है।

वृश्चिक लग्नः
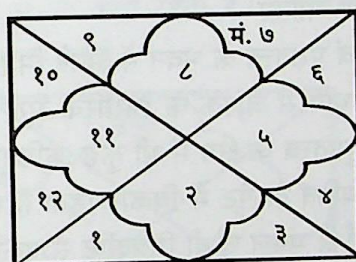
सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सामान्य परेशानी रहती है तथा जननेन्द्रिय में कुछ विकार होता है। दैनिक रोजगार के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाईयाँ आती हैं। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यापार के पक्ष से सफलता, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने से जातक के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन वृद्धि एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। कुल मिलाकर जातक का जीवन सामान्यतः सुखी रहता है।
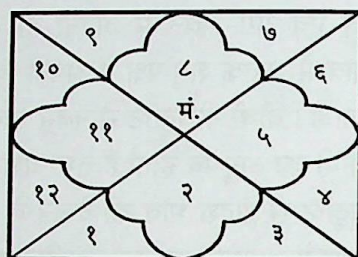
अष्टम भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सुख एवं सौन्दर्य में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाईयाँ तथा परेशानियाँ बनी रहती हैं। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार रहता है और शत्रु पक्ष से भी परेशानी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी का अच्छा योग बनता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन की शक्ति भी प्राप्त होती है परन्तु उनसे कुछ वैमनस्य भी बना रहता है।

वृश्चिक
लग्नः
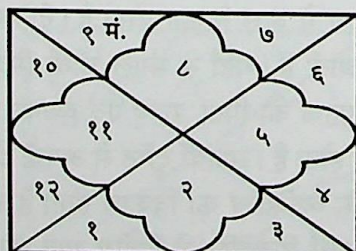
नवम भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। साथ ही शत्रु पक्ष से भी झंझट एवं भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के साथ कुछ वैमनस्य बना रहता है तथा भूमि, मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। कुल मिलाकर ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

वृश्चिक लग्नः
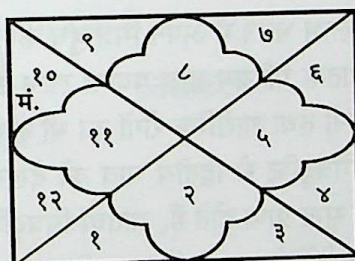
दशम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सफलता, सुख एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर विजय पाने वाला होता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखता है, अत: जातक को प्रबल शारीरिक शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति स्वस्थ, पुष्ट तथा स्वाभिमानी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त

होती है।

वृश्चिक लग्नः
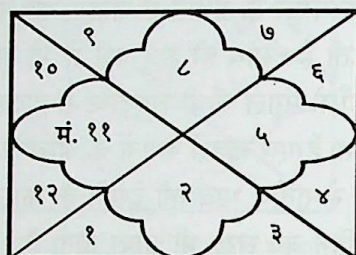
एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। परन्तु उसे शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी तथा शारीरिक रोगों का भी सामना करना पड़ता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन एवं कुटुम्ब की शक्ति तथा सुख प्राप्त होते हैं, सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से कुछ कठिनाईयों के साथ विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा ननसाल के पक्ष से लाभ होता है। ऐसा जातक बड़ा स्वाभिमानी तथा प्रभावशाली होता है।

वृश्चिक लग्नः
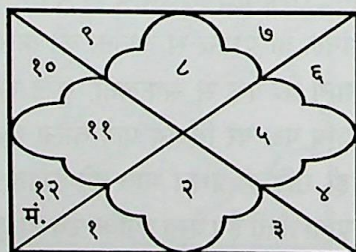
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से शान्ति एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही शरीर में कमजोरी भी बनी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठम भाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के कामों में सफलता पाता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष से कुछ वैमनस्य रहते हुए भी उसका सुख प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ होता है।

वृश्चिक लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

वृश्चिक लग्नः
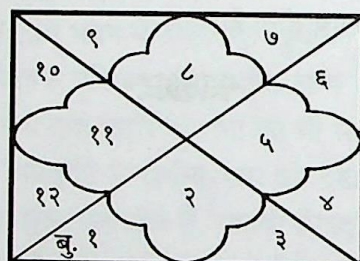
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। वह अपनी शारीरिक शक्ति एवं परिश्रम द्वारा श्रेष्ठ लाभ एवं आयु की शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाई के साथ सहयोग प्राप्त होता है एवं दैनिक व्यवसाय में भी परिश्रम के साथ सफलता प्राप्त होती है। बुध के अष्टमेश होने के कारण जातक को शारीरिक संकटों का सामना करना पड़ता है।

वृश्चिक लग्नः
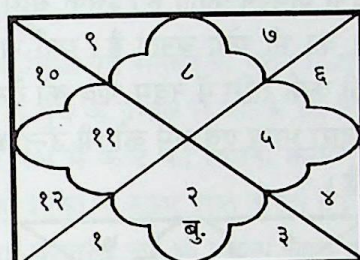
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन-संचय तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु बुध के अष्टमेश होने के कारण उसमें कुछ कठिनाईयाँ भी आती हैं। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में अष्टम भाव को देखता है, जिससे जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक शान-शौकत का जीवन व्यतीत करता है। वह यशस्वी तथा प्रतिष्ठित होता है।
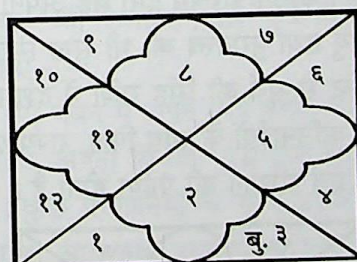
वृश्चिक लग्नः

तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। बुध के अष्टमेश होने के कारण इन दोनों

क्षेत्रों में कुछ कठिनाईयाँ अवश्य आती हैं। इसके साथ ही जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के लाभ का भी योग बनता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक अपनी विवेक-शक्ति द्वारा भाग्य एवं धर्म की भी उन्नति करता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।
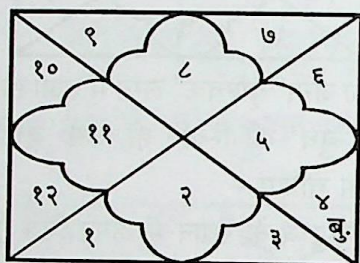
वृश्चिक लग्नः

चतुर्थ भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता का सुख एवं भूमि-भवन का लाभ प्राप्त होता है। कठिन परिश्रम द्वारा वह अपनी आय के साधनों को भी बढ़ाता है उसे आयु तथा पुरातत्त्व का भी सुख मिलता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

वृश्चिक लग्नः
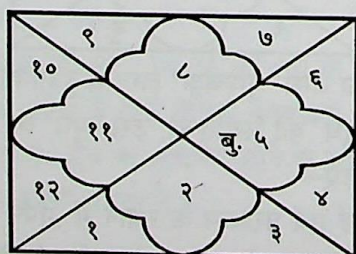
पंचम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कमी तथा सन्तान पक्ष में कष्ट का सामना करना पड़ता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी विवेक-शक्ति से लाभ प्राप्त करता है। आयु के क्षेत्र में कुछ परेशानी रहती है तथा पुरातत्त्व का भी स्वल्प लाभ होता है। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में एकादश भाव को देखता है, जिसके कारण जातक की आमदनी खूब रहती है और वह सुखी जीवन व्यतीत करता है।

वृश्चिक लग्नः
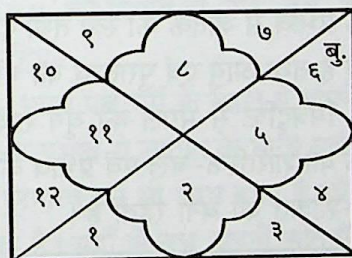
९ ७ बु. ६ १० ८ ११ ५ १२ २ ४ १ ३

षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक बुद्धि द्वारा शत्रु पक्ष में विजय एवं लाभ प्राप्त करता है। कुछ परेशानियों के साथ उसकी आमदनी का मार्ग प्रशस्त होता है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी प्राप्त होता है।

वृश्चिक लग्नः
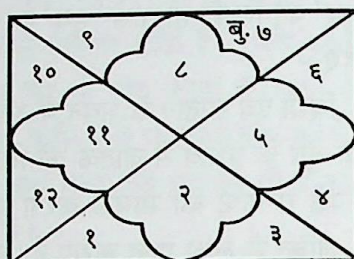
सप्तम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक रोजगार के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृष राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक-बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है और उसकी दिनचर्या शान-शौकत की बनी रहती है।

वृश्चिक लग्नः
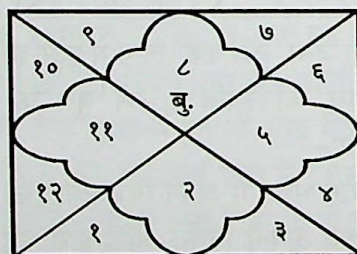
अष्टम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक की जीवन-शक्ति में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। बुध के अष्टमेश होने के कारण आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा जातक अमीरी ढंग का

जीवन व्यतीत करता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक विवेक द्वारा धन का संचय करता है और उसे कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है।

वृश्चिक लग्नः

९ बु. ७
१० ८ ६
११ ५
१२ २ ४
१ ३
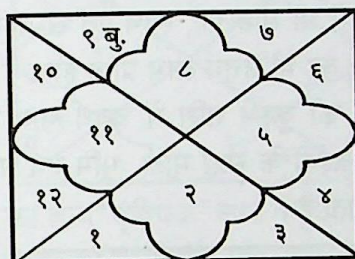
नवम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुछ स्वार्थी स्वभाव को भी होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कमी के साथ भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान माना जाता है और सुखी जीवन व्यतीत करता है।

वृश्चिक लग्नः
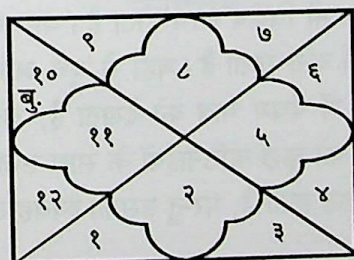
दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को परेशानियों के साथ पिता द्वारा सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। इसी तरह कुछ कठिनाईयों के साथ राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। उसे पुरातत्त्व एवं आयु का भी उत्तम लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख तथा लाभ भी प्राप्त होता है।

वृश्चिक लग्नः
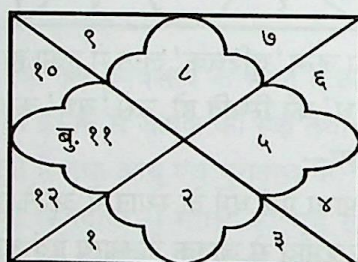
एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के एकादश भाव में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत ही अच्छी रहती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का भी विशेष लाभ होता है। वह अपने जीवन में उमंग एवं उत्साह से परिपूर्ण बना रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः बुध के अष्टमेश होने के कारण जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु उसका व्यवहार कुछ रूखापन लिए रहता है।

वृश्चिक लग्नः
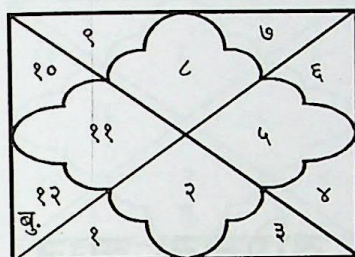
द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठम भाव को देखता है, जिसके फलस्वरूप जातक शत्रु पक्ष में अपनी विवेक-बुद्धि के द्वारा विनम्र रहकर काम निकालता है। उसका जीवन भ्रमणशील होता है तथा चित्त में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

वृश्चिक लग्न
बारह भावों में 'गुरु' का फल

वृश्चिक लग्नः
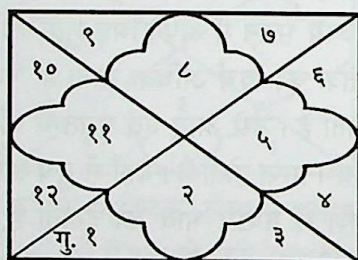
प्रथम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शारीरिक शक्ति प्रभाव एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी श्रेष्ठ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सामान्य कठिनाईयाँ आती हैं, परन्तु बाद में स्त्री तथा रोजगार दोनों ही पक्षों से शक्ति मिलती है। नौवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा जातक धर्म का पालन भी करता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति भाग्यवान तथा सुखी होता है।
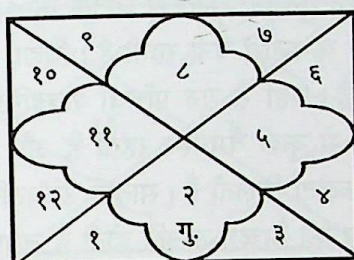
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक धन का संचय करता है तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त करता है, परन्तु गुरु के द्वितीयेश होने के कारण सन्तान पक्ष के सुख में कुछ कमी आ जाती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष में अपनी बुद्धिमान से सफलता प्राप्त करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान, सहयोग तथा सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुद्धिमान तथा धनवान होता है।
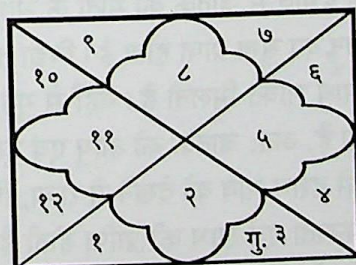
जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन तथा पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर

राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को भाई–बहिन के सुख में बाधा तथा पराक्रम में कमजोरी बनी रहती है। विद्या, धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है और व्यवसायिक क्षेत्र में कठिन परिश्रम से सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य की अच्छी उन्नति होती है तथा धर्म पालन में रुचि बनी रहती है। नौवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी का योग अच्छा बनता है। संक्षेप में, ऐसा जातक प्रायः धनी तथा सुखी होता है।

वृश्चिक लग्नः
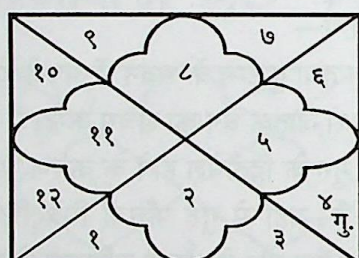
चतुर्थ भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का माता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ शक्ति मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, यश, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साधारण लाभ होता है।

वृश्चिक लग्नः
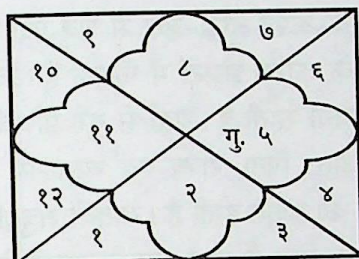
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। साथ ही उसे धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र तथा उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखता है। अतः जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी बनी रहती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति, सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा जातक यश, सम्मान, प्रतिष्ठा, धन, ऐश्वर्य आदि सभी वस्तुएँ प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्नः
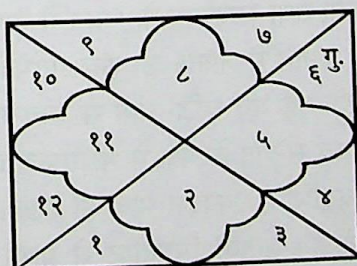
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित

गुरु के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल से शत्रु पक्ष में काम निकालता है तथा धन एवं कुटुम्ब के कारण झंझटों में फँसता है। विद्या तथा सन्तान पक्ष में भी कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति-सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से व्यय भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति मिलती है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से कुछ वैमनस्य के साथ शक्ति मिलती है।
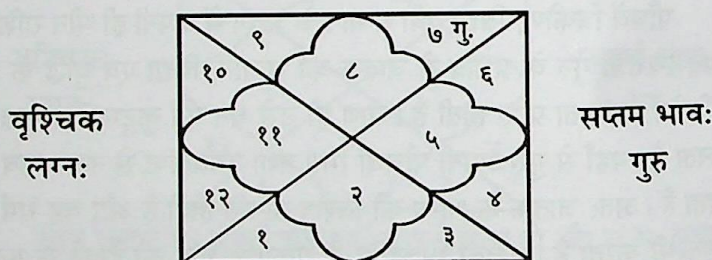
सप्तम भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को कुछ मतभेदों के बावजूद भी स्त्री का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है एवं बुद्धि-योग से व्यवसाय में लाभ होता है। साथ ही विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा नौवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पुरुषार्थ में भी कमी का अनुभव होता है।

वृश्चिक लग्नः
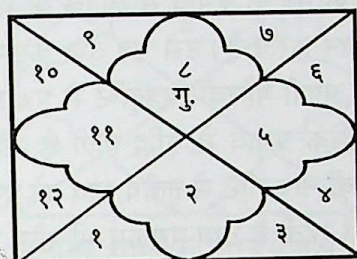
अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, धन एवं कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है एवं नौवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ परेशानियाँ उपस्थित होती हैं, परन्तु जातक अपने बुद्धि-बल से सुख-भोग करता रहता है।

वृश्चिक लग्नः
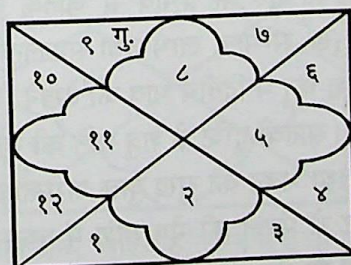
नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क

राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन करता है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है और उसे मान-सम्मान मिलता रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम भी क्षीण होता है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचम भाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि की विशेष शक्ति प्राप्त होती है जिसके कारण जातक यशस्वी भी बनता है।
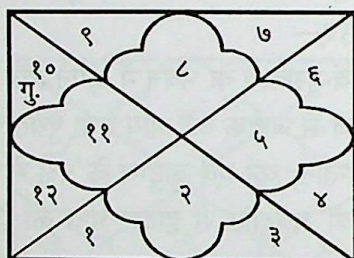
दशम भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख-सम्मान, लाभ तथा सफलता की प्राप्ति होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि धनु में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोष के साथ प्राप्त होता है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु तथा झगड़ों के क्षेत्र में बुद्धिमानी द्वारा सफलता एवं विजय प्राप्त होती है।

वृश्चिक लग्नः
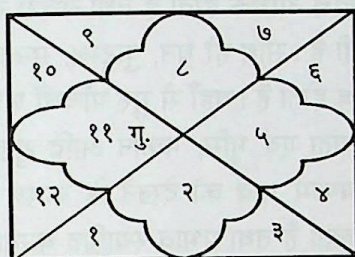
एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती रहती है। साथ ही धन एवं कुटुम्ब का सुख भी अच्छा मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को शत्रु की नीच राशि में देखता है, अतः भाई-बहिन के सुख में कमी आती है तथा पराक्रम की भी हानि होती है। सातवीं दृष्टि से पंचम भाव में अपनी ही राशि को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में विशेष उन्नति प्राप्त होती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के साथ कुछ वैमनस्य रहते हुए भी लाभ होता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता प्राप्त होती है।

वृश्चिक लग्नः
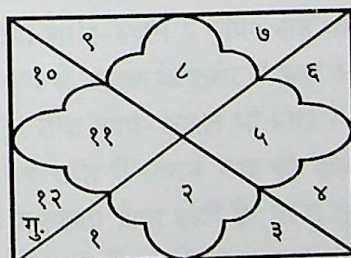
द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के

प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों में भी कमजोरी बनी रहती है। साथ ही धन, कुटुम्ब, सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में भी कमी का अनुभव होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि, मकान आदि सुख में कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में चतुराई से काम निकालता है तथा प्रभाव स्थापित करता है। नौवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। ऐसे जातक का चित्त प्रायः अशान्त बना रहता है।
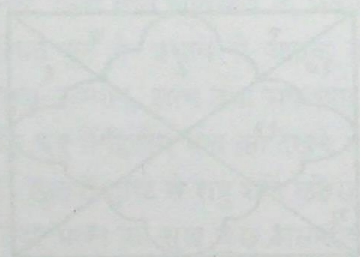
वृश्चिक लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

वृश्चिक लग्नः
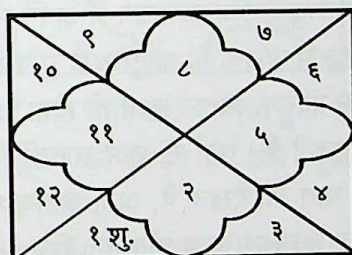
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ कमजोरी रहती है, परन्तु वह प्रभावशाली, चतुर तथा कार्य-कुशल भी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृष राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण जातक को सामान्य कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है।
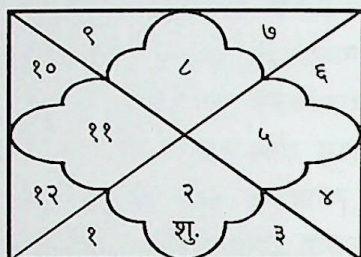
द्वितीय भावः
शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है तथा शुक्र के व्ययेश होने के कारण धन का लाभ तो होता है, परन्तु खर्च अधिक होने से परेशानी बनी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में तो वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ कम होता है। फिर भी, ऐसा जातक धनी तथा चतुर माना जाता है।

वृश्चिक
लग्नः
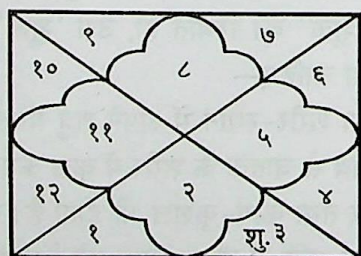
तृतीय भावः
शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख एवं पुरुषार्थ में कुछ कमी बनी रहती है। वह खर्च अधिक करता है तथा बाहरी

स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी उठाता है। वह अत्यन्त चतुराई से अपने घर का खर्च चलाता है। स्त्री के पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति कुछ कमजोरी के साथ होती है और वह धर्म का भी थोड़ा-बहुत पालन करता है।

वृश्चिक लग्नः
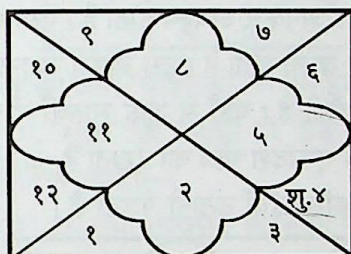
चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता, भूमि एवं भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है। इसी प्रकार भूमि, मकान तथा स्त्री के पक्ष में भी कमजोरी बनी रहती है। उसका खर्च आराम से चलता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ सुख-सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

वृश्चिक लग्नः

पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमियों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु वह किसी विशेष कला का जानकार अवश्य होता है। ऐसा व्यक्ति वाक्चतुर तथा स्त्री के प्रभाव में रहने वाला होता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में एकादश भाव को देखता है, अत: जातक को आमदनी के मार्ग में भी कुछ कठिनाईयाँ उठानी पड़ती है।

वृश्चिक लग्न:

षष्ठम भाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा अपना काम निकालता है। उसे अपनी गृहस्थी के कार्य-संचालन में भी कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से परेशानी होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में द्वादश भाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

वृश्चिक लग्नः

सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसय के भवन में अपनी ही वृष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं शक्ति प्राप्त होती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे अपना खर्च चलाने में सहायता मिलती है। ऐसा व्यक्ति चतुर तथा बुद्धिमान भी होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता बनी रहती है, फिर भी वह प्रभावशाली, यशस्वी, व्यवहारिक तथा कार्यकुशल व्यक्ति होता है।

वृश्चिक लग्नः
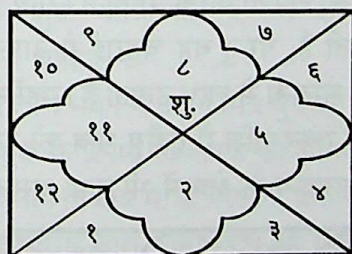
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अुनसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु, पुरातत्त्व, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में संकटों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वह

गुप्त-चतुराई तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करता रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अत: जातक को धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कठिनाईयाँ आती हैं। वह बड़ी चतुराई से काम लेकर किसी प्रकार अपनी इज्जत को बचाए रखता है।

वृश्चिक लग्नः
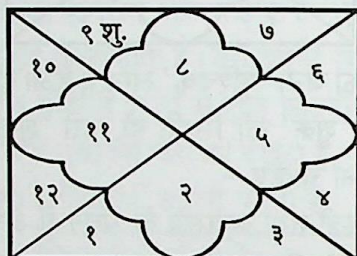
नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही स्त्री के सम्बन्ध में भी कुछ परेशानी रहती है, परन्तु वह चतुराई से अपना काम निकालता है और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। यहाँ से व्ययेश शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीय भाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहिन एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी कुछ असन्तोष बना रहता है।

वृश्चिक लग्नः
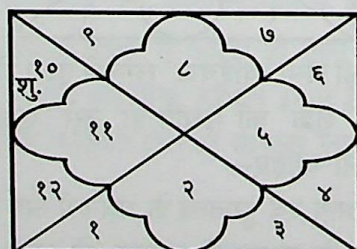
दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों एवं कमियों के साथ सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार स्त्री तथा गृहस्थी के सुख में भी कुछ कमी आती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता का सुख-सहयोग प्राप्त होता है तथा भूमि एवं मकानादि का सुख भी मिलता है।

वृश्चिक लग्नः
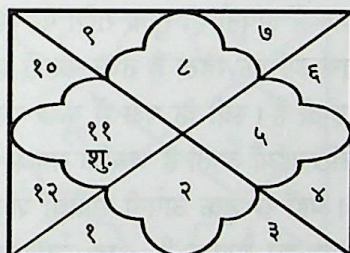
एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में कमी आती है। साथ ही स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानी बनी रहती है। परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चतुराई द्वारा थोड़ा लाभ भी मिलता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रु गुरु की मीन राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि की शक्ति तो प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। सामान्यतः ऐसा जातक विद्वान, बुद्धिमान, चतुर तथा कूटनीतिज्ञ होता है।

वृश्चिक लग्नः
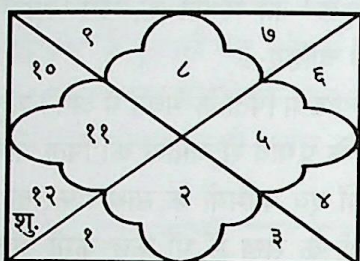
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं शक्ति प्राप्त होती है। स्त्री के पक्ष में कुछ परेशानी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय में कठिनाईयाँ आती हैं जबकि बाहरी स्थानों के व्यवसाय में सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्न
बारह भावों में 'शनि' का फल

वृश्चिक लग्नः
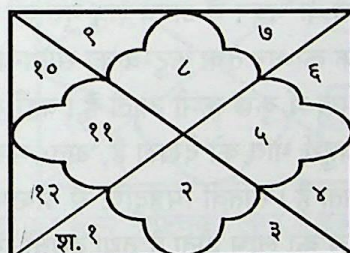
प्रथम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शरीर में शान्ति एवं उग्रता दोनों का ही दर्शन होता है। उसे माता, भूमि तथा मकान का भी सामान्य सुख मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही मकर राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयों के बाद सफलता मिलती है।

वृश्चिक लग्नः
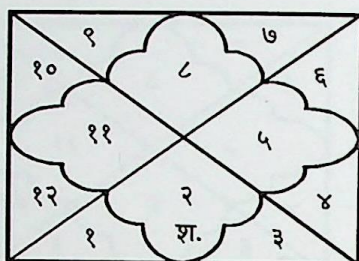
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

वृश्चिक लग्नः
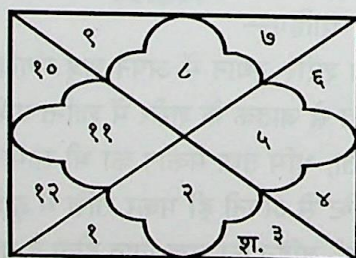
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता

है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः कुछ कठिनाईयों के साथ विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण कुछ कठिनाईयों के साथ भाग्योन्नति होती है तथा कुछ मतभेदों के साथ धर्म का पालन होता है, दसवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च आराम से चलता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

वृश्चिक लग्नः
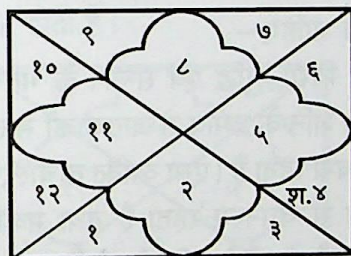
चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के स्थान में अनपी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को माता का सुख विशेष रूप से मिलता है। साथ ही भूमि, मकान आदि का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है और भाई-बहिन एवं पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक को शत्रु पक्ष से अशान्ति रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता से मतभेद रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा जातक अधिक परिश्रमी होता है।

वृश्चिक लग्नः
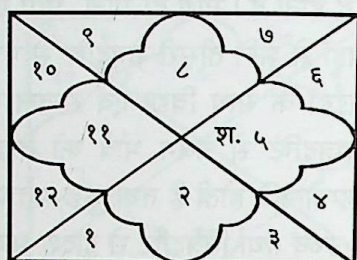
पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की सन्तान का सुख मिलता है परन्तु उससे मतभेद बना रहता है। ऐसा व्यक्ति वाचाल, चतुर तथा होशियार होता है। उसका माता से वैमनस्य रहता है तथा मकान, भूमि आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः उसे स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है, सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण कुटुम्ब से वैमनस्य बना रहता है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी धन की विशेष वृद्धि नहीं हो पाती।

वृश्चिक लग्नः
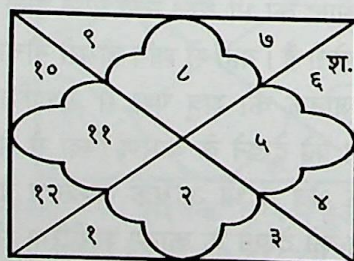
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में गुप्त युक्ति से काम निकालता है। उसे भाई-बहिन, माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख अल्प-मात्रा में प्राप्त होता है, यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से विरोध रहते हुए भी भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।
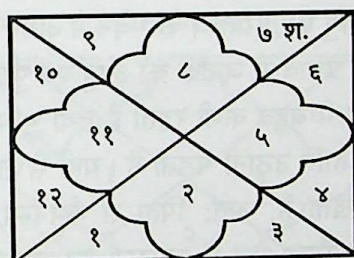
सप्तम भावः
शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः कुछ कठिनाईयों के साथ भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहती है तथा जातक को अधिक शारीरिक-श्रम करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से अपनी राशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा मकान का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में आमोद-प्रमोदवान सुखी तथा सन्तुष्ट बना रहता है एवं प्रभावशाली होता है।

वृश्चिक लग्नः
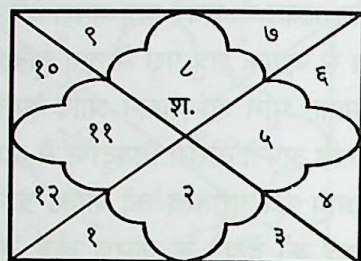
अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु माता के सुख में बहुत कमी रहती है तथा भूमि, मकान एवं भाई-बहिनों के सुख में भी हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता से वैमनस्य, राजकीय क्षेत्र में असफलता एवं व्यावसायिक क्षेत्र में आलस्य का सामना करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब से वैमनस्य बना रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या एवं सन्तान के पक्ष में भी त्रुटि रहती है, परन्तु दैनिक जीवन शानदार एवं व्ययमुक्त बना रहता है।
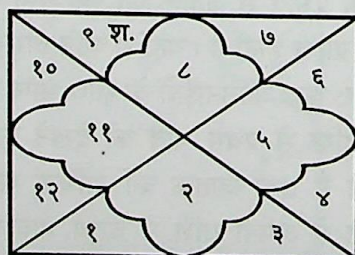
वृश्चिक लग्नः

नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ असन्तोष के साथ धर्म का पालन करता है तथा कुछ रुकावटों के साथ भाग्योन्नति होती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी अच्छी रहती है तथा धन का प्रचुर लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है दसवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी उठानी पड़ती है तथा ननसाल का पक्ष भी कमजोर बना रहता है। फिर भी ऐसा जातक भाग्यवान समझा जाता है तथा प्रायः सुखी जीवन व्यतीत करता है।
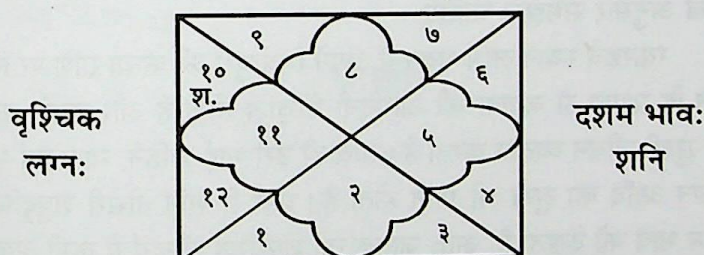
वृश्चिक लग्नः

दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाईयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सफलता, सम्मान तथा लाभ प्राप्त करता है। इसी प्रकार से उसे भाई-बहिन का सुख भी कुछ कम मिल पाता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्र तथा उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं शक्ति मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता से कुछ मतभेद रहता है, परन्तु भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री

तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू वातावरण आनन्दमय बना रहता है।

वृश्चिक लग्नः
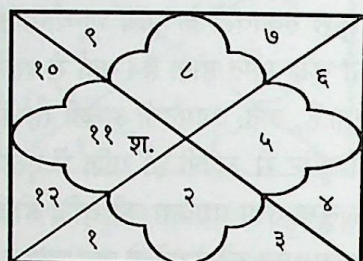
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है और उसके कारण वह सुखी जीवन व्यतीत करता है। साथ ही उसे भाई-बहिन, माता एवं भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा शरीर को आराम नहीं मिल पाता। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण कुछ कठिनाईयों के साथ विद्या एवं सन्तान का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से जातक को दीर्घायु की प्राप्ति होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान होता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।
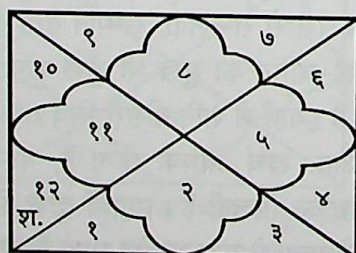
वृश्चिक लग्नः

द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। साथ ही भाई-बहिन, माता एवं भूमि आदि के सुख में कुछ कमी आती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अत: जातक के धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब से असन्तोष रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से परेशानी रहती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक वैभवपूर्ण जीवन बिताता है।

वृश्चिक लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

वृश्चिक लग्नः
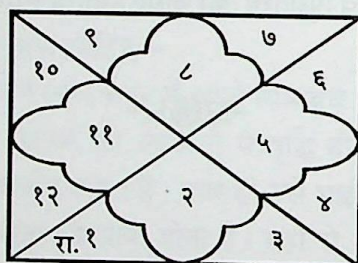
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी गुप्त चिन्ता अथवा कष्ट का निवास रहता है। वह अपनी उन्नति के लिए अत्यधिक कठिन परिश्रम करता हुआ गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव तेज होता है। वह स्वार्थ साधने में चतुर होता है। उसके शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है और कभी-कभी उसे मृत्युतुल्य शारीरिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है।

वृश्चिक लग्नः
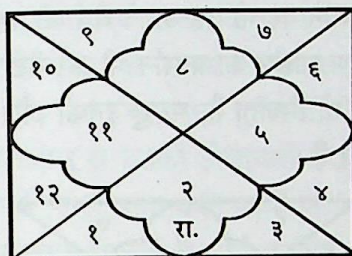
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को अपने कुटुम्ब के सम्बन्ध में चिन्ता एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उसे धन प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा अनेक प्रकार की गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है, फिर भी वह अभाव-ग्रस्त तथा ऋणी ही बना रहता है। उसकी धन-सम्बन्धी चिन्ताएँ दूर नहीं हो पाती।

वृश्चिक लग्नः
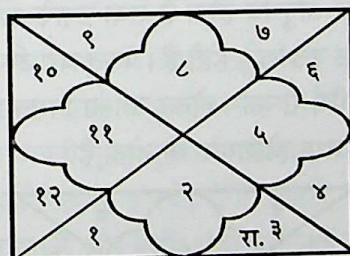
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह कठिन कर्म करने वाला, परिश्रमी, महान, पुरुषार्थी, चतुर, गुप्त-युक्तियों का जानकार, हिम्मतवर तथा धैर्यवान होता है। कभी-कभी हिम्मत

हारने का अवसर आ जाने पर भी वह अपने धैर्य को नहीं खोता और किसी-किसी समय असाधारण साहस का प्रदर्शन भी कर बैठता है। ऐसे व्यक्ति को भाई-बहिनों का सुख तो मिलता है, परन्तु उनकी ओर से अनेक प्रकार की चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

वृश्चिक लग्नः
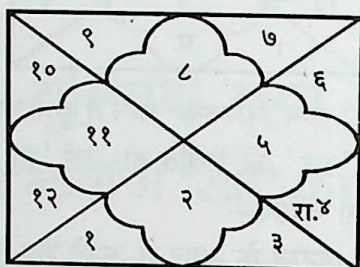
चतुर्थ भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान आदि के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है तथा उसके घरेलू वातावरण में भी कभी-कभी बड़े संकट उठ खड़े होते हैं। परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर उनका निराकरण कर देता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा होशियार भी होता है।

वृश्चिक लग्नः
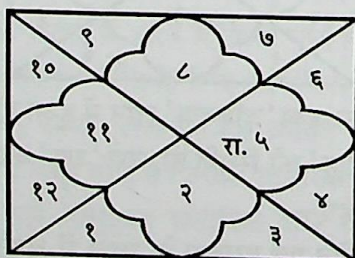
पंचम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह गुप्त-युक्तियों और चतुराईयों में प्रवीण होता है। उसकी बोलचाल से उसकी होशियारी तथा बुद्धिमानी प्रकट होती है। सन्तान पक्ष में उसे पहले बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, बाद में उसे कुछ सफलता मिलती है। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क हर समय परेशान रहता है, परन्तु वह अपनी परेशानी किसी पर प्रकट नहीं होने देता।

वृश्चिक लग्नः

९ ७ ६ रा. १० ८ ११ ५ १२ २ ४ १ ३
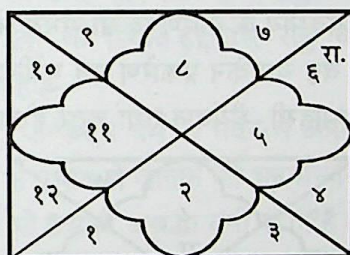
षष्ठम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखे वाला तथा विजयी होता है। वह अपनी गुप्त-युक्तियों, हिम्मत, चतुराई तथा धैर्य के बल पर सभी मुसीबतों, कठिनाईयों, संघर्षों, रोगों, झंझटों, झगड़ों तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहता है और बड़ी-बड़ी मुसीबतों के समय में भी हिम्मत नहीं हारता है।

वृश्चिक लग्नः

सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अनपे मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों एवं चतुराई के बल पर उन सब पर विजय प्राप्त करता है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले व्यक्ति को स्त्री तथा व्यवसाय के कारण किसी समय घोर संकटों में भी फँस जाना पड़ता है, परन्तु वह येन केन प्रकारेण उन मुसीबतों को पार कर लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैर्यवान तथा चतुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है और उसे पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन उमंग और उत्साह से पूर्ण बना रहता है। वह बड़ी शान-शौकत से जिन्दगी बिताता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है और पेट में विकार भी हो जाता है। ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्नः

नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बड़ी बाधाएँ आती हैं तथा धर्म के प्रति भी उसकी अश्रद्धा बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। वह कई बार निराश भी हो जाता है तथा अपनी भाग्योन्नति के लिए न्याय-विरुद्ध आचरण भी करता है। अनेक प्रकार की मुसीबतें उठाने के बाद अन्त में उसे थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त होती है।

वृश्चिक लग्नः
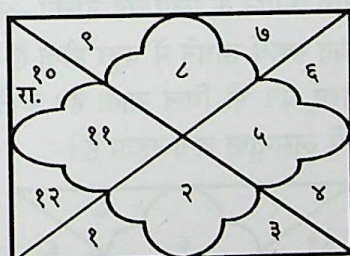
दशम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता के द्वारा परेशानी उठानी पड़ती है। इसी प्रकार राज्य के क्षेत्र से भी कष्ट एवं निराशा का सामना करना होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती हैं। ऐसे व्यक्ति

की मान-प्रतिष्ठा पर कभी-कभी जबरदस्त संकट आ जाता है। फिर भी वह अपने चातुर्य, धैर्य एवं साहस के बल पर उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।
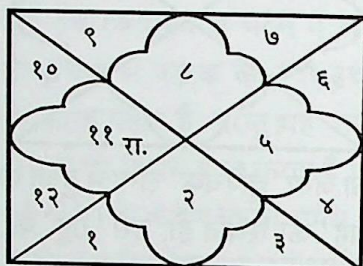
एकादश भावः
राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। वह अपनी बुद्धि, चातुर्य, विवेक-शक्ति एवं गुप्त-युक्तियों द्वारा विशेष लाभ कमाता है। अधिक लाभ कमाने के लिए वह उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ साधने में चतुर होता है और उसे कभी-कभी अनायास ही मुफ्त जैसा धन भी मिल जाता है। इतने पर भी वह अपनी आमदनी के सम्बन्ध में असन्तुष्ट बना रहता है।

वृश्चिक
लग्नः
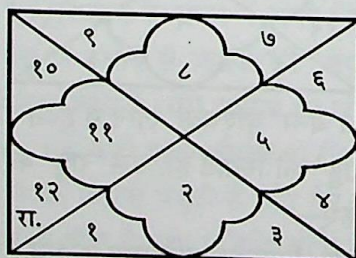
द्वादश भावः
राहु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, जिसके कारण उसे प्रायः परेशानियों एवं चिन्ताओं का शिकार बना रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ उठाता है। परन्तु ऐसे व्यक्तियों को कभी आकस्मिक धन-लाभ होता है, कभी अत्यधिक आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है, तो कभी अन्य प्रकार की कठिनाईयाँ झेलनी पड़ती हैं।

वृश्चिक लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

वृश्चिक लग्नः
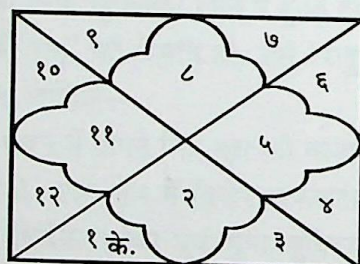
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर कई बार चोट लगती है तथा शारीरिक-सौन्दर्य में कमी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव उग्र होता है। वह शरीर से कठिन परिश्रम करने वाला परन्तु दिमाग का कमजोर होता है। उसे चेचक आदि की बीमारी भी हो सकती है, जिसके स्थायी-चिह्न शरीर पर बने रहेंगे। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक कुछ अधिक दौड़-धूप करने पर अधिक थक जाता है तथा परेशानी का अनुभव करता है।

वृश्चिक लग्नः
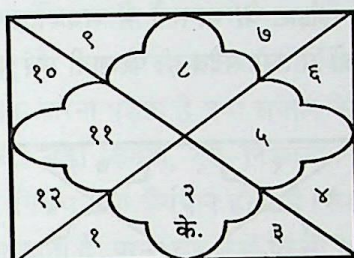
द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को धन की प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा को बचाए रखने के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है और उसके कौटुम्बिक-सुख में भी कुछ-न-कुछ कमी बनी रहती है।

वृश्चिक लग्नः
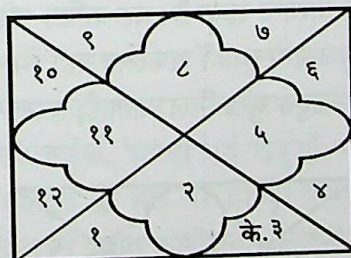
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, साहसी तथा धैर्यवान होता है। भीतर से कमजोरी का अनुभव करने पर भी वह बाहर से बड़ी हिम्मत का प्रदर्शन

करता है। उसे झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु भाई-बहिन के सम्बन्धों से उसे सदैव ही परेशानी एवं कष्ट का अनुभव होता रहता है।

वृश्चिक लग्नः
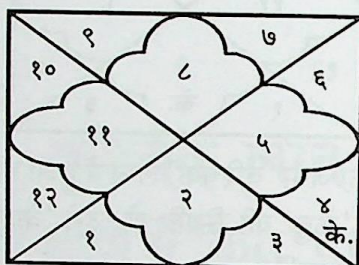
चतुर्थ भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के कारण परेशानी उठानी पड़ती है तथा भूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति का हृदय सदैव अशान्त रहता है। वह कठिन परिश्रम करके सुख-चैन पाना चाहता है, परन्तु उसे मनचाही सफलता नहीं मिलती। स्थान-परिवर्तन कर देने पर उसे थोड़ा-बहुत सुख मिल जाता है, परन्तु घर में सदैव अशान्ति ही बनी रहती है।

वृश्चिक लग्नः
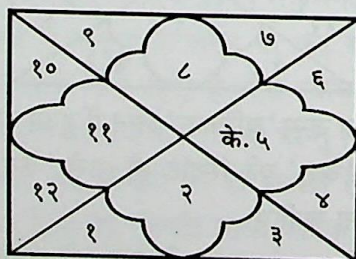
पंचम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा सन्तान के पक्ष से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा जिद्दी, दृढ़-निश्चयी, गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला, साहसी, निर्भय तथा धैर्यवान होता है। उसके मस्तिष्क में गुप्त-चिन्ताओं का निवास रहता है, परन्तु वह उन्हें किसी पर प्रकट नहीं होने देता। उसका बातचीत करने का ढंग भी अच्छा नहीं होता।

वृश्चिक लग्नः
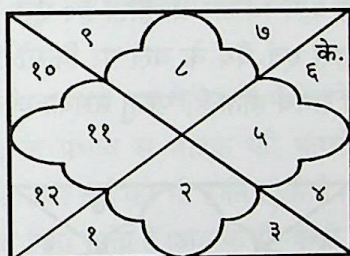
षष्ठम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा सभी मुसीबतों, संकटों, कठिनाईयों, झगड़ों एवं शत्रुओं पर अपने साहस, धैर्य, गुप्त-युक्तियों एवं बहादुरी के बल पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

वृश्चिक लग्नः
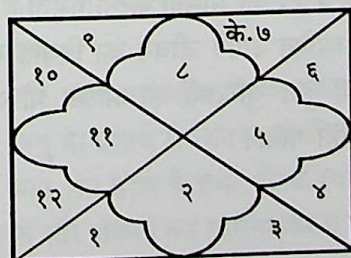
सप्तम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से घोर कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा गृहस्थी के सुख में अनेक प्रकार के व्यवधान एवं संकट उठ खड़े होते हैं। उसे अपने दैनिक व्यापार के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं तथा जननेन्द्रिय में विकार भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य, हठ, गुप्त-युक्ति, साहस एवं धैर्य के बल पर किसी प्रकार कठिनाईयों का निवारण करने में कुछ समर्थ होता है, परन्तु उसका जीवन संघर्षमय ही बना रहता है।

वृश्चिक लग्नः
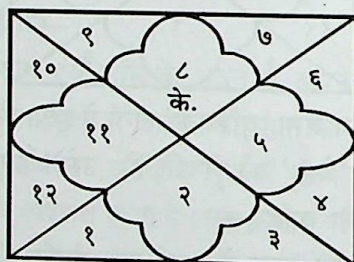
अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में अनेकों बार मृत्युतुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय भी लेता है, फिर भी वह संकटों से छुटकारा नहीं पाता।

वृश्चिक लग्नः
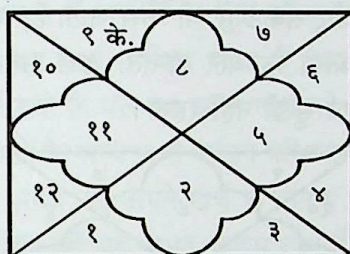
नवम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में महान संकट उपस्थित होते रहते हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति हर समय मानसिक चिन्ताओं से घिरा रहता है। वह कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करता है। गुप्त-युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा वह अपने भाग्य को बनाने का प्रयत्न करता है, परन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती।

वृश्चिक लग्नः
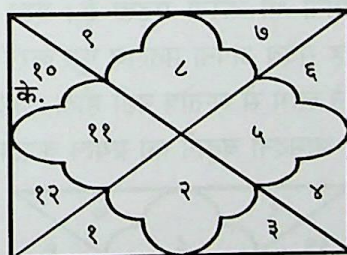
दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है, राज्य के क्षेत्र से मान भंग होता है तथा परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं एवं व्यवसाय की उन्नति में घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति

किसी-किसी समय घोर संकट में भी फँस जाता है, परन्तु वह अपने धैर्य, साहस एवं गुप्त-युक्तियों के बल अन्ततः कुछ राहत पा लेता है। कुल मिलाकर उसका जीवन सुखी नहीं रहता।
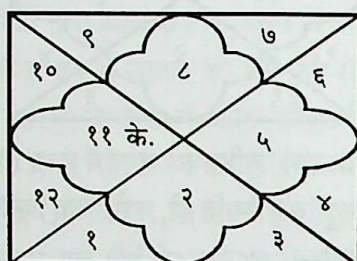
एकादश भावः
केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। कभी-कभी उसे आकस्मिक-धन का लाभ भी हो जाता है और कभी-कभी संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी तथा चालबाज होता है। वह सदैव अपना मतलब पूरा करने की इच्छा रखता है। इतने पर भी उसे अपने लाभ से सन्तोष नहीं होता। वह परिश्रम एवं हिम्मत के साथ और अधिक आमदनी बढ़ाने का प्रयत्न करता रहता है।

वृश्चिक
लग्नः
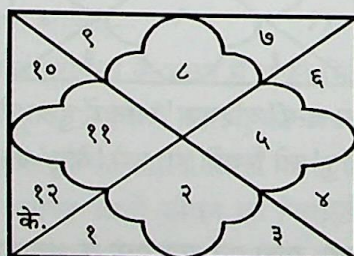
द्वादश भावः
केतु

जिस जातक का जन्म 'वृश्चिक' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु वह बड़ी चतुराई, परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर अपने खर्च को चलाता रहता है। ऐसे व्यक्ति को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कठिन परिश्रम एवं चतुराई द्वारा लाभ प्राप्त होता है। किसी समय उसे अपने खर्च के कारण घोर संकट का सामना भी करना पड़ता है, फिर भी वह अपने साहस तथा धैर्य को नहीं छोड़ता।

१.
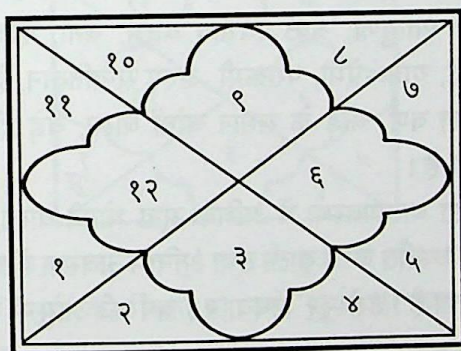
धनु लग्न

धनु लग्न वाली कुण्डलियों के
विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का
अलग-अलग फलादेश

'धनु' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'धनु' लग्न में जन्म लेने वाला जातक कार्य करने में कुशल, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, घोड़ों को रखने वाला, मित्रों के काम आने वाला, राजा के समीप रहने वाला, ज्ञानवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, सत्यप्रतिज्ञ, बुद्धिमान, सुन्दर, सतोगुणी, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, धनी, ऐश्वर्यवान, कवि, लेखक, व्यवसायी, यात्रा-प्रेमी, पराक्रमी, अल्प सन्ततिवान, प्रेम के वशीभूत रहने वाला, पिंगल वर्ण, घोड़े के समान जांघों वाला, बड़े दाँतों वाला तथा प्रतिभाशाली होता है।

ऐसा व्यक्ति बाल्यावस्था में अधिक सुख भोगने वाला, मध्यमावस्था में सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला तथा अन्तिम अवस्था में धन-धान्य तथा ऐश्वर्य से पूर्ण होता है। उसे २२ अथवा २३ वर्ष की आयु में धन का विशेष लाभ होता है।
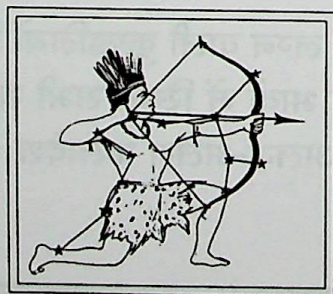
धनु लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल
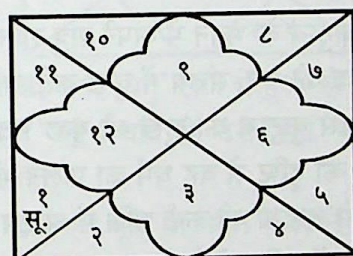
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक-शक्ति एवं अधिक बल की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान, धर्म-पालक तथा ईश्वर-भक्त होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर तथा भाग्यशालिनी स्त्री मिलती है और उससे सहयोग भी प्राप्त होता है। साथ ही दैनिक व्यवसाय में लाभ होता है और गृहस्थी का सुख भी प्राप्त होता है।

धनु लग्नः लग्नः
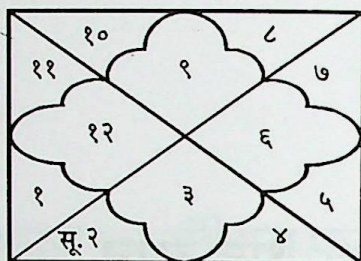
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कुछ कठिनाईयों के साथ अच्छी सफलता मिलती है। उसे कुटुम्ब का सुख भी कुछ मतभेदों के साथ प्राप्त होता है। स्वार्थ-सिद्धि की दृष्टि से वह धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है, पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा भाग्योन्नति में भी सहायता प्राप्त होती है।

धनु लग्नः
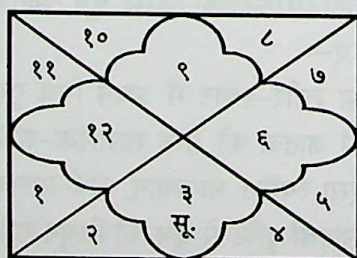
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाव भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख तो कुछ असन्तोष के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति ईश्वर पर भरोसा रखने वाला तथा पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करने वाला होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में नवम भाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ के द्वारा जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथोचित पालन करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी, हिम्मती तथा शक्तिशाली होता है।

धनु लग्नः
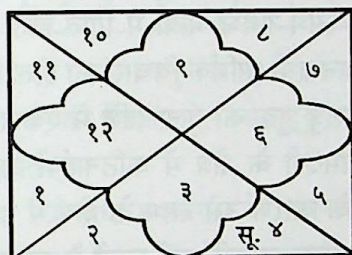
चतुर्थ भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता का सुख बहुत मिलता है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति भी प्राप्त होती है। उसकी भाग्योन्नति होती रहती है तथा धर्म में भी रुचि बनी रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ एवं उन्नति के योग प्राप्त होते रहते हैं। वह धनी, यशस्वी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्नः
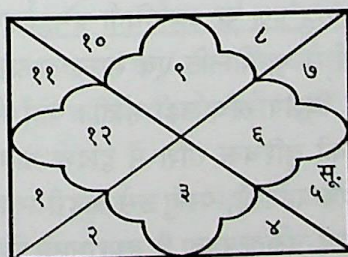
पंचम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान का सुख एवं विद्या तथा बुद्धि का लाभ यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विद्वान, ज्ञानी, बुद्धिमान तथा धार्मिक विचारों का होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाईयाँ आती हैं। उसकी वाणी प्रखर होती है, जिसके कारण उसे लाभ के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। उसमें शिष्टाचार एवं सज्जनता की कमी रहती है, फलतः ऐसा व्यक्ति अपनी सामाजिक अथवा आर्थिक उन्नति अधिक नहीं कर पाता।
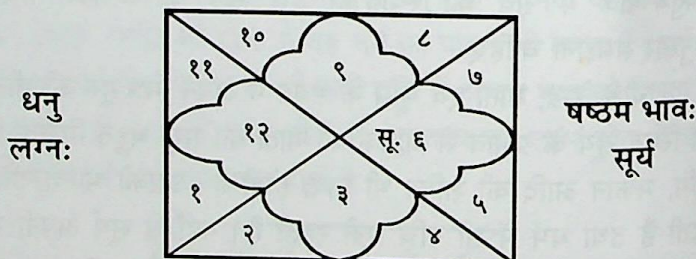
धनु लग्नः

षष्ठम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अत्यधिक प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-झंझट के मार्ग से भाग्योन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है। धर्म का पालन करने में उसे विशेष रुचि नहीं होती। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसे बाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है, जिसके कारण खर्च चलता रहता है तथा भाग्य में वृद्धि होती है।

धनु लग्नः
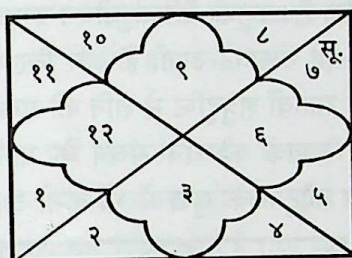
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक स्त्री पक्ष से सुख प्राप्त करता है। उसका गृहस्थ-जीवन आनन्द से व्यतीत होता है, साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति भाग्य की शक्ति का भरोसा रखता है तथा ईश्वर-भक्त भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को श्रेष्ठ शारीरिक-सुख एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। वह धर्म का पालन करता है तथा भाग्यवान होता है, परन्तु उसकी स्त्री का स्वभाव कुछ तेज होता है।

धनु लग्नः
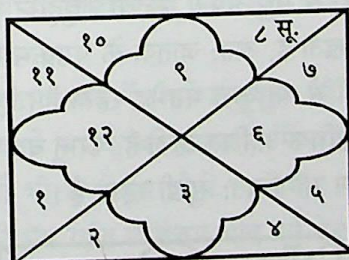
अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा

पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन प्रभावशाली रहता है, परन्तु भाग्योन्नति में बहुत-सी रुकावटें आती हैं और विलम्ब से भाग्य की वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय के मार्ग में कुछ कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी आती है।

धनु लग्नः
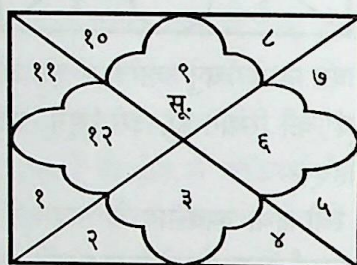
नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रभावशाली तथा यशस्वी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में कुछ कमी आती है, साथ ही भाई-बहिनों से भी कुछ मतभेद रहता है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ के मुकाबले भाग्य पर अधिक आश्रित रहता है, परन्तु वह भाग्यवान समझा जाता है तथा उसका जीवन सामान्यतः सुखी रहता है।

धनु लग्नः
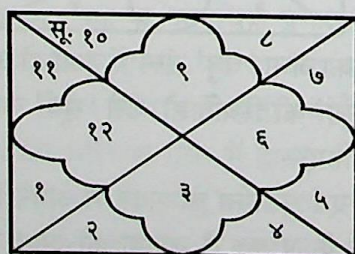
दशम भाव सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा बहुत सहयोग मिलता है, राज्य के क्षेत्र से सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय में उन्नति होती रहती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होता है तथा धर्म का भी यथोचित पालन करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। वह प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है।
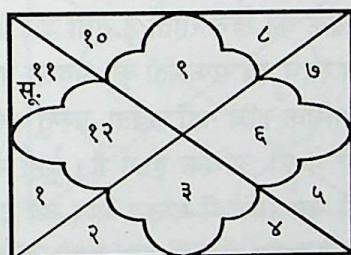
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि तो होती है परन्तु उसमें कुछ कठिनाईयाँ भी उपस्थित होती रहती हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। वह विद्वान, बुद्धिमान, गुणवान, धर्मज्ञ, सज्जन तथा श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करता है।
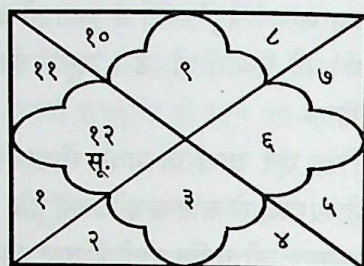
धनु लग्नः

द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ विलम्ब के साथ लाभ एवं सफलता का अवसर प्राप्त करता है। वह धर्म का पालन करने में अधिक रुचि नहीं रखता, परन्तु उसका खर्च धार्मिक एवं परोपकार के मामलों में ही अधिक होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रुओं पर प्रभाव रखने वाला होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है।

धनु लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

धनु लग्नः
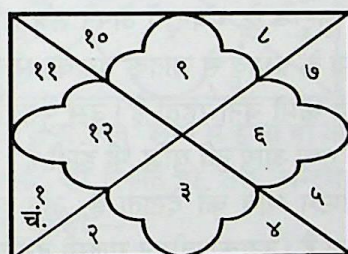
प्रथम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पुरातत्त्व के लाभ में कठिनाईयाँ आती हैं। उसका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होता है, मन में अनेक प्रकार के विचार उठते रहते हैं तथा जीवन में सुख-दुःख दोनों का ही समन्वय बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री की शक्ति कुछ कठिनाईयों के बाद मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी परेशानियाँ आती रहती हैं।

धनु लग्नः
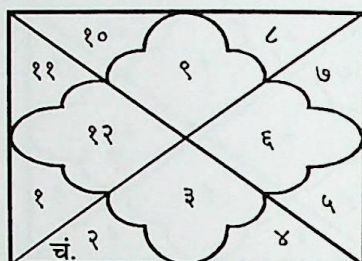
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है। उसे पुरातत्त्व द्वारा धन प्राप्ति के साधन मिलते रहते हैं तथा आयु की वृद्धि भी होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी ही कर्क राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका जीवन राजसी ढंग का होता है, परन्तु मन में कुछ बेचैनी-सी भी बनी रहती है।

धनु लग्नः
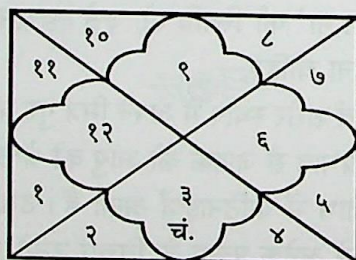
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना

पड़ता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवम भाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। सामान्यतः ऐसा जातक भाग्यवान होता है, परन्तु उसे जीवन में संघर्षों का सामना भी निरन्तर करना पड़ता है।

धनु लग्नः
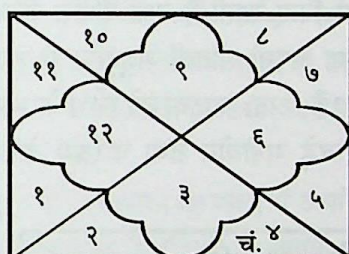
१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ ३ ५ २ चं. ४

चतुर्थ भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा मातृभूमि से अलग जाकर रहना पड़ता है। परन्तु उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है और दैनिक-जीवन प्रभावशाली बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
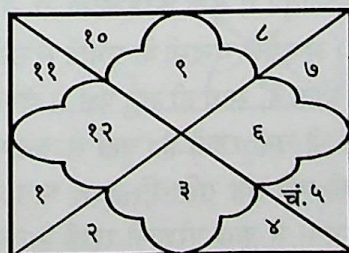
धनु लग्नः

पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी सामना करना पड़ता है। उसके मस्तिष्क में चिन्ताएँ घर किए रहती है तथा दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को लाभ के सम्बन्ध में भी परेशानी उठानी पड़ती है तथा बड़े मनोयोग तथा परिश्रम के बाद कुछ सफलता मिलती है।
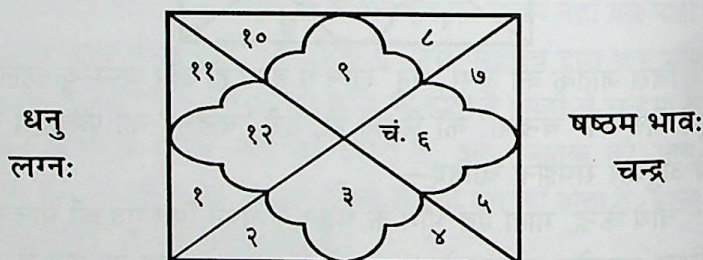
धनु लग्नः

षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाए रखता है। उसके दैनिक जीवन में कुछ कठिनाईयाँ तो आती हैं, फिर भी वह आनन्दित बना रहता है। अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ भी होता है, साथ ही शत्रु पक्ष से झगड़े-झंझटों के कारण कुछ मानसिक परेशानी भी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी अरुचिकर रहता है।

धनु लग्नः
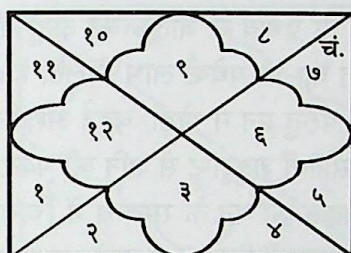
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाईयाँ आती रहती हैं, परन्तु उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है और दैनिक जीवन में आनन्द का वातावरण भी थोड़ा-बहुत बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक का शारीरिक सौन्दर्य तो अच्छा होता है, परन्तु उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहता। वह थोड़े से परिश्रम अथवा सामान्य परेशानियों के उपस्थित होने पर अधिक थककर शिथिल हो जाता है।

धनु लग्नः
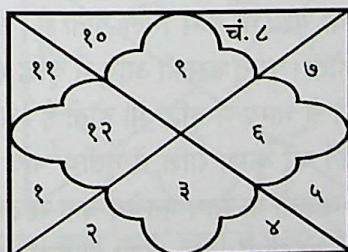
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही क़र्क राशि पर

स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व की शक्ति का भी यथेष्ट लाभ मिलता है। उसका जीवन बड़े ठाठ-बाट का रहता है, परन्तु मन में थोड़ी-बहुत अशान्ति भी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन के सम्बन्ध में चिन्ता बनी रहती है तथा कुटुम्ब से भी अधिक सुख नहीं मिल पाता। उसे धन तथा कुटुम्ब दोनों के ही सम्बन्ध में परेशानी एवं चिन्ताओं का शिकार बने रहना पड़ता है।
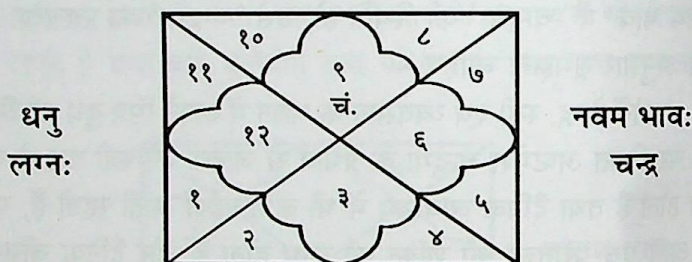
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा यश भी कम मिल पाता है। साथ ही धर्म का भी यथाविधि पालन नहीं होता। परन्तु उसकी आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होने से भाग्य में वृद्धि भी होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक का अपने भाई-बहिनों के साथ मतभेद बना रहता है तथा पराक्रम की भी समुचित वृद्धि नहीं हो पाती। वह अपने मनोबल द्वारा सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्नः
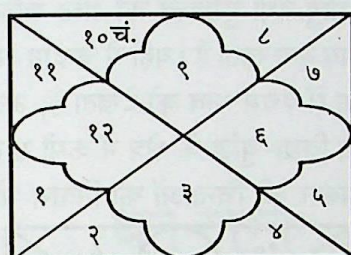
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाईयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है, जिसके कारण जीवन प्रभावशाली एवं ठाठ-बाट का बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख मिलता तो है, परन्तु उसमें कमी और परेशानी बनी रहती है।

धनु लग्नः
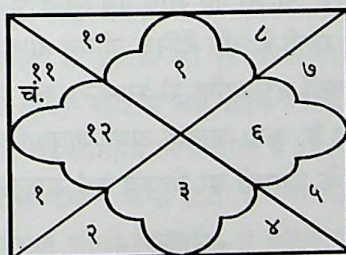
एकादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित अष्टमेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ लाभ प्राप्त

होता रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन आनन्दमय बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान पक्ष से कुछ कष्ट तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। इसके साथ ही मस्तिष्क में विविध प्रकार की चिन्ताओं का निवास भी बना रहता है।
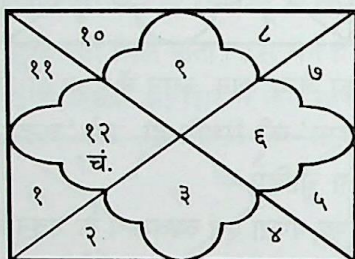
धनु लग्नः

द्वादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट मिलता है। ऐसे व्यक्ति को आयु एवं पुरातत्त्व की भी हानि होती है। मानसिक चिन्ताएँ घेरे रहती हैं और दैनिक जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृष राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव बनाए रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों पर विजय एवं सफलता प्राप्त करता है।

धनु लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

धनु
लग्नः
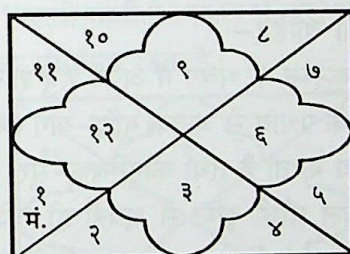
प्रथम भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति उत्तम रहती है और शारीरिक-श्रम तथा बुद्धि-योग से बड़े काम करता है। उसे विद्या, सन्तान एवं बाहरी स्थानों से भी सामान्य लाभ होता है। परन्तु मंगल के व्ययेश होने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है तथा अहंकार की मात्रा भी बढ़ी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि का सामान्य सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ त्रुटि के साथ सफलता मिलती है तथा आठवीं नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी कुछ कमजोरी आती है।

धनु
लग्नः
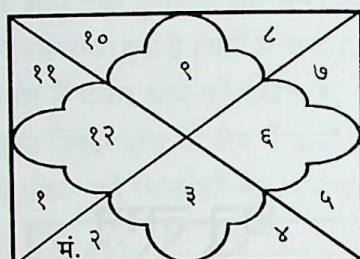
द्वितीय भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक बुद्धि-योग तथा बाहरी सम्बन्धों से धन का सामान्य संचय करता है तथा कौटुम्बिक-सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं नीचदृष्टि से अष्टम भाव को मित्र की राशि में देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमजोरी रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से बड़ी कठिनाईयों के साथ भाग्योन्नति में थोड़ी सफलता मिलती है तथा धर्म का पालन करने में भी कुछ कमी बनी रहती है। मंगल के व्ययेश होने के कारण जातक का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

धनु
लग्नः
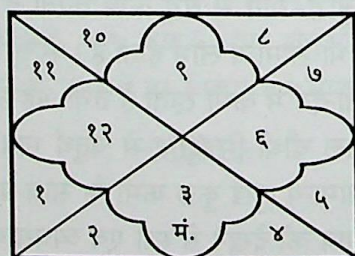
तृतीय भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में भी कमी होती है तथा खर्च अधिक रहता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझटों में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य उन्नति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में न्यूनाधिक सफलता मिलती रहती है। संक्षेप में, ऐसे व्यक्ति का जीवन प्रायः उतार-चढ़ावपूर्ण तथा संघर्षमय रहता है।

धनु लग्नः
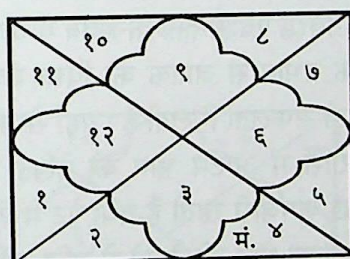
चतुर्थ भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख की विशेष हानि होती है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी प्रायः प्राप्त नहीं हो पाता। सन्तान पक्ष तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ काम चलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा बाहरी स्थानों

के सम्बन्ध से लाभ रहता है।

धनु लग्नः
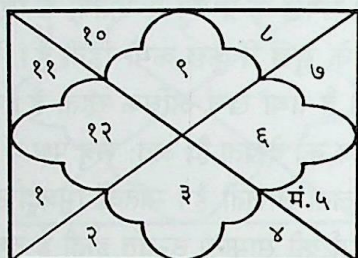
१० ९ ८ ११ ७ १२ ६ १ ३ मं.५ २ ४

पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में परेशानियों के बाद थोड़ी सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमजोरी रहती है तथा पेट में विकार बना रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से बुद्धि-योग एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से आमदनी के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण कुछ मानसिक परेशानी बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों से विशेष लाभ भी होता है।
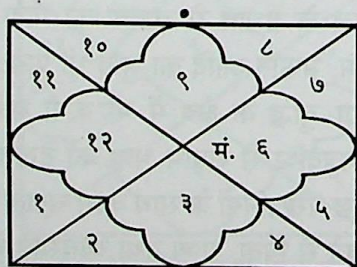
धनु लग्नः

षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में भी सफलता मिलती है। परन्तु सन्तान से परेशानी तथा विद्या में कभी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म की उन्नति में कुछ परेशानी तथा कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृश्चिक राशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च की अधिकता से परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी कठिनाईयाँ आती हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा मस्तिष्क में परेशानी बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों से विशेष लाभ भी होता है।
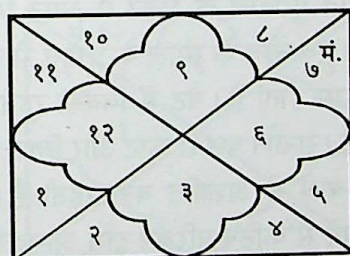
धनु लग्नः

सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाई एवं हानि उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों से सम्बन्ध कुछ अच्छा रहता है तथा बुद्धि-बल से जातक अपना खर्च चलाता है। चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता

रहती है एवं आठवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन संचय के पक्ष में कुछ उन्नति होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी सामान्य रूप में अच्छा प्राप्त होता है।

धनु लग्नः
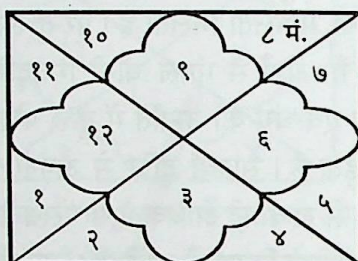
अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश एवं नीच के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति का ह्रास होता है। पेट में विकार रहता है तथा चिन्ता एवं परेशानियाँ घेरे रहती है। सन्तान पक्ष से कष्ट और विद्या पक्ष में कमजोरी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अशान्ति बनी रहती है। चौथी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से विरोध रहता है।

धनु लग्नः
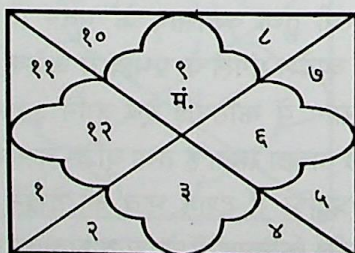
नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धन के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म के पक्ष की कुछ त्रुटिपूर्ण उन्नति होती है। इसी प्रकार विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाईयों एवं कमियों के साथ सामान्य सफलता मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के अच्छे सम्बन्ध से खर्च की पूर्ति होती है तथा शक्ति मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है तथा पुरुषार्थ में कमी आती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण, भूमि तथा मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

धनु लग्नः
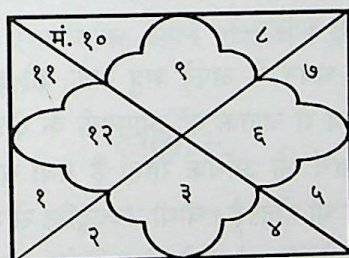
दशम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को पिता के सुख की हानि होती है, व्यवसाय में भी नुकसान रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में थोड़ा प्रभाव बढ़ता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने बुद्धि-बल से किसी बाहरी स्थान में काम करके बहुत सम्मान प्राप्त करता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण

माता, भूमि एवं मकान का सुख भी कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ तो होता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के सुख में कुछ कठिनाई भी बनी रहती है।
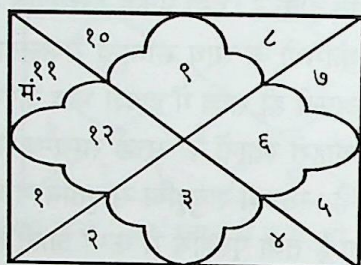
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। उसका खर्च भी अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कुछ परेशानी के साथ लाभ भी होता है। चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय के लिए विशेष श्रम करना पड़ता है तथा कौटुम्बिक सुख का भी लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचम भाव को देखने से विद्या एवं सन्तान पक्ष से लाभ होता है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर बड़ा प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में जातक को सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।
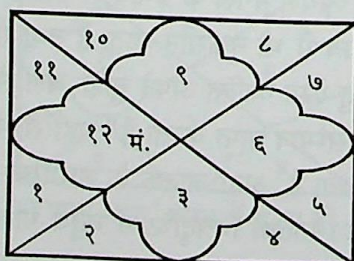
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपना ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से बुद्धि योग द्वारा सफलता मिलती रहती है। परन्तु सन्तान के पक्ष में हानि एवं विद्या के पक्ष में कमजोरी रहती है। चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रुओं पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष से संकट मिलता है तथा व्यवसाय में मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री पक्ष से संकट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाईयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने बुद्धि-बल द्वारा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ उठाता है।

धनु लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

धनु लग्नः
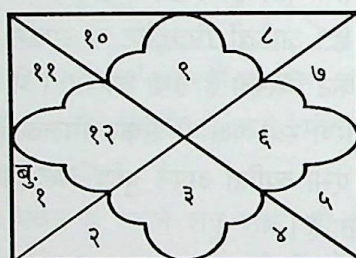
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक शक्ति एवं विवेक-शक्ति प्राप्त होती है। साथ ही उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है वह यशस्वी तथा सम्मानित भी होता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा ससुराल से यथेष्ट धन का लाभ होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे पर्याप्त सफलता मिलती है। ऐसा जातक सदैव उमंग और उत्साह से परिपूर्ण धनी, सुखी तथा यशस्वी बना रहता है।

धनु लग्न:
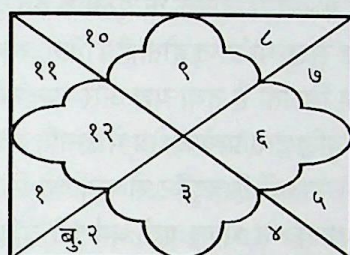
द्वितीय भाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन-संचय की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा कौटुम्बिक-सुख भी मिलता है। उसे पिता द्वारा लाभ, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय में सफलता एवं प्रतिष्ठा भी मिलती है. परन्तु स्त्री के सुख में कमी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में अष्टम भाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण तथा ठाठ-बाट का रहता है तथा विवेक-बुद्धि द्वारा वह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है।

धनु लग्न:
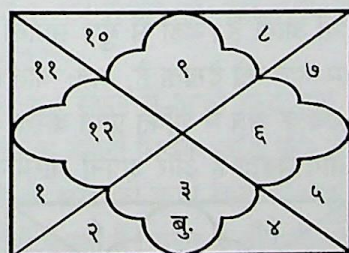
तृतीय भाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ

राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ की वृद्धि होती है और उसे भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। पिता, राज्य, व्यवसाय एवं स्त्री के पक्ष में भी सफलता मिलती है तथा यश और मान की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवम भाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, धर्मात्मा, यशस्वी एवं हिम्मत वाला होता है।
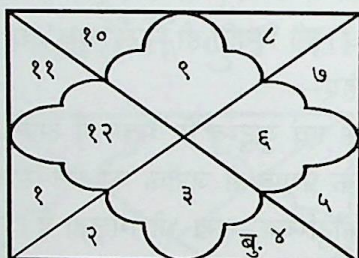
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहती है। साथ ही स्त्री तथा गृहस्थी-सम्बन्धी अन्य सुख में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में दशम भाव को देखता है, अत: जातक कुछ कमी के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में शक्ति प्राप्त करता है तथा कठिनाईयों से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ता है और अपनी भाग्योन्नति करता है।
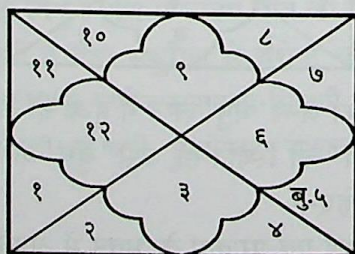
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा सन्तान का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। इसके साथ ही स्त्री, गृहस्थी, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी उन्नति होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक अपनी श्रेष्ठ बुद्धि द्वारा पर्याप्त लाभ अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति बातचीत करने में बड़ा निपुण, चतुर तथा बुद्धिमान होता है। उसे सर्वत्र यश तथा सम्मान प्राप्त होता रहता है।

धनु लग्नः

१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ बु. १ ३ ५ २ ४
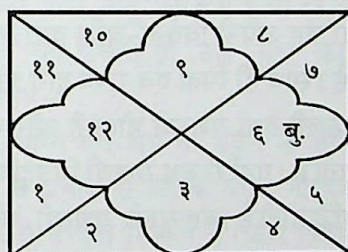
षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करता है। उसे पिता के सुख की कमी रहती है साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं। राज्य के क्षेत्र से भी उसे असन्तोष रहता है, परन्तु नाना के पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से जातक को लाभ मिलता रहता है।

धनु लग्नः

१० ९ ८ ७ बु. ११ १२ ६ १ ३ ५ २ ४
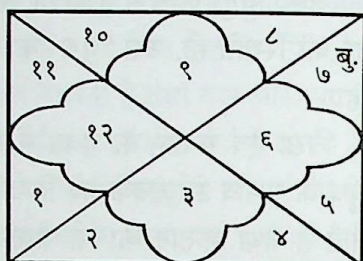
सप्तम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री पक्ष से लाभ भी होता है। इसी प्रकार वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है। साथ ही पिता एवं राज्य द्वारा भी सहयोग एवं सम्मान मिलता है। वह वैभवशाली तथा यशस्वी होता है और घरेलू सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त करता रहता है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह सुखी, यशस्वी, भोगी तथा धनी होता है।

धनु लग्नः
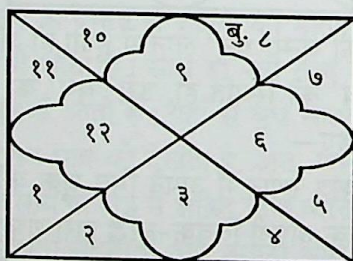
अष्टम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। उसकी दिनचर्या राजसी ढंग की रहती है, परन्तु पिता, राज्य एवं

व्यवसाय के क्षेत्र में उसे काफी कठिनाईयों और कभी-कभी बड़े घाटे का सामना करना पड़ता है। राजकीय क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि तथा सुख के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

धनु लग्नः

१० ८ ११ ९ बु. ७ १२ ६ १ ३ ५ २ ४
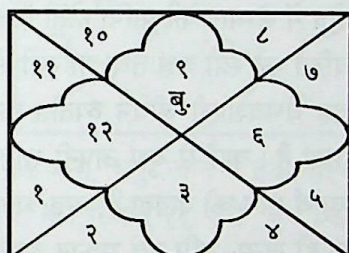
नवम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यवान होता है, साथ ही धार्मिक क्षेत्र में भी उसे उन्नति मिलती है। उसे पिता, स्त्री, व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है। वह विवेक-बुद्धि से पर्याप्त यश एवं सम्मान भी अर्जित करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की भी अत्यध्कि वृद्धि होती है। वह अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसायिक तथा अन्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करके सुखी जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्नः
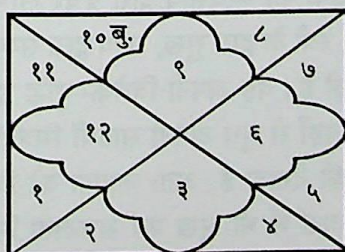
दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपनी कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा विशेष सहयोग मिलता है। राजकीय क्षेत्र में सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय में प्रचुर लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति को स्त्री पक्ष तथा गृहस्थी से भी सुख एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। वह वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है तथा यश एवं सम्मान प्राप्त करता रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र गुरु की मीन राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख में कमी रहती है। साथ ही जन्म-भूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कुछ परेशानियाँ आती हैं।

धनु लग्नः
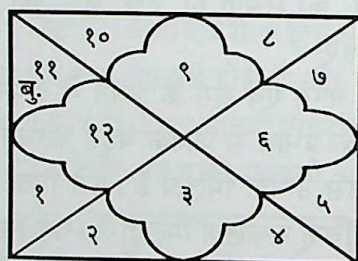
एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को व्यवसाय द्वारा प्रचुर लाभ प्राप्त होता है। उसे पिता के द्वारा सहयोग, स्त्री के द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान तथा आर्थिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा धन तथा यश की खूब वृद्धि करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि खूब प्राप्त होती है तथा सन्तान पक्ष में भी सुख एवं सफलता मिलती रहती है। ऐसा

व्यक्ति धनी, यशस्वी तथा सम्मानित जीवन व्यतीत करता है और उसे प्रशंसा प्राप्त होती रहती है।
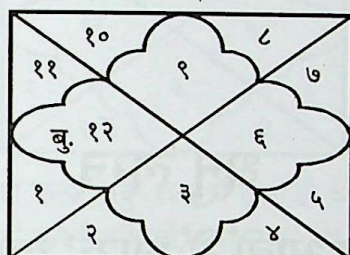
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है, परन्तु अपने ही स्थान में रहकर व्यवसाय करने से उसे हानि उठानी पड़ती है। स्त्री तथा पिता के सुख की हानि होती है तथा राजकीय क्षेत्र में लाभदायक नहीं रहता। घरेलू इज्जत की रक्षा और दैनिक व्यय करने के लिए भी बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष एवं झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त करता है।

धनु लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल

धनु लग्नः
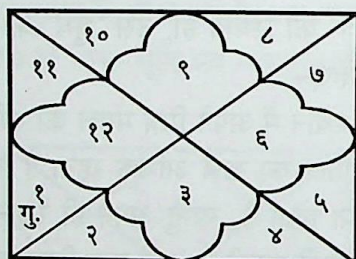
प्रथम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से शारीरिक सौन्दर्य एवं सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी तथा आनन्दित रहने वाला होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः उसे विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी सुख, सफलता एवं निपुणता की प्राप्ति होती है। उसकी वाणी में मधुरता तथा बड़प्पन का आभास मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख भी प्राप्त होता है और नौवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन होता है। ऐसा व्यक्ति सज्जन, धर्मात्मा, विद्वान, गुणी, धनी तथा यशस्वी होता है।
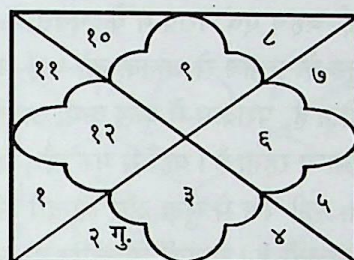
द्वितीय भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के धन की हानि होती है तथा कुटुम्ब पक्ष से परेशानी रहती है। शारीरिक-सुख, स्वास्थ्य और सौन्दर्य में भी कमी आती है तथा माता एवं भूमि का पक्ष भी कमजोर रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में प्रभावशाली रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में बुद्धिमानी से काम निकालता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है और नौवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, सम्मान, सहयोग तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति उन्नतिशील तथा यशस्वी होता है।

धनु
लग्नः

तृतीय भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख कुछ मतभेद के साथ प्राप्त होता है, पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा माता, भूमि एवं मकान का सुख सामान्य रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अत: स्त्री पक्ष से सुख और सौन्दर्य की प्राप्ति होती है एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म पालन में रुचि रहती है। नौवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति कुछ परेशानियों के साथ ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है।

धनु लग्न:

१० ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ ३ ५ २ गु. ४

चतुर्थ भाव: गुरु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसे शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अत: जातक को आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का विशेष लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता का सुख, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नौवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च का संचालन भली-भाँति होता रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ प्राप्त होता है। कुल मिलाकर ऐसा व्यक्ति

सुखी जीवन व्यतीत करता है।

पंचम भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है तथा सन्तान पक्ष से भी सुख प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः उसके भाग्य की वृद्धि होती है, धर्म पालन में रुचि रहती है, साथ ही यश भी प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से कुछ कठिनाईयों के साथ आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, भाग्यवान तथा स्वाभिमानी होता है।

धनु
लग्नः
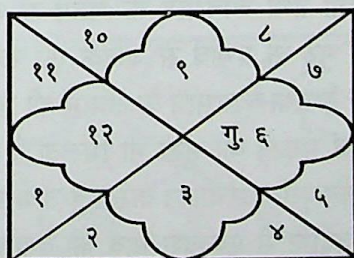
षष्ठम भावः
गुरु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग तथा शत्रु भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष-झगड़ों एवं रोग आदि के कारण कुछ परेशानियाँ रहती हैं तथा बुद्धि-बल से सफलता मिलती है। शारीरिक सुख, स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में भी कमी आती है। माता का सुख अल्प रहता है तथा मातृभूमि, मकान आदि से भी विच्छेद हो जाता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, मान, लाभ, सहयोग एवं शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख मिलता है। नौवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से जातक को धन तथा कुटुम्ब की ओर से चिन्ता तथा परेशानी बनी रहती है।
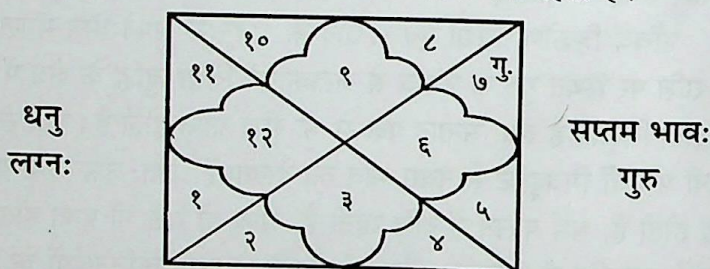
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सुख एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी खूब सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने दैनिक कार्यों का सफलतापूर्वक संचालन करता है तथा प्रसन्न बना रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अत: आमदनी के क्षेत्र में कुछ असन्तोष बना रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, सरलता एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन

से असन्तोष रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि में भी रुकावटें आती हैं।
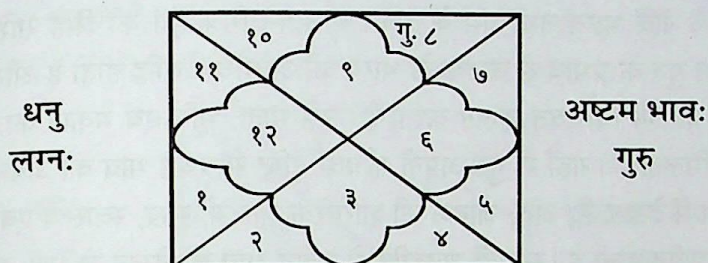
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आ जाती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में द्वितीय भाव को देखने से धन के सम्बन्ध में चिन्ता बनी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता तथा भूमि व मकान आदि का सुख कुछ त्रुटियों के साथ मिलता है तथा घरेलू सुख में कठिनाईयाँ आती रहती हैं।
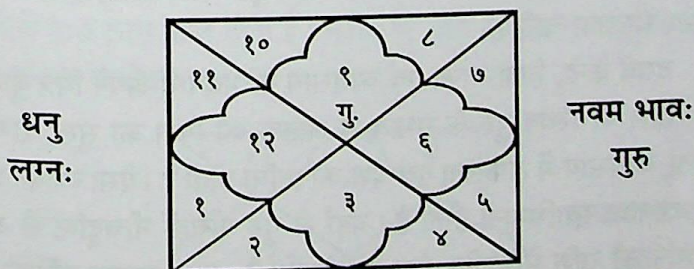
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

नौवें भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का भी विधिवत पालन करता है। उसे माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं दृष्टि से प्रथम भाव को अपनी ही राशि में देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख, स्वास्थ्य एवं यश की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कुछ असन्तोष रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि भी रुचिकर रूप में नहीं हो पाती। नौवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि भी होती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी प्रभावशाली होती है और वह यशस्वी, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।
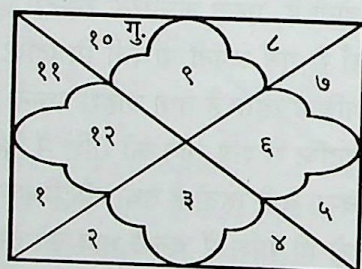
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता का सुख, राज्य से प्रतिष्ठा, व्यवसाय में सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शरीर से सुन्दर तथा स्वाभिमानी होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शनि की राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब के पक्ष से असन्तोष रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है

तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में बड़ी होशियारी से काम लेता है। कुछ कठिनाईयाँ उठाने के बावजूद भी वह अपने शत्रुओं पर प्रभाव स्थापित करने में सफल होता है।

धनु लग्नः
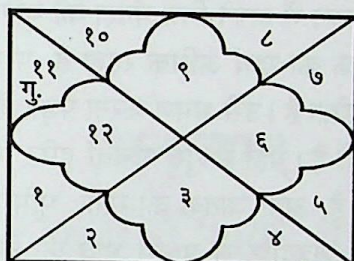
एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शारीरिक-श्रम द्वारा अपनी आमदनी को बढ़ाता है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। धन वृद्धि के लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि नहीं हो पाती। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री के सुख तथा व्यवसाय द्वारा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करता है।
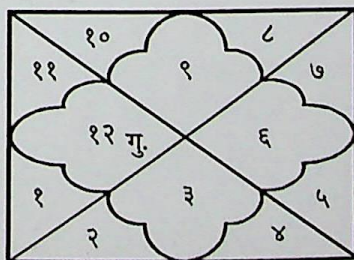
धनु लग्नः

द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख प्राप्त होता है। उसे भ्रमण करना पड़ता है तथा शरीर में कुछ कमजोरी भी बनी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष में अपनी बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों में शान्तिपूर्वक काम निकालकर सफलता पाता है। नौवीं उच्चदृष्टि से मित्र चन्द्र की राशि में अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आयु की वृद्धि होती है और उसे पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन वैभवशाली रहता है।

धनु लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

धनु लग्नः
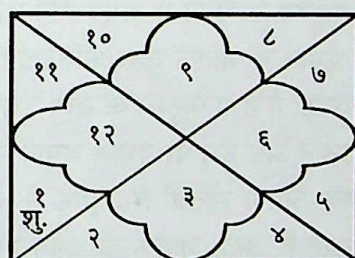
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है, परन्तु वह बड़ा परिश्रमी तथा चतुर होता है, अतः शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है एवं झगड़े-झंझट के मार्ग से लाभ उठाता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री द्वारा कुछ मतभेद के साथ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम एवं चातुर्य के द्वारा लाभ एवं सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।
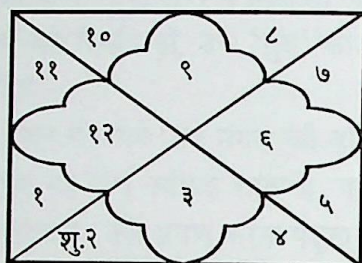
द्वितीय भावः
शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित षष्ठेश शुक्र के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाईयों के साथ धन कमाने की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है तथा कुटुम्ब के साथ उसका मतभेद बना रहता है। शत्रु पक्ष से लाभ उठाने और उस पर प्रभाव जमाने में जातक को सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली होता है और कठिन परिश्रम द्वारा द्रव्योपार्जन करता है।

धनु
लग्नः
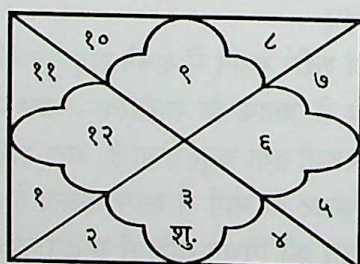
तृतीय भावः
शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, पुरुषार्थ

द्वारा वह धन भी उपार्जित करता है। भाई-बहिनों का सुख कुछ मतभेद के साथ मिलता है तथा शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। यहाँ से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति में कठिनाईयाँ आती हैं तथा धर्म की ओर भी विशेष रुचि नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ को प्रधानता देता है और सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करता है।

धनु लग्नः
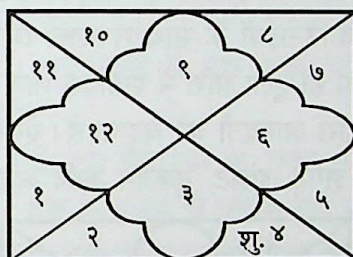
चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र बुध की कन्या राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता से हानि तथा राजकीय क्षेत्र से असफलता प्राप्त होती है। व्यवसाय की उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने के मार्ग में भी उसे कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
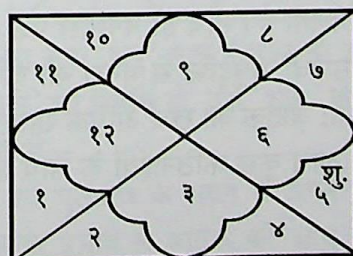
धनु लग्नः

पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि की प्राप्ति होती है। वाणी की शक्ति, कला एवं चातुर्य का लाभ भी होता है, परन्तु सन्तान पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में एकादश भाव को देखता है। जातक अपनी विद्या-बुद्धि द्वारा आमदनी को बढ़ाता है। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर विजयी होता है तथा झगड़े-झंझट, मुकदमे आदि के द्वारा लाभ उठाता है।

धनु लग्नः
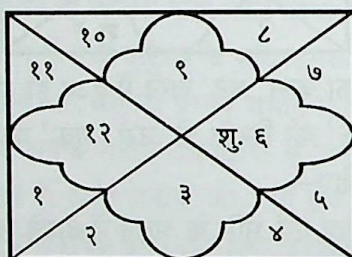
षष्ठम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही वृष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखने वाला तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग से लाभ उठाने वाला होता है। उसे परिश्रम द्वारा धन एवं आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। साथ ही ननसाल पक्ष से भी लाभ होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अच्छा लाभ कुछ कठिनाईयों के साथ होता रहता है।

धनु लग्नः
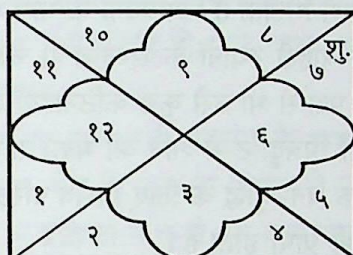
सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री पक्ष से कुछ मतभेद के साथ लाभ प्राप्त करता है। इसी प्रकार व्यावसायिक क्षेत्र में भी कठिनाईयों के साथ लाभ प्राप्त करता है। वह शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होने की सम्भावना भी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से गुरु की धनु राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक शारीरिक दृष्टि से प्रभावशाली रहता है, परन्तु आय के क्षेत्र में उसे विशेष परिश्रम एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
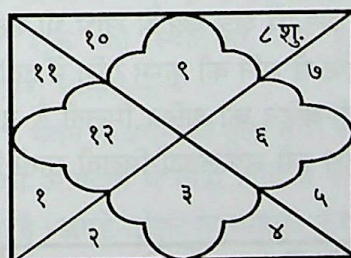
धनु लग्नः

अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा

पुरातत्त्व शक्ति का लाभ मिलता है। आमदनी के मार्ग में उसे कठिनाईयों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा लाभ मिलता है। शत्रु पक्ष से भी उसे कुछ कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है और उसे कुटुम्ब का सहयोग भी प्राप्त होता है।
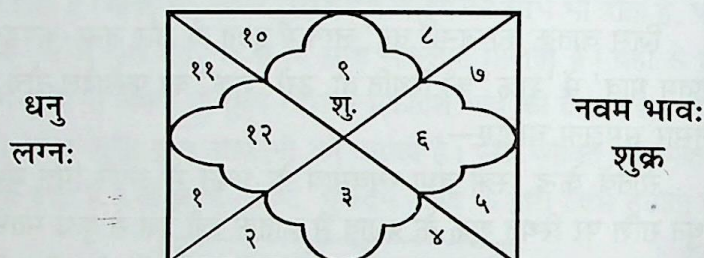
धनु लग्नः **नवम भावः शुक्र**

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपनी भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा अपनी धर्म के पक्ष में भी उसे थोड़ी ही श्रद्धा रहती है। वह अपने चातुर्य के बल पर शत्रु पक्ष से लाभ भी उठाता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है, जिसके कारण उसे सफलताएँ मिलती रहती हैं और वह भाग्यवान समझा जाता है।
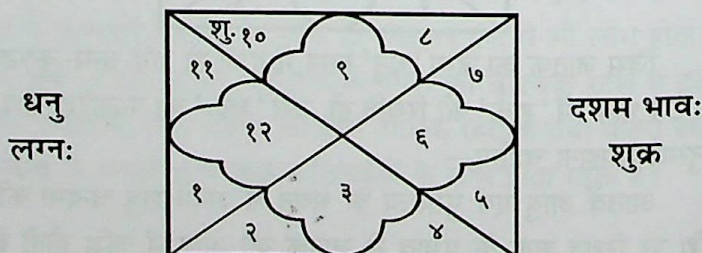
धनु लग्नः

दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से परेशानी, राज्य पक्ष से प्रतिष्ठा में कमी एवं व्यवसाय पक्ष में कठिनाईयों का अनुभव होता है, उसकी भाग्योन्नति में शत्रु पक्ष के कारण रुकावटें आती हैं, परन्तु गुप्त-चातुर्य के बल पर वह अपना काम निकालता रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रु गुरु की मीन राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, जिससे जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है, साथ ही घर के भीतर भी उसका प्रभाव बना रहता है।
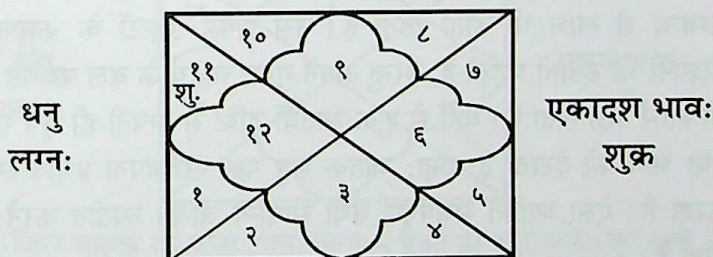
धनु लग्नः

एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है और उसे शत्रु पक्ष से भी विशेष लाभ मिलता है। झगड़े-झंझट के मामलों से वह फायदा तो उठाता है, परन्तु उसके कारण उसे परेशानियाँ भी सहनी पड़ती हैं। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। बाद में वह बड़ा चतुर, गुणी तथा वद्विान बन जाता है। उसे सन्तान पक्ष से भी कुछ त्रुटिपूर्ण लाभ प्राप्त होता रहता है।

धनु लग्नः
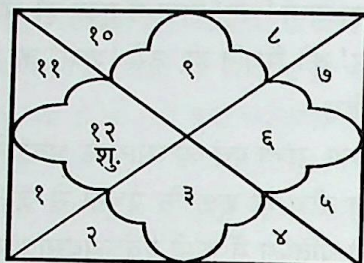
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता रहता है। उसे झगड़े-झंझटों के कारण कुछ परेशानी भी उठानी पड़ती है, परन्तु अपने गुप्त-चातुर्य के बल पर वह उससे भी लाभ उठा लेता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृष राशि में षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

धनु लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फल

धनु लग्नः
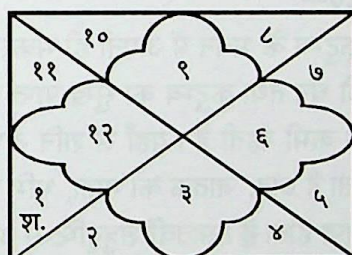
प्रथम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कुछ कमी बनी रहती है। वह शारीरिक श्रम से धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः उसे भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख एवं शकि प्राप्त होती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता से सुख, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

धनु लग्नः
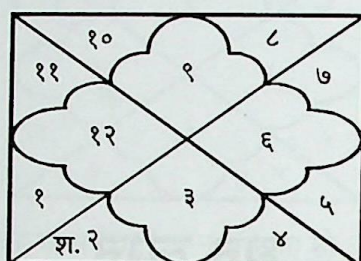
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख अल्प-मात्रा में प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है और कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ भी होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

धनु लग्नः
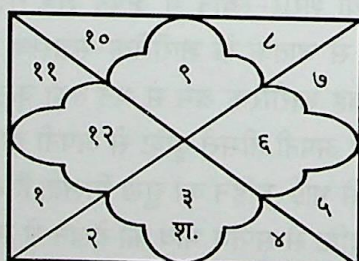
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही कुम्भ राशि पर

स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई–बहिन का सुख कुछ त्रुटिपूर्ण बना रहता है। यहाँ से शनि तीसरी नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान पक्ष से कष्ट का अनुभव होता है तथा विद्या–बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा यश की उन्नति में कमी आती है तथा धर्म पर श्रद्धा भी कम रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी अधिक अच्छा नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता तथा धन कमाता है।

धनु लग्न:
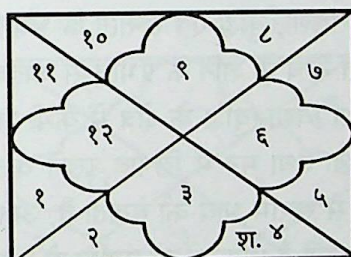
चतुर्थ भाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। भाई–बहिन एवं कुटुम्ब का सुख भी सन्तोषजनक नहीं रहता। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक का शत्रु पक्ष पर बड़ा प्रभाव रहता है, अतः जातक का शत्रु पक्ष पर बड़ा प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा घरेलू सुख में भी विघ्न आते रहते हैं।

धनु लग्नः
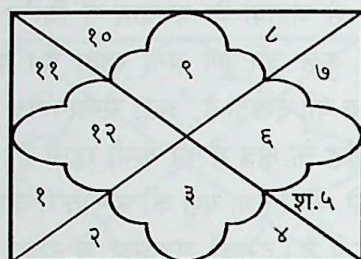
पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति वार्तालाप करने में रूखा तथा मन में छिपाव रखने वाला होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा परिश्रम के द्वारा विशेष लाभ होता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने के कारण कुटुम्ब तथा धन संचय के लिए जातक विशेष चिन्तित बना रहता है और गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर कुछ सफलता भी पाता है।

धनु लग्नः
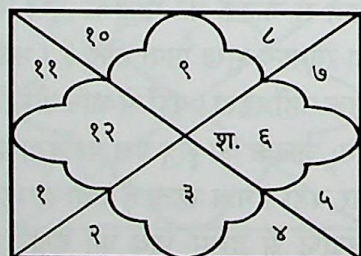
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। उसका भाई-बहिन एवं कुटुम्ब से कुछ विरोध रहता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अत: आयु की शक्ति में तो वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से मंगल राशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी हानि ही होती है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन की शक्ति तो मिलती है, परन्तु उनसे वैमनस्य रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखने वाला, बहादुर तथा हिम्मत वाला होता है।

धनु लग्नः
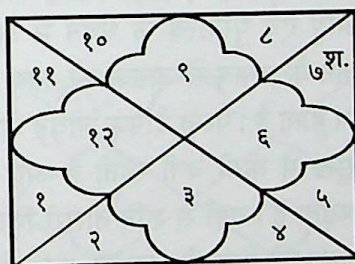
सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक व्यवसाय द्वारा खूब धन कमाता है तथा स्त्री पक्ष से भी उसे शक्ति मिलती है, परन्तु स्त्री द्वारा सुख थोड़ा ही मिलता है। भाई-बहिनों से अच्छा सम्पर्क रहता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अत: भाग्योन्नति में रुकावटें पड़ती हैं तथा धर्म के मामले में भी विशेष रुचि नहीं रहती। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ कष्ट रहता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता के सुख में कमी आती है और भूमि, मकान आदि का सुख भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होता है। जातक

को स्थान परिवर्तन भी करना पड़ता है।
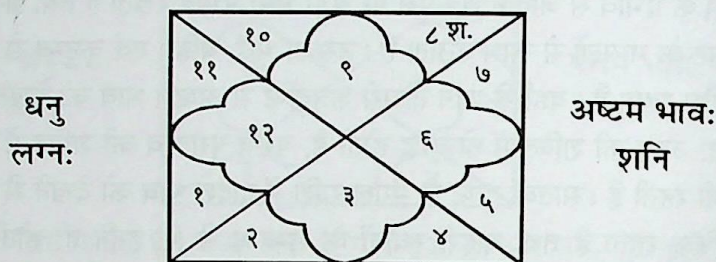
धनु लग्नः

अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। परन्तु दैनिक जीवन का सुख, धन के संचय तथा भाई-बहिन के सुख में कमी बनी रहती है और धन प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सहयोग, राज्य से मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है तथा दसवीं नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमजोरी बनी रहती है।
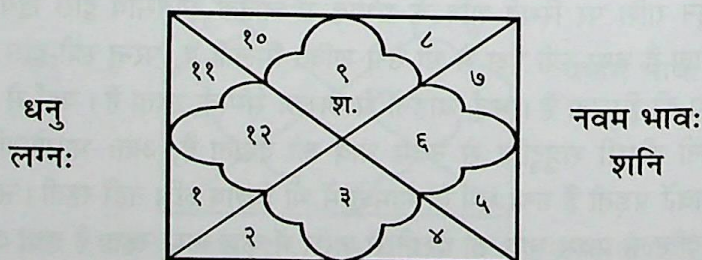
धनु लग्नः

नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति एवं धर्म पालन में बाधाएँ आती हैं एवं धन तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त है। यहाँ से शनि तीसरी उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ भी हो जाता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक का शत्रु पक्ष में अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझट के मार्गों से उसे लाभ प्राप्त होता है।

धनु लग्नः
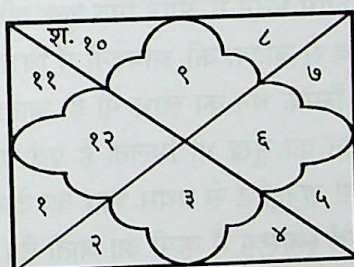
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है। वह समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। उसे भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने

के कारण स्त्री पक्ष से सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती रहती है।
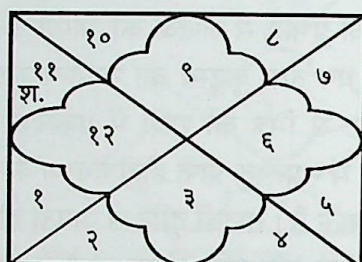
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है और कभी-कभी उसे आकस्मिक धन का लाभ भी हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को कुटुम्ब तथा भाई-बहिन का सुख भी मिलता है एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आ जाती है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में पंचम भाव को देखने से सन्तान से कष्ट रहता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी प्राप्त होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु दैनिक जीवन में परेशानियों का अनुभव होता रहता है।
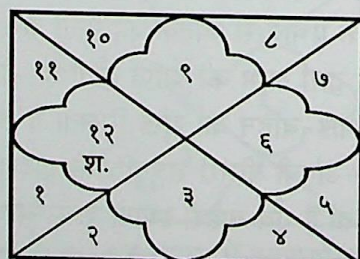
द्वादश भावः
शनि

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भाव में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ असन्तोषपूर्ण लाभ होता है। साथ ही धन, कुटुम्ब तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब की सामान्य शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष पर प्रभाव बनाए रखता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर लाभ उठाता है। दसवीं शत्रुदृष्टि में नवम भाव को देखने के कारण भाग्योन्नति कठिनाईयों के साथ होती है तथा धर्म का पालन भी कम हो पाता है।

धनु लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

धनु लग्नः
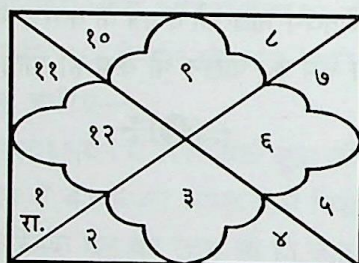
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा स्वास्थ्य पर भी कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों के बल पर उन्नति करता है। परन्तु उन्नति एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। कभी-कभी उसे कठिन शारीरिक-कष्ट भी उठाना पड़ता है। ऐसा जातक देखने में सज्जन लगता है, परन्तु भीतर से चालाक होता है। उसके मन में चिन्ताओं का निवास भी बना रहता है।
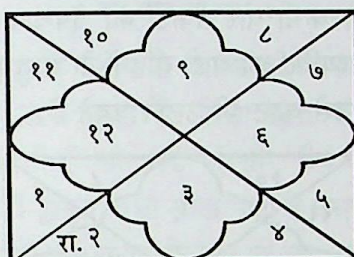
धनु लग्नः

द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थि राहु के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा उसके कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने कुटुम्ब अथवा धन के कारणों से कभी-कभी घोर संकटों का शिकार बन जाता है। वह अक्सर ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं परिश्रम के बल पर कठिनाईयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है।

धनु लग्नः
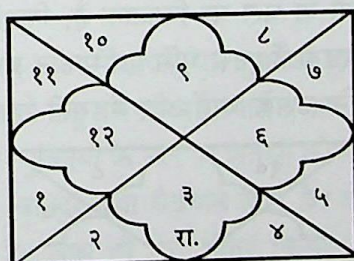
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। गुप्त-युक्तियों तथा चतुराई के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए वह अत्यधिक परिश्रम भी

करता है। परन्तु कभी-कभी घोर संकटों को चुपचाप पार कर लेता है और घबराता नहीं है। ऐसे व्यक्ति का भाई-बहिनों के साथ सुख पूर्ण सम्बन्ध नहीं रहता। उसके कारण उसे कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।
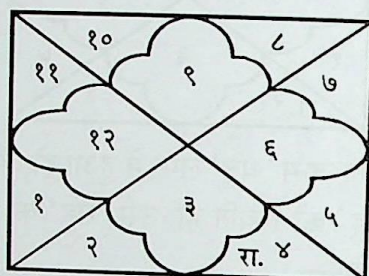
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बहुत कमी रहती है तथा घर में भी संकट का वातावरण बना रहता है, जिसे वह बड़ी चतुराई, धैर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर निपटाता है, फिर भी उसे कभी-कभी घोर मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। उसे भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त नहीं होता तथा अशान्ति उसके चारों ओर मंडराती रहती है।
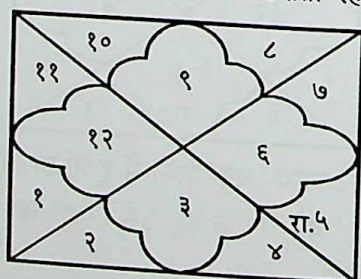
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल की

मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा चिन्ताएँ बनी रहती हैं। विद्या प्राप्त करने में भी उसे बड़ी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं और बड़े परिश्रम, धैर्य तथा हिम्मत के साथ काम लेने पर वह थोड़ी-बहुत विद्या सीख पाता है उसकी बोली में रूखापन रहता है तथा गुप्त-युक्ति एवं चातुर्य के बल पर वह अपना काम चलाता है। उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार की चिन्ताएँ घर किए रहती हैं।
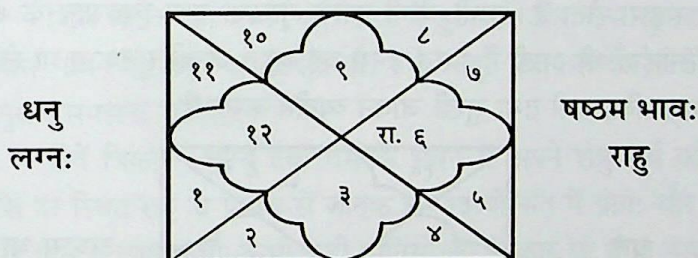
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रखता है। वह अपनी बुद्धि, चातुर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा धैर्यवान होता है। वह मामा के पक्ष को कुछ हानि पहुँचाता है, साथ ही मन भीतर किसी-न-किसी प्रकार की परेशानी का अनुभव भी करता रहता है।
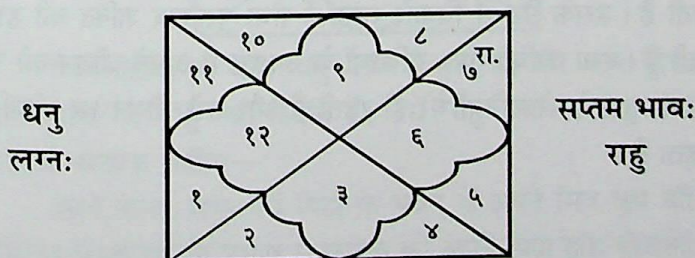
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक स्त्री पक्ष से विशेष शक्ति प्राप्त करता है। उसके एक से अधिक विवाह होने की सम्भावना रहती है। वह अपने व्यवसाय की वृद्धि के लिए अनेक प्रकार के उपाय, साधन एवं चतुराईयों का सहारा लेता है। कभी-कभी उसके गृहस्थी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयाँ भी आती हैं परन्तु उनसे वह बहुत जल्दी छुटकारा पा लेता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।
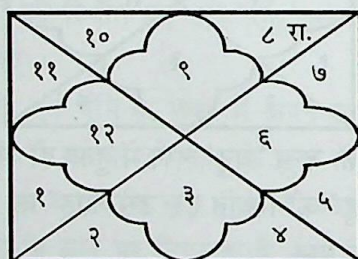
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में कई बार संकटों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी मृत्यु-तुल्य स्थिति भी बन जाती है। उसके पेट में विकार रहता है तथा पुरातत्त्व शक्ति की हानि भी होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों के आश्रय से अपने जीवन को चलाता है। परन्तु उसे परेशानियाँ घेरे ही रहती हैं और उसे जीवन भर संघर्ष करना पड़ता है।

धनु लग्नः
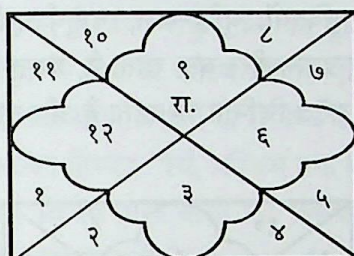
नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में प्रायः घोर संकट आते रहते हैं तथा कभी-कभी बड़ी हानियों का शिकार भी होना पड़ता है। धर्म के मामले में भी उसकी अधिक निष्ठा नहीं होती। ऐसे लोग प्रायः अधार्मिक अथवा अनीश्वरवादी भी होते हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है। वह कभी हिम्मत नहीं हारता और अधिकाधिक परिश्रम करने से भी नहीं घबराता।

धनु लग्नः
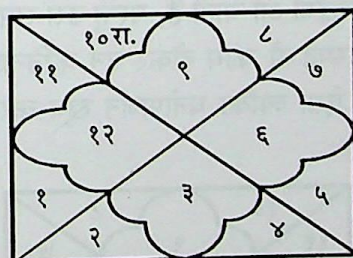
दशम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा परेशानी, राज्य द्वारा संकट तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसा

व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों, बुद्धि-बल, चातुर्य एवं हिम्मत के बल पर उन्नति करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है, परन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती। वह सदैव चिन्तित भी रहता है और कभी-कभी घोर संकटों में भी फँस जाता है।
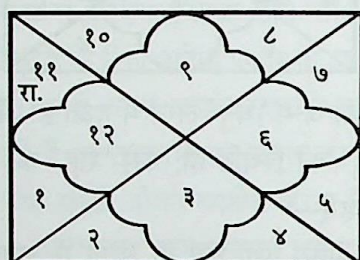
एकादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। वह अपनी चतुराई एवं बुद्धि-बल से अधिक लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसकी आमदनी के क्षेत्र में बड़ी कठिनाईयाँ आ जाती हैं, परन्तु उस समय भी वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता और हिम्मत से काम लेकर उन कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति धनोपार्जन खूब करता है और समाज में धनी समझा जाता है।

धनु लग्नः
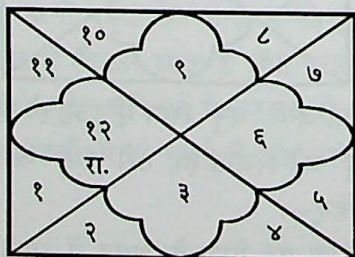
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के खर्च के कारण चिन्ता, परेशानी एवं झंझटों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट का अनुभव होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति हिम्मत, धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर उन कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है और संकट के समय में भी घबराता नहीं है।

धनु लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

धनु लग्नः
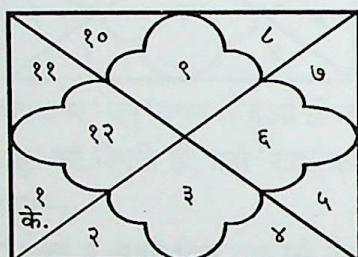
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति एवं सामाजिक सम्मान में वृद्धि होती है। वह बड़ा बहादुर, हिम्मत वाला, जिद्दी तथा हठी स्वभाव का होता है, परन्तु उसके शारीरिक सौन्दर्य में कमी अवश्य आ जाती है। वह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा मन के भीतर चिन्तित बने रहने पर भी वह किसी के सामने अपनी चिन्ताओं को प्रकट नहीं करता।

धनु लग्नः
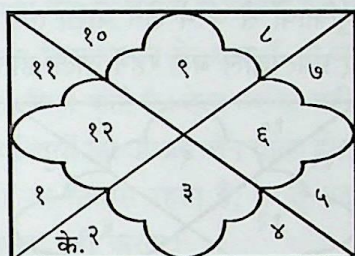
द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहती है और कोई-न-कोई क्लेश उठ खड़ा होता है। वह धन-प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करता है, परन्तु कभी-कभी उसे धन के विषय में घोर संकटों का सामना करना होता है और ऋण लेकर भी अपना काम चलाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान तथा हिम्मती होता है।

धनु लग्नः
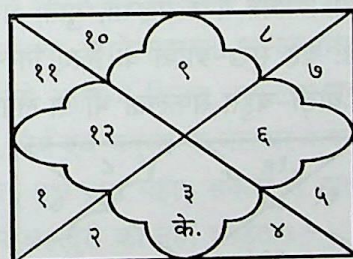
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शनि की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी एवं कष्ट का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी-बड़ी कठिनाईयों का धैर्य एवं साहस के साथ मुकाबला

करता है। वह गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला तथा कठिन परिश्रम द्वारा अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहने वाला होता है।
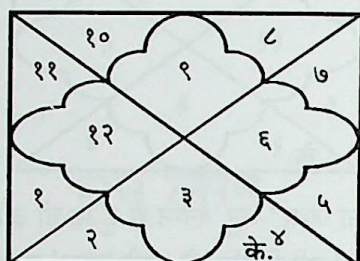
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी हानि उठानी पड़ती है। साथ ही उसे मातृभूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है। उसे भूमि तथा मकान आदि का सुख भी प्राप्त नहीं होता। घरेलू संकट भी उसको घेरे रहते हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, गुप्त, धैर्यवान, सन्तोषी तथा परिश्रमी होता है, अतः वह सुख-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है और अन्त में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।
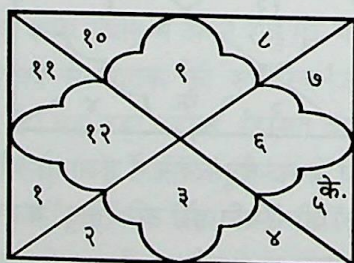
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने शत्रु मंगल

की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से बड़ी हानि उठानी पड़ती है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाईयों के बाद बहुत थोड़ी सफलता मिल पाती है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम करने वाला, जिद्दी तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। उसके मस्तिष्क में हर समय चिन्ताओं का निवास रहता है, परन्तु वह अपनी परेशानियों को किसी के सामने प्रकट नहीं करता।
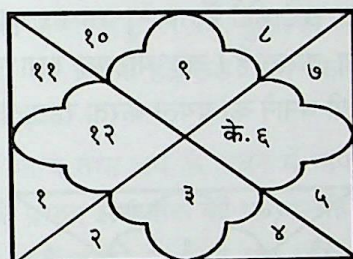
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग तथा शत्रु भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट, मुकदमे आदि में विजय, सफलता एवं लाभ प्राप्त करता है। वह गुप्त-युक्तियों, धैर्य एवं चतुराई के बल पर अपनी कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करता है। शत्रु पक्ष द्वारा महान संकटों में डाल दिए जाने पर भी वह अपनी हिम्मत और बहादुरी को नहीं छोड़ता।
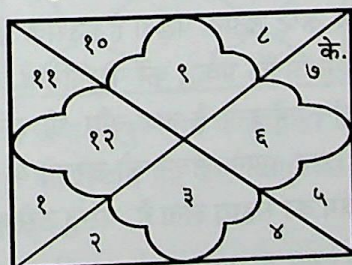
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में विशेष हानि अथवा कठिनाई का सामना करना पड़ता है। साथ ही उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी बड़ी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। कभी-कभी घर तथा व्यवसाय के क्षेत्र में घोर संकट उठ खड़े होते हैं, परन्तु वह हर बार धैर्य एवं साहस के साथ उनका मुकाबला करता है। वह परिश्रम तथा युक्ति-बल से अपने गृहस्थ-जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती।
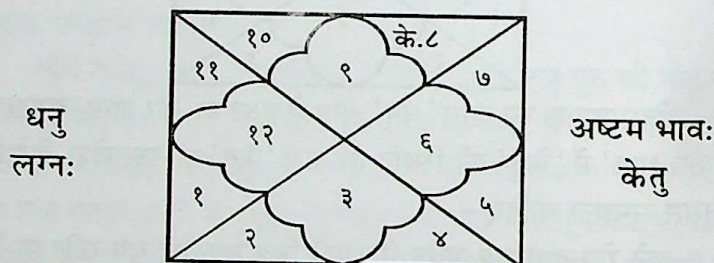
जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े-बड़े संकट आते हैं और उसे मृत्यु-तुल्य कष्ट उठाना पड़ता है। उसके पेट में विकार रहता है तथा दैनिक जीवन में भी अनेक प्रकार की परेशानियाँ बनी रहती हैं। उसकी पुरातत्त्व शक्ति को हानि पहुँचाती है तथा और भी अनेक प्रकार के संकट उपस्थित होते रहते हैं। वह अपने जीवन को चलाने के लिए गुप्त-युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम का सहारा लेता है, परन्तु उसे सुख नहीं मिल पाता।

धनु लग्नः
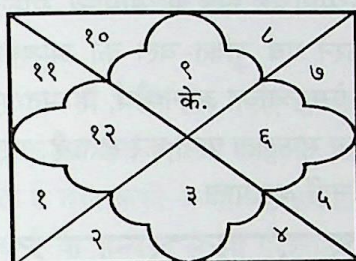
नवम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बड़ी-बड़ी बाधाएँ आती रहती हैं। वह उन्हें हटाने के लिए घोर परिश्रम, गुप्त-युक्ति बल, साहस तथा धैर्य का आश्रय लेता है, फिर भी उसका भाग्य दुर्बल ही बना रहता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर पर भी कम ही विश्वास करता है। वह सदैव असफलताओं से जूझता है तथा गुप्त-चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। उसके यश में भी कमी आ जाती है। उसका सम्पूर्ण जीवन आजीविका के लिए संघर्ष करते हुए बीतता है।

धनु लग्नः
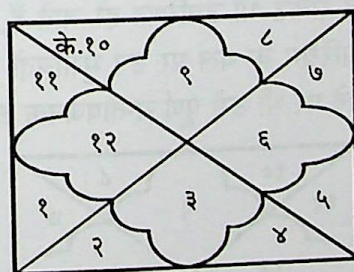
दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को कुछ कमियों के साथ

पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है तथा अत्यधिक परिश्रम करने एवं युक्ति-बल का आश्रय लेने पर भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। ऐसा व्यक्ति अपने धैर्य, हिम्मत एवं परिश्रम के योग से कुछ समय बाद सामान्य सफलता प्राप्त कर लेता है, परन्तु वह अधिक धनी, सुखी अथवा यशस्वी नहीं बन पाता।
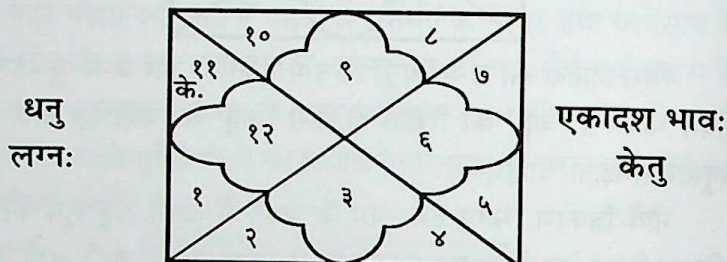
धनु लग्नः

एकादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। वह कठोर परिश्रम द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसके सामने कठिनाईयाँ एवं संकट भी उपस्थित हो जाते हैं, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों, बुद्धि तथा परिश्रम के बल पर उन मुसीबतों पर विजय प्राप्त कर लेता है। इतना सब होने पर भी उसे पूर्ण सन्तोषजनक लाभ नहीं मिल पाता।
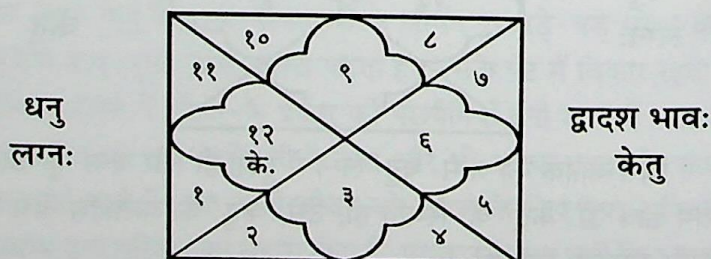
धनु लग्नः

द्वादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'धनु' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-भवन मे अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे बहुत परेशानी उठानी पड़ती है तथा कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानियाँ प्राप्त होती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों, हिम्मत, बुद्धि-बल एवं परिश्रम का आश्रय लेकर कठिनाईयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है, परन्तु फिर भी उसे अधिक सफलता नहीं मिल पाती।

१०.

मकर लग्न
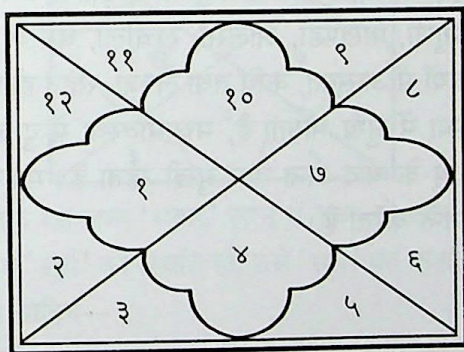
मकर लग्न वाली कुण्डलियों के
विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का
अलग-अलग फलादेश

'मकर' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'मकर' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति सन्तोषी, भीरु, उग्र स्वभाव का, निरन्तर पुरुषार्थ करने वाला, बड़े नेत्रों वाला, शठ, मनमौजी, अधिक सन्ततिवान, चतुर, लोभी, कफ तथा वायु से पीड़ित रहने वाला, लम्बे शरीर वाला, ठग, तमोगुणी, पाखण्डी, आलसी, खर्चीला, धर्म के विमुख आचरण करने वाला, स्त्रियों में आसक्त, कवि तथा लज्जा-रहित होता है। वह अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुख भोगता है, मध्यमावस्था में दुःखी रहता है तथा ३२ वर्ष की आयु के बाद अन्त तक सुखी रहता है। मकर लग्न में वाला व्यक्ति पूर्णायु प्राप्त करता है।
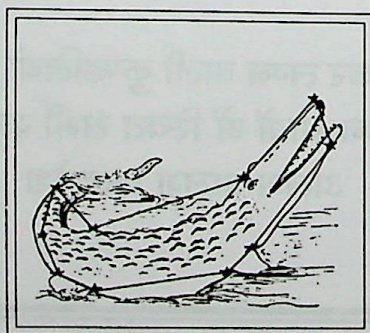
मकर लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल

मकर लग्नः
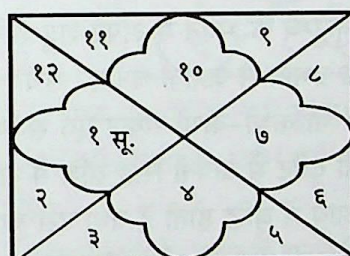
प्रथम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आ जाती है तथा कभी-कभी विशेष शारीरिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि बनी रहती है। साथ ही शारीरिक प्रभाव एवं तेज की भी उन्नति होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री पक्ष से सामान्य कठिनाई बनी रहती है। इसी प्रकार व्यवसायिक क्षेत्र में भी कुछ परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं।

मकर लग्नः
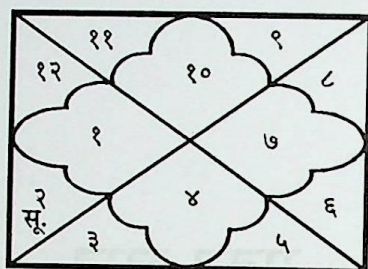
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता। साथ ही कौटुम्बिक सुख में भी कभी-कभी संकट एवं संघर्ष के योग बनते रहते हैं। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी सिंह राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति समृद्धशाली ढंग का जीवन बिताता है तथा शान-शौकत के लिए धन के व्यय की चिन्ता नहीं करता।

मकर लग्नः
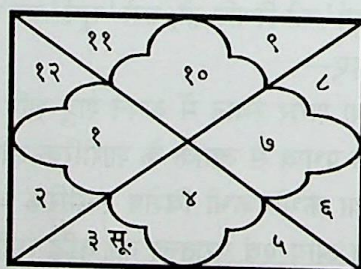
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी तथा परेशानी बनी

रहती है। ऐसे व्यक्ति को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें पड़ती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ त्रुटि बनी रहती है। सूर्य के अष्टमेश होने के कारण पूर्ण भाग्योन्नति नहीं हो पाती।
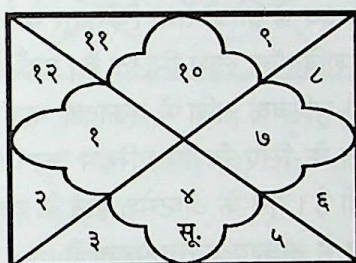
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता का सुख अच्छा मिलता है तथा भूमि एवं मकान आदि का भी लाभ होता है। उसका घरेलू वातावरण भी सुखपूर्ण रहता है। आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवनचर्या बड़े रईसी ढंग की तथा आनन्दमय रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में दशम भाव को देखता है। अतः जातक को पिता के सुख में भी रुकावटें आती रहती है।
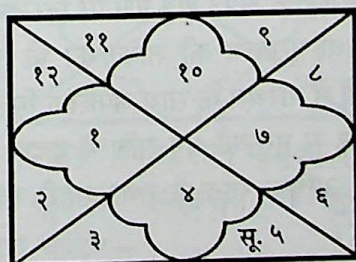
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट मिलता है, विद्याध्ययन में परेशानी होती है तथा बुद्धि की भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। वह स्वभाव से क्रोधी तथा चिन्तातुर बना रहता है। परन्तु उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ मिलता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को लाभ प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, तभी उसे सफलता प्राप्त हो जाती है। सूर्य के अष्टमेश होने के कारण उसे कठिनाईयों का सामना प्रत्येक क्षेत्र में अवश्य करना पड़ता है।
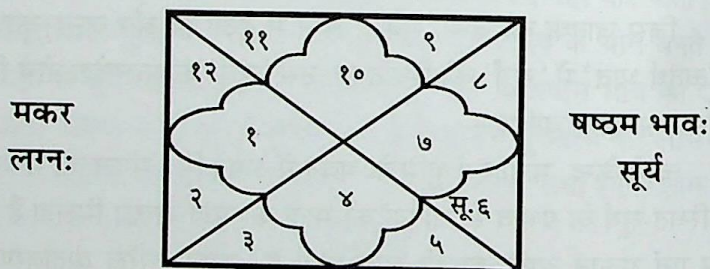
मकर लग्नः

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ सू.६ ३ ५

षष्ठम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर निरन्तर विजय प्राप्त करता रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का भी लाभ मिलता है एवं झगड़े-झंझट के मामलों में परिश्रम के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोष प्राप्त होता है।
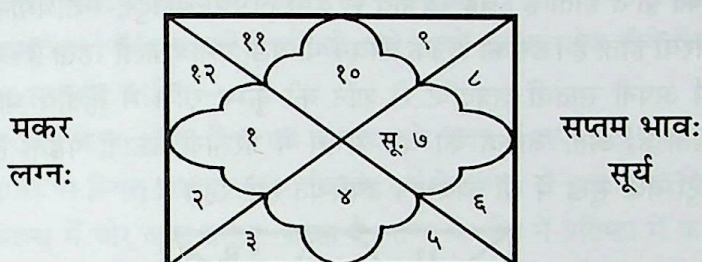
मकर लग्नः

सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से परेशानी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी बहुत हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसी सूर्य स्थिति वाले व्यक्ति को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। उसे परिश्रम भी अधिक करना पड़ता है तथा कभी-कभी रोग का शिकार भी बनता पड़ता है।
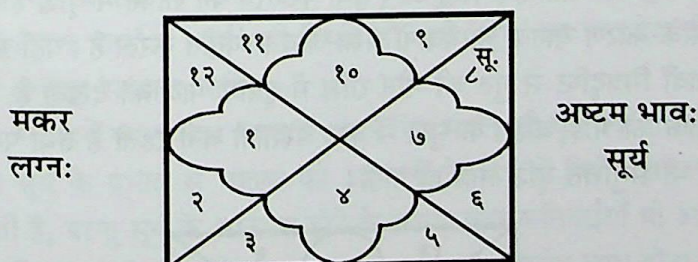
मकर लग्नः

अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की विशेष

शक्ति प्राप्त होती है। वह स्वभाव से बड़ा निर्भय, बहादुर, स्वाभिमानी तथा तेजस्वी होता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभावशाली रहता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय में परेशानी उठानी पड़ती है तथा कौटुम्बिक सुख में भी व्यवधान उपस्थित होते रहते हैं।

मकर लग्नः
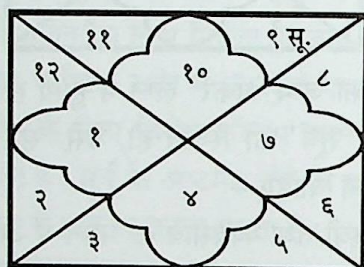
११ ९ सू.
१२ १० ८
१ ७
२ ४ ६
३ ५

नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है। धर्म-पालन में त्रुटि बनी रहती है तथा यश भी कम ही मिल पाता है। परन्तु आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है, जिसके कारण जातक भाग्यवानों जैसा जीवन व्यतीत करता है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ परेशानी बनी रहती है तथा पराक्रम की भी समुचित वृद्धि नहीं हो पाती।

मकर लग्नः
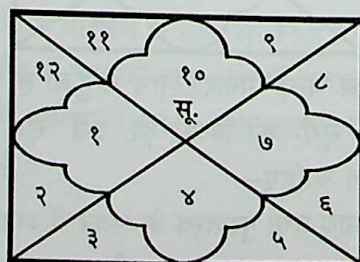
दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता के सम्बन्ध में घोर कष्ट उठाना पड़ता है। राज्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा में कमी आती है तथा व्यवसाय की उन्नति में भी बाधाएँ उपस्थित होती रहती है। इसके साथ ही जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का भी कुछ ह्रास होता है। यहाँ से जातक अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मित्र मंगल की मेष राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता एवं भूमि, मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

मकर लग्नः
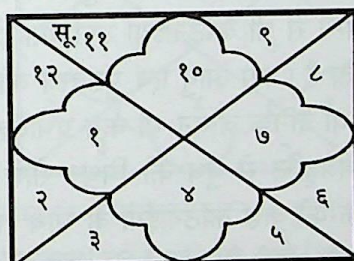
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है, परन्तु सूर्य के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाईयाँ भी आती रहती हैं। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का विशेष लाभ होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट रहता है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति के दिमाग में कुछ तेजी रहती है। अतः उसका स्वभाव उग्र रहता है।

मकर लग्न:
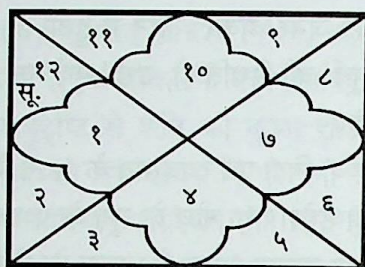
द्वादश भाव: सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश सूर्य के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण कुछ परेशानी बनी रहेगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कठिनाईयाँ उपस्थित होंगी। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार भी रहता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में भी थोड़ी हानि उठानी पड़ेगी तथा दैनिक जीवन भी कम प्रभावशाली रहेगा। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अत: जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ शत्रु पक्ष पर सफलता मिलती रहेगी तथा उनके झगड़े-झंझट अपने-आप दूर होते रहेंगे।

मकर लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

मकर लग्न:
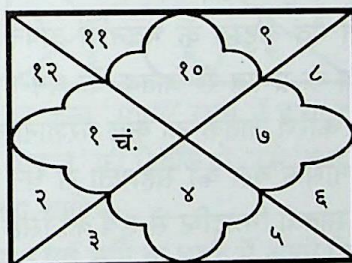
प्रथम भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह कोमल स्वभाव, विनोदी, कार्य-कुशल, लौकिक उन्नति का ध्यान रखने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर, सुयोग्य तथा स्वाभिमानी स्त्री मिलती है, साथ ही उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सुखी एवं आनन्दपूर्ण रहता है।

मकर लग्नः
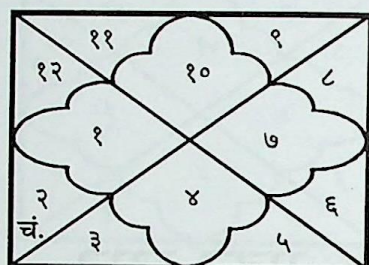
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री के कारण जातक को कुछ परेशानी का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति अपने मानसिक बल की सहायता से धन की वृद्धि करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा उसका रहन-सहन प्रभावशाली ढंग का रहता है।

मकर लग्नः
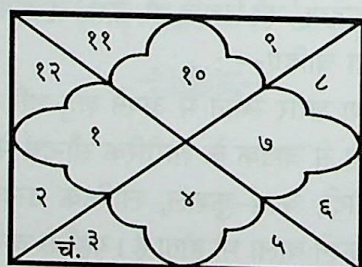
तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का अच्छा सुख-सहयोग प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे कुटुम्ब तथा

स्त्री का भी श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। उसके घर में प्रसन्नता का वातावरण बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धार्मिक पक्ष भी प्रबल बना रहता है। ऐसा जातक धनी तथा यशस्वी होता है।

मकर लग्नः **चतुर्थ भावः चन्द्र**
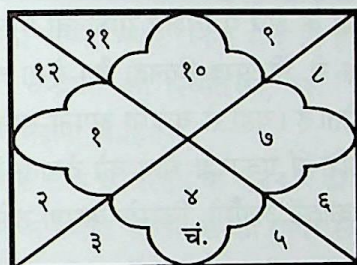
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है उसका घरेलू वातावरण उल्लासपूर्ण रहता है। व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है तथा स्त्री के पक्ष में भी सुख एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक का पिता से सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ एवं धन की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा प्रतिष्ठित होता है।

मकर लग्नः
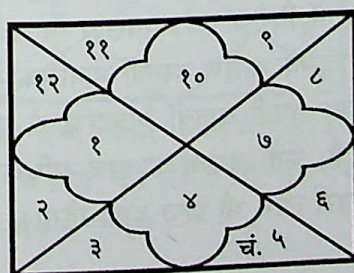
पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। साथ ही स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हाजिर-जवाब तथा हँसमुख होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में एकादश भाव को देखता है। अत: जातक की आमदनी के मार्ग में रुकावटें आएँगी, जिसके कारण उसे परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

मकर लग्न:
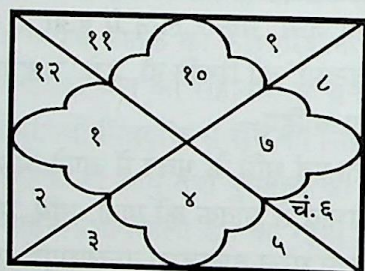
षष्ठम भाव: चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में नरम बनाकर अपना काम निकालेगा। साथ ही उसे स्त्री पक्ष में विरोध एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा, जिसके कारण उसकी मानसिक अशान्ति दूर नहीं हो सकेगी। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादश भाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक रहेगा, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे लाभ भी प्राप्त होता रहेगा।

मकर लग्नः
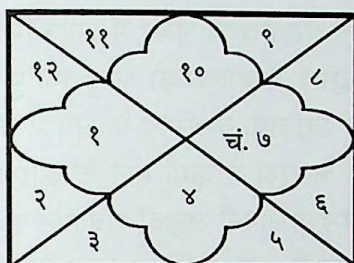
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलेगी और उसके द्वारा पर्याप्त सुख भी प्राप्त होता रहेगा। व्यवसायिक क्षेत्र में भी उसे अत्यधिक सफलता मिलेगी, जिसके कारण उसका जीवन सुखी तथा आनन्द व उल्लास से पूर्ण बना रहेगा। ऐसा व्यक्ति शृंगार, सौन्दर्य, भोग तथा अन्य प्रकार के सुखों का उपयोग करने में विशेष अनुरक्त रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव में सन्तोषजनक वृद्धि नहीं होगी। इसी प्रकार व्यवसाय तथा यश के क्षेत्र की सफलता से भी जातक कुछ असन्तुष्ट बना रहेगा।

मकर लग्नः
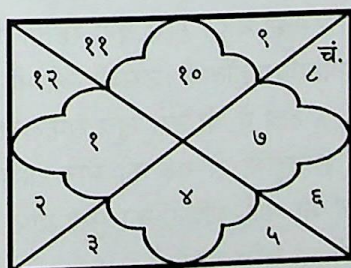
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के यथेष्ट सुख की प्राप्ति होगी, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। गृहस्थी के सुख में कमी होने के कारण मन में भी अशान्ति बनी रहेगी। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कठिनाईयों के साथ प्राप्त होगा। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन ठाट-बाट का बना रहता है।

मकर लग्नः
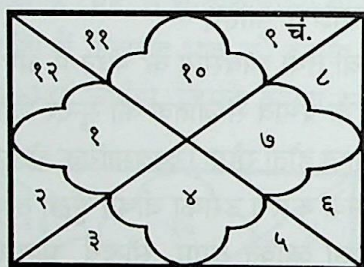
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है, साथ ही धर्म में भी उसको बहुत रुचि बनी रहती है। ऐसा जातक धनी, धार्मिक, यशस्वी तथा न्यायप्रिय होता है। उसकी स्त्री भी सुन्दर तथा भाग्यवान होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे खूब सफलता मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा उसके मनोबल एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

मकर लग्नः
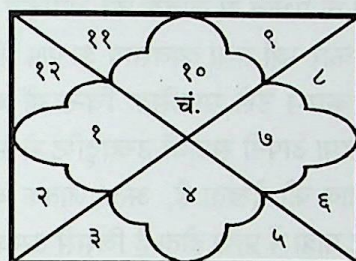
दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय द्वारा धन एवं सफलता की प्राप्ति होती है। उसका मनोबल बहुत उन्नत रहता है। उसकी स्त्री सुन्दर तथा स्वाभिमानी होती है। उसके घरेलू वातावरण में भी आमोद-प्रमोद बिखरा रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी यथेष्ट मिलता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक भाग्यवान, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

मकर लग्नः
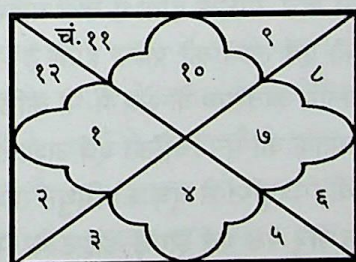
एकादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर

स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। इसी प्रकार स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी अल्प सुख प्राप्त होता है। गृहस्थी के कारण उसे मानसिक चिन्ताओं का शिकार भी बनना पड़ता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है जिससे उसका जीवन उल्लासपूर्ण रहता है। संक्षेप में, ऐसा जातक सामान्य सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, गुणवान एवं विद्वान होता है।
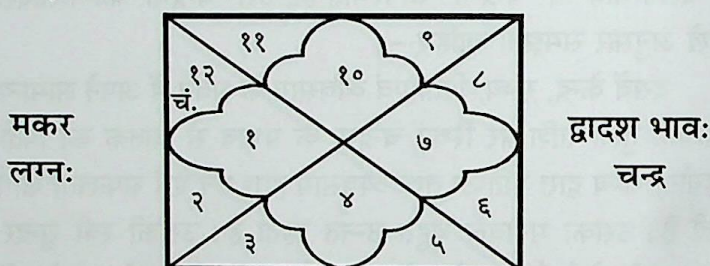
मकर लग्नः

द्वादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे सफलता, शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। स्त्री पक्ष से सुख में कमी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं। इन सबके कारण जातक का मन चिन्तित एवं अशान्त बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष एवं झगड़े-झंझट के मामले में विनम्रता से काम निकालता है तथा अपने मनोबल से उन पर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।

मकर लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल
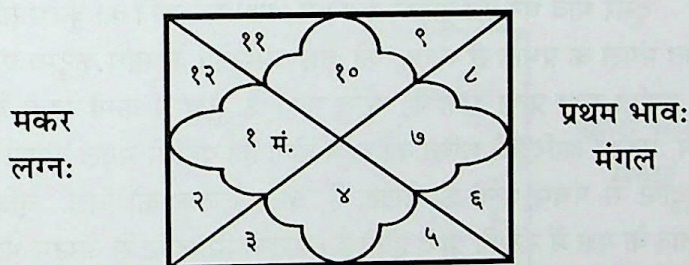
मकर लग्न:

प्रथम भाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं शक्ति में वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। उसका रहन-सहन शान-शौकत भरा होता है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र की राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कठिनाईयाँ आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चतुर, जीवन में सुखी तथा धनी होता है।

मकर लग्नः
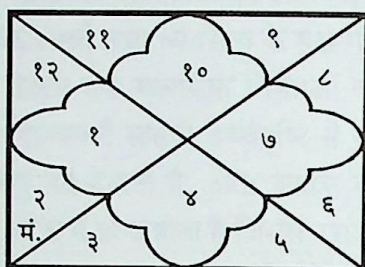
द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे भाव धन एवं कुटुम्ब स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ असन्तोष के साथ कुटुम्ब एवं धन का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति का लाभ होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक के भाग्य की वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने पूरे जीवन भर आर्थिक लाभ का ध्यान अधिक रखता है।

मकर लग्नः
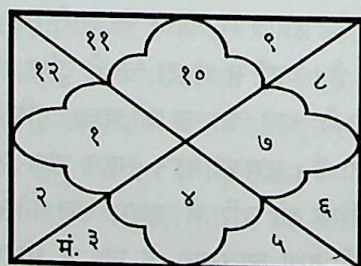
तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है। वह अपने पुरुषार्थ द्वारा आमदनी को बढ़ाता है तथा माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त करता है, यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है। अतः जातक का शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है, साथ ही वह हिम्मती और बहादुर होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन होता है, जिसके कारण जातक को यश भी प्राप्त होता है। आठवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से कुछ त्रुटियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

मकर लग्नः
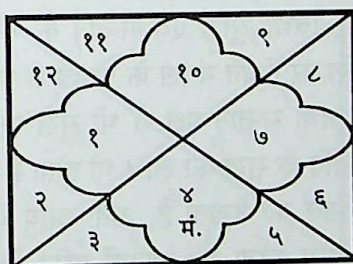
चतुर्थ भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का विशेष सुख एवं लाभ मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से सप्तम भाव को मित्र की राशि में देखता है, अतः स्त्री के सुख में कमी रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती हैं। सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की राशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता, सम्मान एवं सहयोग की प्राप्ति होती है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा बड़ी सरलता से लाभ के साधन उपलब्ध होते रहते हैं। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति धनी

तथा सुखी होता है।
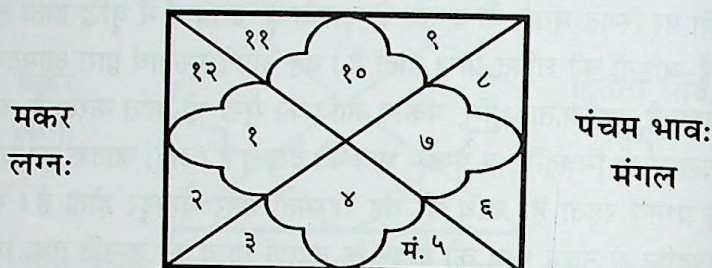
मकर लग्नः

पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि की शक्ति मिलती है तथा सन्तान पक्ष से भी सुख प्राप्त होता है, साथ ही माता, भूमि, मकान आदि के सुख का लाभ भी होता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ प्राप्त होता है।
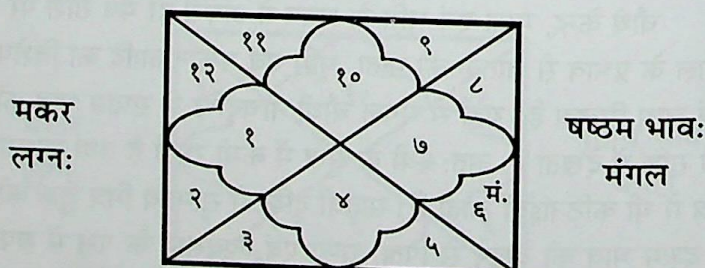
मकर लग्नः

षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ उठाता है। माता, भूमि तथा मकान के सुख में कमी आती है, साथ ही आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ उपस्थित होती रहती हैं। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है। आठवीं उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि से प्रथम भाव को देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है और उसे सुख, स्वास्थ्य तथा समृद्धि की प्राप्ति होती है।
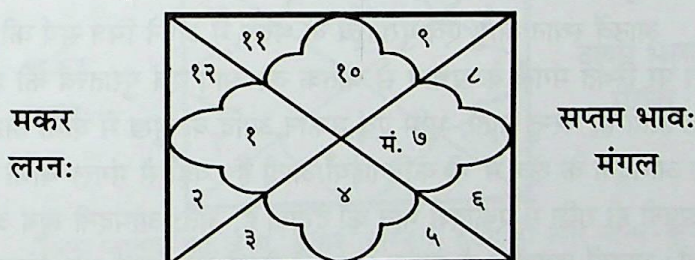
मकर लग्नः

सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष तथा गृहस्थी से सुख प्राप्त करने में बड़ी कमी रहती है। इसी प्रकार व्यवसाय, माता, भूमि तथा मकान का सुख भी बहुत क्षीण रहता है। यहाँ से मंगल चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथम भाव को देखने से प्रथम भाव को देखने से जातक के शारीरिक प्रभाव, सौन्दर्य, सुख एवं गौरव में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण धन-संचय में कुछ कठिनाईयाँ आएँगी

तथा कौटुम्बिक सुख सामान्य रूप में प्राप्त होता रहेगा।
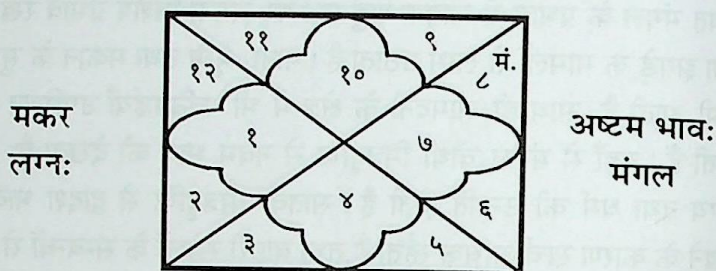
मकर लग्नः

अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आती है तथा आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती हैं। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी खूब अच्छी रहेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण धन-संचय की शक्ति में सामान्य त्रुटियों के साथ सफलता मिलेगी तथा कुटुम्ब का सुख भी सामान्य रहेगा। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होगा तथा पराक्रम में वृद्धि होगी।
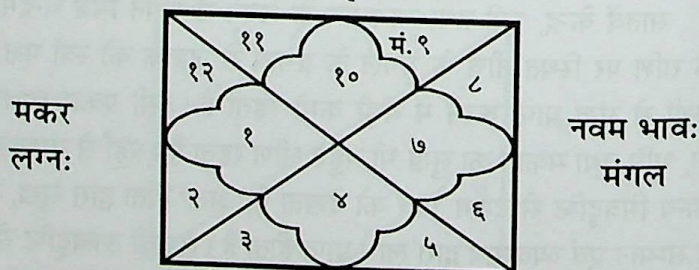
मकर लग्नः

नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है, वह धनी, धर्मात्मा, न्यायी तथा यशस्वी होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है एवं आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का विशेष सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी, विनोदी, पुरुषार्थी तथा पराक्रमी होता है।

मकर लग्न:
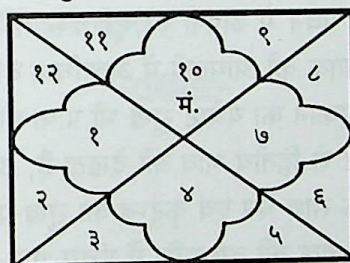
दशम भाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता की विशेष शक्ति मिलती है। राजकीय क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथम भाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह स्वाभिमानी तथा बड़प्पन रखने वाला होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं दृष्टि से शुक्र की वृष राशि में पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष वृद्धि होती है।

मकर लग्नः
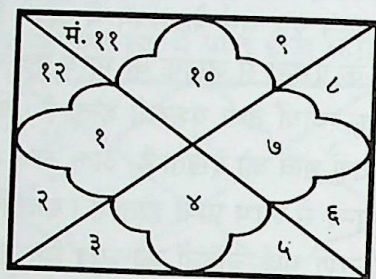
एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। साथ ही उसे माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ असन्तोष एवं कमी के साथ धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि में पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से जातक का शत्रु पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है और झगड़ों के मामलों में उसे लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

मकर लग्नः
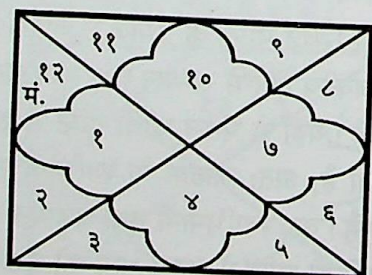
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा मातृभूमि का वियोग भी सहन करना पड़ता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है। अतः भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़ों से कोई चिन्ता उत्पन्न नहीं होती। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि तथा सुख में कमी आती है।

मकर लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

मकर लग्नः
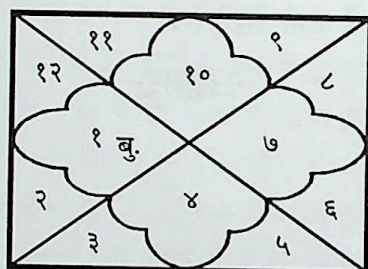
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है तथा उसकी परेशानियाँ स्वयमेव दूर होती रहती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा रोजगार के पक्ष में भी सफलता मिलती है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ आती रहती हैं।

मकर लग्नः
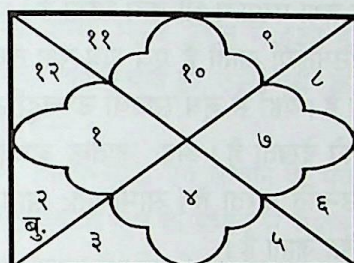
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी सहयोग एवं सुख प्राप्त होता है। उसे मान-प्रतिष्ठा भी मिलती है और धर्म में भी उसकी रुचि बनी रहती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण कभी-कभी भाग्योन्नति में कठिनाईयाँ भी आती रहती हैं। प्रायः ऐसा जातक भाग्यवान तथा सुखी होता है।

मकर लग्नः
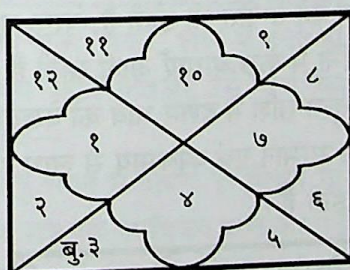
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख

में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम भी कम रहता है। भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में भी कुछ कठिनाईयाँ आती हैं एवं शत्रु पक्ष तथा झगड़ों से भी कुछ परेशानी उठानी पड़ती है। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में नवम भाव को देखता है। अतः जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है। सामान्यतः सामाजिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति भाग्यवान समझा जाता है।

मकर लग्नः

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ बु. ६ ३ ५
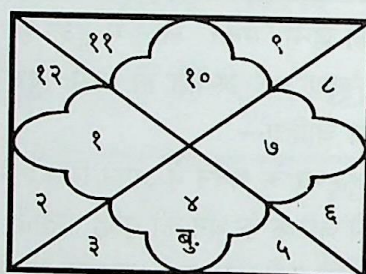
चतुर्थ भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है, साथ ही भाग्य की उन्नति भी होती है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण घरेलू सुख-शान्ति में कुछ बाधाएँ आती रहती हैं। यहाँ से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है तथा शत्रु पक्ष में सफलता मिलती रहती है।

मकर लग्नः
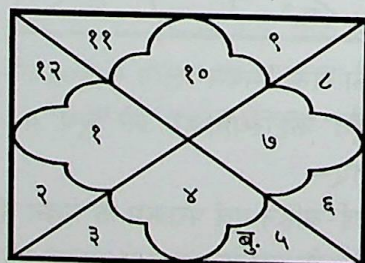
पंचम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। वह अपने परिश्रम द्वारा जीवन में विशेष उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे शत्रु पक्ष में सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक विवेक एवं भाग्य की शक्ति से श्रेष्ठ लाभ का उपार्जन करता है।

मकर लग्नः
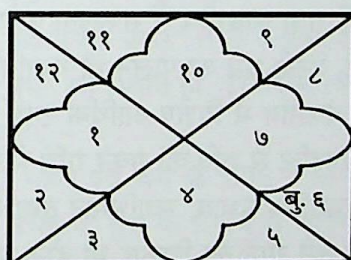
षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। उसकी भाग्योन्नति तथा धार्मिक उन्नति के क्षेत्र में कुछ कइिनाईयाँ उपस्थित होती हैं तथा कभी-कभी लाभ के स्थान पर हानि भी उठानी पड़ती है, परन्तु वह सब बाधाओं को पार करके उन्नतिशील बना रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ, सुख तथा शक्ति प्राप्त होती है।

मकर लग्नः
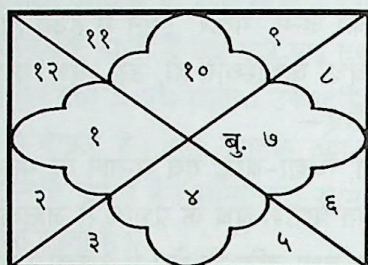
सप्तम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने विवेक द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है तथा व्यवसाय में सफलता पाता है। उसे स्त्री पक्ष से कुछ अशान्ति रहती है, परन्तु धर्म का पालन भी यथाविधि होता है तथा कुछ कठिनाईयों के साथ व्यवसाय में विशेष आर्थिक लाभ भी होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव, स्वाभिमान तथा सम्मान में वृद्धि होती है, परन्तु कभी-कभी उसे रोगों का शिकार भी होना पड़ता है।

मकर लग्नः
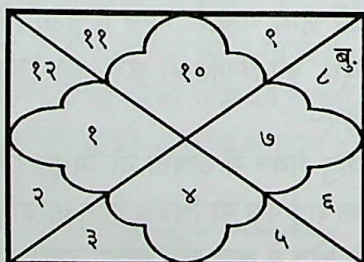
अष्टम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का

लाभ होता है। उसकी भाग्योन्नति में विशेष बाधाएँ आती हैं तथा यश की भी कमी रहती है। शत्रु पक्ष की ओर से भी संकट एवं अशान्ति का वातावरण बनता रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है, परन्तु ऐसे जातक का दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

मकर लग्नः
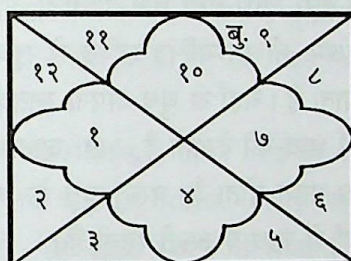
११ बु. ९
१२ १० ८
१ ७
२ ४ ६
३ ५

नवम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह लोक-दिखावे के लिए धर्म का पालन भी करता है। शत्रु पक्ष पर उसे विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता रहता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं नीचदृष्टि से गुरु की मीन राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक का भाई से विरोध रहता है अथवा भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है और वह पुरुषार्थ की अपेक्षा भाग्य को अधिक बड़ा समझता है। इस प्रकार उसका पराक्रम शिथिल बना रहता है।

मकर लग्नः
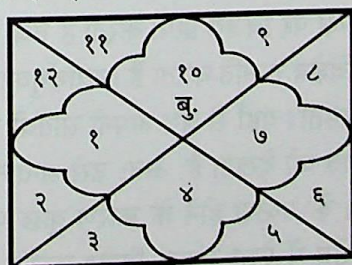
दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा लाभ तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, वह अपने भाग्य तथा परिश्रम की सम्मिलित शक्ति से खूब धन कमाता है तथा शत्रु पक्ष पर विजय पाता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण उसकी उन्नति के मार्ग में बाधायें आती रहती हैं।
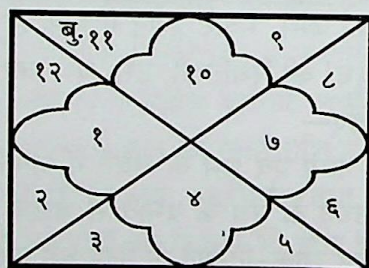
मकर लग्नः

एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलती है। वह शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा परिश्रम एवं विवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करता है। स्वार्थयुक्त धर्म का पालन करने में भी वह पीछे नहीं रहता। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः उसे सन्तान पक्ष में सफलता तो मिलती है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण कुछ परेशानी भी रहती है। विद्या और बुद्धि के क्षेत्र में ऐसा जातक विशेष उन्नति करता है।

मकर लग्न:

द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है परन्तु उसकी पूर्ति में कोई कठिनाई नहीं पड़ती। वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष शक्ति, लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसकी भाग्योन्नति में कठिनाईयाँ आती रहती हैं तथा यश की कमी रहती है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक को शत्रु पक्ष से कुछ कठिनाई रहती है, परन्तु वह अपने भाग्य की शक्ति से उन कठिनाईयों पर सफलता प्राप्त कर लेता है।

मकर लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल

मकर लग्नः
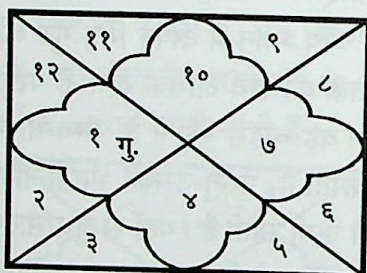
प्रथम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता रहती है, भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, पराक्रम न्यून रहता है, खर्च चलाने में कठिनाई पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से असन्तोष मिलता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या एवं बुद्धि में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है तथा सन्तान से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं। सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से सुख तथा सफलता मिलती है एवं नौवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में घट-बढ़ बनी रहती है।

मकर लग्नः
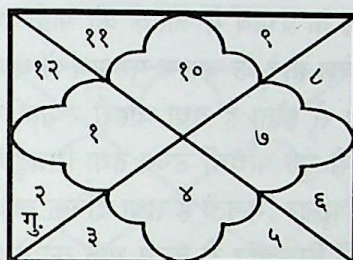
द्वितीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के धन-संचय में कमी आती है तथा कुटुम्ब से भी परेशानी रहती है। ऐसे व्यक्ति का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में बुद्धिमानी एवं चतुराई से काम निकालता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की कुछ शक्ति मिलती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता प्राप्त होती है।

मकर लग्नः
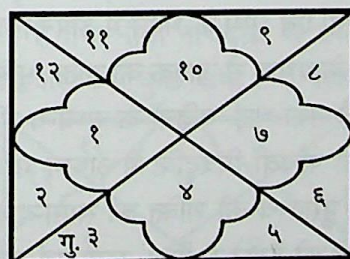
तृतीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मीन राशि

पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है, परन्तु गुरु के व्ययेश होने के कारण पुरुषार्थ में कमी आती है। खर्च का संचालन सुचारू रूप से होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में न्यूनाधिकता बनी रहती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है। कुल मिलाकर ऐसा व्यक्ति सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करता है।
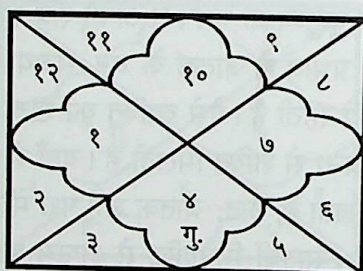
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है तथा भाई-बहिनों के सम्बन्ध में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का सामान्य लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है तथा नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि के द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे घर बैठे ही लाभ प्राप्त होता रहता है।

मकर लग्नः
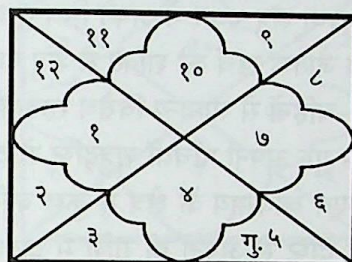
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से न्यूनाधिक लाभ होता है तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धि-बल से अपने खर्च को चलाता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। उसे भाई-बहिनों का भी सामान्य सुख मिलता है तथा बुद्धि-बल से उसके पराक्रम की वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु पाँचवी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण पुरुषार्थ द्वारा आमदनी अच्छी रहती है तथा नौवीं नीचदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी तथा परेशानी बनी रहती है।

मकर लग्नः
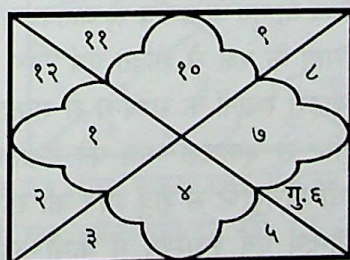
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग तथा शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक खर्च की शक्ति से शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है। उसका भाई-बहिनों से सामान्य विरोध रहता है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ एवं कमियाँ बनी रहती हैं। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति मिलती है। नौवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। फिर भी कष्ट ही प्राप्त होता है।
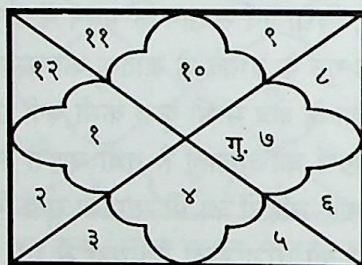
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से शक्ति एवं लाभ प्राप्त होता है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा चित्त में चिन्ताएँ घर किए रहती हैं। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

मकर लग्नः
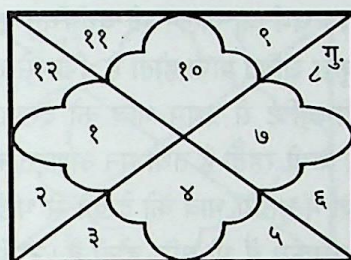
अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खर्च चलता रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

मकर लग्नः
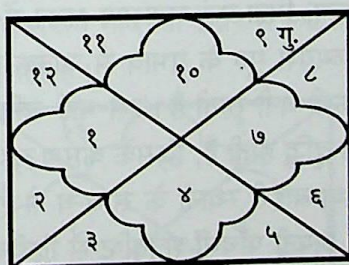
नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कमजोरी

रहती है, इसी प्रकार वह धर्म का पालन भी यथोचित नहीं कर पाता। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ शक्ति प्राप्त होती है, जिससे खर्च चलता रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं नीचदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा मन अशान्त बना रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन की सामान्य शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। नौवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष में विवेक-बुद्धि से सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़े के मामलों में कभी हानि और कभी लाभ होता है।

मकर लग्नः
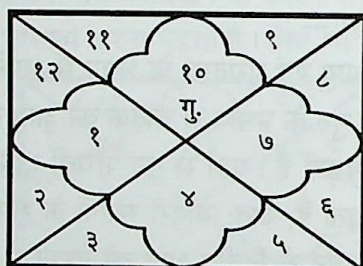
११ ९ १२ १० गु. ८ १ ७ २ ४ ६ ३ ५

दशम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष से कमी बनी रहती है। उसे भाई-बहिन की शक्ति मिलती है तथा पुरुषार्थ की भी वृद्धि होती है, जिसके कारण वह अपने खर्च को ठाठ से चलाता रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ प्राप्त करता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कठिनाईयाँ आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता का सुख त्रुटिपूर्ण रहता है, परन्तु खर्च के बल पर भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। नौवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से जातक शत्रु पक्ष पर अपनी बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित करता है।

मकर लग्नः
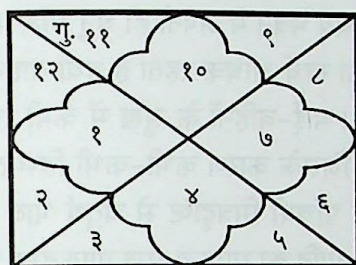
एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है, परन्तु गुरु के व्ययेश होने के कारण उसमें कुछ कठिनाईयाँ भी आती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होने के कारण खर्च आराम तथा ठाठ से चलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं दृष्टि से तृतीय भाव को अपनी ही राशि में देखता है, अतः भाई-बहिन एवं पराक्रम की शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की वृष राशि में पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि एवं वाणी की शक्ति प्राप्त होती है। नौवीं उच्चदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।

मकर लग्नः
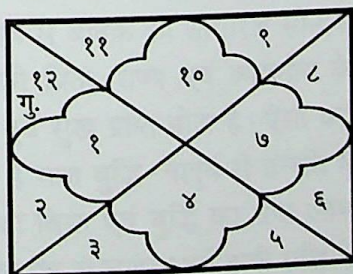
द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। भाई-बहिनों के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। जिसके कारण कभी-कभी हिम्मत भी जवाब दे जाती है, यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर युक्तिपूर्वक प्रभाव स्थापित होता है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक को कुछ कमी के साथ आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने शानदार खर्च के आधार पर जीवन को प्रभावशाली बनाए रखता है।

मकर लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

मकर लग्नः
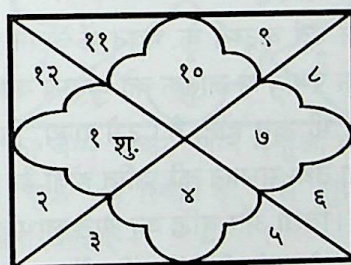
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों से भी सहयोग, सम्मान, सफलता एवं सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है तथा बुद्धि-चातुर्य से उन्नति करता है। सन्तान पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को सुन्दर तथा सुयोग्य स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है।

मकर लग्नः
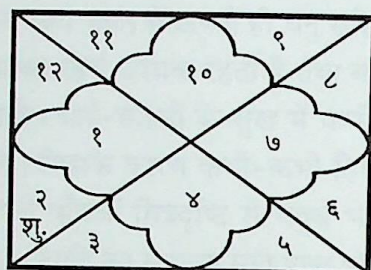
द्वितीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है तथा धन का संचय भी खूब होता है। उसे राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्रों से सुख, सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान पक्ष से कुछ कठिनाई रहती है। विद्या और बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु की शक्ति में कुछ कमी आती है तथा पुरातत्त्व का भी स्वल्प लाभ मिल पाता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा यशस्वी तो होता है, परन्तु उसे विभिन्न प्रकार की चिन्ताएँ भी लगी रहती हैं।

मकर लग्नः
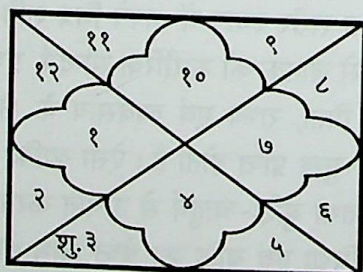
तृतीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य मित्र

गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा विद्या एवं सन्तान पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है। साथ ही पिता का सुख, सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। भाई-बहिन का सुख भी कुछ कमी के साथ मिलता है तथा जातक बड़ा हिम्मती एवं धैर्यवान होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य उन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कमी बनी रहती है तथा यश भी कम ही मिल पाता है।

मकर लग्नः
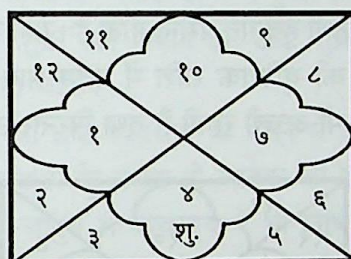
११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६ ३ शु. ५

चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होता है तथा बुद्धि-योग से आमदनी के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता का सहयोग, राज्य से सम्मान, व्यवसाय से लाभ, विद्या में प्रवीणता तथा सन्तान पक्ष से सहयोग भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति नीतिज्ञ, विचारवान, शीलवान तथा सुख-शान्तिपूर्ण जीवन बिताने वाला होता है।

मकर लग्नः
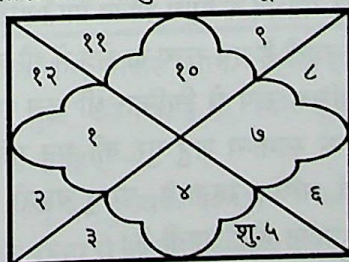
पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपनी ही वृष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की शक्ति एवं सन्तानों का सुख प्राप्त होता है। वह अपने चातुर्य के बल पर उन्नति करता है। उसे पिता द्वारा लाभ तथा राज्य द्वारा सम्मान भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति कायदे-कानून की बातें करने वाला तथा हुकूमत पसन्द होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी भी अच्छी रहती है तथा निरन्तर उन्नति भी करता चला जाता है।

मकर लग्नः
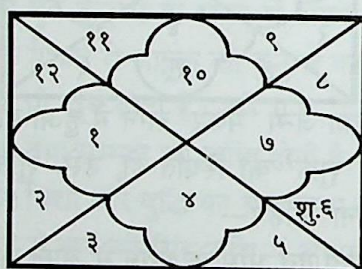
षष्ठम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाला होता है। उसको पिता द्वारा कुछ मतभेद के साथ शक्ति प्राप्त होती है, सन्तान पक्ष तथा विद्या के पक्ष में कमी रहती है एवं राज्य के क्षेत्र में भी कम सम्मान मिल पाता है। ऐसा व्यक्ति मानसिक रूप से चिन्तित भी बना रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती रहती है।

मकर लग्नः
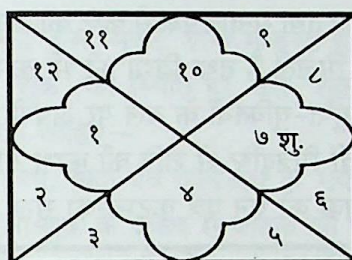
सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा योग्य स्त्री मिलती है तथा बुद्धि-चातुर्य से व्यवसाय में भी लाभ होता है। उसे पिता, विद्या एवं सन्तान पक्ष से सुख मिलता है तथा घरेलू जीवन भी आनन्दपूर्ण बना रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में प्रथम भाव को देखता है अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। उसे राजकीय क्षेत्र में सम्मान मिलता है तथा समाज में भी प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

मकर लग्नः
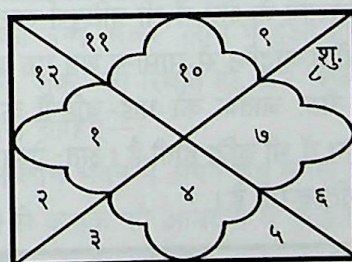
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का लाभ

होता है। उसे पिता पक्ष तथा सन्तान पक्ष से कष्ट का अनुभव होता है, राजकीय क्षेत्र में सम्मान कम मिलता है तथा विद्या की भी कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर अपनी उन्नति करता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है।
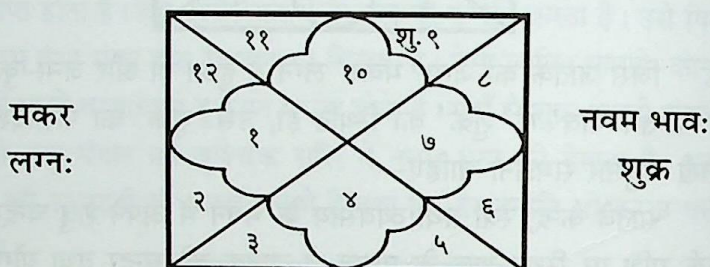
मकर लग्नः

११ शु. ९
१२ १० ८
१ ७
२ ४ ६
३ ५

नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं तथा धर्म का पालन भी ठीक प्रकार से नहीं होता। उसे पिता, सन्तान, विद्या, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख विषम रूप से मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। अतः ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम तथा पुरुषार्थ से उन्नति करता है।
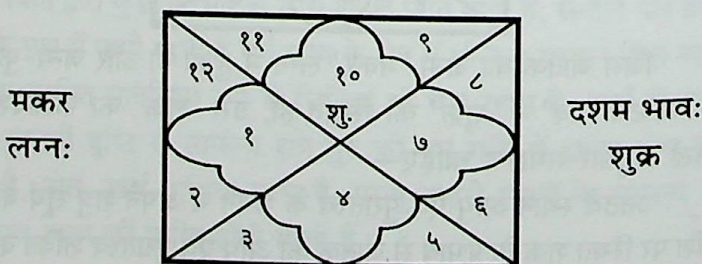
मकर लग्नः

दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता से पूर्ण सहयोग, राज्य से अत्यधिक सम्मान तथा व्यवसाय से विशेष लाभ प्राप्त होता है। उसका सन्तान तथा विद्या पक्ष भी प्रबल रहता है। वह अपनी बुद्धि तथा चातुर्य द्वारा उन्नति करता है एवं राजनीतिज्ञ और न्यायशील होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख प्राप्त होता है और उसका घरेलू जीवन आनन्दमय बना रहता है।

मकर लग्न:
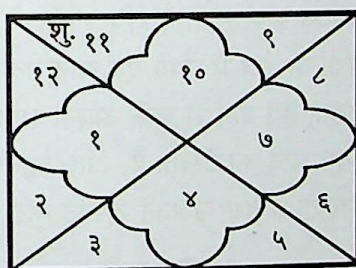
एकादश भाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, साथ ही उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी सफलता प्राप्त होती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृष राशि में पंचम भाव को देखता है, अत: जातक को सन्तान पक्ष की शक्ति मिलती है तथा विद्या, गुण तथा योग्यता के बल पर सर्वत्र आदर, सम्मान तथा लाभ प्राप्त करता है। वह राज्याधिकारी तथा प्रभावशाली भी होता है।
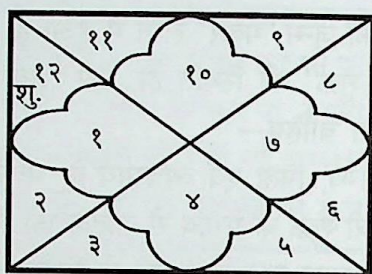
द्वादश भावः
शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं शक्ति प्राप्त होती है। पिता पक्ष से हानि, सन्तान पक्ष से कष्ट, प्रतिष्ठा तथा विद्या के क्षेत्र में कमी एवं मानसिक चिन्ताओं का प्रभाव भी जातक के ऊपर पड़ता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में चातुर्य द्वारा अपना काम निकालता है तथा उसकी उन्नति कुछ विलम्ब से होती है।

मकर लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फल

मकर लग्नः
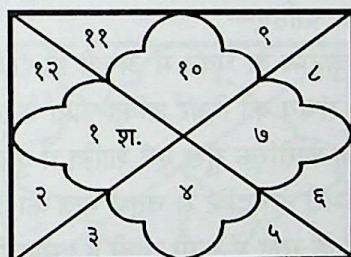
प्रथम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, स्वाभिमानी तथा कौटुम्बिक सुख से परिपूर्ण होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष से भी कुछ असन्तोष रहता है तथा व्यवसायिक उन्नति के लिए परिश्रम करता रहता है। दसवीं उच्चदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यश, मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

मकर लग्नः
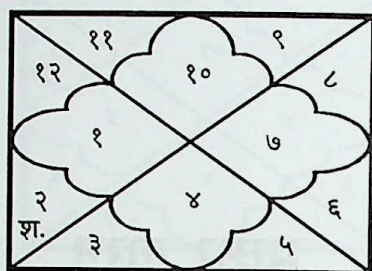
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी ही राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक धन-संचय की स्थिर शक्ति प्राप्त करता है तथा कुटुम्ब से भी लाभ होता है, परन्तु शारीरिक सुख एवं शान्ति में कुछ कमी आ जाती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण कठिनाईयों के साथ आमदनी की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धन तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा स्वार्थी होता है।

मकर लग्नः

तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु गुरु की

मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन की शक्ति कुछ कठिनाईयों के बाद मिलती है, पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के बल पर धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त करता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। सतावीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ मिलता है।

मकर लग्नः

चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है तथा भूमि, भवन के सुख में कमी रहती है। साथ ही शारीरिक सौन्दर्य, धन एवं कुटुम्ब का सुख भी कम प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव बनाए रखता है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ उठाता है। सातवीं उच्चदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता का लाभ होता है तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण शरीर कुछ सुन्दरता लिए रहता है, आत्मबल अधिक होता है तथा धन-संचय के लिए भी जातक

प्रयत्नशील बना रहता है।

मकर लग्नः

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६ ३ श. ५

पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या, बुद्धि, वाणी, योग्यता एवं शारीरिक सौन्दर्य का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति विचारशील, स्वाभिमानी परन्तु स्वार्थी होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री पक्ष से असन्तोष रहते हुए भी जातक स्त्री में अधिक अनुरक्त रहता है तथा व्यवसाय के पक्ष में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाईयाँ आती हैं तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है, एवं सन्तान पक्ष से लाभ होता है तथा यश एवं सम्मान बढ़ता है।

मकर लग्नः
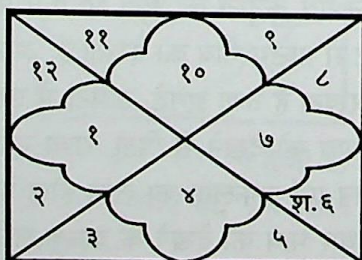
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है, शत्रु पक्ष पर प्रभाव बढ़ता है, कुटुम्ब से सामान्य विरोध रहता है, धन-संग्रह में कमी आती है तथा शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में विशेष लाभ नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध स्थापित होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य बना रहता है, परन्तु पुरुषार्थ की विशेष वृद्धि होती है।

मकर लग्नः
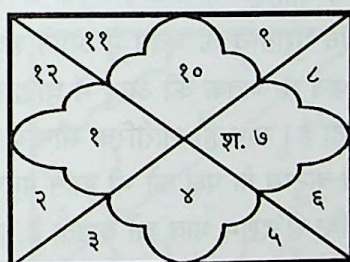
सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से शक्ति एवं आत्मीयता की प्राप्ति होती है तथा परिश्रम के द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। साथ ही धन एवं सन्तान का सुख भी मिलता है। साथ ही धन एवं सन्तान का सुख भी मिलता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं स्वाभिमान का लाभ होता है तथा घर-गृहस्थी

एवं व्यवसाय से सुख, लाभ तथा सम्मान मिलता है। दसवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी अल्प मात्रा में ही मिल पाता है।
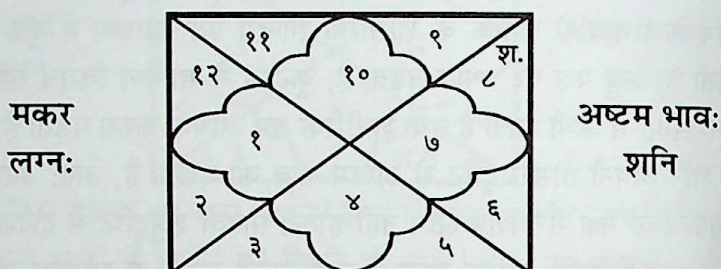
मकर लग्नः

११ ९ श. १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६ ३ ५

अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ होता है। साथ ही शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा धन एवं कुटुम्ब के पक्ष को भी हानि पहुँचती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी उच्चदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ उन्नति, सहयोग, सम्मान एवं सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख थोड़ा मिलता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान पक्ष में उन्नति होती है तथा बुद्धि तीव्र बनी रहती है।
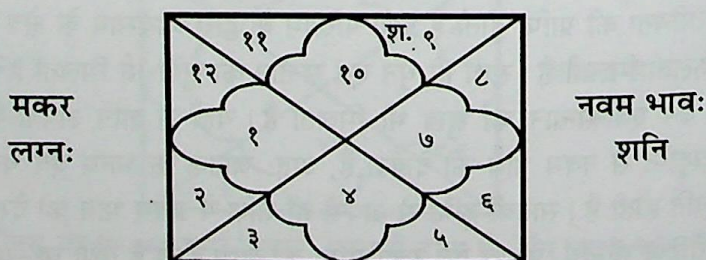
मकर लग्नः

नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति खूब होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। साथ ही शारीरिक प्रभाव, सम्मान एवं कुटुम्ब की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अत: आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक धन एवं शारीरिक-शक्ति के बल पर शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़ों के मामलों से लाभ उठाता है।

मकर लग्नः
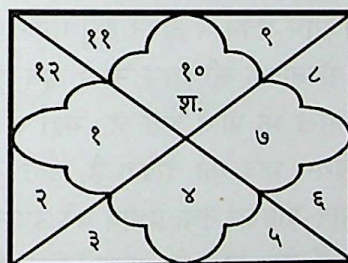
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक को पिता एवं कुटुम्ब से सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोष बना रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी

आती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री के सुख में कमी रहती है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाईयाँ उपस्थित होती हैं।

मकर लग्नः
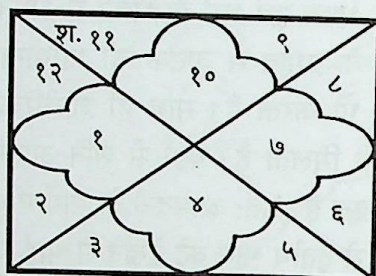
श. ११
९
१२
१०
८
१
७
२
४
६
३
५

एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है और उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, आत्मबल, मान-प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की उपलब्धि पर्याप्त होती है। वह सदैव धन-संचय में लगा रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान की शक्ति मिलती है तथा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में खूब प्रवीणता प्राप्त होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु के सम्बन्ध में चिन्ता बनी रहती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति का कुछ लाभ होता है। सामान्यतः ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

मकर लग्नः
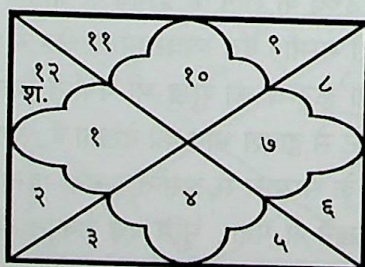
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी स्थानों से पर्यटन के द्वारा शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है। धन, कुटुम्ब तथा शारीरिक-स्वास्थ्य में कमी भी आती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है एवं झगड़े-झंझट के कामों में सफलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। कुल मिलाकर ऐसा व्यक्ति धनी तथा भाग्यशाली माना जाता है।

मकर लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल

मकर लग्नः
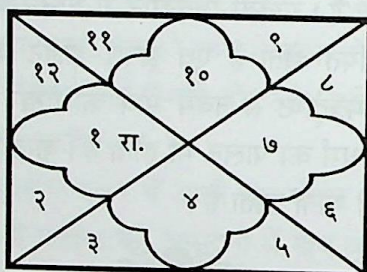
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी आती है तथा उसे गुप्त-चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं। कभी शरीर में चोट भी लगती है तथा कोई विशेष बीमारी भी होती है। ऐसा व्यक्ति अपने युक्ति-बल से सम्मान तथा प्रभाव को बढ़ाता है और अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। वह बड़ा सावधान, चतुर तथा हिम्मत वाला भी होता है।

मकर लग्नः
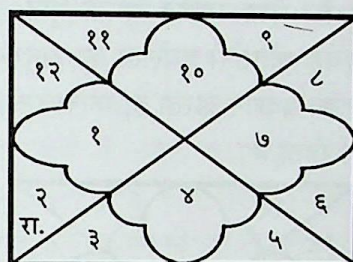
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के कारण चिन्तित रहना पड़ता है तथा कष्ट उठाना होता है। वह अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। कभी-कभी उसे ऋण भी लेना पड़ता है। वह प्रकट रूप में धनी तथा प्रतिष्ठित माना जाता है, परन्तु यथार्थ में धन की कमी का अनुभव करता है। अन्त में, वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ भी बना लेता है।

मकर लग्नः
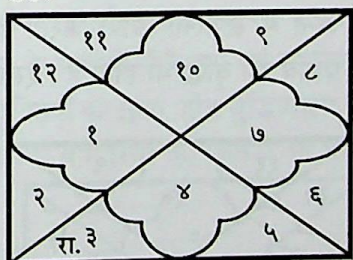
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की ओर से चिन्ता बनी रहती है तथा कष्ट भी प्राप्त होता है, परन्तु उसके पराक्रम की

अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर प्रभाव को बढ़ाता है। वह भीतर से दुर्बलता का अनुभव करते रहने पर भी प्रत्यक्ष रूप में हिम्मत का प्रदर्शन करता है, फलस्वरूप वह कठिनाईयों पर विजय भी प्राप्त करता रहता है।

मकर लग्नः

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६ ३ रा. ५
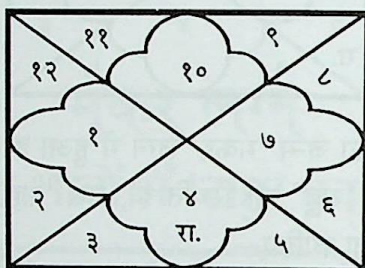
चतुर्थ भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी बनी रहती है। उसका घरेलू वातावरण अशान्तिपूर्ण बना रहता है और उसे अपनी मातृभूमि का त्याग भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों के बल पर अन्त में सफलता प्राप्त करता है, तब उसे सुख भी मिलता है और उसके प्रभाव की वृद्धि भी होती है। ऐसा जातक बड़ा साहसी तथा धैर्यवान होता है।

मकर लग्नः
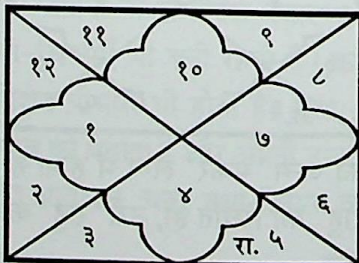
पंचम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या ग्रहण करने में कठिनाईयाँ आती हैं। परन्तु ऐसे व्यक्ति की बुद्धि बहुत तेज होती है, अतः वह बड़ा होशियार, गुप्त-युक्तियों में प्रवीण तथा चतुर होता है। कभी-कभी उसका मस्तिष्क चिन्ताओं के कारण परेशान भी हो जाता है, परन्तु अन्त में उसे सन्तान तथा विद्या, दोनों के ही पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

मकर लग्नः
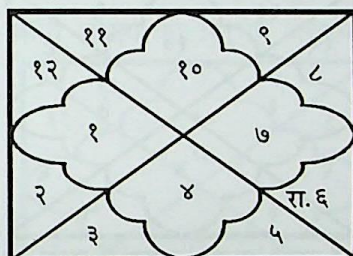
११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ रा. ६ ३ ५

षष्ठम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग तथा शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में विजय एवं सफलता प्राप्त करता रहता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों का ज्ञाता, तीव्र बुद्धि वाला, कूटनीतिज्ञ तथा विवेकी होता है। उसे शारीरिक बीमारियों का शिकार भी कभी नहीं बनना पड़ता।

मकर लग्नः
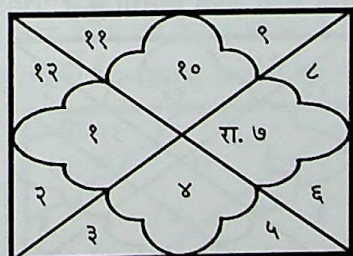
सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से महान कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती रहती हैं। उसकी जननेन्द्रिय में रोग भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करता है, फिर भी उसे कुछ-न-कुछ मानसिक कष्ट हमेशा बना रहता है।
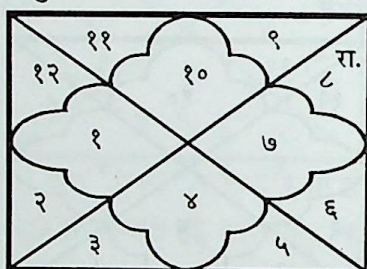
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है। साथ ही पुरातत्त्व की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति उदर अथवा गुदा सम्बन्धी रोगों का शिकार रहता है। वह अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर जैसे-तैसे जीवन-यापन करता चला जाता है तथा कुछ प्रभावशाली भी होता है।
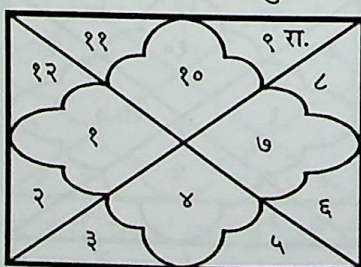
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में निरन्तर बाधाएँ आती रहती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर उनका निराकरण करता रहता है तथा कभी-कभी विशेष कठिनाईयों का शिकार भी बनता है। धर्म का पालन भी वह कुछ कमी के साथ करता है। ऐसा व्यक्ति बड़े संघर्षों, परिश्रम एवं युक्तियों के बल पर अपने भाग्य की थोड़ी-बहुत उन्नति कर लेता है, फिर भी उसे किसी-न-किसी अभाव का अनुभव अवश्य होता रहता है।
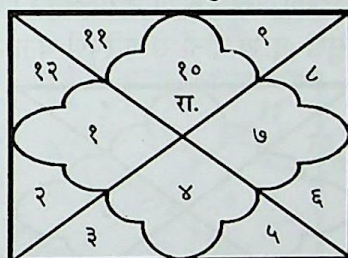
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा कुछ कठिनाईयों, राज्य के द्वारा परेशानियों तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों एवं चातुर्य के बल पर उन सबका निराकरण करता है तथा भाग्य को उन्नत बनाता है। फिर भी उसे इन सभी क्षेत्रों में अनेक बार संकटों का सामना अवश्य करना पड़ता है।
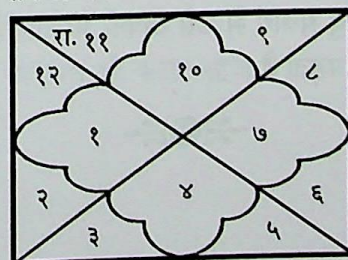
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम, साहस एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर विशेष लाभ प्राप्त करता है, परन्तु उसे अपनी आमदनी की वृद्धि के लिए कष्ट, परेशानी तथा संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को कभी बहुत हानि उठानी पड़ती है तो कभी बहुत लाभ भी होता है। इस प्रकार उसका जीवन सुख-दुःख दोनों से परिपूर्ण बना रहता है।
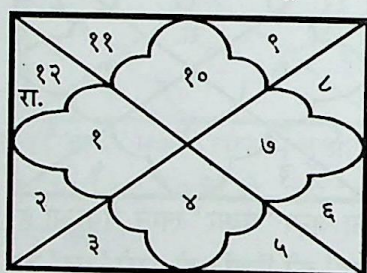
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी संकट उठाने पड़ते हैं। ऊपरी दिखावे में तो वह व्यक्ति प्रभावशाली होता है तथा संकटग्रस्त प्रतीत नहीं होता, परन्तु यथार्थ में उसे अपनी परेशानियों को कम करने में विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

मकर लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

मकर लग्नः
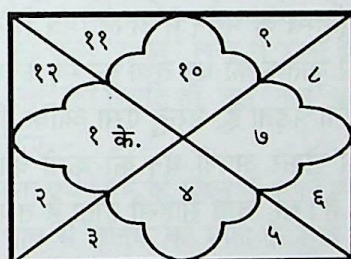
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है और कभी बड़ी चोट के लगने की सम्भावना भी उपस्थित होती है। ऐसा व्यक्ति बड़े उग्र तथा जिद्दी स्वभाव का होता है। वह अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है, परन्तु अपने शरीर के भीतर किसी विशेष कमी का अनुभव भी करता रहता है।

मकर लग्नः
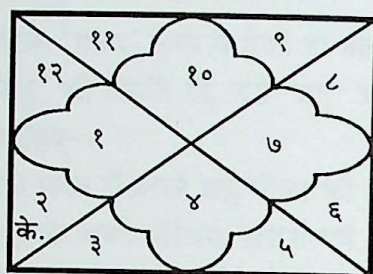
११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६ के. ३ ५

द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के कारण बड़े कष्ट और संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति हिम्मत, परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों से काम लेकर अपनी धन की कमी को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। वह बड़ा साहसी होता है तथा संकट के समय में भी घबराता नहीं है।

मकर लग्नः
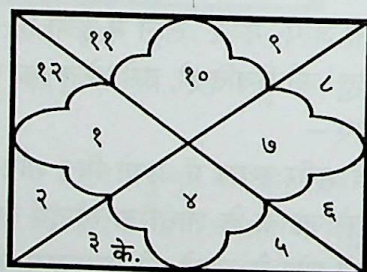
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के पक्ष में परेशानी तथा संकट का सामना करना पड़ता है, परन्तु उसके पराक्रम की बहुत वृद्धि होती है, अतः वह कठिन परिश्रम, पुरुषार्थ, गुप्त-युक्ति, साहस

एवं धैर्य के साथ अपनी जीवन को प्रभावशाली बनाने तथा अभावों को दूर करने का प्रयत्न करता रहता है। कभी-कभी उसके मन में बड़ी निराशा होती है, परन्तु प्रकट रूप से वह धैर्यवान बना रहता है।
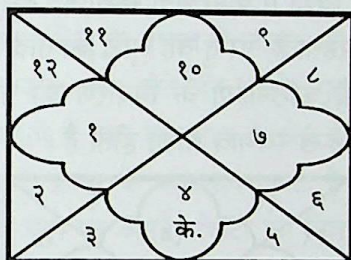
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी आती है तथा माता के कारण कष्ट भी प्राप्त होता है। उसका घरेलू जीवन कलहपूर्ण रहता है। उसे अपनी मातृभूमि का त्याग भी करना पड़ता है तथा परदेश में जाकर रहना पड़ता है। वह अन्त में कठिन परिश्रम तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर सुख के साधन प्राप्त करने में थोड़ा-बहुत सफल भी हो जाता है।
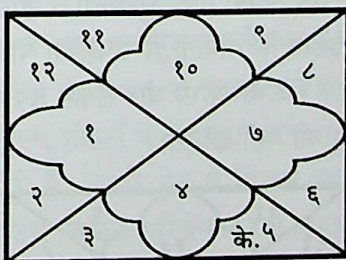
जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से परेशानी तथा कमी का अनुभव होता है। उसे विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं तथा विद्या में कमी बनी रहती है। उसके मस्तिष्क में गुप्त-चिन्ताओं का निवास रहता है, परन्तु वह बुद्धि का तीव्र होता है, अतः चतुराई से काम लेकर अपनी कठिनाईयों के निवारण का प्रयत्न करता है। ऐसा व्यक्ति प्रकट रूप में रूखे स्वभाव वाला होता है।

मकर लग्नः
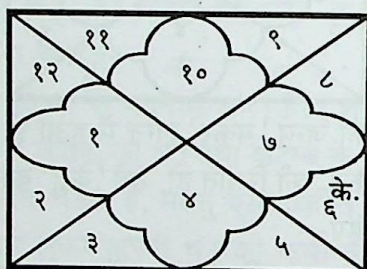
१२	११ १० ९	८
१	४	७
२	३ ५	६ के.

षष्ठम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग तथा शत्रु भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष के कारण कठिनाईयों में फँसना पड़ता है, परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों के द्वारा उन पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता पाता है। उसके ननसाल पक्ष को हानि पहुँचती है। कभी-कभी घोर संकट उपस्थित होने पर भी वह अपने धैर्य और साहस को नहीं छोड़ता।

मकर लग्नः
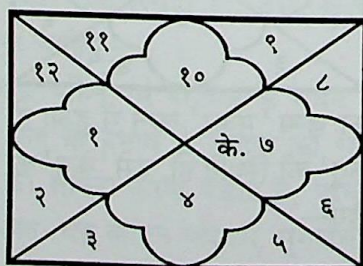
सप्तम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से अनेक प्रकार के कष्ट तथा संकट प्राप्त होते हैं। उसके गृहस्थ जीवन में परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति अनेक प्रकार के व्यवसाय करता है। वह कठिन परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर अपने संकटों का निवारण करता है और अनेक कठिनाईयों के उपरान्त उसे थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त हो जाती है।
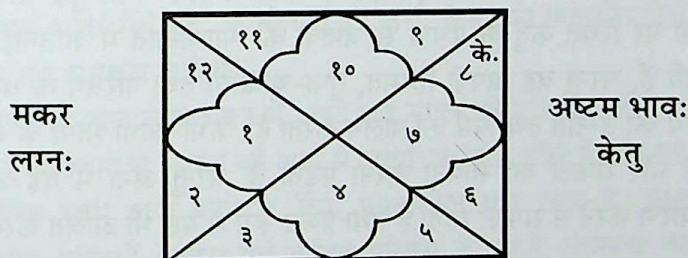
मकर लग्नः

अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन के सम्बन्ध में अनेक बार मृत्युतुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व शक्ति की भी हानि होती है। उसके पेट में विकार रहता है। अपनी आजीविका चलाने के लिए उसे कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वह भीतर से बहुत चिन्तित रहने पर भी बाहर से अपना प्रभाव प्रकट नहीं करता है तथा प्रायः संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है।

मकर लग्नः
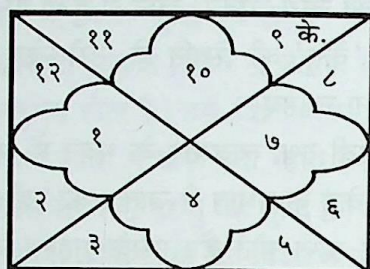
नवम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाईयाँ तो आती हैं, परन्तु वह अपनी हिम्मत, गुप्त-युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। कभी-कभी भाग्य के क्षेत्र में उसे घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अन्त में वह उसका निवारण करने में सफल रहता है तथा प्रकट रूप में यश भी अर्जित करता है।

मकर लग्नः
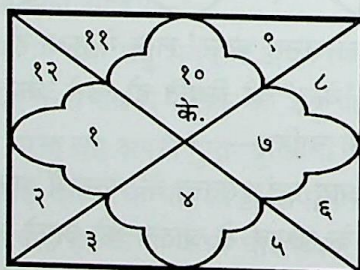
दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक पिता के पक्ष से कष्ट, राज्य के पक्ष से कठिनाईयाँ तथा व्यवसाय के पक्ष से संकट तथा परेशानियाँ उठाता है। कभी-कभी उसे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए बड़ी कठिनाईयों का

सामना करना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों एवं चातुर्य के बल पर वह उन पर सफलता पा लेता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन बड़ा परिवर्तनशील होता है।

मकर लग्नः
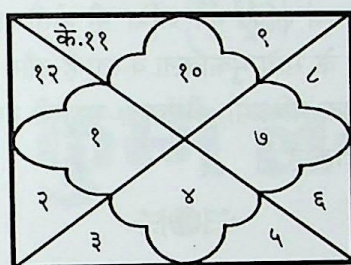
एकादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आय में अत्यधिक वृद्धि होती है और वह अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों, साहस एवं कठिन परिश्रम के सहारे आमदनी को बढ़ाता रहता है। कभी-कभी उसे अपनी आमदनी के सम्बन्ध में कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु बाद में वह उन सब पर विजय पा लेता है। ऐसा व्यक्ति अपनी कुछ कमियों के विषय में गुप्त रूप से चिन्तित भी बना रहता है।

मकर लग्नः
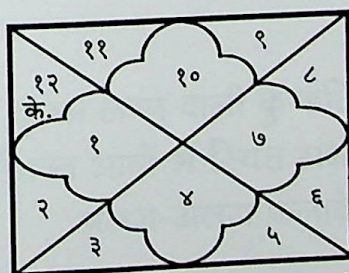
द्वादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मकर' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च बहुत अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति भी होती रहती है। ऐसा व्यक्ति कठिनाईयों का साहस के साथ मुकाबला करता है और अन्त में सफलता भी पाता है। वह अत्यधिक परिश्रमी, धैर्यवान, साहसी तथा गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला भी होता है।

११.

कुम्भ लग्न
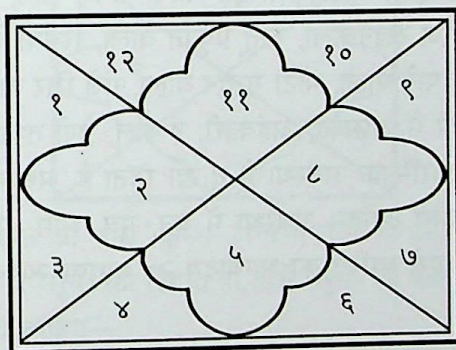
कुम्भ लग्न वाली कुण्डलियों के
विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का
अलग-अलग फलादेश

'कुम्भ' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कुम्भ' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुस्थिर, बातूनी, पानी का अधिक सेवक करने वाला, सुन्दर स्त्री से युक्त, श्रेष्ठ मनुष्यों से संयुक्त, सर्वप्रिय, चंचल-हृदय वाला, अधिक कामी, मित्र-प्रिय, दम्भी, तेजस्वी शरीर वाला, धीरज रखनेवाला, वात् प्रकृति वाला, स्त्रियों के साथ रहने में अधिक प्रसन्नता पाने वाला, मोटी गरदन वाला, गंजे सिर वाला, लम्बे शरीर वाला, पर-स्त्रियों में आसक्त, अहंकारी, ईर्ष्यालु, द्वेषी तथा भ्रातृद्रोही होता है। वह अपनी प्रारम्भिक अवस्था में दुःखी रहता है, मध्यमावस्था में सुख प्राप्त करता है तथा अन्तिम अवस्था में धन, पुत्र, भूमि, मकान आदि का सुख भोगता है। ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय २४ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है।
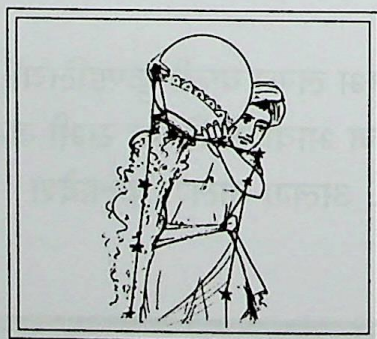
कुम्भ लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फल

कुम्भ लग्नः
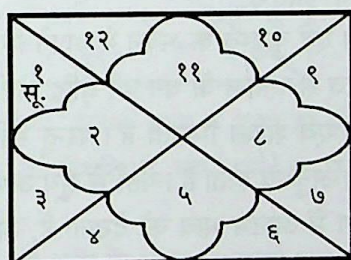
प्रथम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु तेज एवं शक्ति की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ी दौड़-धूप करने वाला तथा तेज स्वभाव का होता है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में सप्तम भाव को देखता है अतः जातक को स्त्री पक्ष से विशेष सुख मिलता है और वह अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता पाता है। उसका गृहस्थ जीवन आनन्दमय तथा प्रभावशाली बना रहता है।
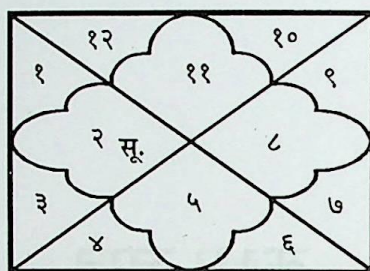
द्वितीय भावः
सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब पक्ष से भी पर्याप्त सहयोग एवं शक्ति मिलती है। परन्तु स्त्री पक्ष से जातक को किसी विशेष कमी का अनुभव होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति में वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

कुम्भ
लग्नः
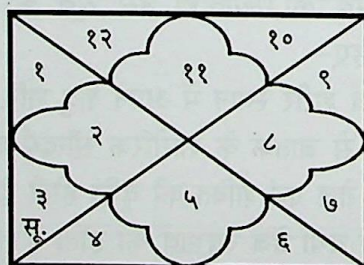
तृतीय भावः
सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त मिलता है। ऐसा व्यक्ति

अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय तथा अन्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में नवम भाव को देखता है, अत: जातक धर्म के विषय में लापरवाह रहता है तथा भाग्योन्नति में भी कुछ कमी का अनुभव करता है। ऐसा व्यक्ति यश-सम्मान भी अधिक प्राप्त नहीं करता।
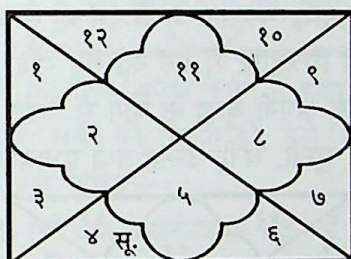
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कठिनाई के साथ मिलता है। इसी प्रकार व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में दशम भाव को देखता है, अत: जातक को पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता रहता है। उसकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होती है।
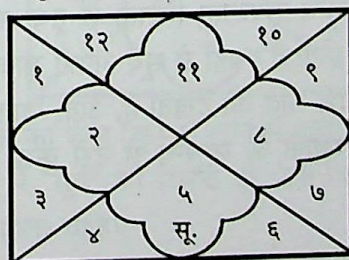
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है तथा सन्तान पक्ष से भी सहयोग मिलता है। उसे बुद्धिमति स्त्री होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के योग से विशेष लाभ प्राप्त करता है तथा अपने जीवन को सुखी, धनी, उन्नत तथा प्रभावशाली बनाता है।

कुम्भ लग्नः **षष्ठम भावः सूर्य**
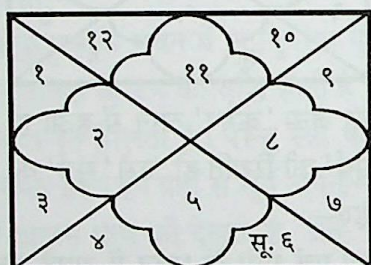
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। उसे व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है तथा स्त्री की शक्ति कुछ मतभेद के साथ प्राप्त होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ कठिनाईयों के साथ शक्ति प्राप्त होती है।

कुम्भ लग्नः
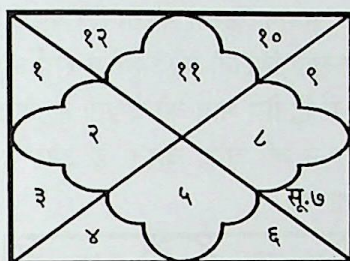
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री का सुख पर्याप्त मिलता है तथ व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। उसे ससुराल से शक्ति मिलती है तथा गृहस्थ जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथम भाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। स्त्री पक्ष से सामान्य मतभेद बने रहने के बावजूद भी व्यावसायिक सफलता से गृहस्थ जीवन सुखमय बना रहता है।

कुम्भ लग्नः
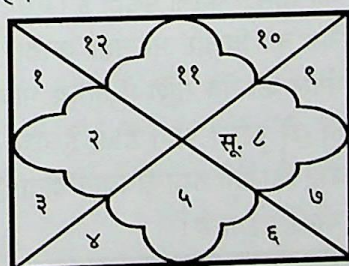
अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व एवं व्यवसाय के

पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में कुछ सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अत: जातक व्यवसाय में कठिन परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि करता है और उसे अपने कुटुम्ब का सहयोग भी प्राप्त होता है।
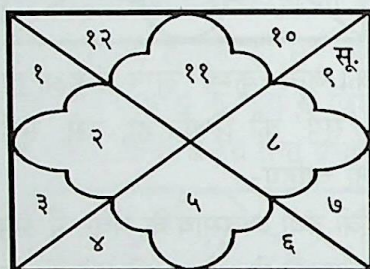
नवम भावः
सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमी आती है तथा धर्म का पालन भी यथाविधि नहीं होता, उसे स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ-साधन के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान होता है तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

कुम्भ
लग्नः
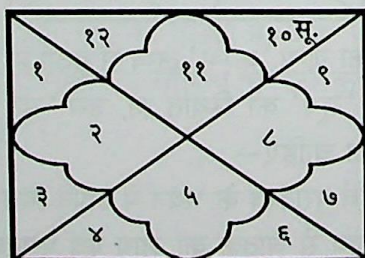
दशम भावः
सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। वह स्त्री पक्ष से भी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि एवं मकान आदि का सुख भी कम ही मिल पाता है।

कुम्भ लग्नः
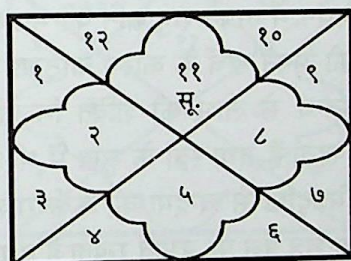
१२ ११ सू. १० १ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय के द्वारा श्रेष्ठ आमदनी होती है तथा स्त्री पक्ष से भी विशेष लाभ मिलता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है तथा सन्तान पक्ष से भी सुख एवं सन्तोष प्राप्त होता है।

कुम्भ लग्नः
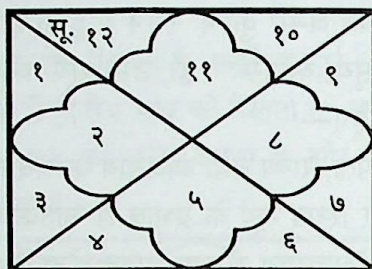
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के कारण कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ की शक्ति मिलती है, परन्तु स्थानीय व्यवसाय में नुकसान रहता है तथा स्त्री के सुख में भी बहुत कमी आती है। यहाँ से सूर्य अपनी मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों में लाभ उठाता है तथा सफलता प्राप्त करता है।

कुम्भ लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फल

कुम्भ लग्नः
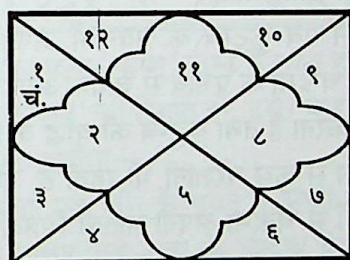
प्रथम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का शरीर कुछ रोगी रहता है। उसके मन में भय, चिन्ता एवं परेशानियों का निवास रहता है तथा शत्रु पक्ष से भी उसे कठिनाईयाँ बनी रहती हैं, परन्तु वह अपने मनोबल द्वारा शत्रुओं पर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों पर विजय भी पाता रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक का स्त्री पक्ष से भी कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी चिन्ताएँ एवं परेशानियाँ बनी रहती हैं।
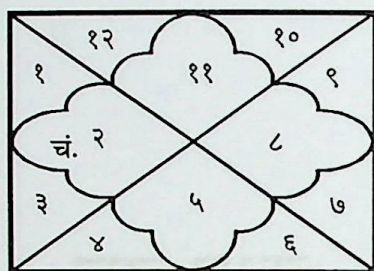
द्वितीय भावः
चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की कुम्भ राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं परिश्रम द्वारा धन का उपार्जन करता है तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। उसे शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी भी रहती है, परन्तु झगड़े-झंझटों से लाभ भी होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के विषय में कुछ परेशानी बनी रहती है।

कुम्भ
लग्नः
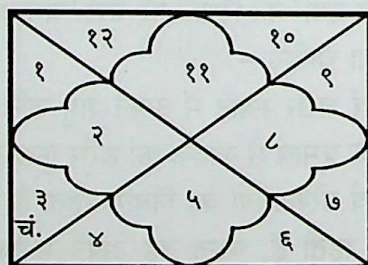
तृतीय भावः
चन्द्र

जिस ज़ातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के मनोबल तथा पराक्रम की वृद्धि तो होती है, परन्तु कुछ कठिनाईयाँ भी आती रहती हैं, साथ ही

भाई-बहिनों से भी कुछ मतभेद बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सावतीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म के मार्ग में भी कुछ कठिनाईयाँ आती हैं, परन्तु अन्ततः प्रभाव की वृद्धि होती है और भाग्य की उन्नति भी होती है।

कुम्भ लग्नः
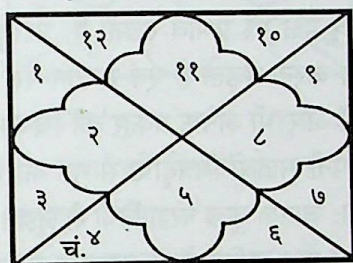
१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ चं. ४ ६

चतुर्थ भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित षष्ठेश एवं उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। वह शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों से लाभ उठाता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता के सुख में कमी आती है राज्य के क्षेत्र में झंझट तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
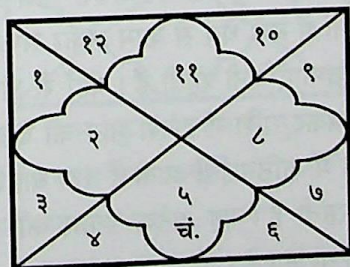
कुम्भ लग्नः

पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं बुद्धिबल द्वारा शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखता है, परन्तु उसे विद्याध्ययन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है एवं सन्तान पक्ष से भी परेशानी बनी रहती है। उसके मन में और भी अनेक प्रकार की चिन्ताओं का निवास रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक कुछ परेशानियों से जूझते हुए अपनी आमदनी की वृद्धि करता है तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर लाभ कमाता है।

कुम्भ लग्नः
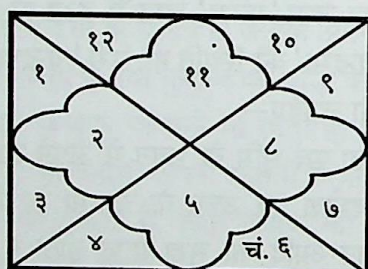
१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ चं. ६

षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में बड़े धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसके मन में चिन्ताएँ बनी रहती हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को अपना खर्च चलाने में कठिनाईयाँ आती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानी बनी रहती है। वह अनेक प्रकार की युक्तियों का आश्रय लेकर ही अपना खर्च चलाता है।

कुम्भ लग्नः
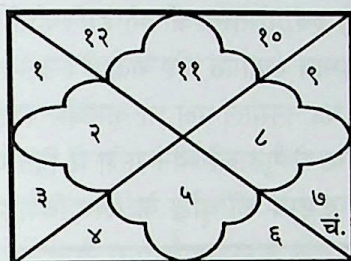
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से रोग, वैमनस्य तथा परेशानी बनी रहती है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को रोग एवं चिन्ताओं का शिकार बनना पड़ता है, परन्तु उसका मनोबल बढ़ा रहता है। साथ ही उसे दौड़-धूप भी करनी पड़ती है।

कुम्भ लग्नः
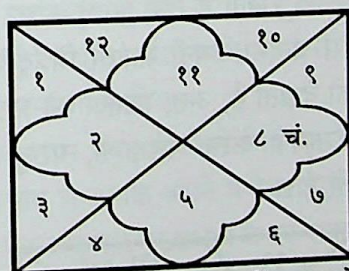
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु के सम्बन्ध में

कुछ परेशानी रहती है एवं पुरातत्त्व की भी हानि होती है। वह शत्रु पक्ष पर बड़ी कठिनाईयों से प्रभाव स्थापित कर पाता है। उसे हर समय चिन्ताएँ घेरे रहती हैं। ऐसे व्यक्ति का ननसाल पक्ष भी कमजोर रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है।
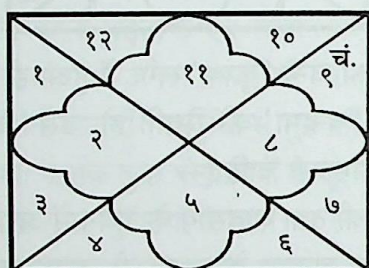
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाईयाँ आती हैं तथा यश की भी कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ प्राप्त करता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ परेशानी का सामना करना पड़ता है, परन्तु उसके पराक्रम एवं मनोबल की वृद्धि होती है।
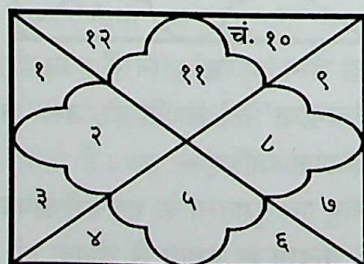
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित षष्ठेश एवं नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से सुख में कमी रहती है। राज्य के क्षेत्र से सम्मान में कुछ हानि प्राप्त होती है, तथा व्यावसायिक उन्नति में रुकावटें आती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष से परेशान बना रहता है तथा उसका प्रभाव भी कम होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

कुम्भ लग्नः
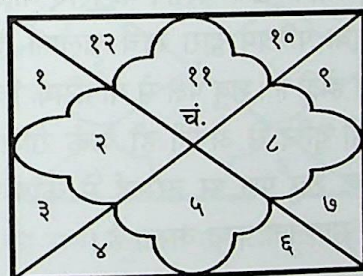
एकादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं परिश्रम द्वारा आमदनी की वृद्धि करता है। वह शत्रु पक्ष पर प्रभाव बनाए रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। परन्तु उसे अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए दौड़-धूप अधिक करनी पड़ती है तथा लाभ के पक्ष से कुछ असन्तोष भी बना रहता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान पक्ष से कुछ चिन्ता बनी रहती है।

कुम्भ लग्नः
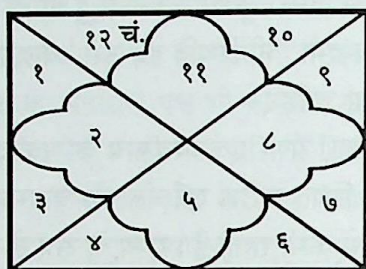
द्वादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए कठिनाई बनी रहती है। वह अपने मनोबल तथा परिश्रम द्वारा खर्च चलाता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानी होती है। शत्रु पक्ष से मानसिक चिन्ताएँ बनी रहती हैं। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष पर नरमाई से काम लेकर अपना प्रभाव स्थापित करता है एवं सफलता प्राप्त करता है।

कुम्भ लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फल

कुम्भ लग्न:
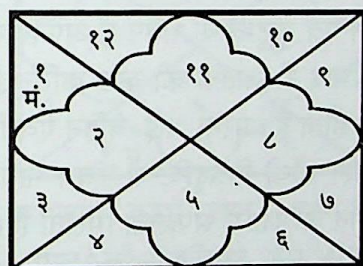
प्रथम भाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। वह पिता के पक्ष से कुछ असन्तोष-युक्त सहयोग प्राप्त करता है, राज्य के क्षेत्र में प्रभाव को बढ़ाता है तथा व्यवसाय की उन्नति करता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है। यहाँ से चन्द्रमा चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अत: माता, भूमि एवं मकान की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख एवं शक्ति मिलती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी बढ़ती है।
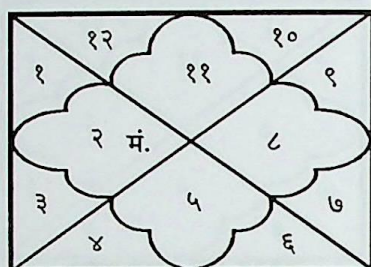
द्वितीय भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। परन्तु भाई-बहिन एवं पिता के सुख में कमी रहती है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की विशेष उन्नति होती है तथा यश भी प्राप्त होता है।

कुम्भ
लग्नः
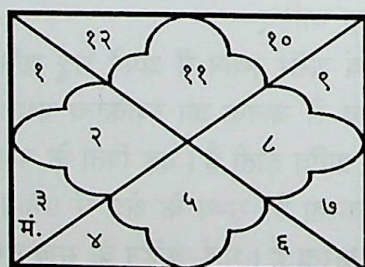
तृतीय भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा

पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष से परेशानी रहती है तथा ननसाल के पक्ष में हानि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के बल पर बड़ा भाग्यवान बनता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशम भाव को देखने के कारण जातक को पिता की शक्ति मिलती है, राज्य से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्नति होती है।

कुम्भ लग्नः
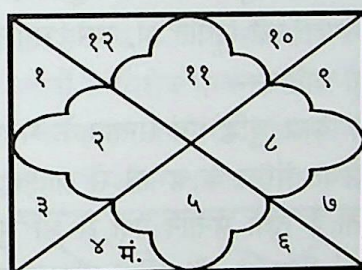
चतुर्थ भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि की शक्ति प्राप्त करता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पुरुषार्थ द्वारा सफलता प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सुख, सम्मान, यश एवं सफलता की प्राप्ति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी खूब होती है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति सुखी, धनी, यशस्वी तथा प्रभावशाली जीवन व्यतीत करता है।

कुम्भ लग्नः
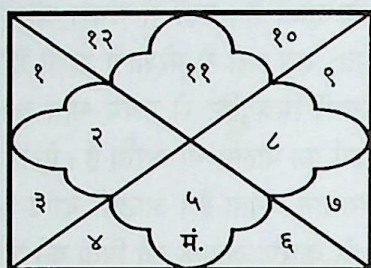
पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा सन्तान पक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति भाई-बहिन एवं पिता से भी शक्ति प्राप्त करता है तथा राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ उठाता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के श्रेष्ठ सम्बन्ध से लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति कानूनी बातें करने वाला होता है।

कुम्भ लग्नः
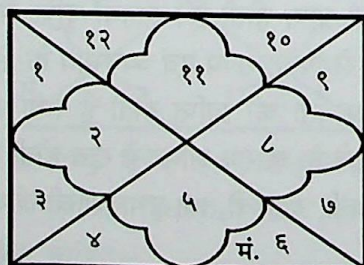
षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाईयों के साथ शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। भाई-बहिन तथा पिता पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी कम प्रभाव रहता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्म का भी थोड़ा-बहुत पालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को शत्रु की राशि में देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध बनता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु प्रभाव में वृद्धि होती है और स्वभाव में तेजी रहती है।

कुम्भ लग्नः
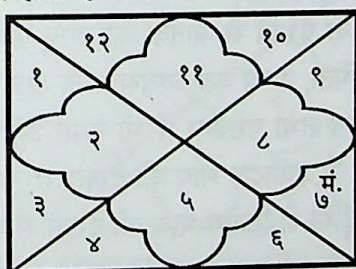
सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष उन्नति प्राप्त करता है। उसे भाई-बहिन की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में दशम भाव को देखता है, अतः पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती

है। संक्षेप में, ऐसा जातक भाग्यवान तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।
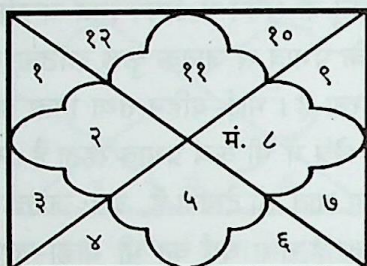
अष्टम भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयाँ आती हैं, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।
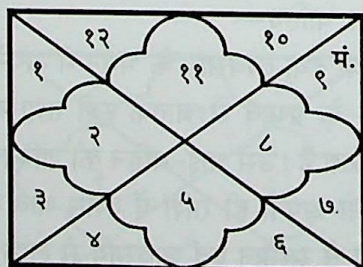
कुम्भ
लग्नः

नवम भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। उसे पिता का सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय में सफलता भी मिलती है। यहाँ से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान तथा पुरुषार्थी होता है।

कुम्भ लग्नः
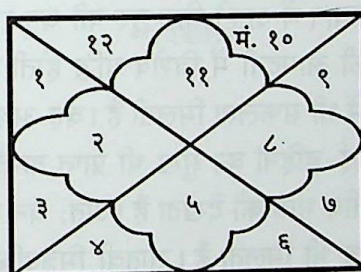
दशम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता की शक्ति, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहते हुए भी प्रभाव, स्वाभिमान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता के सुख में सामान्य कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि
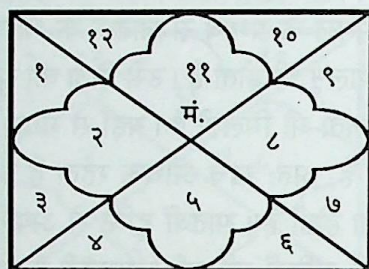
की विशेष वृद्धि होती है।

एकादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह अपने पराक्रम द्वारा खूब धन कमाता है तथा भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त करता है। यहाँ से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है। अतः धन का संचय खूब होता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। आठवीं नीचदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा ननसाल का पक्ष भी कमजोर रहता है।

कुम्भ लग्नः
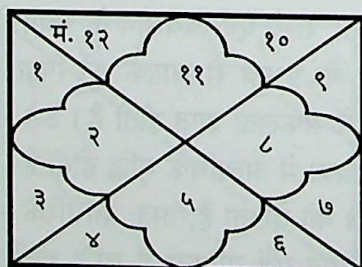
द्वादश भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें भाव व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ होता है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। वह अपनी मातृभूमि की अपेक्षा अन्य स्थानों में सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा ननसाल का पक्ष भी दुर्बल रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री द्वारा दुःख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

कुम्भ लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फल

कुम्भ लग्न:
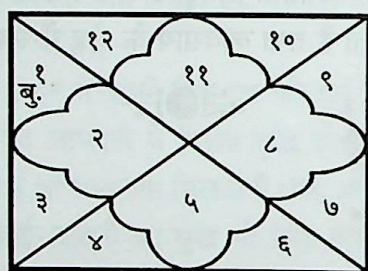
प्रथम भाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। परन्तु उसे आयु, पुरातत्त्व एवं सन्तान पक्ष की शक्ति प्राप्त होती है। मन में कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं। बुध के पंचमेश होने के कारण जातक की विवेक शक्ति उत्तम रहती है और उसके प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि भी होती है। यहाँ बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तम भाव को देखता है, अत: जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री पक्ष से सुख एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है।

कुम्भ लग्नः
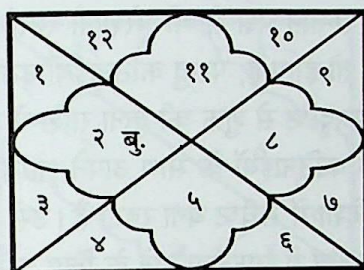
द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा कुटुम्ब से भी विरोध रहता है। उसका विद्या तथा सन्तान पक्ष भी कमजोर रहता है तथा जीवन-यापन के सम्बन्ध में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं। यहाँ से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अपूर्ण रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने विवेक एवं विद्या-बुद्धि के बल पर सम्मान तथा लाभ प्राप्त करता है।

कुम्भ लग्नः
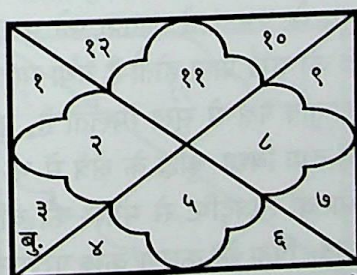
तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से

कष्ट मिलता है तथा सन्तान पक्ष से भी परेशानी रहती है। उसे विद्या-बुद्धि एवं पराक्रम का लाभ तो होता है, परन्तु कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक कुछ कठिनाईयों के साथ अपने भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्म पालन की दिशा में सचेष्ट बना रहता है। उसे पुरातत्त्व का भी लाभ होता है, परन्तु प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाने के लिए उसे संघर्ष अवश्य करना पड़ता है।
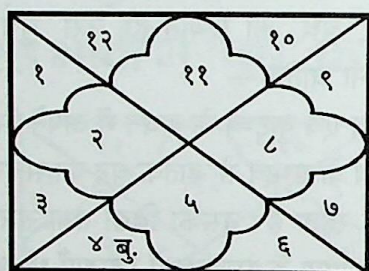
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा माता के सुख में भी कुछ कमी रहती है। उसे सन्तान पक्ष से सुख मिलता है, पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में दशम भाव को देखता है, अतः पिता के कारण कुछ परेशानी रहती है एवं राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
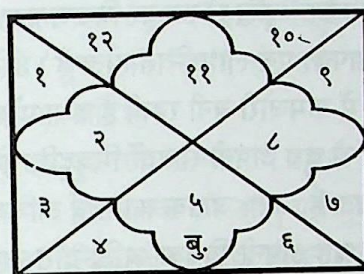
कुम्भ लग्नः

पंचम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कुछ कठिनाईयों के साथ शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। वह बुद्धिमान, वाणी का धनी तथा विवेकशक्ति से सम्पन्न अवश्य होता है, जिसके कारण अपने प्रभाव का विस्तार करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक अपनी विवेकबुद्धि द्वारा आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

कुम्भ लग्नः
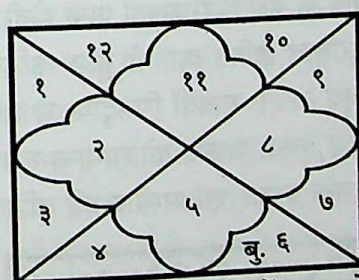
षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से कुछ अशान्ति रहती

है, परन्तु वह अपनी विवेक–बुद्धि से उन पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में सफल एवं लाभान्वित होता है। उसे विद्या, सन्तान, आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से वह अपनी विवेक–बुद्धि द्वारा लाभ उठाता है।
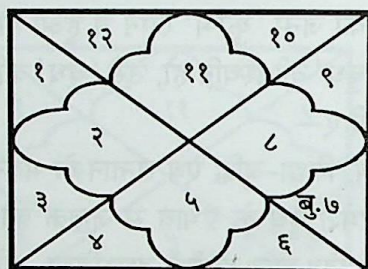
सप्तम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश के बुध के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के बाद स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। उसे विद्या, बुद्धि, सन्तान, आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का भी कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ मिलता है। यहाँ से बुध अपना सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को सामान्य रूप से शारीरिक परेशानी तो रहती है, परन्तु उसके प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

कुम्भ लग्नः
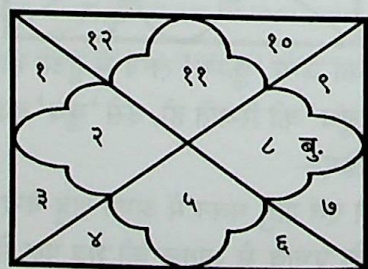
अष्टम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। उसका दैनिक जीवन बड़ा जीवन बड़ा प्रभावशाली रहता है। परन्तु विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है, जबकि उसकी विवेक शक्ति तीव्र होती है और वाणी में विशेष प्रभाव पाया जाता है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय में कठिनाई पड़ती है तथा कुटुम्ब से भी कुछ क्लेश प्राप्त होता है।

कुम्भ लग्नः
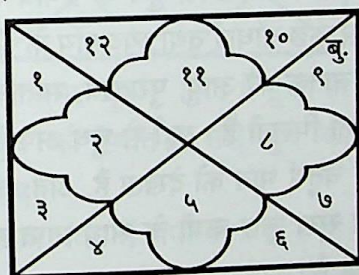
नवम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी बना रहता है। बुद्ध के अष्टमेश होने के कारण कभी-कभी कुछ कमियाँ भी आ जाती हैं। सन्तान, विद्या, आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति का जातक को पर्याप्त लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों एवं पराक्रम का कुछ त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

कुम्भ लग्नः
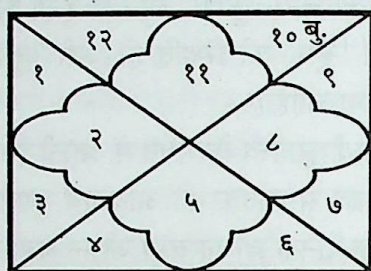
दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को पिता से कुछ परेशानी, राज्य से कुछ बाधाएँ तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयाँ प्राप्त होती हैं, परन्तु जातक को आयु, पुरातत्त्व, सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है तथा यश एवं विवेक की वृद्धि होती है।

कुम्भ लग्नः
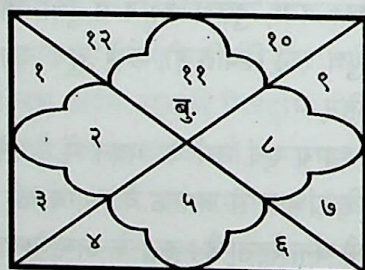
एकादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा पर्याप्त लाभ अर्जित करता

है, परन्तु बुध के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाईयाँ भी आती हैं। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन भी उल्लासपूर्ण रहता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाईयों के साथ विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी प्रभावपूर्ण रहती है और वह स्वार्थी भी होता है।
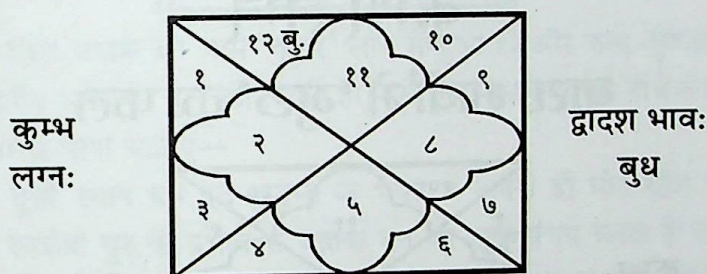
कुम्भ लग्नः

द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ लाभ मिलता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व-शक्ति की हानि भी होती है। सन्तान पक्ष से चिन्ता तथा विद्या की कमी रहती है। मस्तिष्क में हर समय चिन्ताएँ घर किए रहती हैं। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में कुछ नरमी से काम निकालता है तथा अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

कुम्भ लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फल

कुम्भ लग्न:
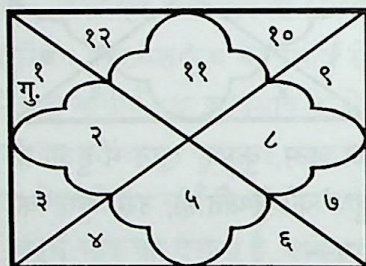
प्रथम भाव: गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब की शक्ति का भी लाभ होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में बहुत सफलता मिलती है तथा सन्तान पक्ष से भी सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष में सफलता मिलती है तथा व्यवसाय के द्वारा धन की उन्नति होती है। नौवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति भी होती है तथा धन द्वारा धर्म का पालन भी होता है।
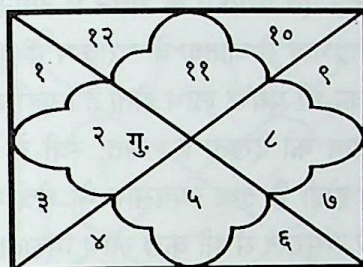
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक धन का खूब संचय करता है और उसे कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। वह अपनी धनोन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है एवं झगड़े-झंझट के मार्ग से लाभ मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा सफलता तथा लाभ की प्राप्ति भी होती है।
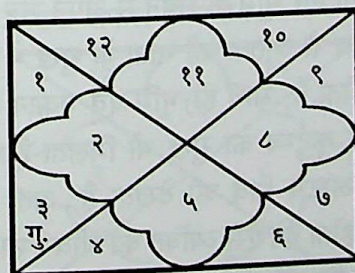
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई–बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है उसे धन तथा कौटुम्बिक सुख का भी यथेष्ट लाभ होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है। अतः स्त्री के पक्ष में सौन्दर्य एवं सुख–लाभ की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। उसे अपनी ससुराल से भी कुछ लाभ मिलता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र की राशि में नवम भाव के देखने से कुछ रुकावटों के साथ भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म की जिज्ञासा रहती है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि होती है।

कुम्भ लगनः
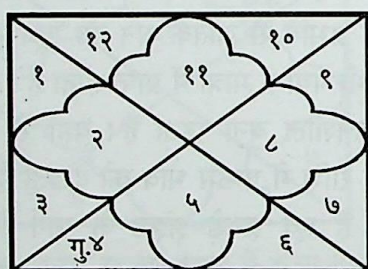
चतुर्थ भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु माता से लाभ होता है, साथ ही भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा धन और कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन शान–शौकत से व्यतीत होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है। नौवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च तथा बाहरी स्थान के सम्बन्धों के कारण परेशानी बनी

रहती है।

कुम्भ लग्नः
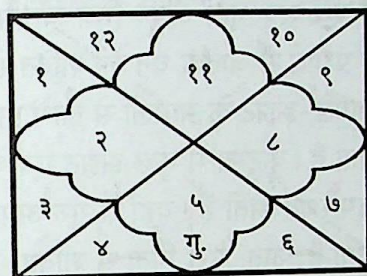
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। धन, कुटुम्ब तथा सन्तान-पक्ष का भी खूब लाभ होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी दृष्टि से शुक्र की राशि में नवम भाव को देखता है। अतः कुछ कठिनाइयों के साथ जातक के भाग्य की वृद्धि होती है, और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा उसे धन का प्रर्याप्त लाभ होता है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। स्वार्थ, परमार्थ, प्रभाव, सम्मान, योग्यता, सज्जनता, विनम्रता, सौभाग्य आदि सभी क्षेत्रों में जातक सफल होता है।

कुम्भ लग्नः
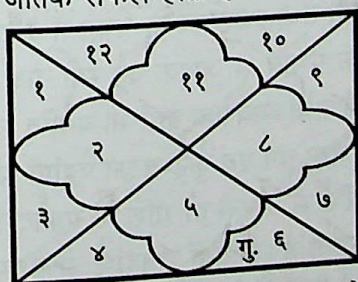
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भाव अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर बहुत प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ प्राप्त करता है। उसका ननसाल-पक्ष ऊँचा होता है। कुटुम्ब में कुछ झंझट एवं धन प्राप्ति के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ भी उपस्थित होती हैं। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः उसे पिता से शक्ति, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को शत्रु राशि में देखने से खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में परेशानी रहती है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने के कारण कुछ परिश्रम तथा झंझटों के साथ धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है।
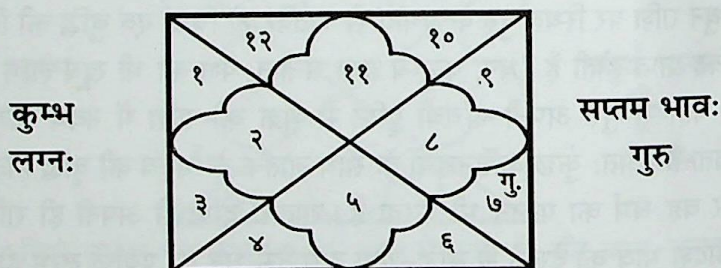
कुम्भ लग्नः

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ गु. ४ ६

सप्तम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में सौन्दर्य, धन एवं सुख की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय द्वारा भी पर्याप्त लाभ होता है। घर की प्रतिष्ठा खूब बढ़ती है तथा धन एवं कुटुम्ब का पर्याप्त सहयोग बना रहता है। यहाँ से गुरु पाँचवी दृष्टि से अपनी ही राशि के एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी खूब रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आ जाती है, परन्तु मान-सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। नौवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-

बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा जातक बड़ा बहादुर, यशस्वी, सुखी, धनी तथा सुयोग्य होता है।

कुम्भ लग्नः
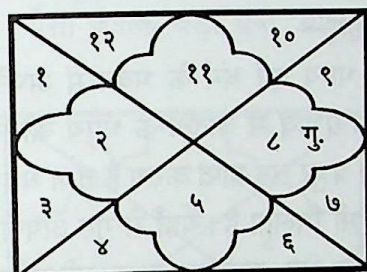
अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के प्रभाव में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। गुरु के अष्टमेश होने के कारण संचित धन की हानि तथा कुटुम्ब से कष्ट का योग भी बनता है। आमदनी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ कमी आती है। यहाँ से शनि अपनी पाँचवी नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च तथा बाहरी स्थान के सम्बन्धों के कारण कठिनाई रहती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि के द्वितीय भाव को देखने से जातक धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा कुटुम्ब से सहयोग मिलता है। नौवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में कुछ कमी आती है तथा भूमि एवं मकान आदि की भी सामान्य शक्ति प्राप्त होती है।

कुम्भ लग्नः
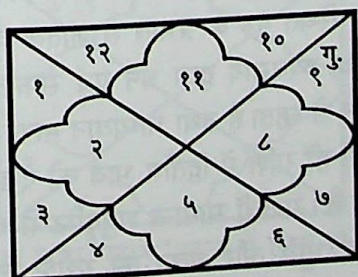
नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष वृद्धि होती है। वह न्यायोचित मार्ग से प्रचुर धन प्राप्त करता है तथा धर्म का पालन करता है। उसे कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक प्रभाव की वृद्धि होती है तथा जातक भाग्यवान माना जाता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। नौवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष उन्नति होती है।

कुम्भ लग्नः
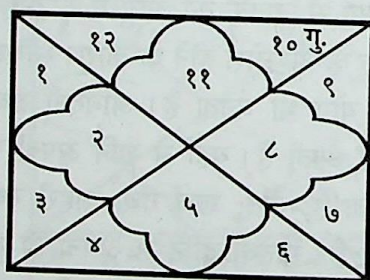
दशम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा धन एवं सफलता का यथेष्ट लाभ होता है। वह बड़ी शान से रहता है तथा भाग्यवान माना जाता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखता है अतः धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है। सातवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता का सुख एवं भूमि और भवन का यथेष्ट लाभ होता है। नौवीं

उच्चदृष्टि से चन्द्रमा की राशि में षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग से सफलता एवं लाभ प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बड़ा धनी, यशस्वी, सुखी तथा प्रतापी होता है।

कुम्भ लग्नः
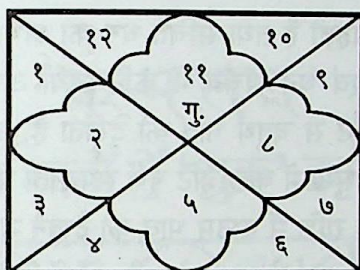
एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी उसे सम्पत्ति का आकस्मिक लाभ भी होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है और नौवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

कुम्भ लग्नः
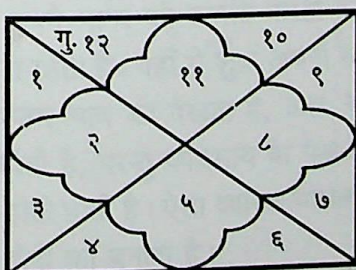
द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध के कारण परेशानी बनी रहती है तथा संचित धन का अभाव होता है। साथ ही कुटुम्ब में अशान्ति एवं धन-संचय में कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता और भूमि और मकान आदि के सुख में कुछ त्रुटि पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों के मार्ग से लाभ होता है। नौवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है तथा जीवन बड़े वैभवपूर्ण ढंग से व्यतीत होता है।
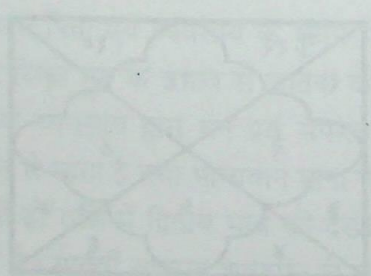
कुम्भ लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फल

कुम्भ लग्न:
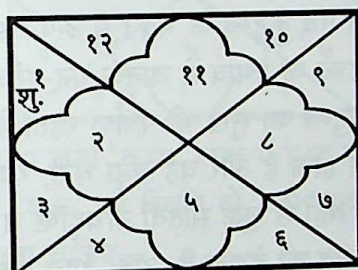
प्रथम भाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सुख, सौन्दर्य, प्रभाव एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। वह अपने भाग्य की उन्नति करता है, तथा धर्म का पालन करने में भी तत्पर बना रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तम भाव का देखता है, अतः स्त्री-पक्ष में सुख तथा सौभाग्य की प्राप्ति होती है, परन्तु व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् होता है तथा अपने लोक और परलोक दोनों को बनाता है।
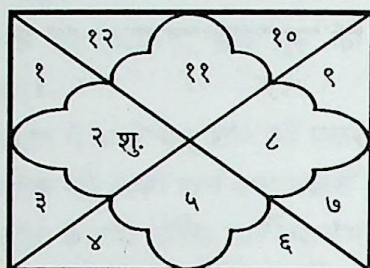
द्वितीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक धन-संचय की विशेष शक्ति प्राप्त करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त रहता है। उसे भूमि, मकान आदि का पर्याप्त लाभ होता है और वह बड़ा धनी, यशस्वी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है। यहाँ से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की तुला राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति के सम्बन्ध में कुछ कठिनाई रहती है तथा दैनिक जीवन में भी चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

कुम्भ लग्नः
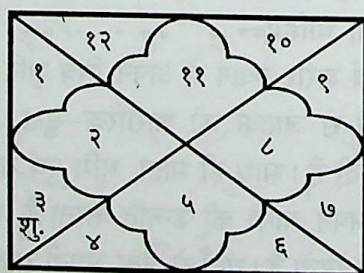
तृतीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहिनों को

सुख मिलता है तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है तथा घरेलू सुख के साधन भी प्राप्त होते हैं। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि के नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक धनी, धर्मात्मा, सुखी, यशस्वी, पराक्रमी तथा भाग्यशाली होता है।

कुम्भ लग्नः
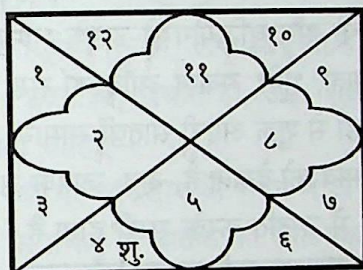
चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। उसकी भाग्योन्नति निरन्तर होती रहती है और वह धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली तथा सुखी होता है।

कुम्भ लग्नः

पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्ता होती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। वह धर्म का पालन करता है और बुद्धियोग से उसके भाग्य की उन्नति निरन्तर होती रहती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख तथा यश भी यथेष्ट मात्रा में मिलता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक अपनी चतुराई से लाभ कमाता है तथा जीवन में उन्नति करके सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ उठाता है। उसे माता के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है। साथ ही मातृ भूमि, भूमि, मकान, भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमजोरी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक बहुत चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

कुम्भ लग्नः

सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री पर व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष के साथ सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी विशेष परिश्रम करने पर सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है तथा घरेलू वातावरण भी आनन्दमय रहता है। वह धर्म का पालन करने वाला तथा भाग्योन्नति के लिए प्रयत्नशील होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख, सौभाग्य, यश, सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

कुम्भ लग्नः
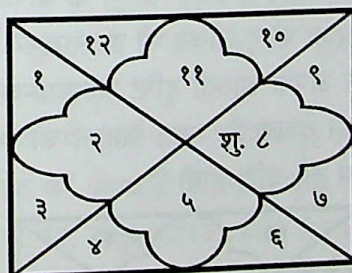
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या

राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक के जीवन में अशान्ति रहती है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। माता के सुख में बड़ी कमी आती है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी त्रुटिपूर्ण रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य-मित्र गुरु की मीन राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक विशेष परिश्रम द्वारा अपने धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि एवं उन्नति करता है।

कुम्भ लग्नः
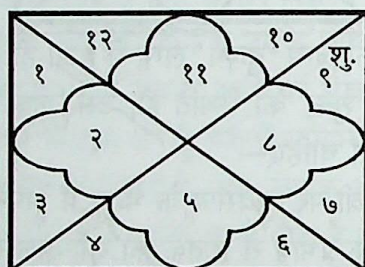
नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। अपने गुण एवं चातुर्य के बल पर ऐसा व्यक्ति यश भी प्राप्त करता है। उसका घरेलू जीवन भी उल्लासमय एवं आनन्दपूर्ण बना रहता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।
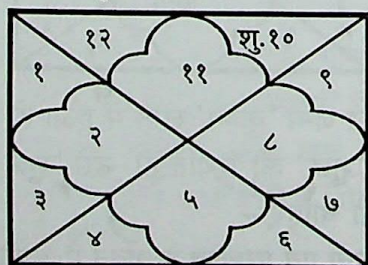
कुम्भ लग्नः

दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की पिता से विशेष शक्ति, राज्य से पर्याप्त सम्मान तथा व्यवसाय से बड़े लाभ की प्राप्ति होती है। वह समाज में प्रतिष्ठित, धनी, धार्मिक तथा यशस्वी होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होताा है। ऐसा व्यक्ति राजसी-ठाट से रहता है तथा विविध प्रकार से सुखों का उपयोग करता है।

कुम्भ लग्नः
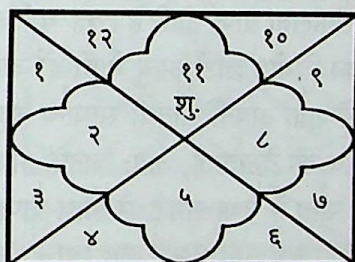
एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति न्यायी, चतुर, धनी, धार्मिक तथा यशस्वी होता है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचम भाव को देखता है अतः जातक को सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। ऐसी व्यक्ति प्रभावशाली वक्ता तथा चतुर भी होता है।

कुम्भ लग्नः
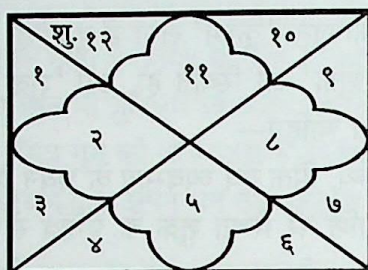
द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें भाव व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख तथा सफलता प्राप्त होती है। वह धर्म का पालन भली भाँति नहीं कर पाता, माता का वियोग छोटी आयु में ही हो जाता है तथा यश में भी कमी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से चन्द्रमा को कर्कराशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक अपने चातुर्य के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता पाता है तथा झगड़े से लाभ प्राप्त करता है।

कुम्भ लग्न
बारह भावों में 'शनि' का फल
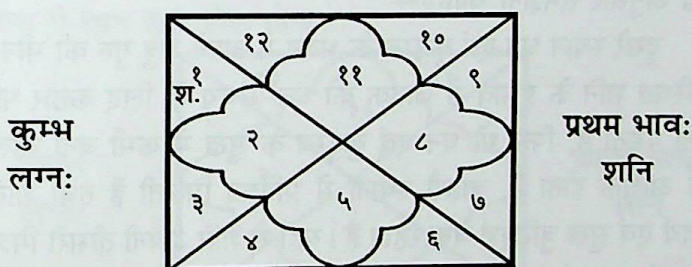
कुम्भ लग्नः

प्रथम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु शनि व्ययेश होने के कारण शरीर में दुर्बलता भी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानी, यशस्वी, शानदार खर्च करने वाला तथा कभी-कभी किसी कठिन रोग का शिकार भी होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी राशि नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों के सुख में कठिनाई एवं पुरुषार्थ में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं रोजगार के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ रहती हैं।

कुम्भ लग्नः
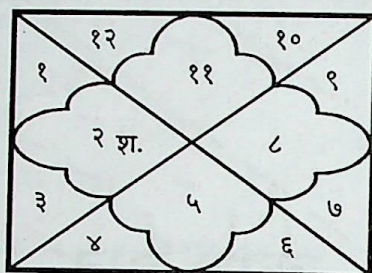
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है, फिर भी धन एवं कुटुम्ब के सुख में कमी बनी रहती है। खर्च अधिक होता है, बाहरी स्थानों में प्रतिष्ठा मिलती है तथा शारीरिक सौन्दर्य एवं सुख त्रुटिपूर्ण बना रहता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान का सुख मिलता है। घरेलू सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि के एकादश भाव को देखने के आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा जातक अधिक मुनाफा कमाने की इच्छा तो रखता है, परन्तु सफल नहीं हो पाता।

कुम्भ लग्नः
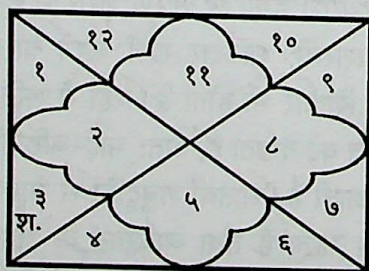
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का कष्ट मिलता है तथा पराक्रम में कमी आती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य भी त्रुटिपूर्ण रहता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सुख एवं सफलता प्राप्त होगी। सातवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य की उन्नति रहेगी तथा धर्म का पालन होगा। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहेगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता रहेगा।

कुम्भ लग्नः
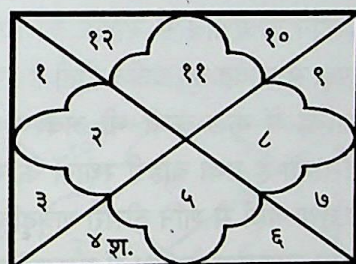
चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं मकान आदि का अपूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू सुख में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक अपनी शारीरिक शक्ति एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्धों के कारण शत्रु पक्ष से रक्षा प्राप्त करेगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानियाँ बनी रहेंगी तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक सौन्दर्य, यश एवं प्रभाव की प्राप्ति होगी, परन्तु चिन्ता एवं कमजोरी भी बनी रहेगी।

कुम्भ लग्नः
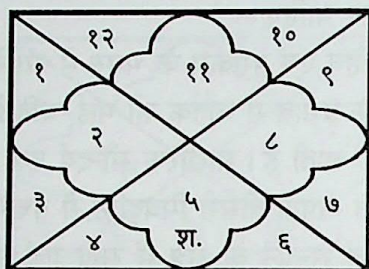
पंचम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता तथा सन्तान पक्ष से शक्ति की प्राप्ति होती है। परन्तु शनि के व्ययेश होने के कारण उस शक्ति में कुछ कमी भी अवश्य बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति चिन्ता से ग्रस्त रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में परेशानी का अनुभव होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाईयाँ आती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाईयाँ आती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में चिन्तित रहना पड़ता है तथा अत्यधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

कुम्भ लग्नः

षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपने प्रभाव की वृद्धि करता है तथा शत्रुओं पर विजय पाता है। उसके शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। मस्तिष्क में चिन्ताओं का निवास रहता है। खर्च के मार्ग में कठिनाईयाँ आती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी रहेगी तथा पराक्रम में भी कुछ कमजोरी आएगी।

कुम्भ लग्नः

१२ ११ १० १ ९ २ ८ ३ ५ श.७ ४ ६

सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से परेशानी रहेगी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाईयों द्वारा सफलता मिलेगी। खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होगी। यहाँ से शनि अपनी तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती रहेगी। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश एवं सम्मान में वृद्धि

होगी तथा दसवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता का सुख एवं भूमि, भवन आदि का भी लाभ होगा, परन्तु शनि के व्ययेश होने के कारण उसमें कुछ कमी अवश्य रहेगी तथा घरेलू सुख भी कम ही रहेगा।
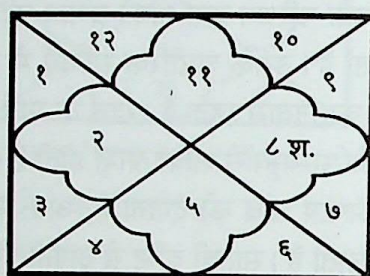
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ हानि रहेगी, परन्तु आयु की वृद्धि होगी। शरीर तथा खर्च के सम्बन्ध में कठिनाईयाँ आती रहेंगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ शक्ति प्राप्त होगी। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता से वैमनस्य रहेगा तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र की उन्नति में बाधाएँ आएँगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब का सुख भी त्रुटिपूर्ण रहेगा। दसवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष से कुछ शक्ति मिलेगी तथा विद्या पक्ष में कुछ कमी रहेगी।
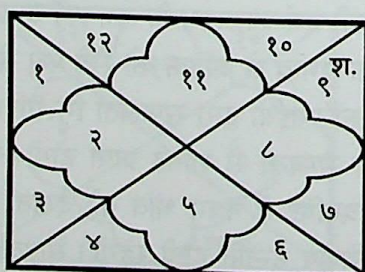
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की यथेष्ट उन्नति होगी, परन्तु कभी-कभी उसमें अड़चनें भी आ जाया करेंगी। ऐसा व्यक्ति शरीर से सुन्दर, स्वस्थ, धार्मिक, धनी, खर्चीला तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाने वाला होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता मिलेगी तथा कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता रहेगा। सातवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में कमी आती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखने के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

कुम्भ लग्नः
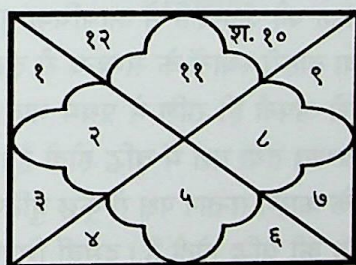
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक तथा शानदार रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता,

भूमि तथा मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष में असन्तोष रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयाँ आती हैं।

कुम्भ लग्नः
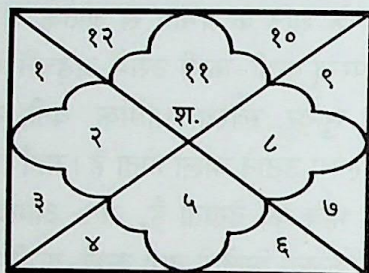
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसका खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक-प्रभाव तथा यश में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष से कुछ त्रुटिपूर्ण शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सुचारु रूप से बीतता है।

कुम्भ लग्नः
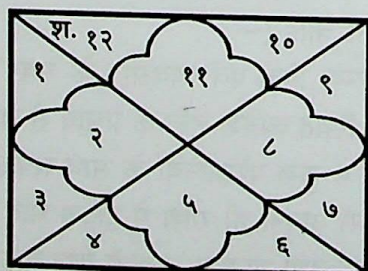
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली

के 'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से विशेष लाभ भी होता है। शनि के व्ययेश होने के कारण शरीर में कमजोरी भी रहती है तथा यात्राएँ भी करनी पड़ती हैं। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब के सुख की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम एवं चिन्ता करनी पड़ती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, परन्तु बाद में उस पर प्रभाव स्थापित होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म का पालन होता है तथा भाग्य की वृद्धि होती है। अतएव ऐसा जातक भाग्यवान समझा ज़ाता है।

कुम्भ लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फल
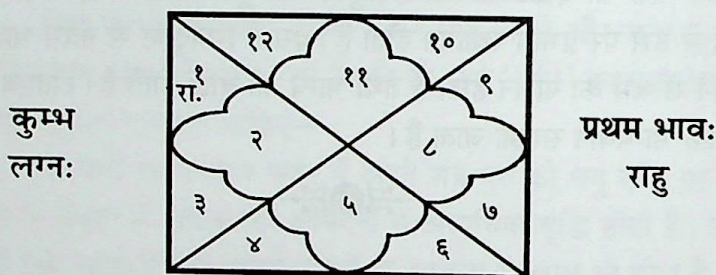
कुम्भ लग्नः

प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में कहीं चोट लगती है तथा शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। वह गुप्त चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। अपने व्यक्तित्व की उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करता है तथा सफलता भी पाता है, परन्तु कभी-कभी बड़ी परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति तथा गुप्त-युक्तियों के संयोग से प्रभाव एवं शक्ति भी प्राप्त करता है।

कुम्भ लग्नः
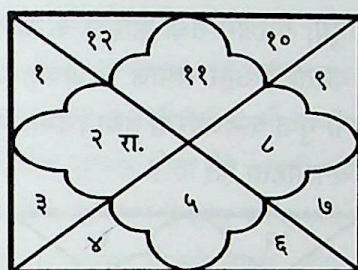
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक-संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। वह अपनी गुप्त-युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर धन भी प्राप्त करता है तथा प्रभावशाली एवं भाग्यवान समझा जाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी हिम्मत वाला होता है तथा अनेक कठिनाईयों से जूझने के बाद अपने जीवन को सफल और उन्नत भी बना लेता है।

कुम्भ लग्नः
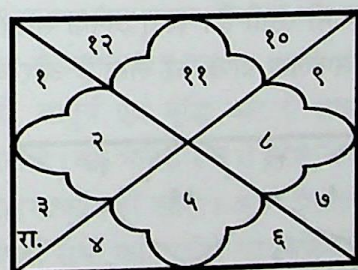
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल के मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। परन्तु उसका भाई-बहिनों से विरोध रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी

गुप्त-युक्ति, बुद्धि-चातुर्य, परिश्रम तथा साहस के बल पर सुख के साधन तथा सफलताएँ प्राप्त करता है और समाज में अपना प्रभावपूर्ण सम्मान भी बना लेता है। वह अपनी गुप्त कमजोरियों तथा चिन्ताओं को छिपाता है और प्रकट रूप में विजयी बना रहता है।
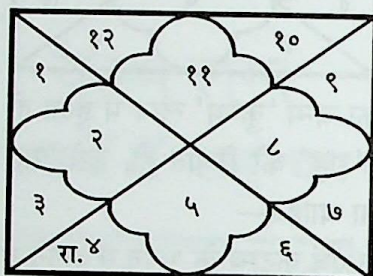
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष से बहुत कष्ट प्राप्त होता है, घरेलू जीवन अशान्ति एवं संकटपूर्ण बना रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। परन्तु अनेक संघर्षों से टकराने के बाद ऐसा जातक अन्त में सफलता प्राप्त कर लेता है और वह अपने जीवन को सुखी बनाता है।
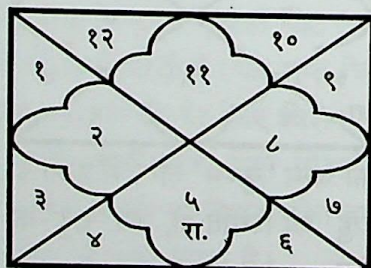
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक सन्तान-पक्ष से कुछ कष्ट पाने के उपरान्त उसकी शक्ति भी प्राप्त करता है। वह विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफल होता है। अपनी भीतरी कमजोरी को छिपाने का विशेष गुण उसमें पाया जाता है तथा प्रकट रूप में प्रभावशाली बना रहता है। ऐसा व्यक्ति बहुत अच्छा बोलने वाला, चतुर एवं मानसिक-शक्ति से सम्पन्न होता है।

कुम्भ लग्नः
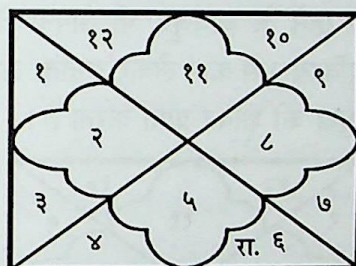
षष्ठम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग तथा शत्रु स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना बड़ा भारी प्रभाव रखता है तथा गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि बल से झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त करता है। वह भीतरी रूप से परेशानी का अनुभव करने पर भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं खोता। अपने प्रबल मनोबल एवं बुद्धि बल से वह अन्त में अपनी सभी कठिनाईयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

कुम्भ लग्नः
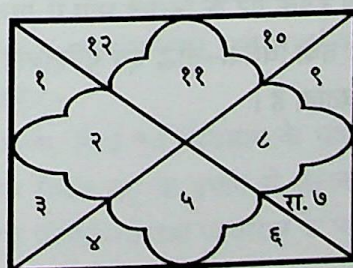
सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से बहुत कष्ट मिलता है, गृहस्थ-संचालन में कठिनाईयाँ आती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनेक संकटों तथा निराशाओं से टकराते रहने के बावजूद भी अपना धैर्य नहीं खोता तथा हिम्मत, परिश्रम एवं युक्तिबल से काम लेकर अन्ततः अपने जीवन को उन्नत बनाता है तथा घरेलू सुख की शक्ति प्राप्त करता है।
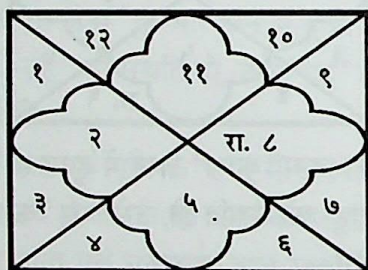
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन के सम्बन्ध में अनेकों बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व शक्ति की भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है फिर भी वह बड़ी आयु पाता है तथा विवेक-बुद्धि एवं युक्तिबल पर अपने जीवन को प्रभावशाली ढंग से बिताता है।

कुम्भ लग्नः
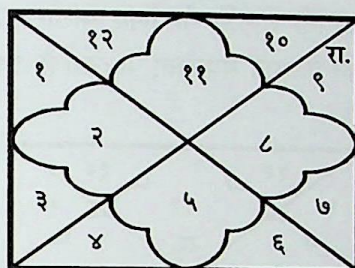
नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं तथा धर्म का पालन भी ठीक प्रकार से नहीं हो पाता परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों, परिश्रम चातुर्य एवं बुद्धि बल से भाग्य की उन्नति करने में सफल हो जाता है। मन में कमजोरी अनुभव करने पर भी वह अपनी चिन्ताओं एवं त्रुटियों को प्रकट नहीं होने देता और अपने जीवन में प्रभाव की वृद्धि करता रहता है।

कुम्भ लग्नः
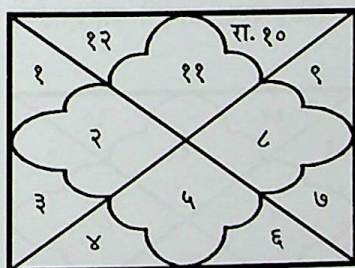
दशम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से कष्ट, राज्य के पक्ष से परेशानियाँ तथा व्यवसाय के पक्ष से कठिनाईयाँ प्राप्त

होती हैं, परन्तु वह अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है एवं अनेक संघर्षों से टकराने के बाद सफलता पा लेता है तथा अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है।

कुम्भ लग्नः
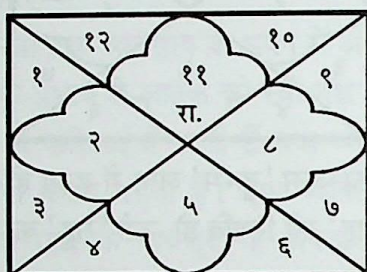
एकादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में बहुत कठिनाईयाँ आती हैं, परन्तु जातक अपनी गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि बल से किसी प्रकार उन कठिनाईयों पर थोड़ी-बहुत विजय पा लेता है लेकिन पूर्ण उन्नति नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति प्रायः अपनी कठिनाईयों को किसी पर प्रकट नहीं होने देता।

कुम्भ लग्नः
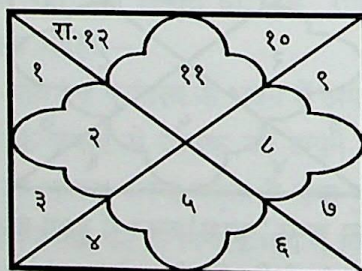
द्वादश भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु

के प्रभाव से अपने खर्च के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं। कभी-कभी तो उसे अत्यधिक चिन्तित हो जाना पड़ता है। वह अपना खर्च चलाने के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय भी लेता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है।
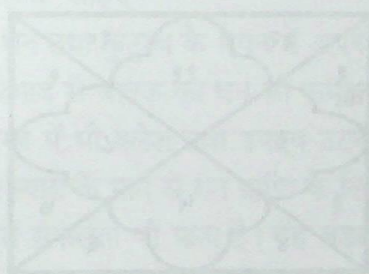
कुम्भ लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फल

कुम्भ लग्नः
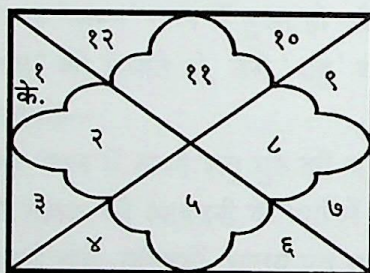
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी चोट अथवा घाव का चिह्न बनता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, गुप्त-युक्ति-सम्पन्न, धैर्यवान तथा परिश्रमी होता है। वह अपने प्रभाव को स्थिर रखने के लिए अत्यधिक कठिन प्रयत्न करता है और उसके कारण यश तथा सम्मान प्राप्त करता है।

कुम्भ लग्नः
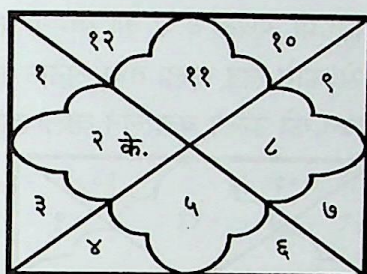
द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन की कमी का सामना करना पड़ता है तथा उसके कुटुम्ब में भी क्लेश तथा उपद्रव उठते रहते हैं। ऐसा व्यक्ति कठोर परिश्रम तथा न्याय के मार्ग से धन प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और अन्त में थोड़ी-बहुत सफलता भी पाता है। वह बड़ा धैर्यवान, साहसी तथा परिश्रमी होता है।

कुम्भ लग्नः
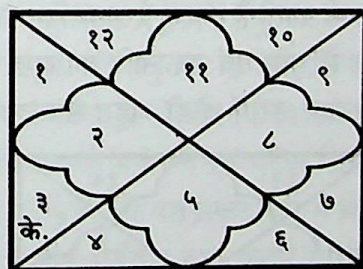
तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा पुरुषार्थी, परिश्रमी, हिम्मतवाला, धैर्यवान तथा उद्योगी होता है, अतः अपनी उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करता है। परन्तु उसे

भाई-बहिनों के सुख में कमी अथवा कष्ट का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाला तथा अनेक संघर्षों से टकराने के बाद अन्त में अपने जीवन को उन्नत बना लेने वाला होता है।
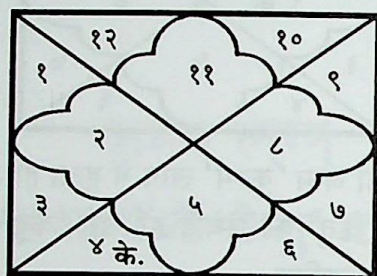
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष से हानि अथवा परेशानी उठानी पड़ती है, साथ ही मातृभूमि से वियोग भी होता है। उसे भूमि तथा मकान आदि के सुख की भी कमी रहती है। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों, परिश्रम तथा बुद्धि बल से भूमि एवं मकानादि का सुख पाने के लिए प्रयत्न करता रहता है और अन्ततः उसमें थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र बुध

की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा सन्तान का सुख प्राप्त करने के लिए भी गुप्त-युक्तियों एवं कष्टसाध्य प्रयत्नों का आश्रय लेना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को सन्तान का अल्प सुख ही प्राप्त होता है। उसमें शील तथा विवेक की कमी रहती है तथा मस्तिष्क में अशान्ति एवं चिन्ताएँ घर किए रहती हैं।

कुम्भ लग्नः
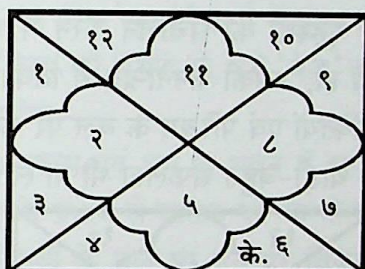
षष्ठम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से अशान्ति तो मिलती है, परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने और विजय पाने में विशेश सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति अपने मनोबल एवं युक्ति बल से शत्रुओं को मात देता है। मन में भयभीत रहने पर भी वह प्रकट रूप में बड़ी हिम्मत एवं बहादुरी का प्रदर्शन करता है। वह धैर्यवान तथा कठोर परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

कुम्भ लग्नः
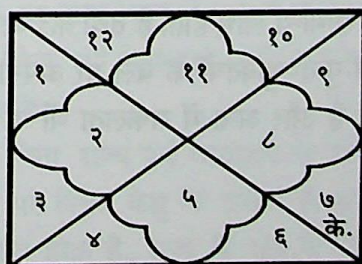
सप्तम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विफलताओं एवं संकटों का सामना करना पड़ता है। उसे अपनी गृहस्थी का संचालन करने में भी बड़ी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं। साथ ही, उसकी जननेन्द्रिय में विकार भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर कठिनाईयों का सामना करता है तथा अन्त में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।
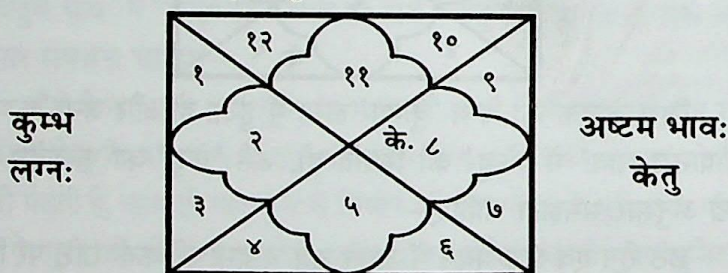
कुम्भ लग्नः

अष्टम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आयु की वृद्धि होती है, परन्तु उसे जीवन में अनेक बार मृत्युतुल्य संकटों का सामना भी करना पड़ता है। उसे पुरातत्त्व शक्ति का भी सामान्य लाभ होता है तथा कई बार हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों के बल पर अपनी कठिनाईयों को दूर करने का प्रयत्न करता है और अन्त में सफलता भी पा लेता है।

कुम्भ लग्नः
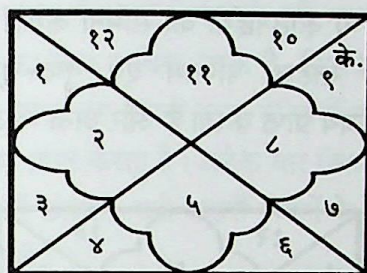
नवम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं परन्तु वह गुप्त-युक्तियों के बल पर उन पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिन परिश्रम, चातुर्य एवं धैर्य के द्वारा भाग्य की उन्नति करता है। कभी-कभी घोर संकटों तथा असफलताओं का सामना करने पर भी निराश नहीं होता। वह धैर्य और साहस के साथ निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। उसके धार्मिक पक्ष की भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती।

कुम्भ लग्नः
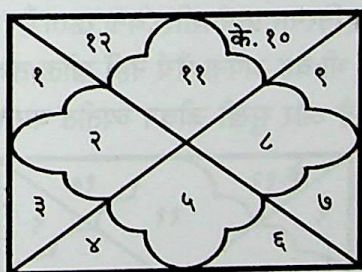
दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से अत्यधिक कष्ट प्राप्त होता है, राज्य के क्षेत्र में परेशानियाँ आती हैं तथा

व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने धैर्य, साहस, परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर असफलताओं पर विजय प्राप्त करता है और अन्त में अपनी उन्नति करने में सफल हो जाता है।
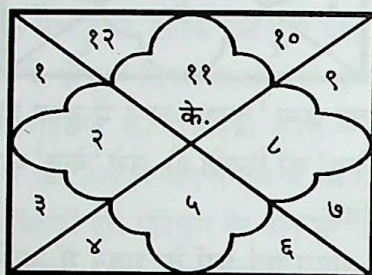
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है और कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप में भी धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। अनेक बार कठिनाईयों के उपस्थित होने पर भी वह अपना धैर्य नहीं खोता तथा न्याय-मार्ग से बहुत अधिक धन कमाता है और सुखी जीवन व्यतीत करता है।
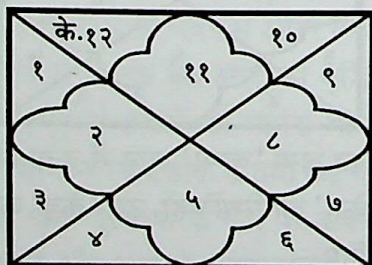
जिस जातक का जन्म 'कुम्भ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानी का अनुभव होता है। परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर खर्च चलाने की शक्ति प्राप्त करता है। अनेक बार निराशाओं से जूझने पर भी वह अपने धैर्य को नहीं छोड़ता। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

१२.
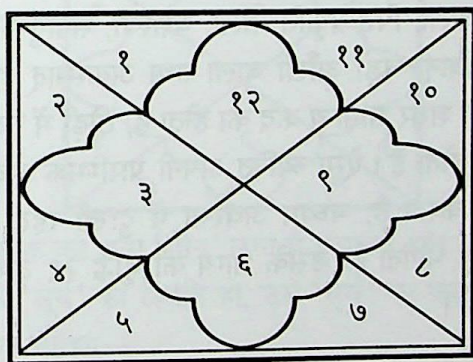
मीन लग्न

मीन लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित सभी ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

'मीन' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'मीन' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति जल-क्रीड़ा करने में कुशल, विनम्र, स्त्री-प्रिय, प्रचण्ड शक्तिशाली, श्रेष्ठ पण्डित, चतुर, अल्पभोजी, चंचल, धूर्त, श्रेष्ठ रत्नाभूषणों को धारण करने वाला, अनेक प्रकार की रचनाएँ करने वाला, पित्त प्रकृति वाला, यशस्वी, सतोगुणी, आलसी, रोगी, अधिक सन्ततिवान्, बड़ी आँखों वाला तथा अकस्मात् हानि उठाने वाला होता है। उसका शरीर सामान्य कद का होता है, ठोढ़ी में गड्ढा होता है तथा मस्तिष्क बड़ा होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सामान्य जीवन व्यतीत करता है, मध्यम अवस्था में दुःखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था में सुख भोगता है। उसके भाग्य की वृद्धि २१ अथवा २२ वर्ष की आयु में होती है।
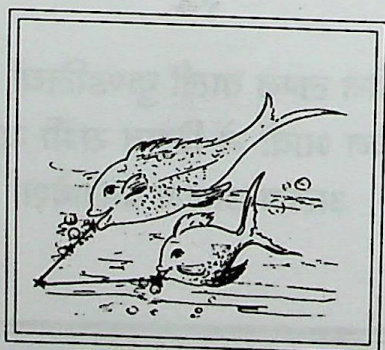
मीन लग्न

बारह भावों में 'सूर्य' का फलादेश

मीन लग्नः
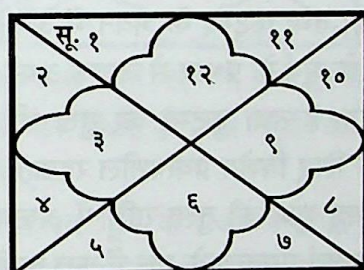
प्रथम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार एवं अन्य प्रकार के रोग होने की सम्भावना भी रहती है। वह शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा अपना सम्मान बढ़ाने के लिए दौड़-धूप भी अधिक करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में सप्तम भाव को देखता है, स्त्री का सुख कुछ परेशानियों के बाद मिलता है, गृहस्थ सुख में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक परिश्रम करने पर सफलता मिलती है।

मीन लग्नः
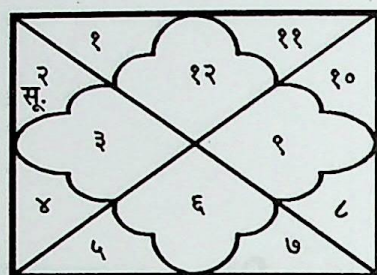
द्वितीय भावः सूर्य

जिस जा क का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन तथा कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा धन एवं प्रभाव की वृद्धि करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पाता है। वह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है। यहाँ से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा दैनिक जीवनचर्या में भी कुछ परेशानी बनी रहती है।

मीन लग्नः
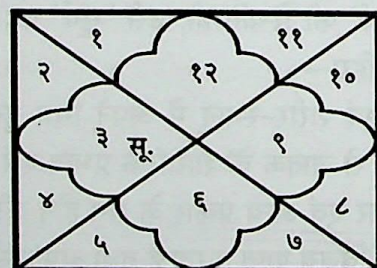
तृतीय भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का अपने भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। वह शत्रु-पक्ष पर

विजय भी प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में नवम भाव को देखता है अतः जातक अपने शारीरिक श्रम तथा प्रभाव के बल पर भाग्य की उन्नति तो करता है, परन्तु धर्म की उन्नति नहीं कर पाता। ऐसे व्यक्ति का जीवन सामान्य रूप से व्यतीत होता है।

मीन लग्नः — **चतुर्थ भावः सूर्य**
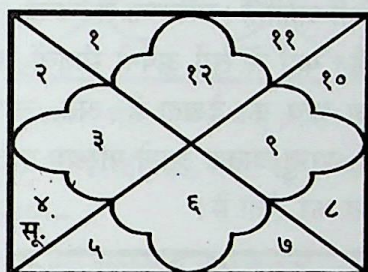
१ ११ २ १२ १० ३ ९ ४ सू. ६ ८ ५ ७

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के सुख एवं प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुख में कुछ कमी और परेशानी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त करता है तथा अपने यश, प्रतिष्ठा एवं प्रभाव की वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।
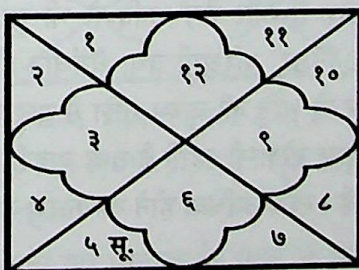
मीन लग्नः — **पंचम भावः सूर्य**

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या–बुद्धि एवं वाणी की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान–पक्ष से कुछ कष्ट मिलता है। विद्याध्ययन में सामान्य कठिनाइयाँ भी आती हैं। मस्तिष्क में चिन्ता, क्रोध एवं परेशानियों का निवास भी रहता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ तो आती हैं, परन्तु जातक अपने परिश्रम एवं बुद्धि–बल से लाभ उठाने में सफलता प्राप्त कर लेता है।
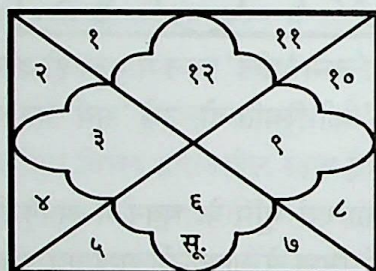
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु–भवन में अपनी ही राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। झगड़े–झंझट के मामलों में सफलता पाता है और रोग आदि से भी सुरक्षित करता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर, निडर, परिश्रमी तथा धैर्यवान होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च के कारण कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी कुछ कष्ट मिलता है। खर्च अधिक होने के कारण मन भी कुछ अशान्त–सा रहता है।

मीन लग्नः
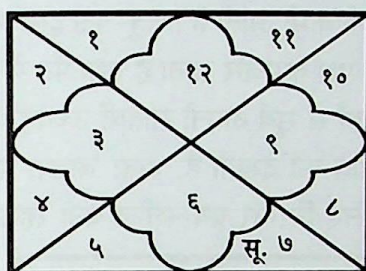
सप्तम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक परिश्रम एवं दौड़-धूप के बाद सफलता मिलती है, शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ परेशानी तो रहती है, परन्तु प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि भी होती है।

मीन लग्नः
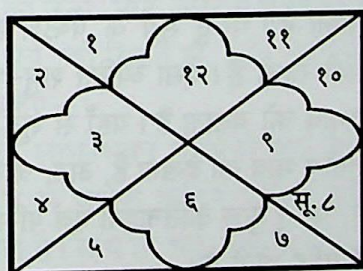
अष्टम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में घोर कठिनाइयों, संघर्षों तथा संकटों का सामना करना पड़ता है साथ ही

पुरातत्त्व की शक्ति में भी कमी आती है। शत्रु-पक्ष द्वारा भी परेशानियाँ उत्पन्न की जाती हैं। ननसाल-पक्ष कमजोर रहता है तथा पेट में या पेट के नीचे कोई विकार भी होता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मित्र मंगल की मेष राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।
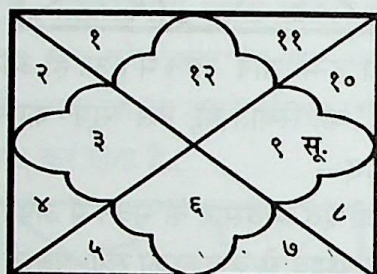
मीन लग्नः

१ ११
२ १२ १०
३ ९ सू.
४ ६ ८
५ ७

नवम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन होता है। परन्तु सूर्य के षष्ठेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ अवश्य आती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाता है। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक का भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों एवं परिश्रम के साथ हिम्मत, प्रभाव तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

मीन लग्नः
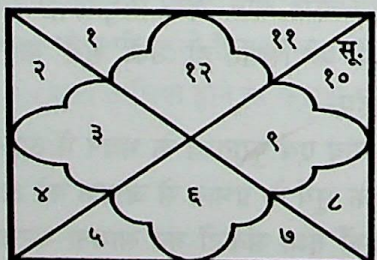
दशम भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश सूर्य के प्रभाव से जातक का पिता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है, व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु राजकीय क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है। वह अपने शत्रु-पक्ष पर भी विजय प्राप्त करता है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है।

मीन लग्नः
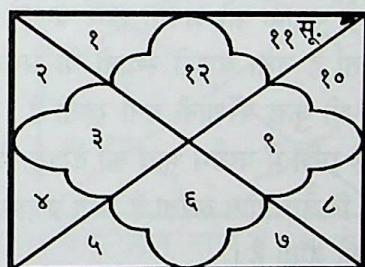
एकादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ-भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी में अत्यधिक वृद्धि करता है। साथ ही शत्रु-पक्ष पर विजय भी पाता है। सूर्य के षष्ठेश होने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ अवश्य आती हैं, परन्तु अन्ततः सफलता मिलती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।

मीन लग्नः
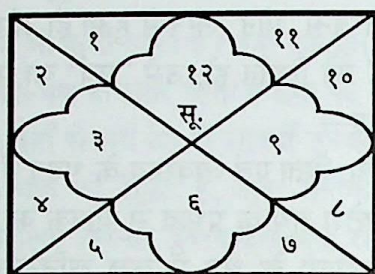
द्वादश भावः सूर्य

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ शनि पर स्थित षष्ठेश सूर्य के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भी दिक्कतें आती हैं। शत्रु-पक्ष से भी कुछ परेशानी बनी रहती है। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक खर्च के बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा प्रभाव को बढ़ाता है। वह क्रोधी तथा अहंकारी भी होता है।

मीन लग्न

बारह भावों में 'चन्द्र' का फलादेश

मीन लग्नः
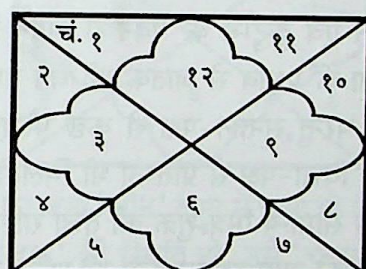
प्रथम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह कोमल स्वभाव का होता है तथा यश, प्रभाव, सम्मान एवं आत्मिक शान्ति अर्जित करता है। वह मधुर वाणी बोलने वाला, सर्वप्रिय, आदर्श एवं ज्ञानी होता है। उसे सन्तान-पक्ष से भी अच्छी शक्ति मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः उसे सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बुद्धि-बल से अच्छी सफलता मिलती है।

मीन लग्नः
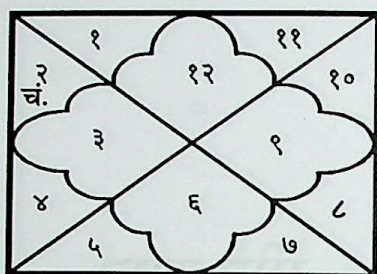
द्वितीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी होती है। इसके अतिरिक्त सन्तान तथा विद्या-पक्ष से प्रतिष्ठा भी मिलती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है।
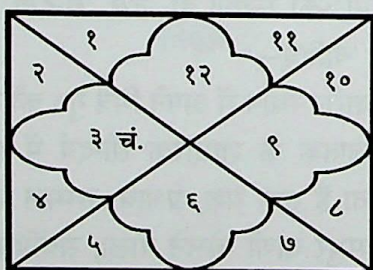
मीन लग्नः

तृतीय भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे विद्या एवं

सन्तान-पक्ष का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। वह बड़ा हिम्मती, बातचीत करने में चतुर तथा प्रसन्न रहने वाला होता है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पक्ष भी कमजोर रहता है। ऐसा जातक असहिष्णु होता है, अतः उसे यश भी कम ही मिल पाता है।

मीन लग्नः
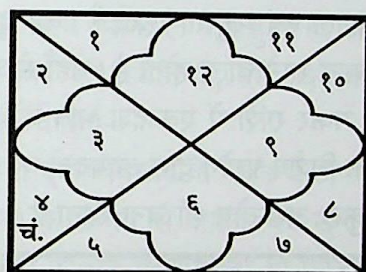
चतुर्थ भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की मानसिक शक्ति अत्यन्त प्रबल होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा यश प्राप्त करता है तथा भाग्यशाली समझा जाता है।

मीन लग्नः
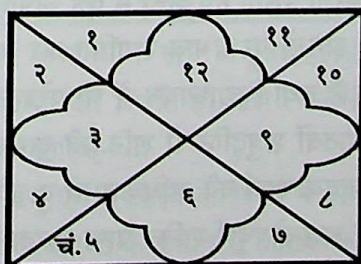
पंचम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। वह वाक्पटु होता है तथा उसकी वाणी में कोमलता एवं मधुरता रहती है। वह दूरदर्शी, गम्भीर, स्थिर विचारों वाला तथा प्रसन्न रहने वाला होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि के विशेष प्रयोग द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है, यद्यपि आमदनी के पक्ष में कुछ असन्तोष भी बना रहता है।

मीन लग्नः
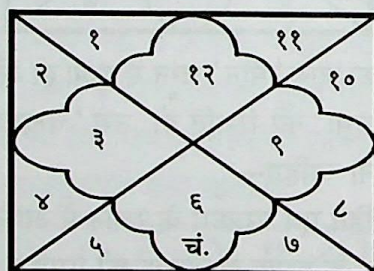
षष्ठम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु-भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-झंझटों के कारण अशान्ति का सामना करना पड़ता है। अन्त में वह अपने मनोबल तथा बुद्धि-बल से शत्रु-पक्ष एवं झगड़ों पर प्रभाव स्थापित कर पाता है। उसे सन्तान-पक्ष से भी कष्ट होता है तथा विद्याध्ययन में भी परेशानी एवं त्रुटि रहती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक खर्च की अधिकता से दुःखी रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोषपूर्ण शक्ति प्राप्त करता है।

मीन लग्नः
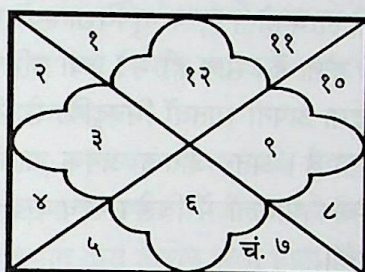
सप्तम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सुन्दर एवं बुद्धिमती स्त्री मिलती है और व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता भी प्राप्त होती है। इसके साथ ही जातक को सन्तान-पक्ष से सहयोग मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। उसके घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, सम्मान एवं योग्यता की प्राप्ति होती है। वह घरेलू एवं सामाजिक कार्यों में कुशल तथा यशस्वी होता है।

मीन लग्नः
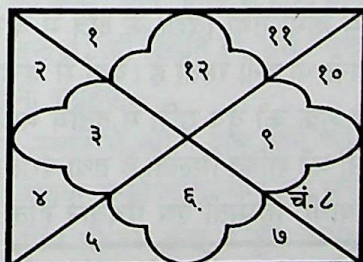
अष्टम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य मित्र शत्रु की तुला राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती

है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में कमी एवं कष्ट का अनुभव होता है। साथ ही मन तथा मस्तिष्क में अशान्ति बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में द्वितीय भाव को देखता है। अतः जातक अनेक साधनों से धन की वृद्धि करता है। वह कौटुम्बिक मामलों में विशेष रुचि रखता है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त करता है।

मीन लग्नः
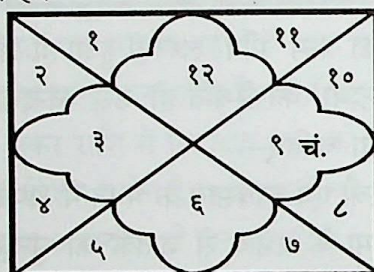
नवम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पालन भी यथाविधि नहीं हो पाता। उसे सन्तान के सुख में कमी तथा विद्या के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। मन तथा मस्तिष्क में परेशानी भी बनी रहती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृष राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मती एवं धैर्यवान होता है।
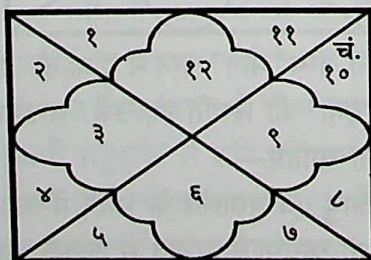
मीन लग्नः

दशम भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होता है। वह कानून को मानने वाला, स्वाभिमानी, विद्वान्, बुद्धिमान तथा सन्ततिवान होता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता का सुख एवं भूमि, मकान आदि का अच्छा लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान, धनी, यशस्वी, प्रतिष्ठित विद्वान, बुद्धिमान तथा सुखी होता है।

मीन लग्नः
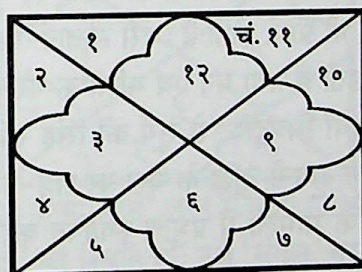
एकादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ-स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल एवं मनोबल द्वारा आमदनी की खूब वृद्धि करता है। फिर भी उसे कुछ न कुछ असन्तोष बना रहता है। ऐसे व्यक्ति को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः वह विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है ऐसा व्यक्ति स्वार्थपूर्ण बातचीत करने वाला तथा अपनी उन्नति का ध्यान रखने वाला होता है।

मीन लग्नः
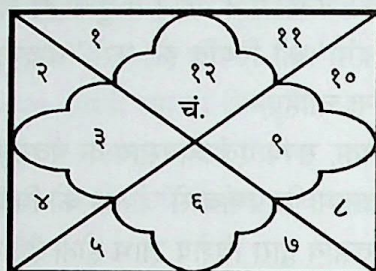
द्वादश भावः चन्द्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'चन्द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चन्द्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से उसे लाभ भी प्राप्त होता है। उसे सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है, विद्या-पक्ष में कमी रहती है तथा मन एवं मस्तिष्क परेशान बने रहते हैं। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्टम भाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के बल पर शत्रु-पक्ष में काम निकालता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में प्रभुत्व स्थापित करता है।

मीन लग्न

बारह भावों में 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्नः
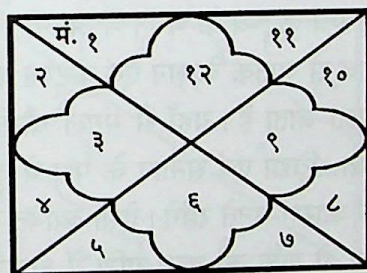
प्रथम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक-शक्ति एवं सम्मान में वृद्धि होती है। साथ ही धन, कुटुम्ब, भाग्य तथा धर्म की उन्नति भी होती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री की शक्ति मिलती है एवं व्यवसाय द्वारा धन तथा घरेलू सुख की वृद्धि भी होती है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टम भाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुछ कठिनाइयों के साथ अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

मीन लग्नः

द्वितीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक के धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है और वह बड़ा धनवान समझा जाता है। यहाँ से मंगल चौथी नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या एवं सन्तान के पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा चिन्ता एवं परेशानी के कारण बनते रहेंगे। ऐसा व्यक्ति कटु शब्दों का प्रयोग करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवम भाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता रहता है।

मीन लग्नः

तृतीय भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य-मित्र

शुक्र की वृष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है और उसे भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। इसके साथ ही धन तथा कुटुम्ब की भी उन्नति होती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है अतः शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़ों के मामलों में विजय मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवम भाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता द्वारा सुख-सहयोग मिलता है, राज्य से सम्मान प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में तरक्की होती है। ऐसा जातक यशस्वी, धर्मात्मा, शत्रुजयी तथा भाई-बहिन, कुटुम्ब एवं धन के सुख से सम्पन्न भाग्यशाली होता है।

मीन लग्नः
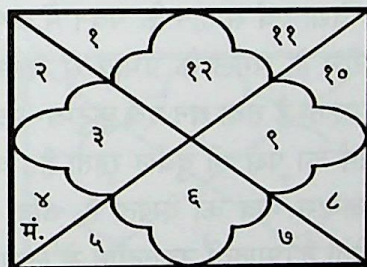
चतुर्थ भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता का सुख एवं भूमि, मकान आदि की शक्ति प्राप्त होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। घरेलू सुख भी खूब रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय से सुख, सम्मान तथा लाभ मिलता रहता है। आठवीं उच्चदृष्टि से शत्रु की राशि में एकादश भाव को देखने से घर बैठे ही लाभ का योग बनता रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा

भाग्यशाली होता है।

मीन लग्नः
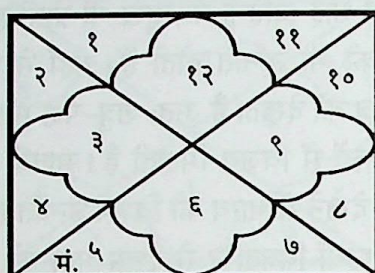
पंचम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कमजोरी रहती है तथा धन एवं कुटुम्ब-पक्ष से भी चिन्ता बनी रहती है। भाग्य एवं धर्म का पक्ष भी दुर्बल रहता है। यहाँ से मंगल चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की कुछ वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से लाभ भवन को देखने से जातक आमदनी बढ़ाने के लिए विशेष प्रयत्न करता है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च के मामले में परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ असन्तोष पूर्ण सहयोग मिलता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षमय बना रहता है।

मीन लग्नः
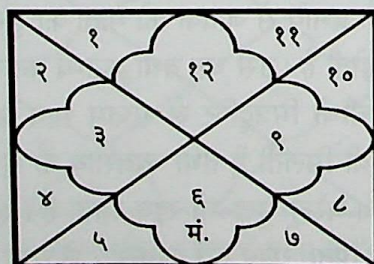
षष्ठम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे

लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना बड़ा प्रभाव रखता है। धन की कुछ कमी रहते हुए भी खर्च शान से चलता है तथा कुटुम्ब से भी थोड़ा सुख मिलता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में नवम भाव को देखता है, अतः कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की परेशानी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से असन्तोष रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है तथा झगड़े के मामलों में जातक हिम्मत से काम लेता है।

मीन लग्नः
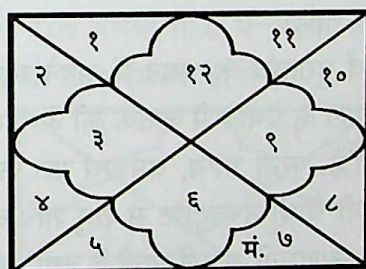
सप्तम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय में भी लाभ होता है। वह धर्म का पालन करता है और भाग्यशाली होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सहयोग, सम्मान, लाभ एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। विशेषकर रोजगार खूब बढ़ता है तथा धन की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। आठवीं

दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने से भाग्य की प्रबल शक्ति से धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है।
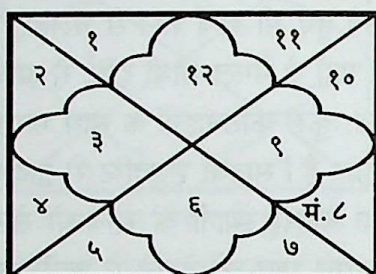
अष्टम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु भाग्य, धर्म एवं यश के क्षेत्र में कमी आती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में एकादश भाव को देखता है अतः आदमनी अच्छी रहती है तथा जातक अधिक मुनाफा खाने का प्रयत्न करता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का संचय होता है तथा कुटुम्ब का सहयोग भी मिलता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।
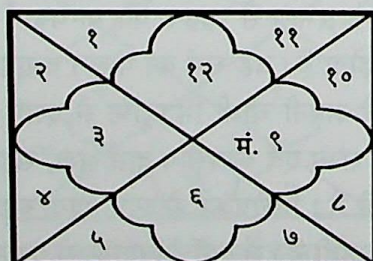
नवम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'नवम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली, धनी, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी विशेष रुचिकर नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मंकान का सुख यथेष्ट मात्रा में मिलता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक भाग्यवान्, सुखी तथा यशस्वी होता है।

मीन लग्नः
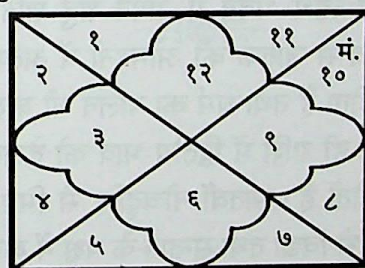
दशम भावः मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पिता से बहुत सुख, राज्य से अत्यधिक सम्मान तथा व्यवसाय में बड़ी उन्नति करता है। उसे धन तथा कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा धर्म का पालन भी होता है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव, शक्ति, प्रतिष्ठा, यश एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, मकान एवं घरेलू

सुख की प्राप्ति होती है। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र की राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमी रहती है। वाणी में रूखापन तथा मस्तिष्क में कुछ परेशानियाँ भी रहती हैं।
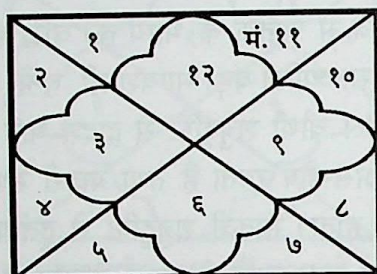
एकादश भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ-भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा भाग्यवान् होता है तथा धर्म का पालन भी करता है। यहाँ से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब की उन्नति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में पंचम भाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमी तथा परेशानी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण जातक भाग्य की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर विजय एवं प्रभाव प्राप्त करता है तथा झगड़े के मामले में सफलता पाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धनवान् तथा यशस्वी होता है।

मीन
लग्नः
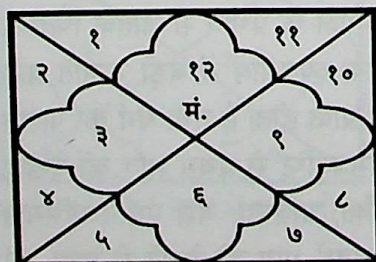
द्वादश भावः
मंगल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है। धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में बहुत कमी रहती है तथा भाग्य, धर्म एवं यश की उन्नति में अनेक कठिनाइयाँ आती रहती हैं। यहाँ से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों की कुछ असन्तोषपूर्ण शक्ति मिलती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा आठवें मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री से सुख तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है।

मीन लग्न

बारह भावों में 'बुध' का फलादेश

मीन लग्नः
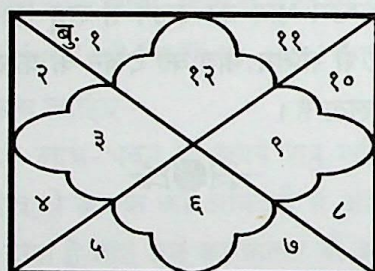
प्रथम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी थोड़ा ही प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा व्यवसाय से क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव की एवं व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।
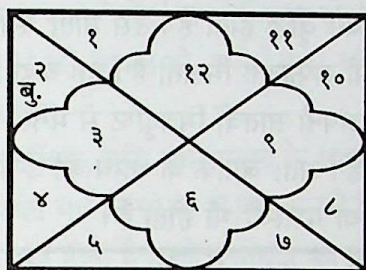
मीन लग्नः

द्वितीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक कुटुम्ब से शक्ति प्राप्त करता है तथा अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा धन का संचय करता है। उसे माता तथा स्त्री के सुख से कुछ कमी रहती है, परन्तु घरेलू सुख अच्छा रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि की शक्ति का भी लाभ होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है।
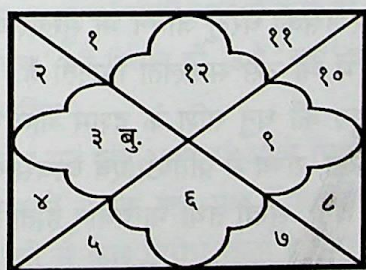
मीन लग्नः

तृतीय भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख प्राप्त

होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में नवम भाव को देखता है। अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है। वह धर्म का पालन करता है तथा यशस्वी भी होता है।

मीन लग्नः
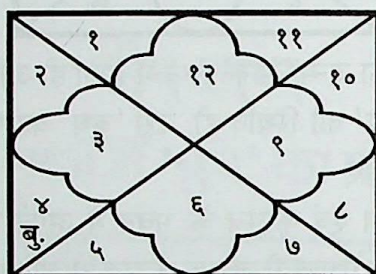
चतुर्थ भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक को माता का विशेष सुख मिलता है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति भी प्राप्त होती है। वह स्त्री-पक्ष से बहुत आनन्दित रहता है और उसका घरेलू जीवन भी सुख तथा उल्लासपूर्ण रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि के दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता से शक्ति, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

मीन लग्नः
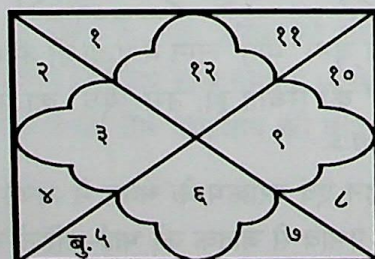
पंचम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

पाँचवें त्रिकोण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की विद्या बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। उसे प्रसन्नता का सुख भी मिलता है। वह बड़ी मीठी वाणी बोलने वाला तथा गृह-कार्य-संचालन में कुशल होता है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में लाभ-भवन को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि-बल से आमदनी की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति, धनी, सुखी, यशस्वी तथा विवेकी होता है।

मीन लग्नः
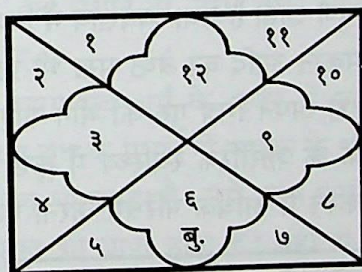
षष्ठम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम निकालता है। उसका माता तथा स्त्री से कुछ विरोध रहता है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी कम मिलता है। व्यवसाय के क्षेत्र में वह अपने बुद्धि-बल तथा परिश्रम से सफलता प्राप्त करता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है।

मीन लग्नः — सप्तम भावः बुध
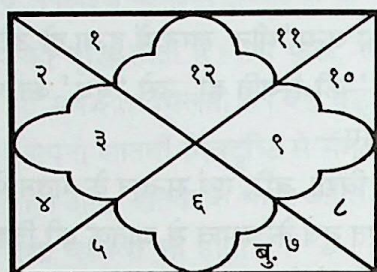
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, घरेलू जीवन प्रभावपूर्ण रहता है तथा व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि के प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा गृहस्थी का संचालन करने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

मीन लग्नः — अष्टम भावः बुध
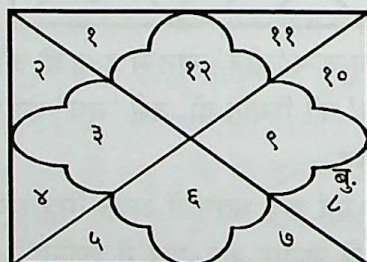
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन भी सुखी तथा प्रभावपूर्ण

रहता है। परन्तु स्त्री से सुख में विशेष कमी रहती है और माता का सुख भी कम ही मिल पाता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है तथा धन की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील बना रहता है।
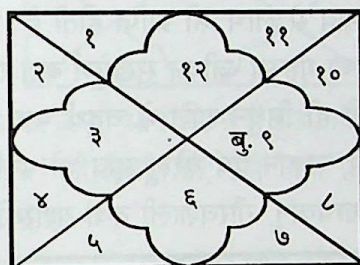
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृष राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, यशस्वी, पराक्रमी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

मीन लग्नः
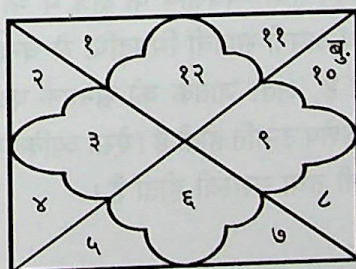
१ ११ बु. २ १२ १० ३ ९ ४ ६ ८ ५ ७

दशम भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'दशम भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता से सुख-सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। उसे स्त्री-पक्ष से भी प्रभाव प्राप्त होता है तथा गृहस्थ-जीवन सुखपूर्ण बना रहता है। यहाँ से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुख भी पर्याप्त मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, भाग्यवान्, गौरवशाली तथा यशस्वी होता है।
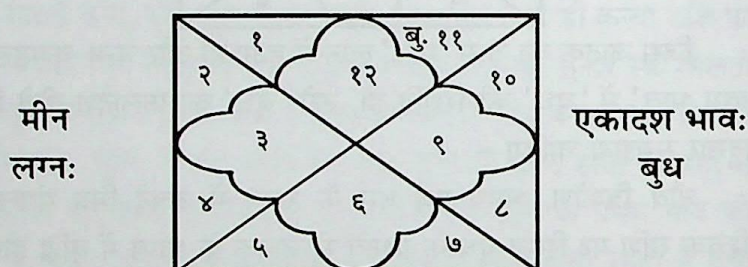
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लग्न-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता मिलती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी, बुद्धिमान्, धनी, सुखी प्रभावशाली तथा यशस्वी होता है।

मीन लग्नः
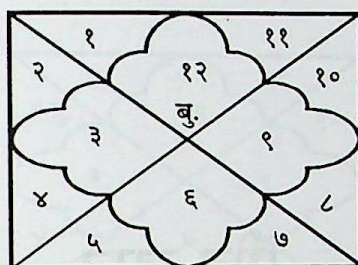
द्वादश भावः बुध

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त होता है। उसे स्त्री, माता, भूमि, मकान, घरेलू सुख तथा स्थानीय व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। वह धैर्यवान् तथा साहसी होता है।

मीन लग्न

बारह भावों में 'गुरु' का फलादेश

मीन लग्नः
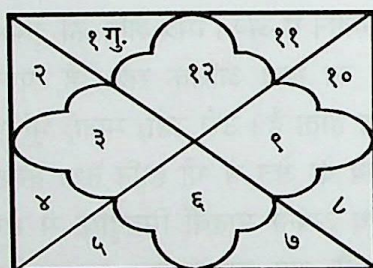
प्रथम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सहयोग, लाभ एवं यश प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा व्यवसायी तथा धनी होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या एवं बुद्धि की विशेष उन्नति होती है तथा सन्तान-पक्ष को सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री के सुख एवं व्यवसाय में वृद्धि होती है। नौवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की भी उन्नति होती है।

मीन लग्नः
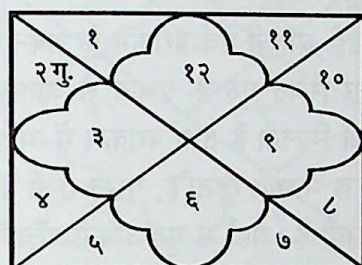
द्वितीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक धन का संचय खूब करता है तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है, परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़े के मामलों में धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशम भाव को देखने के कारण पिता से बहुत सहयोग मिलता है, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से प्रचुर लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

मीन लग्नः
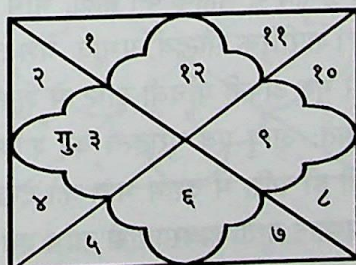
तृतीय भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिनों एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाई-बहिनों का सुख कुछ मतभेद साथ मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसका पिता से भी कुछ मतभेद रहता है, परन्तु राज्य में प्रभाव बढ़ता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री-पक्ष से सुख प्राप्त होता है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है एवं नौवीं नीचदृष्टि से शनि की राशि में एकादश भाव को देखने से आदमनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं।
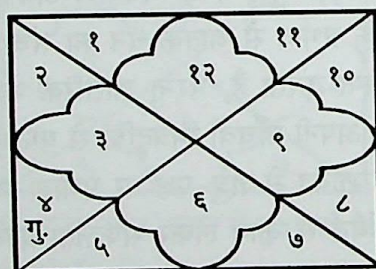
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का अच्छा सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशम भाव को देखने से पिता से शक्ति मिलती है, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ एवं सुख प्राप्त होता है। नौवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च के कारण असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी अधिक रुचिकर नहीं होता।
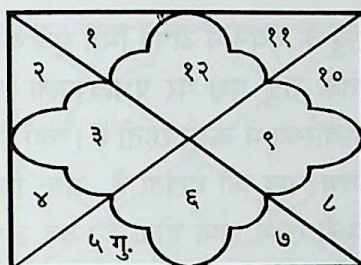
पंचम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या, बुद्धि एवं वाणी का श्रेष्ठ बल प्राप्त होता है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय से भी लाभ होता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आदमनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं तथा नौवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव, स्वाभिमान, गौरव एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। सामान्यतः ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

मीन लग्नः
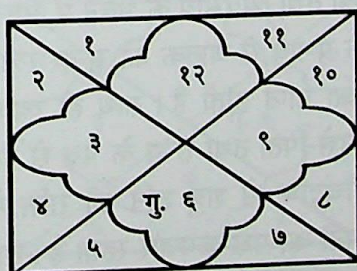
षष्ठम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है, परन्तु उसके शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवम भाव को देखता है, अतः पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। वह अपने शारीरिक श्रम के बल पर उन्नति करता रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से असन्तोष रहता है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन की वृद्धि होती है और कुटुम्ब का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा धन तथा यश प्राप्त करता है।

मीन लग्नः
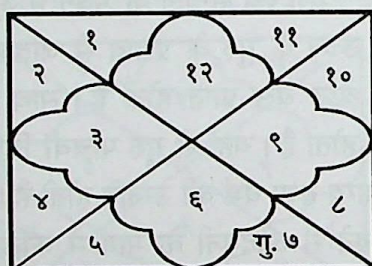
सप्तम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री पक्ष से सुख एवं शक्ति प्राप्त होती है। साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। उसे पिता तथा राज्य के पक्ष से प्राप्त होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी नीचदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में एकादश भाव को देखता है; अतः आदमनी का पक्ष कमजोर रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, यश, स्वाभिमान एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों की शक्ति अच्छी मिलती है, परन्तु उनसे कुछ असन्तोष रहता है। साथ ही पराक्रम में अधिक वृद्धि होती है।

मीन लग्नः
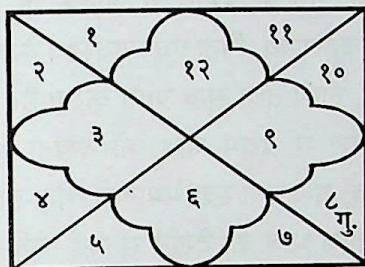
अष्टम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से हानि तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोष बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है एवं नौवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

मीन लग्नः
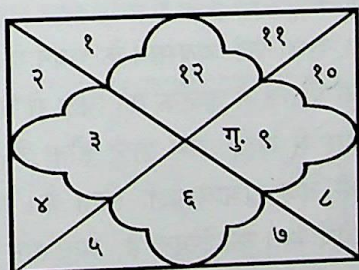
नवम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की

वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। वह राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में भी अत्यधिक सफलता, यश, सम्मान, लाभ तथा सुख प्राप्त करता है। यहाँ से गुरु पाँचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा स्वाभिमान में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। नौवीं उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में पंचम भाव को देखने के कारण विद्या बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा सन्तान पक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति कलात्मक रुचि का प्रेमी, प्रभावशाली तथा वाणी का धनी होता है।

मीन लग्नः
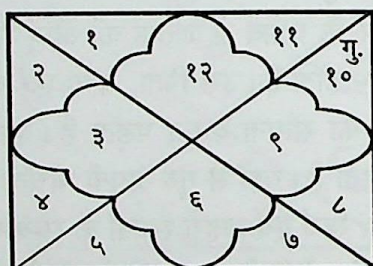
दशम भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को पिता से बड़ी शक्ति, राज्य से बड़ा सम्मान तथा व्यापार से बड़ा लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रतिष्ठित, धनी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन की उन्नति होती है तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चुतर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा नौवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता एवं विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी,

सुखी, बहादुर, हिम्मती तथा राज्य लाभ प्राप्त करने वाला होता है।
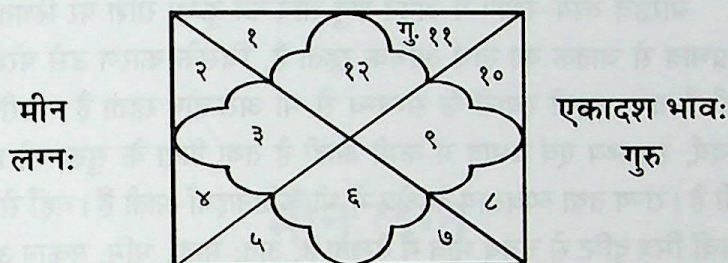
मीन लग्नः

१ गु. ११ २ १२ १० ३ ९ ४ ६ ८ ५ ७

एकादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत कमी आती है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से भी कष्ट प्राप्त होता है तथा भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी दृष्टि से शुक्र की राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों का थोड़ा सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी कुछ वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान पक्ष से उन्नति प्राप्त होती है तथा विद्या बुद्धि का विशेष लाभ होता है। नौवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री सुन्दर मिलती है, उससे सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।
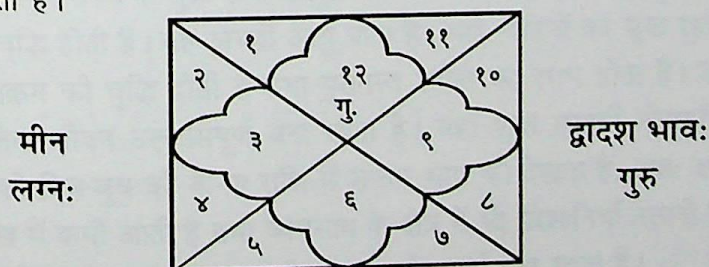
मीन लग्नः

द्वादश भावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी असन्तोष रहता है। शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में कमी आती है तथा पिता के सुख की हानि होती है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ से गुरु पाँचवीं मित्र दृष्टि से चुतर्थ भाव में देखता है, अतः माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है तथा नौवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

मीन लग्न

बारह भावों में 'शुक्र' का फलादेश

मीन लग्नः
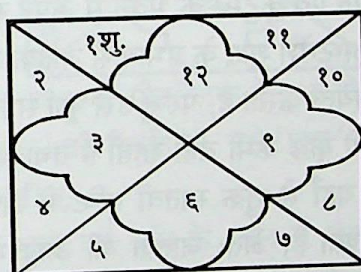
प्रथम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। वह अच्छी आयु पाता है। भाई-बहिनों का सुख रहता है, पराक्रम की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है। यहाँ शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः स्त्री के सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। फिर भी उसका गृहस्थ जीवन असन्तोष पूर्ण बना रहता है।

मीन लग्नः
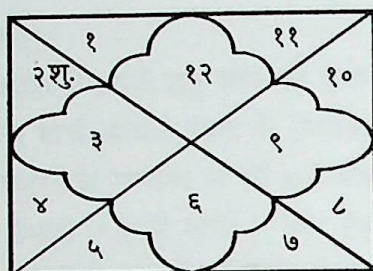
१ ११ २शु. १२ १० ३ ९ ४ ६ ८ ५ ७

द्वितीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि करने का प्रयत्न करता है, परन्तु उसे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती। कुटुम्ब के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है तथा भाई-बहिनों के सुख में भी कमी आती है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ तथा होशियारी द्वारा वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है।

मीन लग्नः
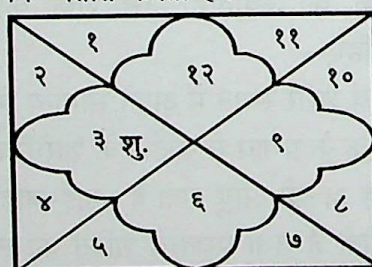
तृतीय भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहन तथा पराक्रम के भवन में अपनी ही वृष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की शक्ति तो मिलती है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण उनसे कुछ परेशानी भी

रहती है। पराक्रम की वृद्धि के साथ-साथ उसे आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में भी लाभ होता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति तथा धार्मिक उन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं। फिर भी ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर सुखी तथा समृद्ध जीवन व्यतीत करता है।

मीन लग्नः
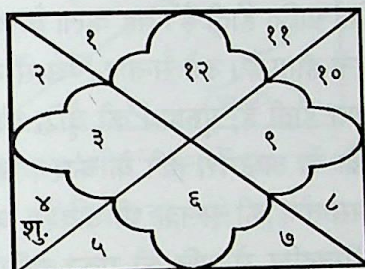
१ ११ २ १२ १० ३ ९ ४ ६ ८ शु. ५ ७

चतुर्थ भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से माता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा भूमि एवं मकानादि की भी त्रुटिपूर्ण शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु उसकी आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति को भाई-बहिनों का सुख मिलता है एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि में नवम भाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा प्राप्त सुख, सहयोग, प्रतिष्ठा एवं लाभ में कुछ कमी रहेगी, परन्तु जातक अपने चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा लाभ उठाता रहेगा तथा उन्नति करता रहेगा।

मीन लग्नः
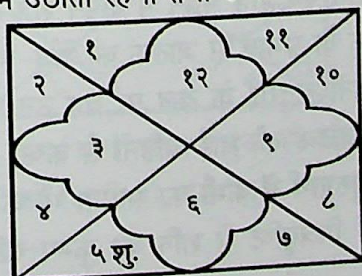
पंचम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने सामान्य शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की विशेष शक्ति प्राप्ति होती है। वह कला के क्षेत्र में उन्नति करता है तथा वाणी का भी धनी होता है। उसे सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। भाई-बहिनों की शक्ति प्राप्त होती है, पुरुषार्थ की वृद्धि होती है तथा दीर्घायु भी मिलती है। परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में कुछ-न-कुछ कमी अथवा असन्तोष की झलक भी अवश्य बनी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आदमनी में अत्यधिक वृद्धि होती है और वह अपने प्रत्येक स्वार्थ की सिद्धि करता रहता है।

मीन लग्नः
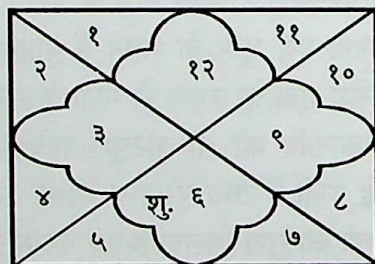
षष्ठम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से कठिनाइयाँ प्राप्त होती हैं, परन्तु अपनी चतुराई के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त करता रहता है। साथ ही जातक को भाई-बहिनों से कष्ट, आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में हानि तथा पुरुषार्थ में कमी का सामना भी करना पड़ता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि को कुम्भ राशि में द्वादश भाव को

देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से कुछ शक्ति प्राप्त होती है।

मीन लग्नः
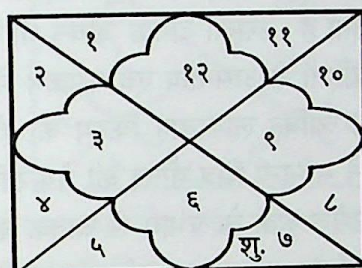
सप्तम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशनियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही भाई-बहिनों की कमी तथा पराक्रम में कमजोरी भी रहती है। पुरातत्त्व, आयु एवं दैनिक जीवन की ओर से भी असन्तोष बना रहता है। यहाँ से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक का शरीर स्वस्थ, सुडौल, विशाल तथा प्रभावशाली होता है। वह स्वाभिमानी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

मीन लग्नः
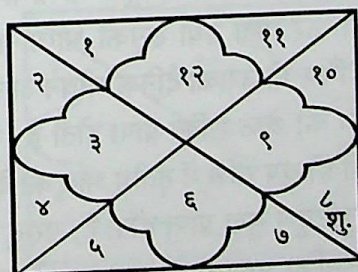
अष्टम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ मिलता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभावशाली बना रहता है तथा भाई-बहिनों से असन्तोष एवं पराक्रम में कमी का सामना भी करना होता है। ऐसा व्यक्ति लापरवाह किस्म का होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को कुटुम्ब से परेशानी रहती है, परन्तु चतुराई के बल पर धन की वृद्धि होती है।

मीन लग्नः
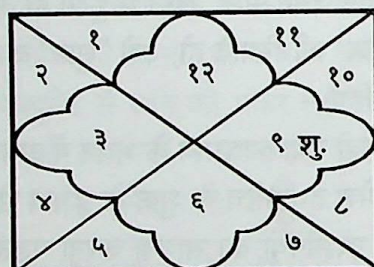
२	१ १२ ११	१०
३		९ शु.
४	५ ६ ७	८

नवम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता तथा उसकी भाग्योन्नति एवं यश-वृद्धि में कठिनाइयाँ आती हैं। फिर भी उसका दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से अष्टमेश शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृष राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ के बल पर ही अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।
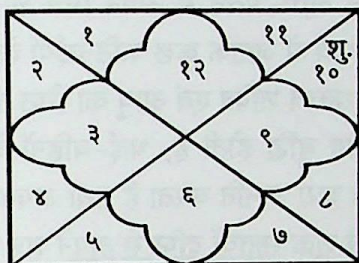
मीन लग्नः

दशम भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी रहती है। साथ ही राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष से भी असन्तोष रहता है अथवा त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है, परन्तु जातक की आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है और वह अपने पुरुषार्थ द्वारा सफलता एवं यश प्राप्त करता है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख तो प्राप्त होता है, परन्तु उसमें कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर उन्नति करता है।

मीन लग्नः
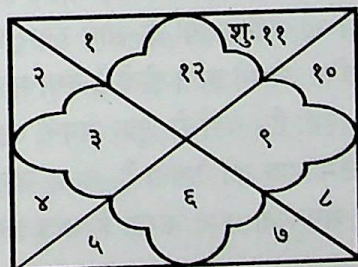
एकादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाईयों के साथ अपनी आमदनी को बढ़ाता है। उसे पुरातत्त्व शक्ति एवं आयु का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि होती है, भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, वह परिश्रम द्वारा उन्नति करता है तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चतुर होता है। यहाँ से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को प्रयत्नपूर्वक सन्तान-पक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का भी लाभ होता है।

मीन लग्नः
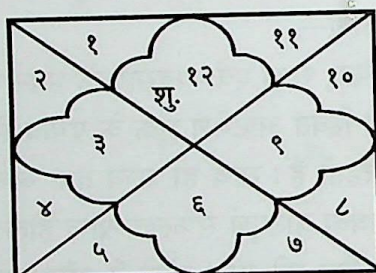
१ ११ २ शु. १२ १० ३ ९ ४ ६ ८ ५ ७

द्वादश भावः शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। उसकी आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की भी हानि होती है तथा भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में भी कमी रहती है। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठम भाव को देखता है, अतः जातक अपनी चतुराई के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़ों से बचे रहने का प्रयत्न करता है।

मीन लग्न

बारह भावों में 'शनि' का फलादेश

मीन लग्नः
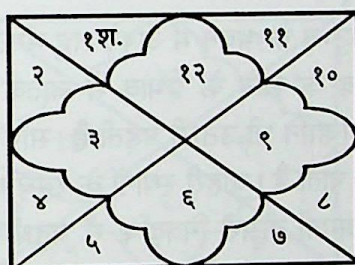
प्रथम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में उतार-चढ़ाव आता रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय-पक्ष से हानि-लाभ की प्राप्ति होती रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण पिता के वैमनस्य रहता है, राज्य से परेशानी मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

मीन लग्नः
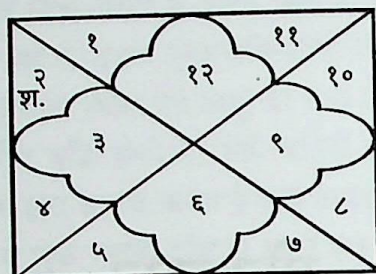
द्वितीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश तथा नीच के शनि के प्रभाव से जातक के धन-संचय में कठिनाइयाँ आती हैं तथा हानि भी उठानी पड़ती है। साथ ही उसे कुटुम्ब का सुख भी थोड़ा ही मिल पाता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध हानिकारक सिद्ध होते हैं। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। सातवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी खूब रहती है, परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता।

मीन लग्नः
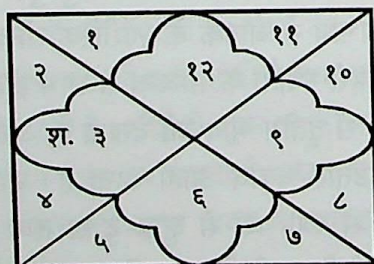
तृतीय भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थिति व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के द्वारा सुख-दुःख दोनों की ही प्राप्ति होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। वह बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मत वाला तथा परिश्रमी होता है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः सन्तान-पक्ष से कठिनाई रहती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में कुछ कमी रहती है तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है। परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी प्राप्त होता है।

मीन लग्नः
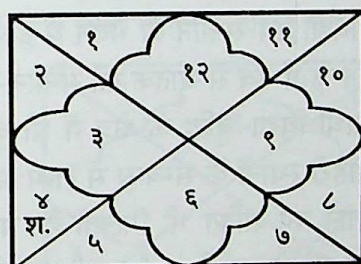
चतुर्थ भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में हानि-लाभ युक्त शक्ति प्राप्त होती है घरेलू सुख में भी कुछ कमी रहती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखता है। अतः शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा झगड़े के मामलों में कभी हानि उठानी पड़ती है और कभी लाभ भी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ तथा सुख मिलता है।

मीन लग्नः **पंचम भावः शनि**
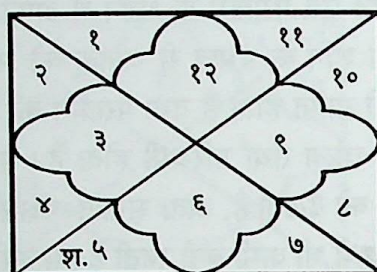
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से हानि-लाभ दोनों ही प्राप्त होते हैं तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ अच्छा रहता है, तथा बुद्धि-बल से खर्च चलाने की शक्ति भी मिलती है। यहाँ से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है। अतः स्त्री पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय से हानि-लाभ दोनों का मिश्रित योग प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। दसवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में तृतीय भाव को देखने के कारण धन-संचय की शक्ति में तो वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब द्वारा क्लेश प्राप्त होता है।

मीन लग्नः
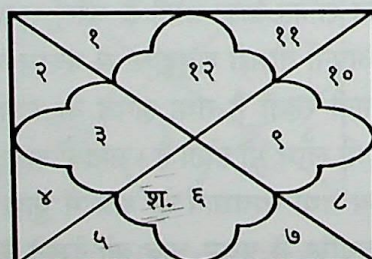
षष्ठम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में खर्च करके लाभ प्राप्त करता है। उसे बीमारी आदि में भी खर्च करना पड़ता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

मीन लग्नः
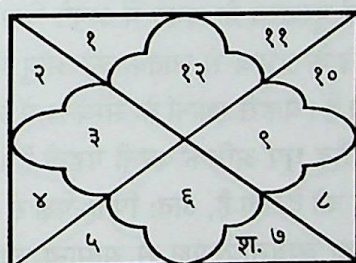
सप्तम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा लाभेश शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख-दुःख एवं हानि-लाभ दोनों की ही प्राप्ति होती है। खर्च अधिक रहने से परेशानी होती है; परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः भाग्योन्नति एवं धर्मोन्नति में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक के शरीर में कुछ कमजोरी रहती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता के सुख में हानि-लाभ दोनों का ही योग रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि का सुख

भी कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

मीन लग्नः
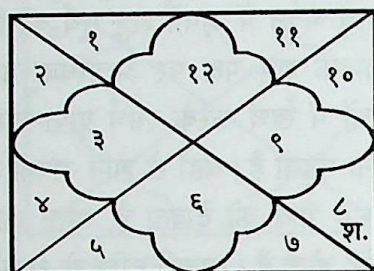
अष्टम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च से शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विशेष आमदनी होती है, परन्तु उसके लिए दौड़ धूप अधिक करनी पड़ती है। यहाँ से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः पिता-पक्ष से असन्तोष, राज्य पक्ष से सामान्य सम्पर्क तथा व्यवसाय-पक्ष से सामान्य लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में द्वितीय भाव को देखने से धनसंचय का अभाव रहता है तथा कुटुम्ब से परेशानी प्राप्त होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष में हानि तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क में चिन्ताएँ घर किए रहती हैं।

मीन लग्नः
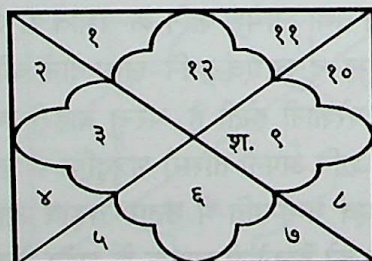
नवम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे

अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अपने भाग्य की उन्नति तो करता है, परन्तु उससे कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। इसी प्रकार धर्म-पालन में भी कमी रहती है। यहाँ से तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आदमनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है एवं दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

मीन लग्नः
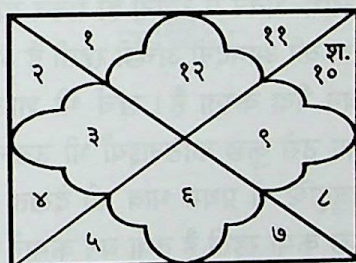
दशम भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में हानि, व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाई एवं राज्य के पक्ष में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उसकी आदमनी अच्छी रहती है। यहाँ से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः खर्च शानदान रहता है तथा ब्राहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय में

हानि–लाभ दोनों का ही योग बना रहता है।

मीन लग्नः
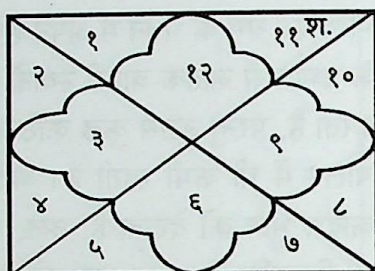
एकादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ–भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खूब धन पैदा करता है। खर्च भी शानदार रहता है, परन्तु आमदनी बढ़ाने के लिए उसे कुछ कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ती हैं। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा धन कमाने के लिए बहुत दौड़–धूप करनी पड़ती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान–पक्ष की कुछ हानि होती है तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी में कुछ रूखापन रहता है और वह अधिक स्वार्थी भी होता है।

मीन लग्नः
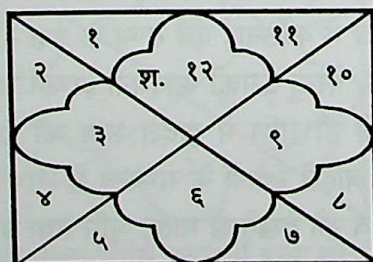
द्वादश भावः शनि

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म–कुण्डली के

'द्वादश भाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपनी ही कुम्भ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक का खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उस खर्च को चलाने की शक्ति प्राप्त होती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को शत्रु की राशि में देखता है, अतः धन तथा कुटुम्ब की ओर से जातक चिन्तित बना रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त करता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म और यश की उन्नति कम ही हो पाती है।

मीन लग्न

बारह भावों में 'राहु' का फलादेश

मीन लग्नः
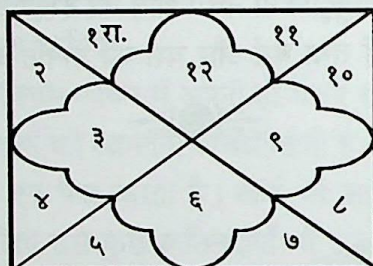
प्रथम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु वह विशेष युक्तियों द्वारा सम्मान तथा प्रभाव को अवश्य प्राप्त कर लेता है। मन के भीतर कुछ कमी का अनुभव होने पर भी वह गुप्त-युक्तियों से चतुर बने रहकर व बुद्धि-बल से अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा अन्त में अपनी सभी कठिनाइयों पर विजय भी प्राप्त कर लेता है और जीवन को उन्नत तथा प्रभावशाली बनाता है।

मीन लग्नः
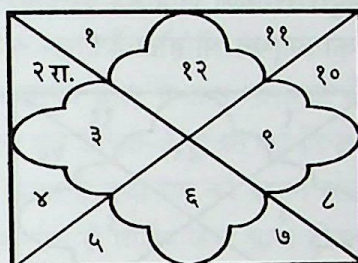
द्वितीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन की कमी का विशेष रूप से अनुभव करता है और उसे कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त नहीं होता। वह गुप्त-युक्तियों के बल पर धन की उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा बड़ी कठिनाइयों के बाद थोड़ी बहुत सफलता भी पा लेता है, परन्तु उसे कभी-कभी आर्थिक कष्ट अत्यधिक परेशान करते रहते हैं।

मीन लग्नः
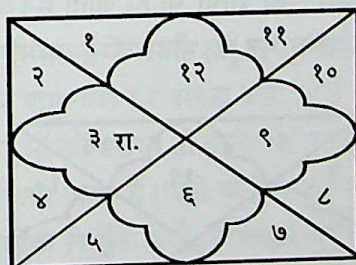
तृतीय भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह अपनी गुप्त कमजोरियों को छिपाने में कुशल होता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि एवं जीवन के लिए आवश्यक सफलताओं को प्राप्त करने के लिए

बड़ी हिम्मत तथा बहादुरी से काम लेता है। उसे भाई-बहिनों की ओर से कुछ कमी तथा कष्ट का अनुभव भी होता है।

मीन लग्नः

१ ११ २ १२ १० ३ ९ ४ रा. ६ ८ ५ ७
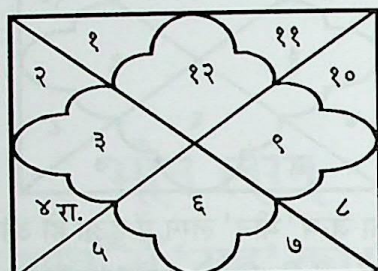
चतुर्थ भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अपनी माता का विशेष सुख एवं सहयोग प्राप्त करता है तथा भूमि, मकान एवं घरेलू सुख की अपनी गुप्त-युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर उन्नति करता है। कभी-कभी उसे सुख के साधनों की आकस्मित प्राप्ति भी हो जाती है। वह बड़ी शान-शौकत का जीवन बिताता है, परन्तु मन के भीतर कभी-कभी अशान्ति का अनुभव भी करता है।

मीन लग्नः
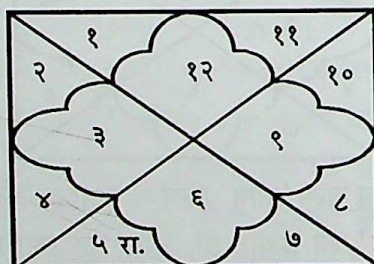
पंचम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवे त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा

की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं, तथा सन्तान-पक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। ऐसे व्यक्ति की बोली में रूखापन होता है तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ घर किए रहती हैं। वह सत्यासत्य एवं उचित-अनुचित का विचार किए बिना अपनी सुख-वृद्धि का प्रयत्न करता है तथा मन को प्रसन्न रखना चाहता है, परन्तु कभी-कभी उसे सन्तान-पक्ष से विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा चिन्ताएँ भी परेशान करती हैं।

मीन लग्नः
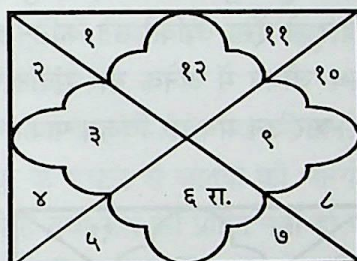
षष्ठम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना बड़ा भारी भाव रखता है। वह अपने युक्ति-बल से शत्रुओं को परास्त तो करता है, परन्तु शत्रु-पक्ष द्वारा उसे बार-बार परेशान भी किया जाता है। ऐसे व्यक्ति को ननसाल-पक्ष से भी कुछ हानि होती है। प्रत्येक स्थिति में ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, धैर्यवान्, साहसी, चतुर तथा सावधान रहने वाला होता है।

मीन लग्नः
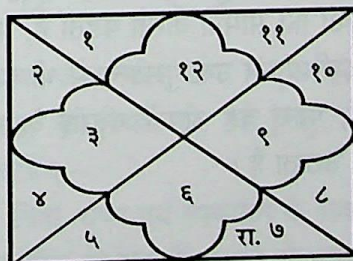
सप्तम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि के बल से ऐसा व्यक्ति उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। उसके गृहस्थ-जीवन में अनेक बार संकट के अवसर उपस्थित होते हैं, परन्तु वह बार-बार उन सब पर विजय पाकर अपनी उन्नति करता है।
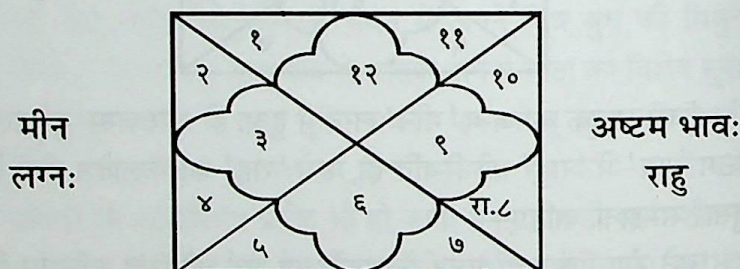
अष्टम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के सम्बन्ध में अनेक बार चिन्ताओं तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उसकी आयु में वृद्धि होती रहती है। इसी प्रकार उसे पुरातत्त्व में भी हानि एवं कठिनाई के योग उपस्थित होते हैं, परन्तु वह अपनी चतुराई के बल पर उन सबका निराकरण करके लाभ उठाता है।

मीन लग्नः
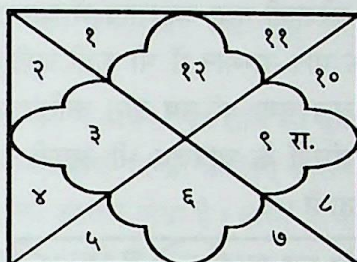
नवम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्मोन्नति में बाधाएँ आती रहती हैं तथा यश की प्राप्ति नहीं हो पाती। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपनी हिम्मत, गुप्त-युक्ति बल, बुद्धि बल तथा परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति के लिए कठिन प्रयत्न करता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी हो जाता है तो कभी-कभी अत्यधिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनेक संघर्षों को पार करने के बाद ही अपनी भाग्योन्नति कर पाता है।

मीन लग्नः
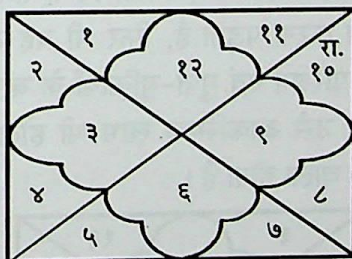
दशम भावः राहु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष में

महान् कष्ट, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में बारम्बार हानि का सामना करना पड़ता है, उसके मान-सम्मान में भी कमी बनी रहती है। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने युक्ति-बल तथा परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता रहता है तथा संघर्षों के बावजूद भी अपनी उन्नति करने में कुछ सफलता प्राप्त कर लेता है।
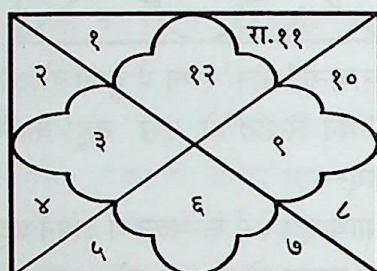
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। वह अधिक मुनाफा कमाता है। यद्यपि उसे धनोपार्जन के क्षेत्र में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी वह उनसे अपनी हिम्मत नहीं हारता तथा धैर्य, परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी होता है। वह बड़ी पैनी सूझ-बूझ तथा हिम्मत वाला होता है।
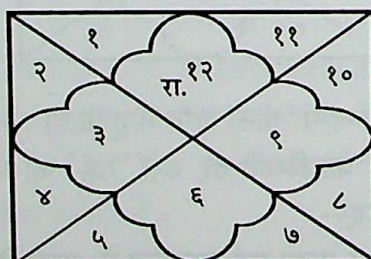
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के

'द्वादश भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपना खर्च चलाने के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्ति-बल तथा बुद्धि-बल का आश्रय लेता है। कभी-कभी उसे खर्च के कारण बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, परन्तु वह उन सब पर अपने अनथक प्रयत्नों से विजय पाता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी उसे परेशानियों का अनुभव होता है।
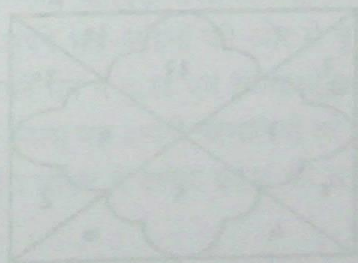
मीन लग्न

बारह भावों में 'केतु' का फलादेश

मीन लग्नः
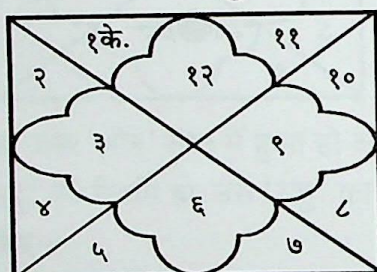
प्रथम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'प्रथम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केन्द्र एवं शरीर-स्थान में अपने गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर सांघातिक चोट लगती है और किसी समय उसे मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। उसके शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर व्यक्तित्व एवं प्रभाव का विकास करता है तथा बड़ी हिम्मत के साथ अपने संघर्षपूर्ण जीवन को बिताता है।

मीन लग्नः
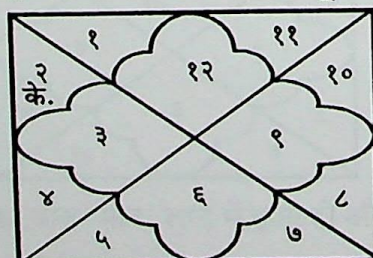
द्वितीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वितीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे स्थान धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक धन का संग्रह कर पाने में सफल नहीं हो पाता तथा कुटुम्ब-पक्ष की ओर से भी उसे कष्ट का अनुभव होता रहता है। ऐसी व्यक्ति कठिन परिश्रम, हिम्मत तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर अपनी परेशानियों पर विजय प्रापत करने का प्रयत्न करता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ हो जाता है, परन्तु अन्य लोगों की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति धनवान तथा कौटुम्बिक सुख से सम्पन्न प्रतीत होता है।
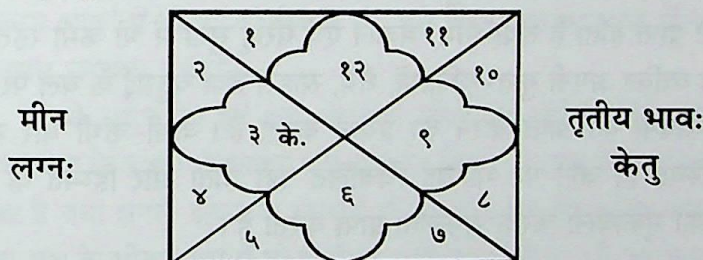
मीन लग्नः

तृतीय भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'तृतीय भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे स्थान भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर, परिश्रमी, चतुर तथा गुप्त युक्तियों का माहिर होता है। उसे अपने भाई-बहिनों की ओर से कुछ कष्ट मिलता है, जिसके कारण वह अपने मन में दुःख एवं चिन्ताओं का अनुभव करता है, परन्तु बाहरी लोगों के समक्ष वह अपनी परेशानियों को प्रकट नहीं होने देता और अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में अनेक प्रकार की सफलताएँ प्राप्त करता है।

मीन लग्नः
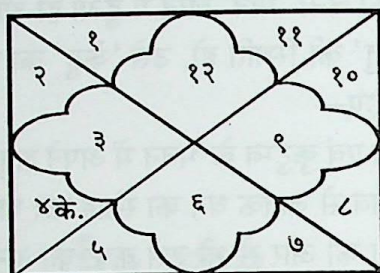
चतुर्थ भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में बहुत कष्ट प्राप्त होता है तथा भूमि, मकान एवं घरेलू सुख में भी कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त-युक्तियों, धैर्य, साहस तथा चतुराई के बल पर सुख के साधनों को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। कभी-कभी घोर संकट उपस्थित हो जाने पर भी वह विचलित नहीं होता और हिम्मत के साथ उसका मुकाबला करके सफलता प्राप्त करता है।

मीन लग्नः
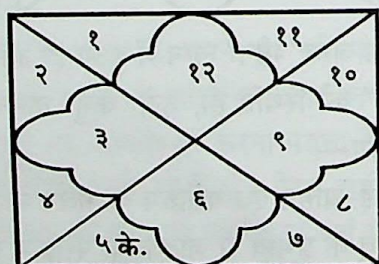
पंचम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'पंचम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाँचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से बड़े कष्ट तथा कमी का योग प्राप्त होता है। उसके मस्तिष्क में चिन्ताएँ घर किए

रहती हैं तथा मन अशान्त बना रहता है। विद्याध्ययन के क्षेत्र में उसे अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह अपनी गुप्त-युक्तियों, परिश्रम एवं हिम्मत के बल पर विद्या तथा सन्तान-पक्ष की कमियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।
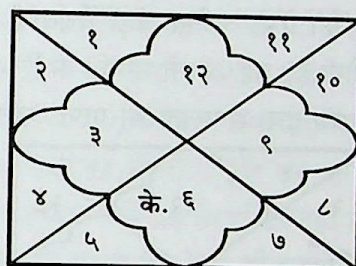
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'षष्ठम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे स्थान रोग एवं शत्रु-भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर निरन्तर विजय प्राप्त करने वाला होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता एवं लाभ प्राप्त करता है। शत्रु-पक्ष के भीतरी रूप में परेशानी का अनुभव करने पर भी वह प्रकट रूप में अपना हौसला बनाए रखता है तथा हिम्मत एवं बहादुरी से काम लेकर उन सब पर प्रभाव स्थापित करता है।
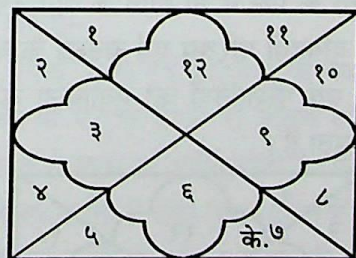
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'सप्तम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अशान्ति एवं कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है। कभी-कभी वह स्त्री-पक्ष से घोर कष्ट का अनुभव भी करता है, परन्तु फिर उसी से सुख तथा आनन्द भी पाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान्, साहसी तथा गुप्त-युक्तियों वाला चतुर होता है। वह अपनी उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है तथा परिश्रम द्वारा सफलता भी प्राप्त करता है।
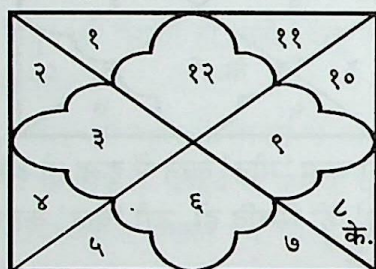
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'अष्टम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें स्थान आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु जीवन की रक्षा हो जाती है। उसके पुरातत्त्व के पक्ष में भी हानि के योग उपस्थित होते रहते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों परिश्रम एवं चतुराई के बल पर लाभ उठाता है। वह चिन्ता, संघर्ष एवं परेशानियों का मुकाबला करता हुआ धैर्यपूर्वक अपनी उन्नति करता रहता है।
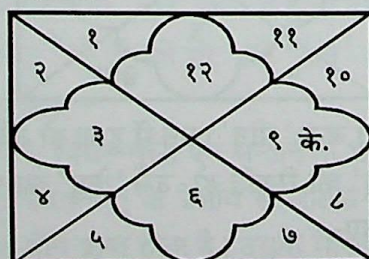
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'नवम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नौवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है तथा धर्म का पालन भी ठीक ढंग से नहीं हो पाता, परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने गुप्त-युक्ति बल, परिश्रम, चातुर्य एवं साहस के द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता हुआ अपनी उन्नति का मार्ग बनाता है। अनेक बार घोर संकट उपस्थित होने पर भी वह विचलित नहीं होता तथा भाग्य एवं धर्म की थोड़ी-बहुत उन्नति करता है। फिर भी उसके यश में कुछ कमी बनी रहती है।
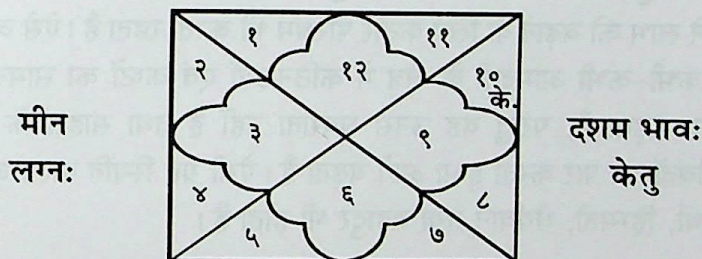
मीन लग्नः

दशम भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मीम' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'दशम भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय भी लेता है। कभी-कभी घोर संकट उपस्थित हो जाने पर भी वह विचलित नहीं होता तथा धैर्य और साहस के साथ उसका निराकरण करता है।

मीन लग्नः
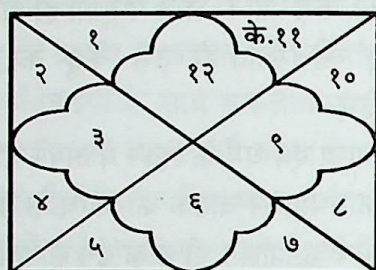
एकादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'एकादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें स्थान लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को बहुत अच्छी आमदनी होती है और वह अपने लाभ को बढ़ाने के लिए कठोर परिश्रम भी करता रहता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों एवं कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह उनसे घबराता नहीं है तथा साहस के साथ मुसीबतों को पार करता हुआ आगे बढ़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक स्वार्थी, हिम्मती, धैर्यवान् तथा बहादुर भी होता है।

मीन लग्नः
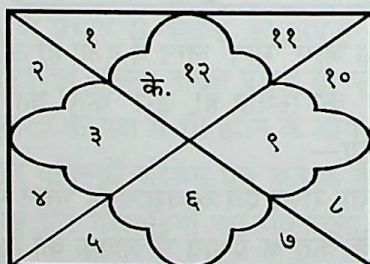
द्वादश भावः केतु

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुण्डली के 'द्वादश भाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें स्थान व्यय-भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के सम्बन्ध में कुछ कमी तथा कष्टों का अनुभव होता है। साथ ही बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी असन्तोष

एवं कठिनाइयाँ रहती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने धैर्य, परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर उन सब कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करता है, तथा उन पर विजय पाकर अपने जीवन को उन्नत बनाता है।

विभिन्न ग्रहों की युति का फल

दो ग्रहों की युति, तीन ग्रहों की युति,
चार ग्रहों की युति, पाँच ग्रहों की युति,
छह ग्रहों की युति, सात ग्रहों की युति

के लिए प्रमुख ज्योतिषीय विचार
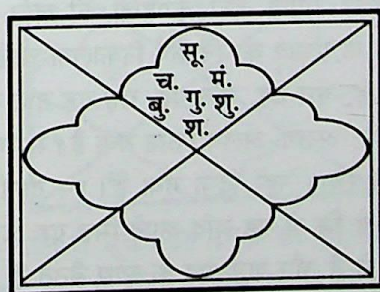
ग्रहों की युति का फल

किस जन्म-लग्न के किस भाव में, किस राशि पर कौन सा ग्रह स्थित हो तो उसका क्या फलादेश होता है—इसका विस्तृत वर्णन किया जा चुका है। अब हम विविध ज्योतिष ग्रन्थों के आधार पर ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन करते हैं। जन्म-कुण्डली के एक ही भाव में यदि दो, तीन, चार, पाँच, छह अथवा सात ग्रह एक साथ बैठे हों, तो वे जातक के जीवन पर अपना क्या विशेष प्रभाव डालते हैं—इसकी जानकारी प्रस्तुत प्रकरण में दी जा रही है।

स्मरणीय है कि यहाँ ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन करते समय विभिन्न भावों अथवा राशियों में उनकी स्थिति का वर्णन नहीं किया गया है, केवल उनके विशिष्ट प्रभाव के विषय में ही लिखा गया है। अतएव ग्रहों की युति के विशिष्ट प्रभाव सम्बन्धी फलादेश की जानकारी करने के साथ ही, जन्म-कुण्डली के जिस भाव में ग्रहों की युति हो, उस भाव पर किन-किन ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हैं, वे ग्रह उच्च के हैं अथवा नीच के, मित्र की राशि में बैठे हैं अथवा शत्रु की राशि में, वे किस भाव के स्वामी होकर कहाँ बैठे हैं—आदि बातों का ध्यान भी अवश्य रखना चाहिए, तभी यथार्थ फलादेश का ज्ञान हो सकेगा। इन सब विषयों पर इस पुस्तक के पहले प्रकरणों में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला जा चुका है।

ग्रहों की युति से सम्बन्धित आगे जो उदाहरण-कुण्डलियाँ दी गई हैं, वे सभी मेष लग्न की हैं, अतः उन्हें केवल उदाहरण के रूप में ही समझना चाहिए। विभिन्न व्यक्तियों की जन्म-कुण्डलियाँ विभिन्न लग्नों की होती हैं, इसी प्रकार विभिन्न ग्रहों की युति भी विभिन्न भावों में होती है। अतः इन उदाहरण-कुण्डलियों को मात्र आधार मानकर अपनी जन्म-कुण्डली की लग्न, भाव तथा राशि का विचार करते हुए युति के प्रभाव का निष्कर्ष निकालना चाहिए।

दो ग्रह, तीन ग्रह, चार ग्रह, पाँच ग्रह, छह ग्रह तथा सात ग्रहों की युति के प्रभाव का वर्णन क्रमशः अलग-अलग किया गया है। स्मरणीय है कि युति वाले ग्रहों में राहु-केतु को स्थान नहीं दिया गया है। इन दोनों ग्रहों के सम्बन्ध में सामान्य सिद्धान्त यह है कि ये ग्रह यदि अपने मित्र ग्रह के साथ बैठे होते हैं तो उसके प्रभाव को बढ़ाते हैं और शत्रु-ग्रह के साथ बैठते हैं, तो उसके प्रभाव को घटाते हैं। राहु-केतु स्वयं कभी एक साथ नहीं बैठते—ये सदैव एक-दूसरे से सातवें स्थान पर ही रहते हैं।

दो ग्रहों की युति

दो ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य और चन्द्रमा

२ १२ ३ १ ११ सू. च. ४ १० ५ ७ ९ ६ ८
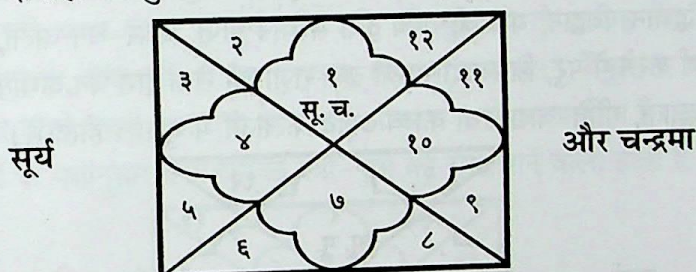
यदि जन्म-काल में सूर्य और चन्द्रमा की युति हो (अर्थात् ये दोनों ग्रह किसी एक ही भाव में बैठे हों), तो ऐसा जातक अभिमानी, दुष्ट-क्रियाओं को करने में चतुर, कपटी, विनय-रहित, पराक्रमी, क्षुद्र-हृदयवाला, कार्य करने में दक्ष, स्त्री के वश में रहने वाल, विषयासक्त तथा पत्थर की वस्तुओं का क्रय-विक्रय करने वाला होता है।
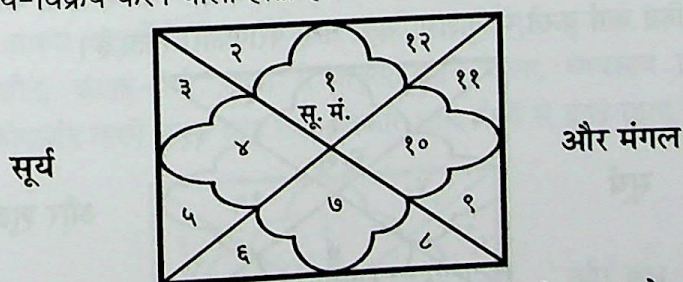
सूर्य और मंगल

यदि जन्म-काल में सूर्य और मंगल की युति हो तो जातक तेजस्वी, श्रेष्ठ कर्म, धर्म तथा धन से रहित, सदैव क्लेश करने वाला, क्रोधी, पाप-बुद्धि, मिथ्यावादी, मूर्ख, बलवान परन्तु अपने बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखने

वाला होता है।

सूर्य
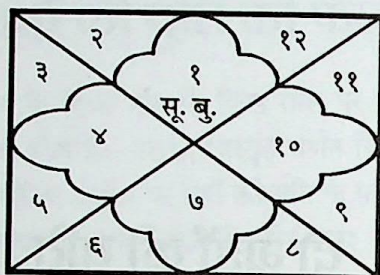
और बुध

यदि जन्म-काल में सूर्य और बुध की युति हो तो जातक श्रेष्ठ, बुद्धिमान, विद्वान, यशस्वी राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त, स्थिर-धन वाला, सेवा-कर्म करने में पटु, प्रियवादी, मन्त्री तथा राजा की सेवा द्वारा धन कमाने वाला, वेदज्ञाता, गीति-वाद्य तथा काव्य आदि कलाओं में कुशल होता है।

सूर्य
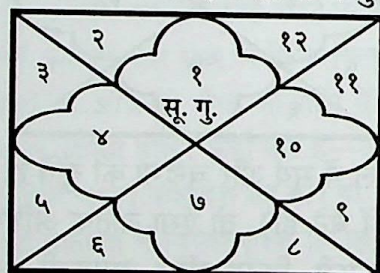
और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य और बुध की युति हो तो जातक धर्मात्मा, धनवान, शास्त्रज्ञाता, लोक में प्रसिद्ध, मित्रवान, राज-मान्य, राजा का मन्त्री, पुरोहित कर्म करने में कुशल, चतुर तथा परोपकारी होता है।

सूर्य
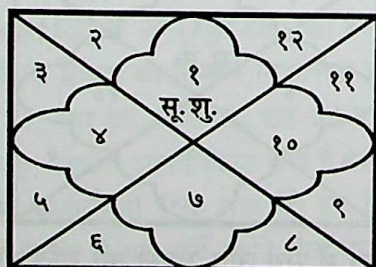
और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य और शुक्र की युति हो, तो जातक बुद्धिमान, मनुष्यों में श्रेष्ठ, बलवान, नाट्यकार, संगीत-वाद्य तथा शास्त्र-विद्या में कुशल,

स्त्रियों का प्रिय, मित्रवान, क्षीण-दृष्टि वाला, कार्य, श्रम तथा स्त्री द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य और शनि

२ १२ ३ १ ११ सू. श. ४ १० ५ ७ ९ ६ ८
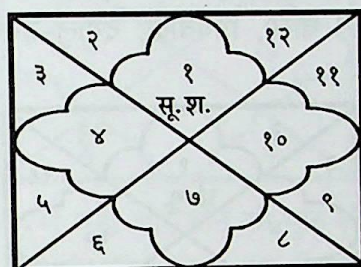
यदि जन्म-काल में सूर्य और शनि की युति हो तो जातक विद्वान, कार्य-कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, गुणवान, धातु का काम करने में कुशल, धर्म में प्रीति रखने वाला तथा वृद्ध के समान आचरण करने वाला होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति स्त्री-पुत्रों का सुख पाने वाला होता है।
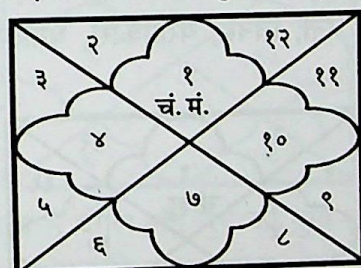
यदि जन्म-काल में चन्द्रमा और मंगल की युति हो तो जातक मिट्टी, चमड़ा अथवा धातुओं के शिल्प में कुशल कारीगर, धनी, युद्ध-कुशल, प्रतापी, आचारहीन, कलह-प्रेमी, माता से शत्रुता रखने वाला, व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला तथा रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रस्त रहता है।
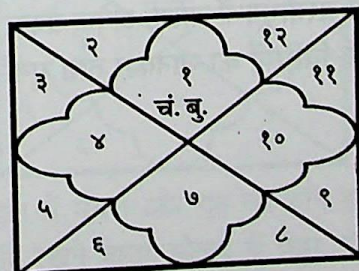
यदि जन्म-काल में चन्द्रमा और बुध की युति हो तो जातक धनी, गुणी, कवि, सुन्दर,, हँसमुख, कुल-धर्म का पालन करने वाला, स्त्री में आसक्त, बहुत बोलने वाला, प्रियवादी, दयालु-हृदय परन्तु दुर्बल शरीर वाला होता है।
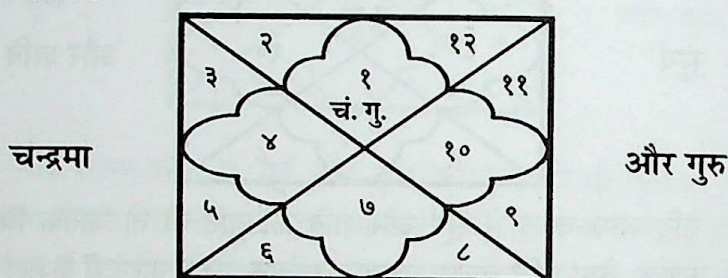
चन्द्रमा और गुरु

यदि जन्म-काल में चन्द्रमा और गुरु की युति हो तो जातक देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त, भाई-बहिनों से स्नेह रखने वाला, दृढ़ मैत्री का निर्वाह करने वाला, सुशील, धनी, विनम्र, परोपकारी, धर्मात्मा तथा गुप्त-मन्त्रणा करने वाला होता है।
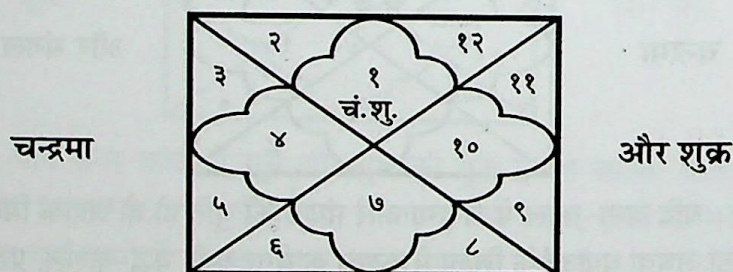
चन्द्रमा और शुक्र

यदि जन्म-काल में चन्द्रमा और शुक्र की युति हो तो जातक किसी वस्तु की बिक्री करने के कार्य में कुशल, शूद्रों के समान आचरण करने वाला, झगड़ालू, अल्प वस्त्राभूषणों वाला, अनेक प्रकार के व्यसनों में लिप्त, अनेक प्रकार की कार्य-विधियों का जानकार तथा सुगन्धित वस्तुओं में रुचि रखने वाला होता है।
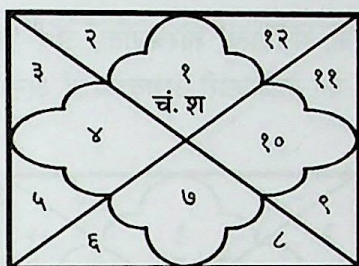
और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र और शनि की युति हो तो जातक व्यवसाय द्वारा आजीविका का उपार्जन करने वाला, पर-स्त्रियों से प्रेम करने वाला, आचारहीन, पुरुषार्थहीन, हाथी-घोड़ों को पालने वाला, वृद्धास्त्री में आसक्त, अल्प सन्ततिवान तथा वेश्या द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।
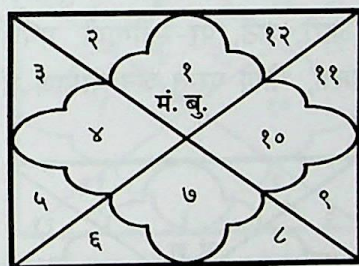
यदि जन्म-काल में मंगल और बुध की युति हो तो जातक धनहीन, कुरूप, कृपण, सोने अथवा लोहे का व्यवसाय करने वाला, विधवा स्त्री से विवाह करने वाला, मल्लयुद्ध में कुशल, अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला तथा अनेक प्रकार की औषधियों का सेवन करने वाला होता है।
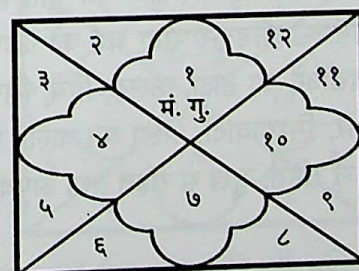
यदि जन्म-काल में मंगल और गुरु की युति हो तो जातक शिल्प-शास्त्रज्ञ, घोड़ों से प्रीति रखने वाला, बोलने में चतुर, मेधावी, मनुष्य समाज

में प्रधान पद पाने वाला, मंत्रज्ञाता, शास्त्रज्ञाता, अर्थ-साधन करने में निपुण, चतुर, शीलवान, सेना का अधिकारी अथवा कोई अन्य उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।
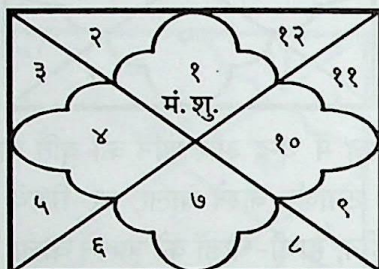
यदि जन्म-काल में मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक गणितज्ञ, गुणी, मिथ्यावादी, जुआरी, शठ, पर-स्त्रीगामी, प्रपंची, पापी, अभिमानी, सबसे शत्रुता रखने वाला, भोगी परन्तु जन-समाज में सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।
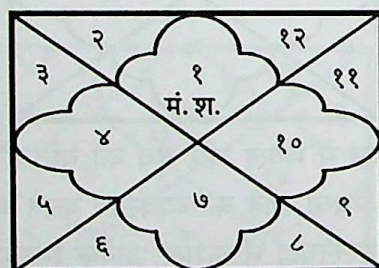
यदि जन्म-काल में मंगल और शनि की युति हो तो जातक उचित बोलने वाला, अपने धर्म को छोड़कर पराए धर्म को ग्रहण करने वाला, जादू एवं इन्द्रजाल आदि विद्याओं का ज्ञाता, कलह-प्रिय, विष तथा मदिरा बनाने एवं बेचने में तत्पर, चोर, मिथ्यावादी, अल्प धन वाला, झगड़ालू, शस्त्र और शास्त्र का ज्ञाता, मित्रों से रहित, सुख से रहित तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है।
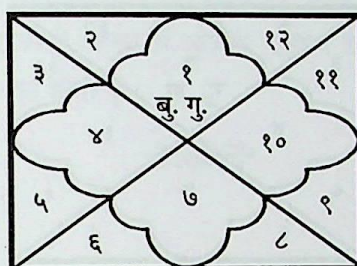
और गुरु

यदि जन्म-काल में बुध और गुरु की युति हो तो जातक नृत्य-वाद्य में कुशल धैर्यवान, सुखी, पण्डित, नीतिज्ञ, विनयी, धैर्यवान, उदार, श्रेष्ठ गुणों से युक्त तथा सुगन्धित वस्तुओं से प्रेम रखने वाला होता है।
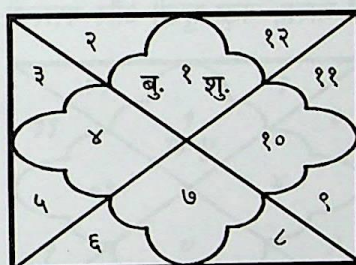
यदि जन्म-काल में बुध और शुक्र की युति हो तो जातक शिल्पकला में कुशल, वेदज्ञ, संगीतज्ञ, नीतिज्ञ, धनी, प्रियवादी, हास्य-प्रिय, सुखी प्रतापी, चतुर सदैव, आनन्दित रहने वाला, श्रेष्ठ स्वरूप वाला तथा अनेक मनुष्यों का स्वामी होता है।
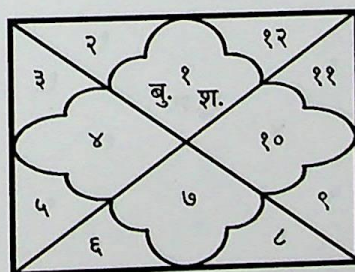
यदि जन्म-काल में बुध और शनि की युति हो तो जातक कलह-प्रिय, चंचल चित्तवृत्ति वाला, संगीत, काव्य आदि में कुशल, भ्रमणशील, उद्योगहीन, उचित बात बोलने वाला तथा दुर्बल शरीर वाला होता है।
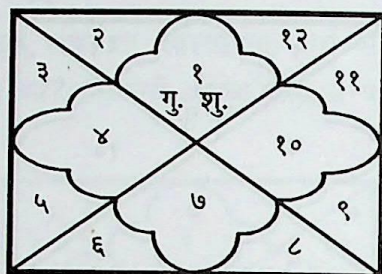
और शुक्र

यदि जन्म-काल में गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धन, मित्र, पुत्र, स्त्री आदि के सुख से युक्त, विद्वान्, बुद्धिमान, गुणवान, धर्मात्मा, विद्या द्वारा जीविकोपार्जन करने वाल, सुन्दरी स्त्री का पति, शास्त्रज्ञ तथा पण्डित जनों से शास्त्रार्थ करने वाला, बड़ा सुखी और यशस्वी होता है।
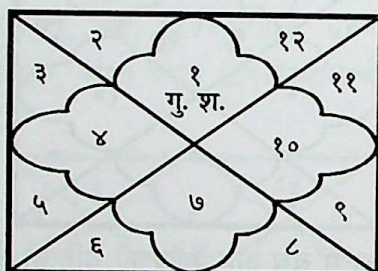
यदि जन्म-काल में गुरु और शनि की युति हो तो जातक शूरवीर, यशस्वी, जन्म-समूह की प्रधान, सेनापति, धनवान, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल तथा स्त्री द्वारा मनोवांछित फल को प्राप्त करने वाला होता है।
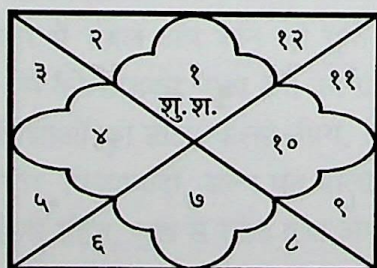
यदि जन्म-काल में शुक्र और शनि की युति हो तो जातक शिल्प-लेख, मकान आदि पर चित्रकारी करने तथा पत्थर आदि की वस्तुएँ बनाने में कुशल, चंचलबुद्धि वाला, दारुण संग्राम करने वाला, आनन्द से युक्त, पशुओं

को पालने वाला, लकड़ी चीरने में कुशल, लवण तथा अम्ल रस का प्रेमी तथा उन्मत्त प्रकृति का होता है।
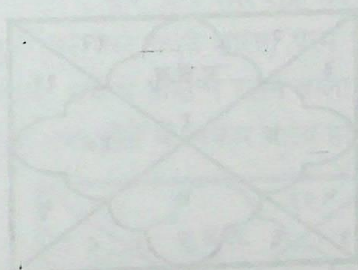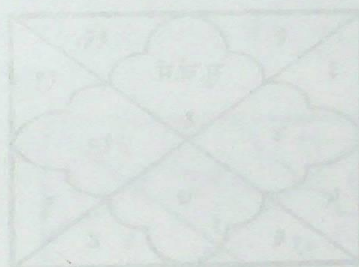
तीनों ग्रहों की युति

तीनों ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
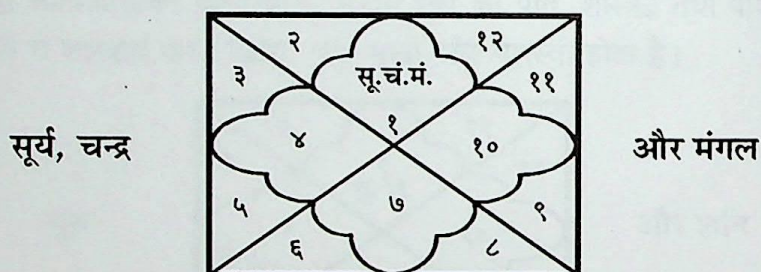
सूर्य, चन्द्र **और मंगल**

यदि जन्मकाल में सूर्य, चन्द्र और मंगल की युति हो तो जातक यन्त्र (मशीन) बनाने में शूरवीर, दयाहीन, अश्व-विद्या में निपुण, स्त्री-हीन, सन्तान-हीन तथा रक्त-विकार पीड़ित होता है।
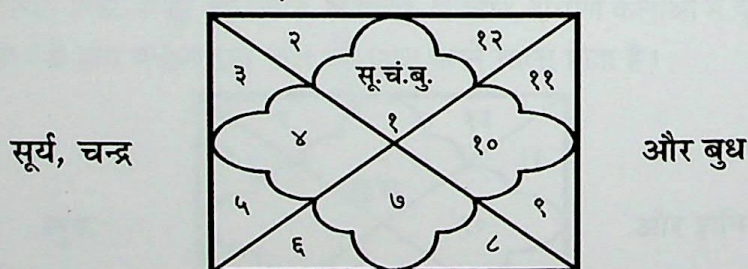
सूर्य, चन्द्र **और बुध**

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र और बुध की युति हो तो जातक धनवान, विद्वान, श्रेष्ठ कवि अथवा कथाकार, सभा-प्रिय, चतुर, प्रिय-वादी, राजा का सेवक, प्रतापी, अच्छे कामों को करने वाला, वार्तालाप करने में पटु तथा समस्त शास्त्रों एवं कलाओं का जानकार होता है।
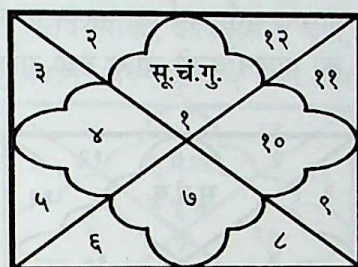
और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र और गुरु की युति हो तो जातक राजा का मन्त्री, स्थिर बुद्धि वाला, धर्मात्मा, बन्धु-बान्धवों का आदर करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का पूजक, चंचल, चतुर, धूर्त, पर्यटन-प्रेमी, सेवा करने में कुशल तथा विद्वान होता है।

सूर्य, चन्द्र
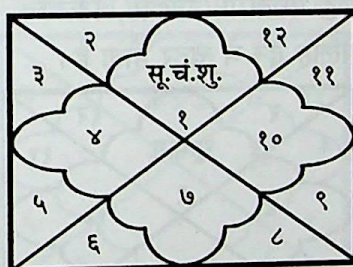
और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, शत्रुओं को नष्ट करने वाला, परम तेजस्वी, राजा के समान प्रतापी और भाग्यवान, धर्म में प्रीति न रखने वाला, पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी तथा दाँतों में विकार वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र
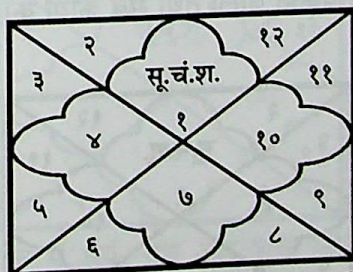
और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र और शनि की युति हो तो जातक ब्राह्मणों तथा देवताओं का भक्त, धातु-कर्म करने में कुशल, वेश्याप्रेमी, व्यर्थ

परिश्रम करने वाला, अत्यन्त धूर्त, धर्म का पालन करने वाला, शीलविहीन, धनहीन, हाथी-घोड़ों का पालन करने वाला तथा सत्कर्म करने वाला होता है।
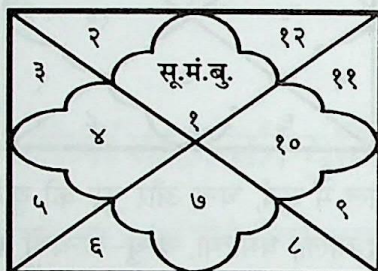
और बुध

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और बुध की युति हो तो जातक कठोर चित्तवृत्ति वाला, प्रसिद्ध पराक्रमी, साहसी, निर्लज्ज, धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि युक्त से तथा सलाह देने में चतुर होता है।
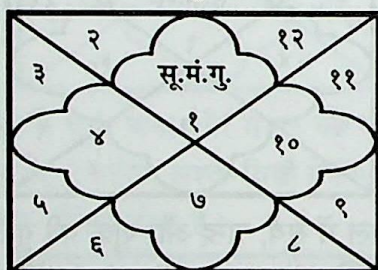
यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक श्रेष्ठ वक्ता, धनी राजा का मन्त्री, सेनापति, नीतिशास्त्रज्ञ, सत्यवादी, उदार हृदय वाला, प्रियभाषी, उग्र प्रकृति वाला तथा सब कार्यों को करने में कुशल होता है।
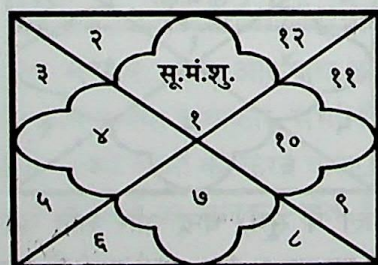
और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य-मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर, नेत्ररोगी, दयालु, विषयासक्त, कार्यकुशल, धनी, विनम्र, अत्यन्त चतुर, बहुत बोलने वाला, गुणवान, अपने कुल में श्रेष्ठ और सुशील होता है।

सूर्य, मंगल **और शनि**

२ १२
३ सू.मं.श. ११
१
४ १०
५ ७ ९
६ ८
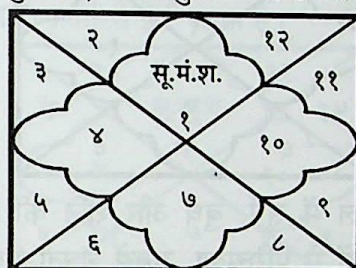
यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और शनि की युति हो तो जातक मूर्ख, धन तथा पशुओं से रहित, रोगी, स्वजनों से तिरस्कृत अथवा स्वजन-विहीन, विकल, कलह से व्याकुल तथा सघन रोमों वाला होता है।
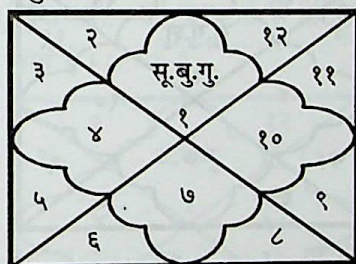
सूर्य, बुध **और गुरु**

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध और गुरु की युति हो तो जातक नेत्र रोगी, बड़ा धनी, शास्त्रज्ञ, शस्त्र-विद्या का ज्ञाता, लेखक तथा संग्रहशील स्वभाव का चतुर व्यक्ति होता है।
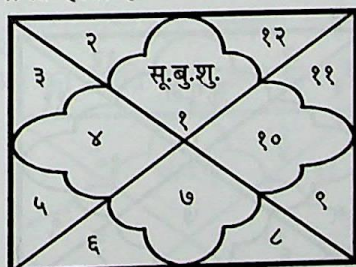
सूर्य, बुध **और शुक्र**

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक आचार-विहिन, विदेशवासी, सबसे शत्रुता रखने वाला, दुर्बुद्धि, माता-पिता

आदि गुरुजनों से तिरस्कृत तथा स्त्री के कारण दुःखी रहने वाला होता है।
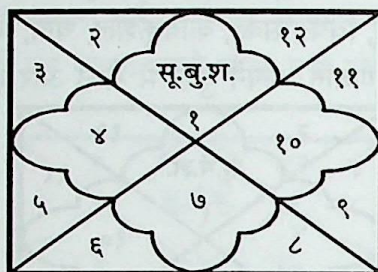
यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध और शनि की युति हो तो जातक दुराचारी, बन्धु-बान्धवों से परित्यक्त, सबसे शत्रुता रखने वाला, शत्रु द्वारा पराजित, नपुंसकों जैसा स्वभाव वाला, परम दुष्ट तथा नीच मनुष्यों का संग करने वाला होता है।
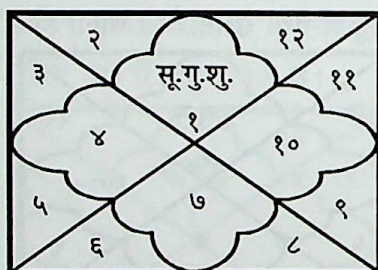
यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक राजा का आश्रित, नेत्र-रोगी, पण्डित, शूरवीर, परोपकारी, कम बोलने वाला दुष्ट स्वभाव वाला, पराये कामों में अधिक रुचि रखने वाला तथा धन से रहित होता है।
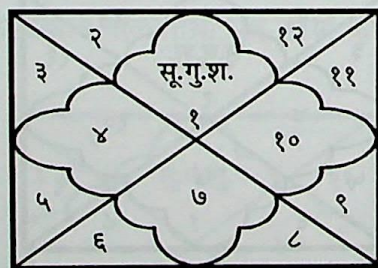
यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु और शनि की युति हो तो जातक राजाओं

को प्रिय, मित्र , स्त्री तथा पुत्रादि से युक्त, सुन्दर शरीर वाला, प्रगल्भ, बहुत सोच-विचार कर खर्च करने वाला, निर्भय, अपने बन्धुओं का हित करने वाला तथा मित्रों से युक्त होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति राजाओं से द्वेष रखता है।
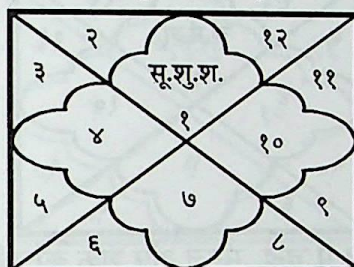
सूर्य, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक कला-विहीन, मान-हीन, खुजली अथवा कुष्ठ रोग का रोगी, शत्रुओं से भयभीत रहने वाला, दुराचारी, भाई बन्धुओं से रहित तथा अनेक प्रकार के कुकर्म करने वाला होता है।
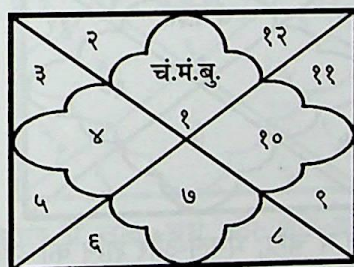
चन्द्र, मंगल और बुध

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक दुराचारी, पापी, बन्धु-बान्धवों से हीन, जीविका-विहीन, अपमानित, अत्यन्त दीन तथा नीच मनुष्यों की संगति करने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल और गुरु
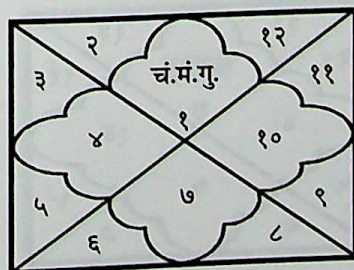
यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक क्रोधी, स्त्री में आसक्त, फोड़ा-फुँसी से युक्त, सुन्दर शरीर वाला, अपहरणकर्ता, बलवान, स्त्रियों को प्रिय, परस्त्री-गामी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।
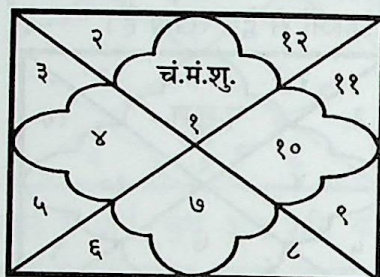
यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक की माता और स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली होती है। ऐसा व्यक्ति शीत से डरने वाला, निरन्तर भ्रमणशील, चंचल स्वभाव वाला तथा कुशील होता है, परन्तु उसका पुत्र शीलवान होता है।
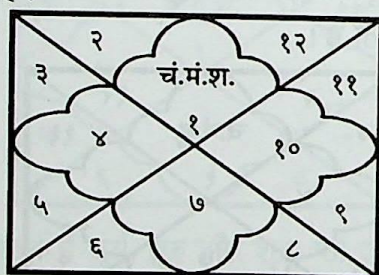
यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक की माता उसके बाल्यकाल में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। ऐसा व्यक्ति क्षुद्र स्वभाव वाला, कुटिल, लोकद्वेषी तथा कलह-प्रिय होता है। वह सदैव दुःखी बना रहता है।
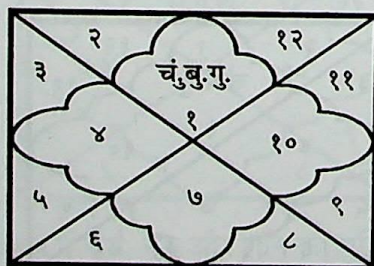
यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक बुद्धिमान, भाग्यवान श्रेष्ठ मनोवृत्ति वाला, यशस्वी, परम प्रसिद्ध, श्रेष्ठ मित्रों वाला, तेजस्वी, धनवान्, पुत्र मित्र, स्त्री आदि के सुख से युक्त तथा कुशल वक्ता होता है।
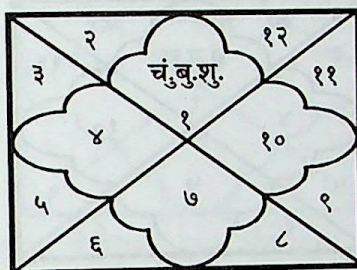
चन्द्र, बुध और शुक्र

यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक बड़ा विद्वान् होता है, ईर्ष्यालु, धन का लोभी, दुराचारी तथा नीच वृत्ति द्वारा आजीविका का उपार्जन करने वाला होता है। वह श्राद्ध के सम्बन्ध में विशेष श्रद्धालु रहता है।
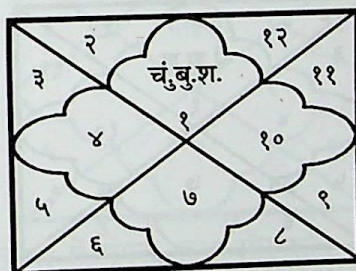
चन्द्र, बुध और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक विनम्र, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, विश्व-प्रसिद्ध, राजाओं को प्रिय, नगर अथवा ग्राम पर आधिपत्य रखने वाला, महाविद्वान, प्रियवादी, पण्डित तथा लम्बे शरीर वाला होता है।
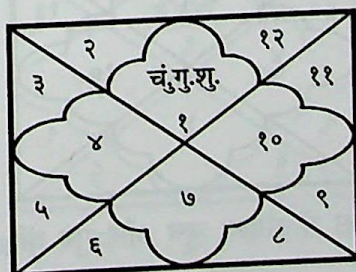
चन्द्र, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक की माता अत्यन्त सुशील होती है। वह विद्वान्, सब कलाओं का ज्ञाता, मन्त्रज्ञ एवं शास्त्रज्ञ, सुन्दर शरीर वाला, चतुर तथा राजाओं को प्रिय होता है।
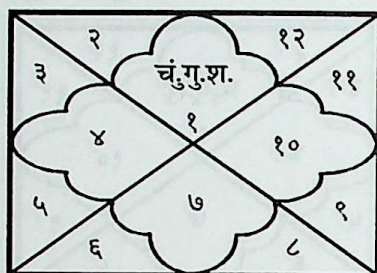
यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु और शनि की युति हो तो जातक स्वस्थ शरीर वाला, शास्त्रज्ञ, व्यवहार-कुशल, स्त्रियों को प्रिय, राजा द्वारा सम्मानित, अत्यन्त चतुर तथा उच्च अधिकारी होता है।
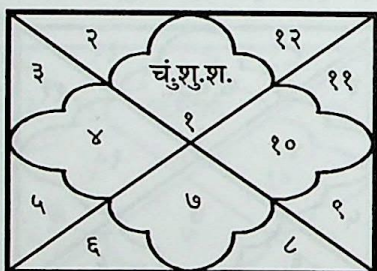
यदि जन्म-काल में चन्द्र, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक वेदज्ञ, चित्रकार, लेखक, धनी, धर्मात्मा, सुन्दर शरीर वाला तथा पुरोहितों में श्रेष्ठ होता है।
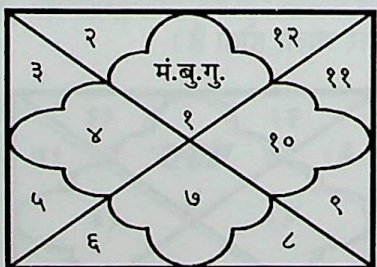
यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक

प्रतापी, संगीतज्ञ, परोपकारी, श्रेष्ठ कवि, चतुर, स्त्रियों को प्रिय, परहित साधन करने वाला तथा अपने कुल में राजा के समान होता है।
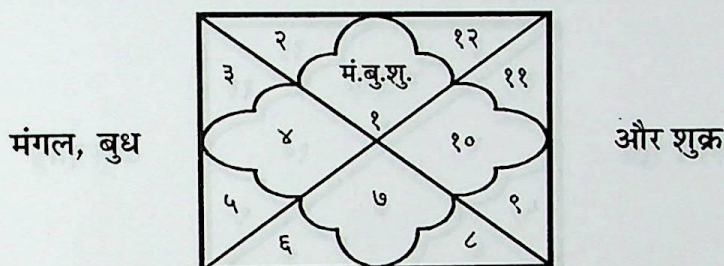
मंगल, बुध और शुक्र

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक दुर्बल शरीर वाला, अत्यन्त उत्साही, बहुत बोलने वाला, ढीठ, धनी, चंचल, हीन-कुल में उत्पन्न, असन्तुष्ट तथा अंगहीन होता है।
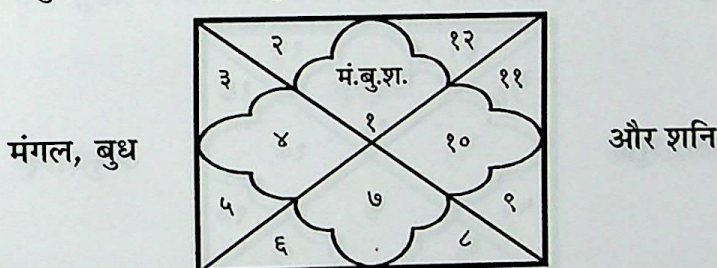
मंगल, बुध और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक डरपोक एवं दुर्बल-शरीर, परदेस में रहने वाला, वन में रहने की इच्छा रखने वाला, बुरे नेत्रों वाला, सहिष्णु, अत्यधिक कष्ट भोगने वाला, नेत्र-रोगी, मुख-रोगी, हास्यप्रिय तथा दूतकर्म करने वाला होता है।
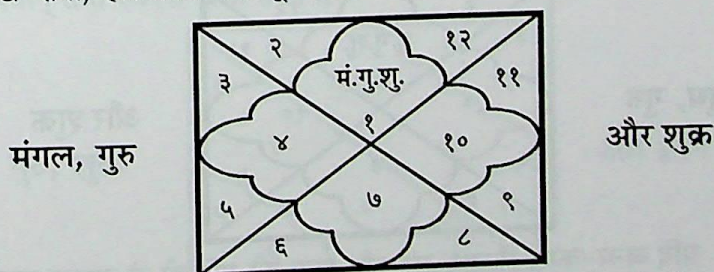
मंगल, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक

सुखी, सबको प्रसन्न करने वाला, राजा का प्रिय, उत्तम स्त्री तथा पुत्रों वाला एवं श्रेष्ठ जनों द्वारा सम्मानित होता है।
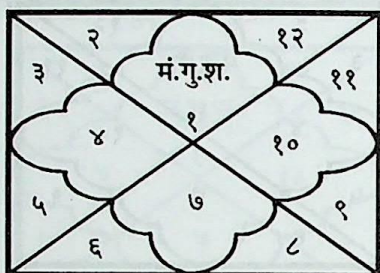
यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक कृश-शरीर, दुराचारी, निर्धन, मित्रों द्वारा निन्दित परन्तु राज्य द्वारा कृपापात्र तथा बुरे कर्म करने वाला होता है।
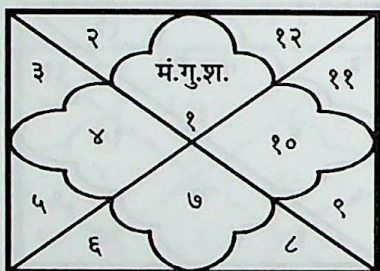
यदि जन्म-काल में मंगल, शुक्र और शनि की युति हो जातक स्त्री के सुख से रहित, परदेश में रहने वाला, सदैव दुःख भागने वाला, परन्तु स्वयं अच्छे स्वभाव वाला होता है।
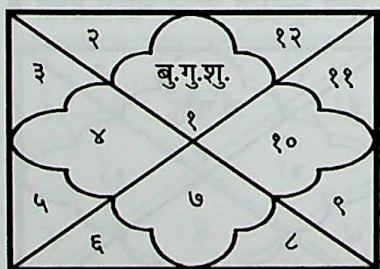
यदि जन्म-काल में बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, राजा द्वारा सम्मानित, शत्रुओं को परास्त करने वाला, परम

यशस्वी, सत्यवादी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।

बुध, गुरु और शनि

२ १२ ३ बु.गु.श. ११ १ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८
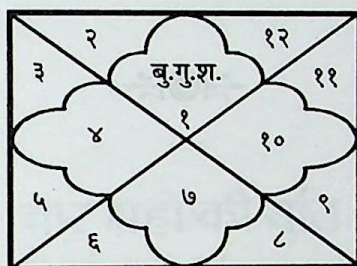
यदि जन्म-काल में बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बड़ा धनी, शीलवान, श्रेष्ठ वस्त्राभूषण वाला सेवक एवं वाहनों से युक्त, भाग्यवान, पण्डित, सुखी, धैर्यवान तथा उत्तम स्त्री का पति होता है।
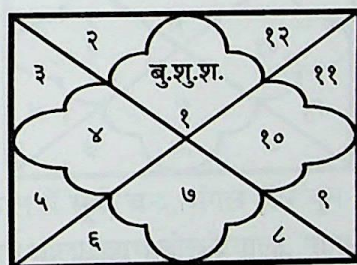
बुध, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक चुगलखोर, नीच लोगों के साथ रहने वाला, परस्त्री गामी, कलाओं का जानकार, मिथ्यावादी, धूर्त, आचाररहित, दूर देशों की यात्रा करने वाला, धैर्यवान् तथा स्वदेश-प्रेमी होता है।
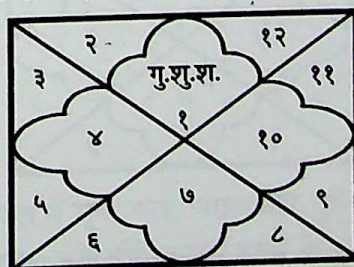
गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नीच कुल में जन्म लेने पर भी सुशील, राजा के समान प्रतापी, धनी, यशस्वी तथा

निर्मल चित्त वाला होता है। वह अत्यन्त कीर्ति अर्जित करता है तथा भूमि का स्वामी होता है।
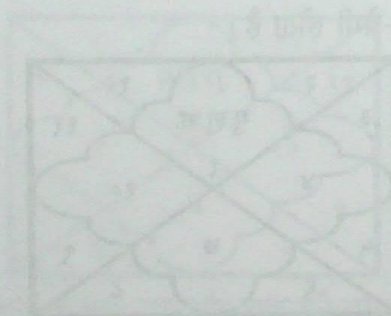
चार ग्रहों की युति

चार ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
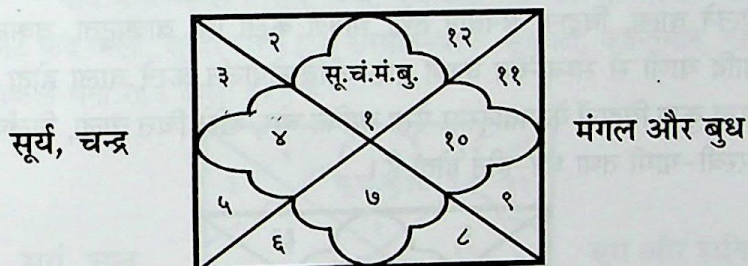
सूर्य, चन्द्र

मंगल और बुध

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक चुगलखोर, चोरी करने वाला, व्यर्थ बोलने वाला, मायावी, सब काम करने में सक्षम, चित्रकार, लेखक, मुखरोगी तथा भाषा पर अधिकार रखने वाला होता है।
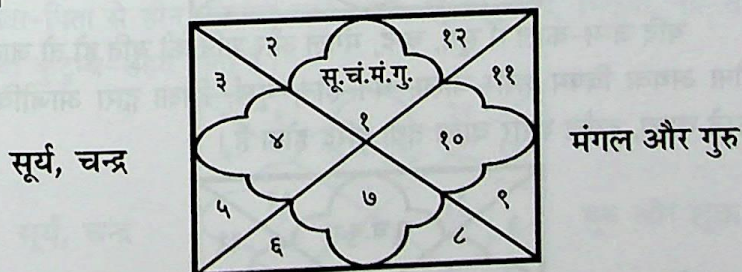
सूर्य, चन्द्र

मंगल और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक शिल्प-शास्त्र का ज्ञाता, बड़े नेत्रों वाला, स्वर्ण के समान कान्तिमान शरीर वाला, बलवान, सब काम करने में कुशल, तेजस्वी, धनवान, शोक-रहित तथा नीतिज्ञ होता है।
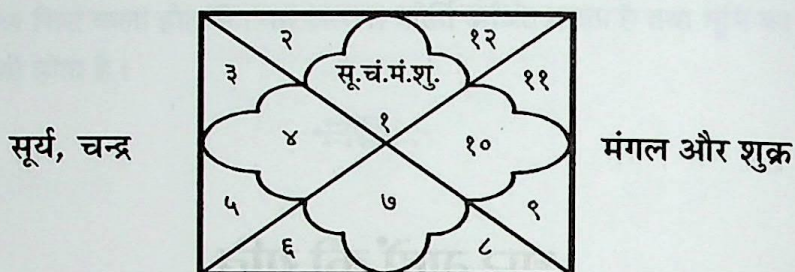
मंगल और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक शास्त्र के अर्थ का जानने वाला, पुत्र तथा स्त्री के सुख से सम्पन्न, बहुत बोलने वाला, विद्वान, धनवान तथा भाषण कला एवं वाक्पटुता, वकालत आदि वाणी से सम्बन्धित कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है। परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति चोर, खोटे चित्त वाला, निर्लज्ज, परस्त्री-गामी तथा धन-हीन होता है।
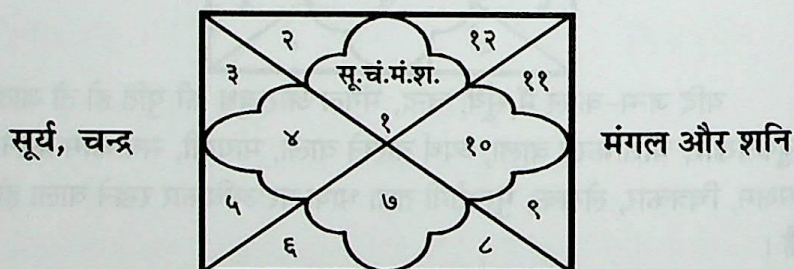
मंगल और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक बौना अथवा विषम शरीर वाला, धन-हीन, मूर्ख, भिक्षा द्वारा आजीविका करने वाला, दुर्बल शरीर वाला तथा दरिद्र होता है।
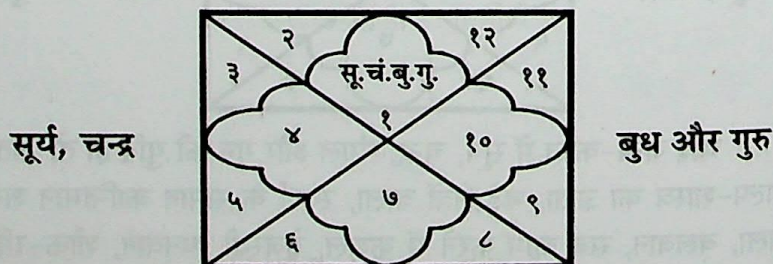
सूर्य, चन्द्र

बुध और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक

शोक-रहित, तेजस्वी परमधनी, नीतिशास्त्र में कुशल, शिल्पज्ञ, रोग-हीन, सुन्दर नेत्रों वाला तथा गौर वर्ण के शरीर वाला होता है।
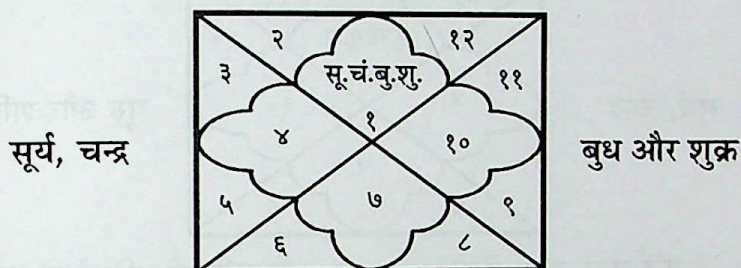
सूर्य, चन्द्र

बुध और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक छोटे कद वाला, सुन्दर राज्य द्वारा सम्मान-प्राप्त, सुवक्ता, कान्तिमान, परन्तु विकल बना रहने वाला होता है।
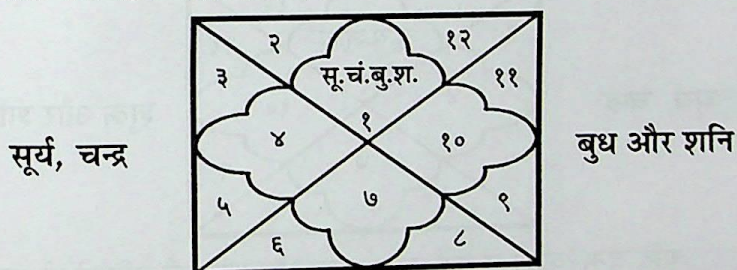
सूर्य, चन्द्र

बुध और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक माता-पिता से हीन, विकल रहने वाला, निर्धन, दरिद्र, भिक्षुक, नेत्र-रोगी तथा कुटुम्ब-रहित होता है।
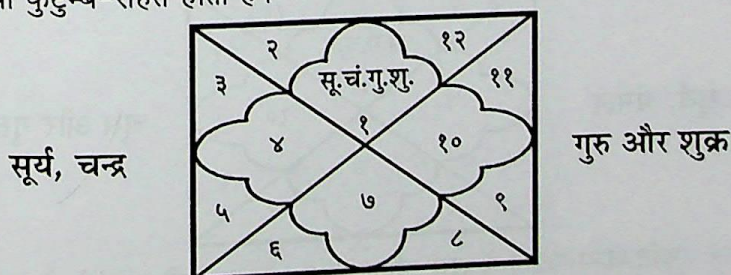
सूर्य, चन्द्र

गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक जल, मृग एवं वन में प्रीति रखने वाला, सुखी, गुणी तथा राजाओं द्वारा

सम्मानित होता है।
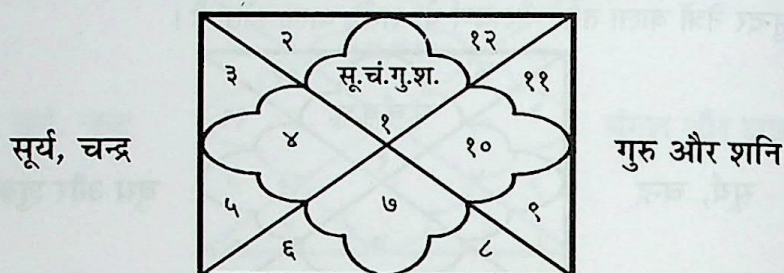
गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बहुत पुत्रों वाला, पतले शरीर तथा सुन्दर नेत्रों वाला, धनी, स्त्री का प्रिय यशस्वी, प्रतापी तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।
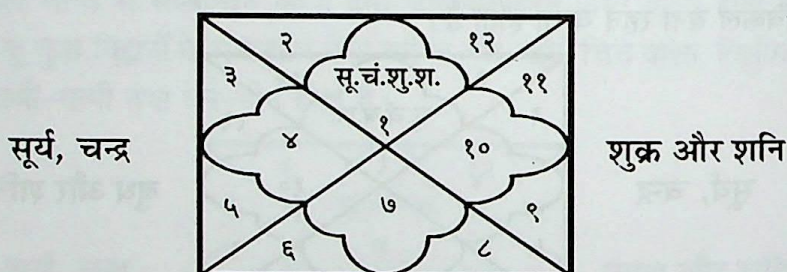
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों के समान आचरण करने वाला, डरपोक, परन्तु लोगों का नेतृत्व करने वाला होता है।
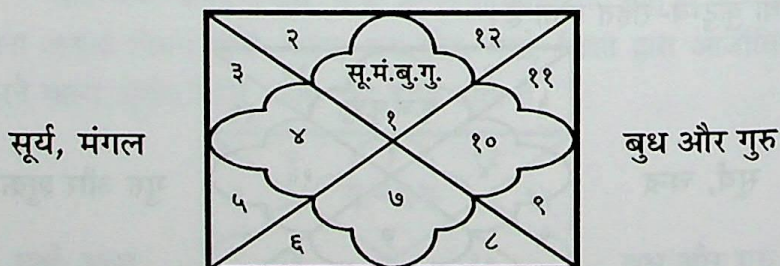
सूर्य, मंगल

बुध और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक पराई स्त्रियों से रमण करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का सेवक, विजयी, शूरवीर, चक्रधारी तथा सूत बनाने में कुशल अथवा सूत का व्यवसाय करने

वाला होता है।

सूर्य, मंगल
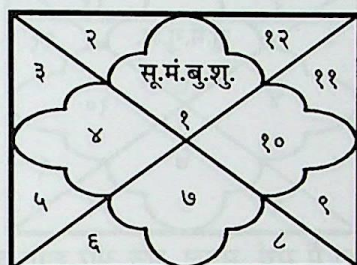
बुध और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक निर्लज्ज, चोर, दुर्जन, विषम अंगों वाला, परस्त्रीगामी, देवता तथा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला तथा सदैव विजय प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल
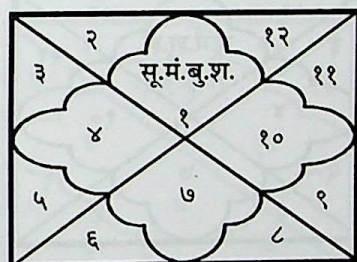
बुध और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक कवि, योद्धा, राजा अथवा मन्त्री, प्रतापी, नीच आचरण करने वाला, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता तथा नीच पुरुषों की संगति में रहने वाला होता है।

सूर्य, मंगल
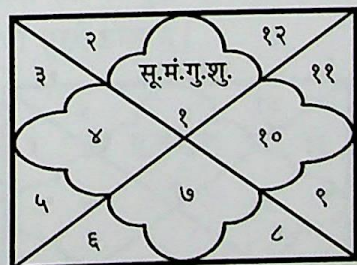
गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक राजा द्वारा सम्मान प्राप्त, अत्यन्त धनी, यशस्वी, सुन्दर शरीर वाला, नीतिज्ञ तथा मनुष्यों का पालन करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल
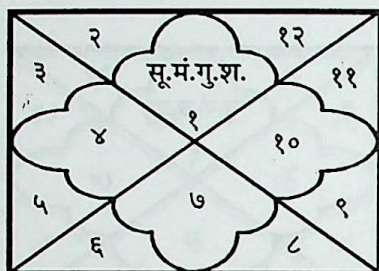
गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ, राजा द्वारा पूजित, सब कामों में सफलता पाने वाला, सुप्रसिद्ध सेनापति, मन्त्री, धनी, धन का संचय करने वाला तथा दयालु स्वभाव का होता है।

सूर्य, मंगल
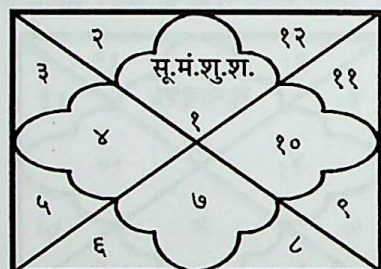
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नीच जाति के मनुष्यों को अपने साथ रखने वाला, जनद्रोही, दुराचारी, मूर्ख, कटुभाषी, मांसाहारी तथा नीच कर्म करने वाला होता है।

सूर्य, बुध
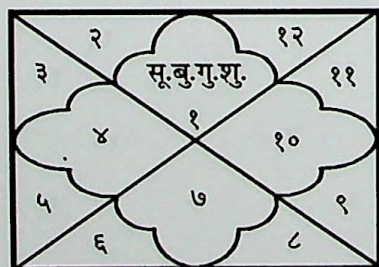
गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धनवान, सुखी, प्रसन्न रहने वाला, बुद्धिमान, सब कामों में सफलता पाने वाला, विनयी, मानी, राजा के समान सुख भोगने वाला तथा स्त्री-पुत्रादि से

युक्त होता है।
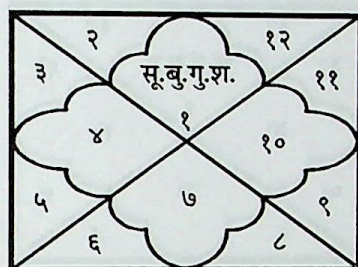
सूर्य, बुध **गुरु और शनि**

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बहुत भाइयों वाला, नपुंसक के समान, झगड़ालू, उद्योगहीन, निन्दित कर्म करने वाला तथा मानी होता है।
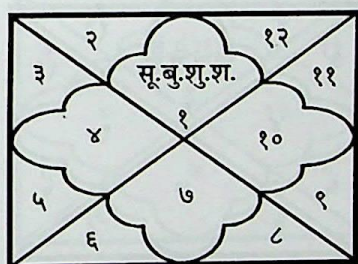
सूर्य, बुध **शुक्र और शनि**

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पवित्र हृदय वाला, मधुरवक्ता, मित्रों वाला, सुन्दर, पण्डित, विद्वान, भाइयों द्वारा सम्मानित पुत्र तथा स्त्री के सुख को प्राप्त करने वाला, पवित्र विचारों वाला, भाग्यशाली तथा सुखी होता है।
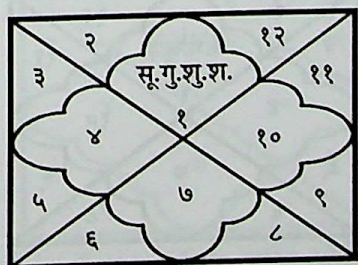
सूर्य, गुरु **शुक्र और शनि**

यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु शुक्र और शनि की युति हो तो जातक लोभी, सुखी, शिल्पज्ञ, कवि, राजा का प्रिय, परम कृपण, परन्तु करुणा से

पूर्ण हृदय वाला होता है।
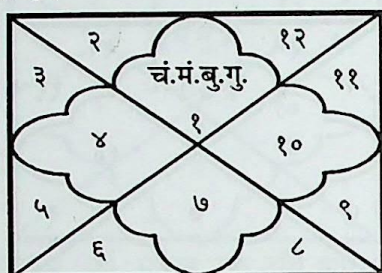
बुध और गुरु

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, मनुष्यों में श्रेष्ठ, परम विद्वान्, बुद्धिमान्, लोकपूजित, सत्यवादी, राजा का कृपापात्र तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
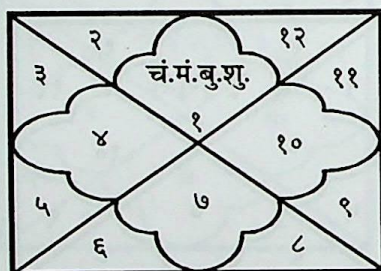
बुध और शुक्र

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक की स्त्री कुलटा होती है, वह नींद में समय बिताने वाला, झगड़ालू, नीच-प्रकृति का, बन्धु-द्वेषी, वेद तथा शास्त्रों का निन्दक, भाइयों से द्रोह करने वाला तथा नीच मनुष्यों से प्रेम करने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल
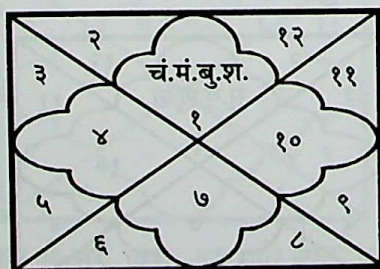
बुध और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक वीर-वंश में जन्म लेने वाला, दो माताओं वाला, स्त्री, पुत्र तथा मित्रादि से

युक्त, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला तथा साहसी होता है।
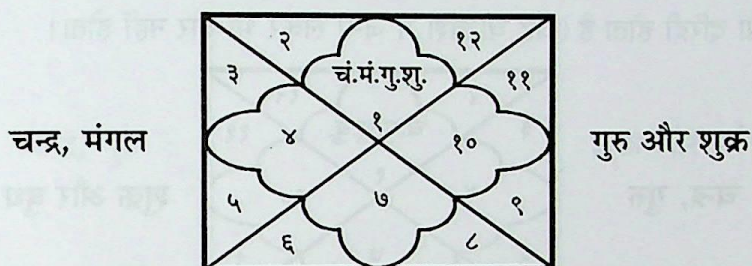
गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक अंगहीन, साहसी, धनी, मानी, पण्डित, पुत्रवान्, नीतिज्ञ परन्तु विकल बना रहने वाला होता है।
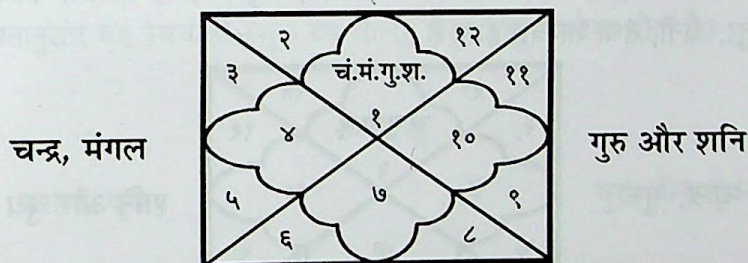
गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल गुरु और शनि की युति हो तो जातक बहरा, उन्मादी, धनवान, अपने वचन का पालन करने वाला, शूरवीर,पण्डित, सत्यवादी, सदैव आनन्दित रहने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित, दयालु, परन्तु नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है।
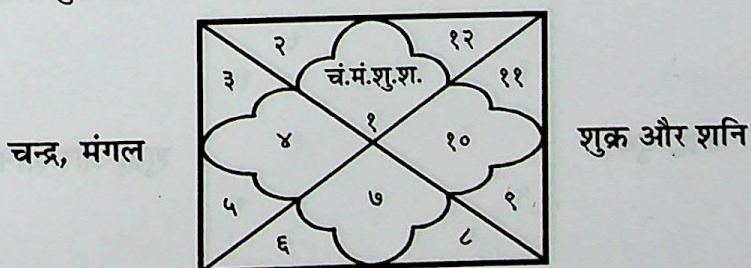
चन्द्र, मंगल

शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मलिन, कुलटा स्त्री का पति, उद्वेगी, जुआरी, मद्य-मांस का सेवन

करने वाला, सर्प जैसी आँखों वाला, महा ढीठ, कुल का वंचक, सबका शत्रु तथा दरिद्री होता है। वह वीरवंश में जन्म लेकर भी वीर नहीं होता।
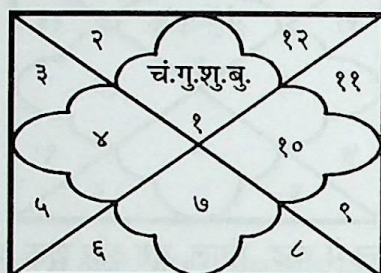
शुक्र और बुध

यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु, शुक्र और बुध की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, धनी, माता-पिता से रहित, शत्रु-विहीन, पण्डित, दयालु, चतुर, दानी, तथा शास्त्रज्ञ होता है।
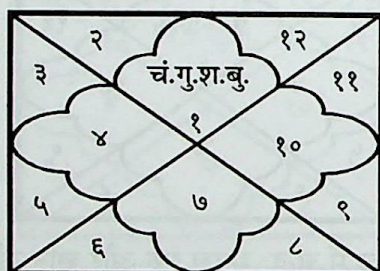
शनि और बुध

यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु, शनि और बुध की युति हो तो जातक कवि, तेजस्वी, बन्धु-बान्धवों का प्रिय, राज्य-मन्त्री, धर्मात्मा, यशस्वी, ज्ञानी, इन्द्रियजित तथा सब लोगों को प्रिय होता है।

चन्द्र, बुध
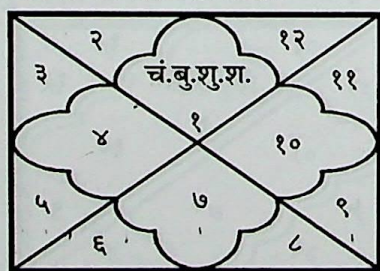
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नेत्र-रोगी, राजा द्वारा सम्मानित, धनी, गाँव का स्वामी तथा अनेक पत्नियों

वाला होता है।
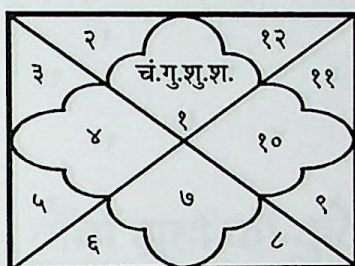
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पण्डित, परस्त्रीगामी, दूसरों की सहायता करने वाला पुरुषों में श्रेष्ठ तथा धनहीन होता है। उसकी पत्नी का शरीर मोटा होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार वह स्वयं ही स्थूल देह वाला, चतुर तथा धर्मात्मा होता है।
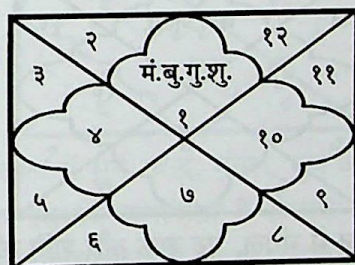
गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक स्त्री से कलह करने वाला, सुशील, धनी, दयालु, राजमान्य, स्वस्थ शरीर वाला तथा लोक-प्रिय होता है।

मंगल, बुध
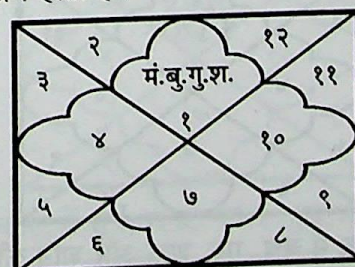
गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक शूर-वीर, सत्यवादी, पवित्र हृदय वाला, धैर्यवान, सुवक्ता, विद्वान, विनम्र,

परन्तु धन-हीन होता है।
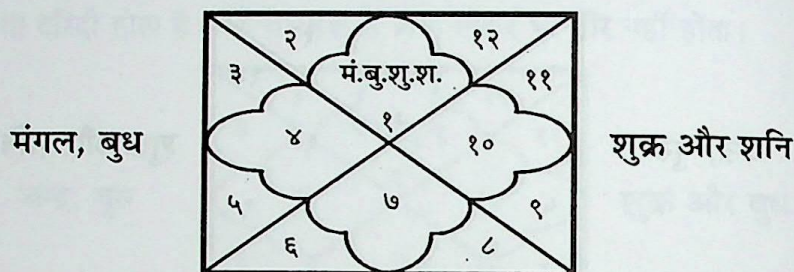
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पुष्ट शरीर वाला, मधुरभाषी, मल्ल-विद्या में निपुण, धनहीन, कुत्तों को पालने वाला तथा लोक में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।
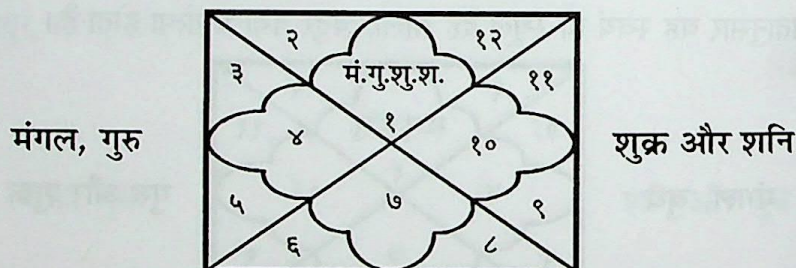
यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मानी, धूर्त, विषयी, परस्त्रीगामी, धनी, विनम्र, साहसी, विद्वान तथा श्रेष्ठ मनुष्यों का प्रिय होता है।
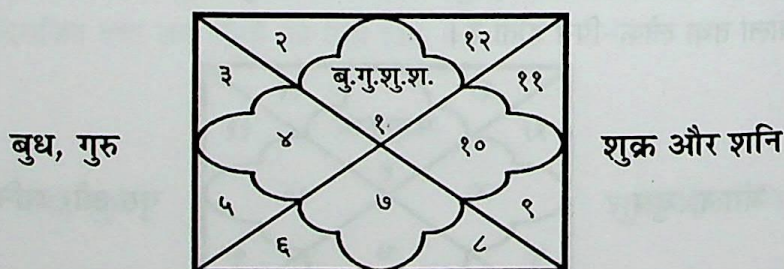
यदि जन्म-काल में बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक वेद-वेदांग का ज्ञाता, मेधावी, शस्त्र-विद्या में स्नेह रखने वाला तथा विषय-वासना में लीन रहने वाला कामी पुरुष होता है।

पाँचों ग्रहों की युति

पाँच ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
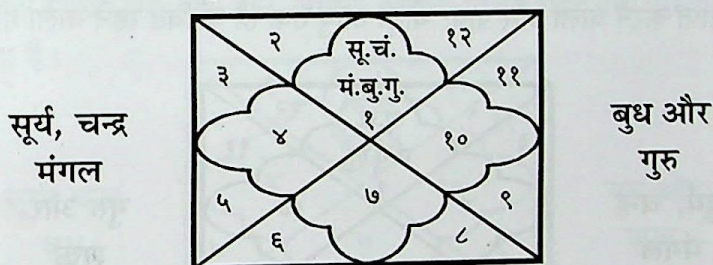
सूर्य, चन्द्र मंगल

बुध और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक की पत्नी दुष्ट स्वभाव वाली होती है, जिसके कारण वह सदैव उद्विग्न बना रहता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री-हीन भी हो सकता है। साथ ही दुष्ट, क्रोध, छली तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र मंगल
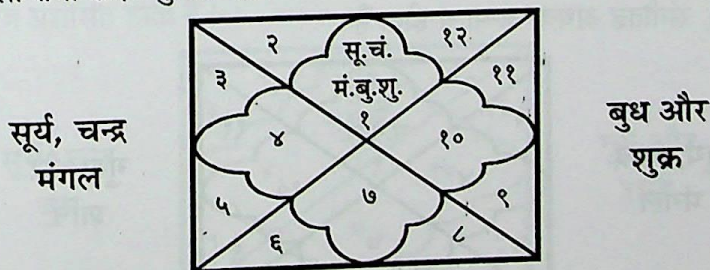
बुध और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक बन्धु-हीन, असत्य बोलने वाला, दूसरों का क़ाम करने वाला, हिजड़ों के समान आकृति वाला, परन्तु दयालु स्वभाव का होता है।

सूर्य, चन्द्र मंगल
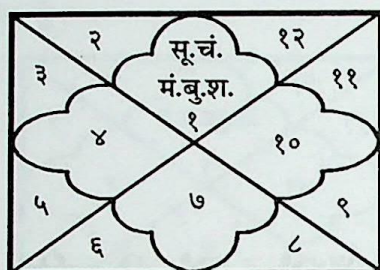
बुध और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि से रहित, चोर, सदैव दुःख भोगने वाला, बन्धन (कैद) को प्राप्त करने वाला और प्रायः थोड़ी आयु तक ही जीवित रहने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र मंगल
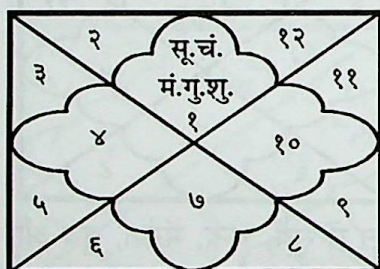
गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक माता-पिता के सुख से रहित, नेत्र रोगी, दुःखी, हाथी से प्रेम रखने वाला, संगीतज्ञ अथवा जन्मान्ध होता है।

सूर्य, चन्द्र मंगल
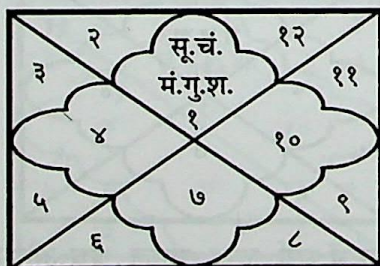
गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी, सज्जनों का वैरी, वृक्ष के समान आकृति वाला, दुष्ट, झगड़ालू, डरपोक तथा दूसरों को दुःख देने

वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र मंगल
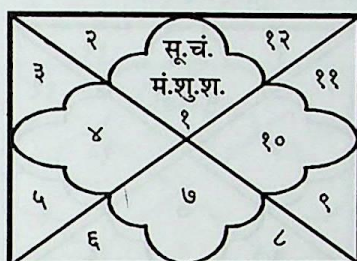
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक सबका द्वेषी, धन-हीन, अधर्मी, आचार-विचार रहित तथा परस्त्रीगामी होता है।

सूर्य, चन्द्र बुध
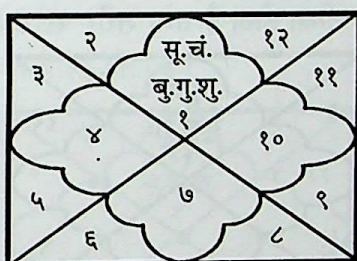
गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक न्यायाधीश, राजमन्त्री, धनी, यशस्वी, चतुर, राजा द्वारा सम्मानित तथा सर्वत्र प्रशंसित होता है।

सूर्य, चन्द्र बुध
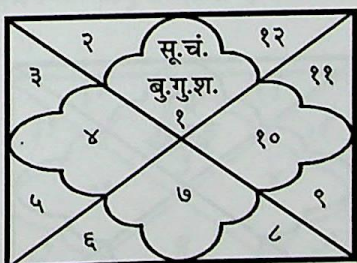
गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक पराए अन्न पर निर्वाह करने वाला, ऋण-ग्रस्त, दुष्ट-कर्मों को करने वाला, धर्म-द्वेषी, कायर, वेश्यागामी, उन्मादी, उग्र, स्वभाव वाला, अपने

मित्रों के कारण दुःखी तथा धूर्त होता है।
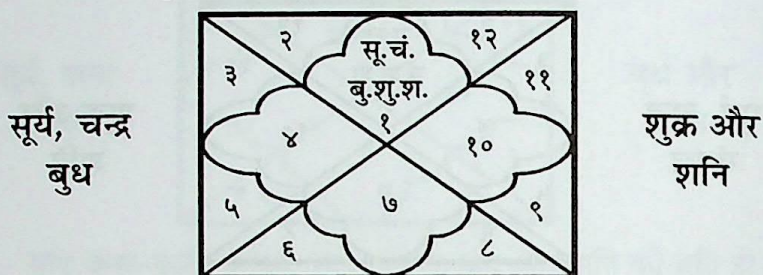
सूर्य, चन्द्र बुध

शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धन, सन्तान मित्र तथा सुख से हीन, उत्साही तथा रोगी शरीर वाला होता है। उसका कद लम्बा होता है तथा शरीर पर रोयें अधिक होते हैं।
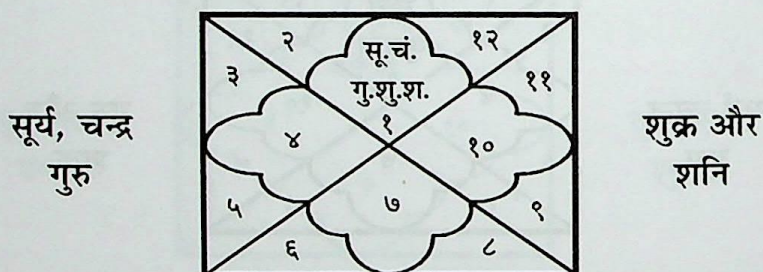
सूर्य, चन्द्र गुरु

शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक इन्द्रजाल विद्या का जानकार, पण्डित, समर्थ, निर्भय, चंचल स्वभाव वाला, सुवक्ता, स्त्रियों का प्रिय, पापी, वाक्शक्ति में प्रवीण तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।
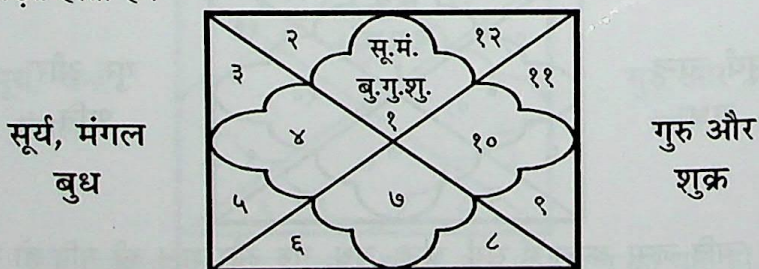
सूर्य, मंगल बुध

गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक स्वच्छ एवं सुन्दर शरीर वाला, समर्थ, कामी, धीर, राजा का प्रिय,

सेनापति, बहुत से घोड़े रखने वाला, यशस्वी, धन-धान्य तथा सेवकों से युक्त होता है।

सूर्य, मंगल बुध
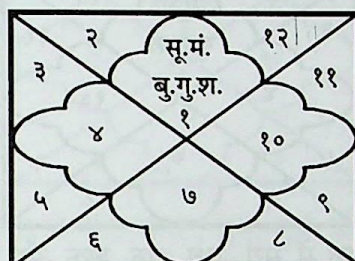
गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक रोगी, मलिन, उद्विग्न चित्त वाला, जर्जर शरीर वाला, भिक्षुक, जड़, पुत्रवान तथा अल्प धन वाला होता है।

सूर्य, मंगल बुध
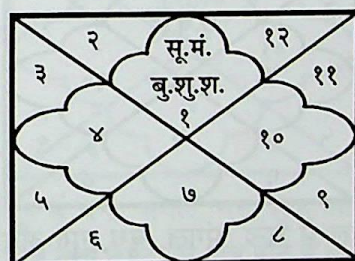
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक रोग तथा शत्रुओं से ग्रस्त, स्थानभ्रष्ट, विकल, बुभुक्षित, दुःखी तथा दरिद्री होता है।

सूर्य, मंगल गुरु
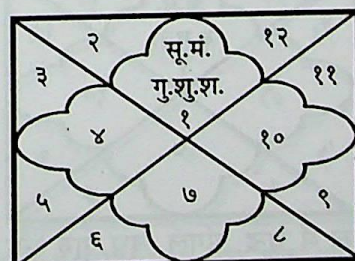
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक, धातु, यन्त्र एवं रसायन के कामों में प्रवीण तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने

वाला, विद्वान, विचारवान, धनी, भाई-बन्धुओं से युक्त तथा तपस्वी होता है।
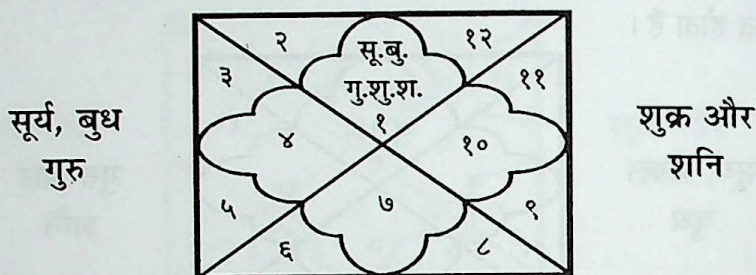
यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मित्रों का प्रिय, माता, पिता तथा गुरुजनों का भक्त, दयालु, धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ, सुवक्ता, धनी तथा सेनापति होता है।
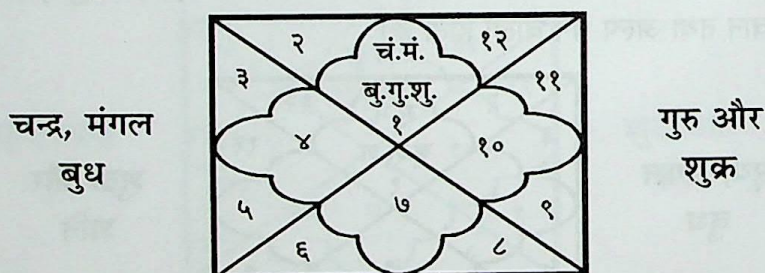
यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सज्जन, विद्वान्, बहुत पुत्रों वाला, मित्रवान, धनवान, अच्छे स्वभाव वाला, निष्पाप तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
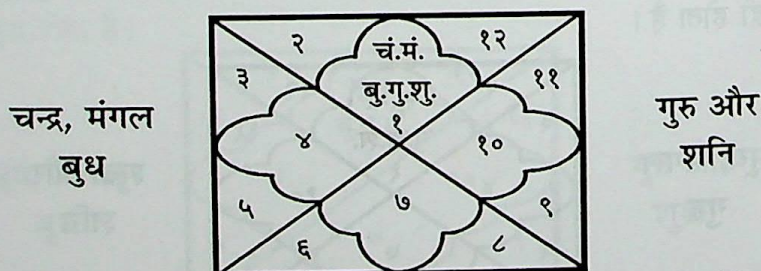
यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दूसरों से अन्न की याचना करने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला ब्राह्मण तथा रतौंधी रोग से युक्त होता है।

चन्द्र, मंगल बुध
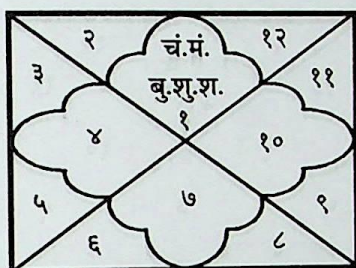
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक कुरूप, मलिन, मूर्ख, नपुंसक, निर्धन, मित्रों से वैर रखने वाला, दुष्टकर्म तथा पराई निन्दा करने वाला तथा कठोर हृदय वाला होता है।

चन्द्र, मंगल गुरु
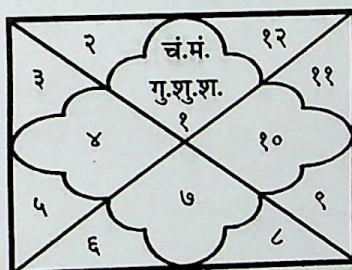
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल मं चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक के बहुत-से मित्र तथा बहुत-से शत्रु होते हैं। वह दुष्ट स्वभाव वाला, दूसरों को कष्ट देने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला, परन्तु विद्वान होता है।

चन्द्र, बुध गुरु
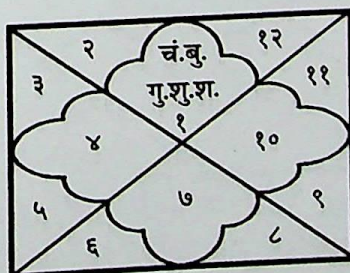
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक राजा का मन्त्री, लोक में पूजित, अत्यन्त गुणवान, गणाधीश, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

मंगल, बुध गुरु
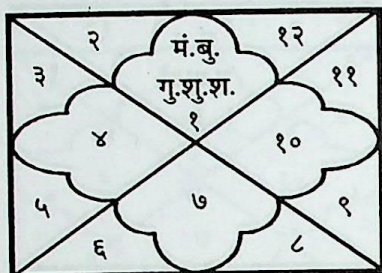
शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक तामसी स्वभाव वाला, चंचल, आलसी, अधिक सोने वाला, पवित्र-वक्ता, दीर्घायु राजा तथा अन्य मनुष्यों को प्रिय, धनी तथा सुखी होता है।

छह ग्रहों की युति

छह ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य, चन्द्र मंगल
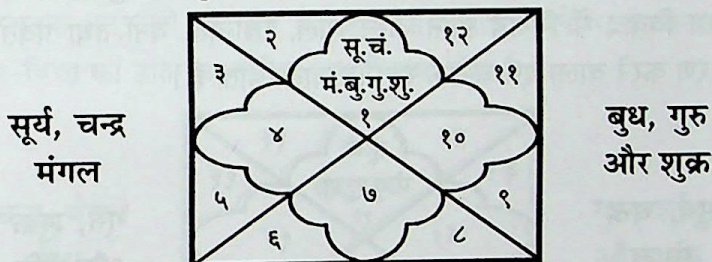
बुध, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धन-धान्य, विद्या तथा धर्म से युक्त, कम बोलने वाला, अत्यन्त भोगी, भाग्यवान, यशस्वी तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र मंगल
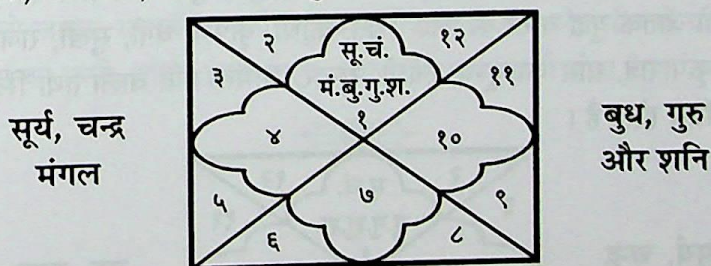
बुध, गुरु और शनि

यदि, जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दयालु, चंचल स्वभाव का, शुद्ध अन्तःकरण वाला, परोपकारी, वन में विचरण करने वाला तथा विवाद में विजय प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र
मंगल
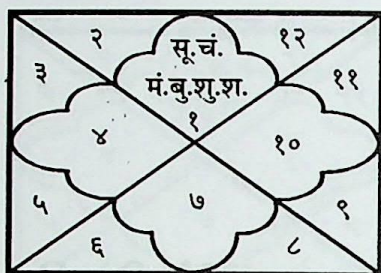
बुध, शुक्र
और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक प्रत्येक काम में संशय करने वाला, मानी, सुप्रसिद्ध, संग्राम अथवा विवाद में विजय प्राप्त करने वाल, चिन्तित, वनों तथा पर्वतों में विचरण करने वाला एवं घातक स्वभाव वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र
मंगल
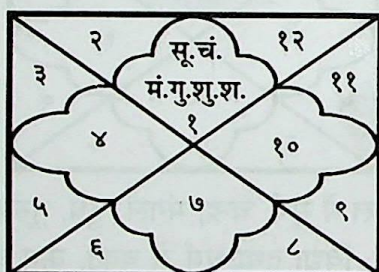
गुरु, शुक्र
और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक युद्ध करने के लिए उद्यत, क्रोधी, कृपण, धनी, सुखी, राजाओं का कृपापात्र, ग्राम का पूज्य, लोभी, सुन्दर, भ्रमित-मति वाला तथा स्त्रियों का प्रिय होता है।

सूर्य, चन्द्र
बुध
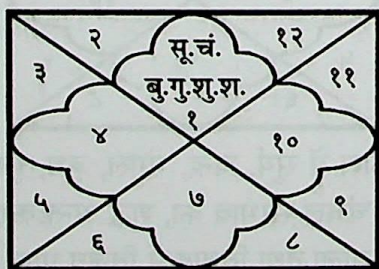
गुरु, शुक्र
और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक स्त्री-विहीन, धन-हीन, राजमन्त्री, क्षमाशील, धर्मज्ञ, वेदज्ञ, राजा

द्वारा सम्मानित, दयालु तथा सुप्रसिद्ध व्यक्ति होता है।
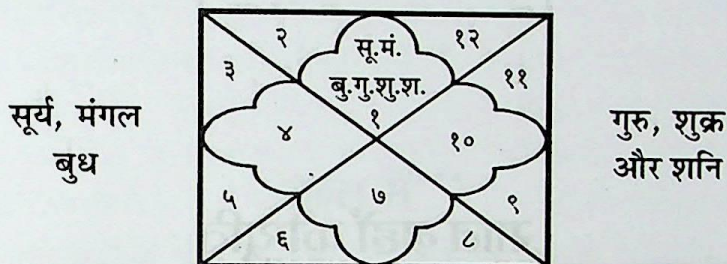
गुरु, शुक्र
और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धन, स्त्री तथा पुत्र से रहित, तीर्थ-यात्रा करने वाला, वनवासी, ब्रह्म-विद्या का ज्ञाता, क्षमाशील तथा भिक्षुक होता है।

चन्द्र, मंगल
बुध
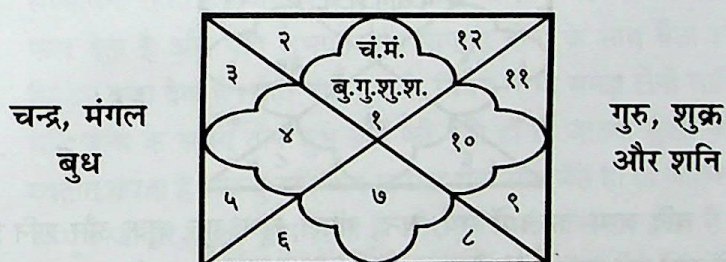
गुरु, शुक्र
और शनि

यदि जन्म-काल में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक राजमान्य, धनी, गुणवान, विश्वप्रसिद्ध, अनेक स्त्रियों वाला, राजा का मन्त्री, पवित्र हृदय वाला, आलसी तथा यशस्वी होता है।

सात ग्रहों की युति

सात ग्रहों की युति का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
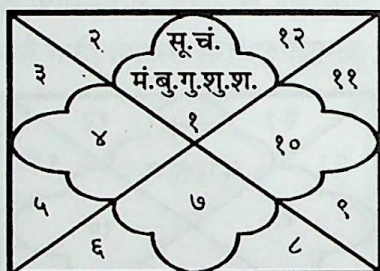
यदि जन्म–काल में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन सातों ग्रहों की युति हो, तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, राजाओं द्वारा सम्मानित, दानी, धनी तथा शिवजी का भक्त होता है।

अन्त में...

१. तीन ग्रहों की युति वाली जन्म-कुण्डली में जन्म के समय चन्द्रमा किसी पापग्रह के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु होने की सम्भावना रहती है। इसी प्रकार यदि सूर्य पापग्रहों से युक्त हो तो पिता की मृत्यु की सम्भावना रहती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो तो वह शुभ फल देता है और यदि शुभग्रह तथा पापग्रह दोनों के साथ बैठा हो तो मिश्रित फल देता है। यही बात सूर्य के विषय में भी समझ लेनी चाहिए।
२. यदि जन्म के समय तीन शुभ ग्रहों की युति हो तो जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है। परन्तु यदि तीन पापग्रह एक साठ बैठे हों तो जातक का सम्पूर्ण जीवन दुःखी बना रहता है और वह सर्वत्र निन्दित होता है।
३. जन्म-समय में यदि पाँच अथवा छह ग्रह एक ही भाव में बैठे हों तो ऐसा जातक प्रायः दरिद्र और मूर्ख होता है।
४. जिस प्रकार दो-तीन आदि ग्रहों की युति का फलादेश कहा गया है, उसी प्रकार यदि जन्म-कुण्डली के किसी भाव में बैठे हुए ग्रह को दो-तीन अथवा अधिक ग्रह एक साथ देख रहे हों अर्थात् उन सबकी दृष्टि उस ग्रह पर पड़ रही हो, तो वह ग्रह भी युति वाले ग्रह के समान ही अपना फल देने लगता है।

राशीश्वर की विभिन्न भावों में स्थिति का फल

किस राशि का स्वामी कौन सा ग्रह होता है—यह बात पहले बताई जा चुकी है। जन्म-कुण्डली के जिस भाव में जो राशि हो, उस राशि का स्वामी ही उस भाव का भी स्वामी होता है। जैसे तृतीय भाव में 'वृष' राशि हो तो

'वृष' राशि का स्वामी 'शुक्र' ही तृतीय भाव का भी स्वामी माना जाएगा। यदि तृतीय भाव में 'सिंह' राशि हो तो 'सिंह' राशि के स्वामी 'सूर्य' को ही तृतीय भाव का स्वामी माना जाएगा। इसी प्रकार अन्य भावों तथा अन्य राशियों के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

जन्म-कुण्डली में प्रत्येक राशि का स्वामी अपनी ही राशि पर स्थित हो—यह आवश्यक नहीं है। वह किसी भी अन्य राशि पर स्थित हो सकता है। जैसे तृतीय भाव में स्थित 'वृष' राशि के स्वामी 'शुक्र' की स्थिति जन्म-कुण्डली के प्रथम से लेकर द्वादश तक किसी भी भाव में हो सकती है। यदि तृतीय भाव में 'वृष' राशि हो और उसका स्वामी अर्थात् तृतीयेश जन्म-कुण्डली के पंचम भाव में बैठा हो तो उस स्थिति में तृतीयेश पंचम भाव में बैठा है—यह कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य प्रत्येक ग्रह, राशि एवं भावों के सम्बन्ध में समझ लेना चाहिए।

प्रथम भाव का स्वामी 'लग्नेश' अथवा 'प्रथमेश'

यहाँ पर विभिन्न भावों के स्वामियों की विभिन्न भावों में स्थिति सम्बन्धी फलादेश का वर्णन किया जा रहा है। उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१. प्रथम भाव अर्थात् लग्न का स्वामी लग्नेश यदि लग्न अर्थात् प्रथम भाव में ही बैठा हो तो जातक दीर्घायु, स्वस्थ, नीरोग, अत्यन्त बलवान, राजा अथवा भूमि का स्वामी होता है।
२. प्रथम भाव का स्वामी लग्नेश यदि द्वितीय भाव में बैठा हो तो जातक स्थूल शरीर वाला, बलवान, दीर्घजीवी, धनवान, अत्यन्त धर्मात्मा, राजा अथवा भूस्वामी होता है।
३. प्रथम भाव का स्वामी लग्नेश यदि तृतीय भाव में बैठा हो तो जातक शूर वीर, बलवान, श्रेष्ठ मित्रों वाला, दानी, धर्मात्मा तथा अच्छे भाई-बहिनों वाला होता है।
४. प्रथम भाव का स्वामी लग्नेश यदि चतुर्थ भाव में बैठा हो तो जातक अल्पभोजी, दीर्घायु, माता-पिता का भक्त, पिता द्वारा धन प्राप्त करने

वाला, धनी, सुखी तथा राजा का प्रिय होता है।

५. प्रथम भाव का स्वामी लग्नेश यदि पंचम भाव में हो तो जातक दानी दीर्घजीवी, धर्मात्मा, यशस्वी, सुखी, धनी, श्रेष्ठ पुत्रों वाला, राजा अथवा राजा के ही समान ऐश्वर्यशाली होता है।

६. प्रथम भाव का स्वामी लग्नेश यदि षष्ठम भाव में हो तो जातक स्वस्थ, बलवान, धनी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, भूमि का स्वामी, प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

७. प्रथम भाव का स्वामी लग्नेश यदि सप्तम भाव में हो तो जातक तेजस्वी, परन्तु शोकाकुल होता है। उसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दर, तेजस्विनी तथा सुशीला होती है। ऐसे व्यक्ति के गृहस्थ-जीवन में परेशानियाँ भी आती रहती हैं।

आपके अनुभव

आपके अनुभव

हस्तलिखित ताड़पत्र वाली

भृगुसंहिता

इस ग्रन्थ की रचना के कालखण्ड में कागज और लेखनी की सुविधा नहीं थी। अतः प्राचीन काल में ताड़ वृक्ष के पत्तों पर इस ग्रन्थ की हस्तलिखित रचना हुई। उन्ही जीर्ण-शीर्ण ताड़पत्रों पर हस्तलिखित पाडुलिपियों की संरचना को सम्पादित करके यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है।

इस ताड़वृक्ष के असंबद्ध पत्रों वाली भृगुसंहिता का केवल नाम ही अब तक अनेक लोगों ने सुना था। परन्तु अब अनुसंधान केन्द्र द्वारा दशकों के शोध के पश्चात् ज्योतिष प्रेमियों हेतु यह प्रमाणिक भृगु संहिता उजागर की गई है।

आप भी इसके अध्ययन से भूत-भविष्य और वर्तमान का स्पष्ट लेखा-जोखा प्राप्त कर सकते हैं।

A Vedic System of Horoscope Reading.

वैदिक रीति से सटीक फलादेश

ज्योतिष एवं हस्त [illegible] विज्ञान शोध केन्द्र

शान्ति निकेतन, बेंगलुरू (कर्नाटक)-560076

Astrology & Palmistry Research Bureau

Shanti Niketan, Bengaluru (Karnataka)-560076